In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

बृहद् बूटी प्रचार

प्रकाशकः—

ठाकुरप्रसाद एण्ड सन्स बुकसेलर

राजादरवाजा, कचौड़ीगली, वाराणसी। मू० ६)

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

21/112

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

MOTILAL BANARSI DASS
DELHI-7.
BUNGALOW ROAD.

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

श्री धन्वन्तरये नमः

सचित्र

✻ असली ✻

बृहत् बूटी प्रचार

जिसमें

जड़ी बूटियों के चित्र सहित उनके गुणागुण का
विवेचन और सार्वदेशिक भाषाओं
में उनके नाम एवं अनुभूत
नुस्खों का अपूर्व संग्रह

संग्राहक एवं वैद्यक संग्रह आदि विविध
विषयों के अनेक ग्रन्थों के लेखक—

पं रामलग्न पाण्डेय "विशारद"

प्रकाशक—

ठाकुरप्रसाद एण्ड सन्स बुकसेलर,
राजादरवाजा, ब्रांच--कचौड़ीगली,
वाराणसी।

बम्बई प्रेस में छपा।

सर्वाधिकार प्रकाशकाधीन। मूल्य ६)

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

हर प्रकार की पुस्तक मिलने का पता—

ठाकुरप्रसाद एण्ड सन्स बुकसेलर,

राजादरवाजा, ब्रांच कचौड़ीगली, वाराणसी।

Vaidyaraj ...
National Ayurvedic ...
Punjabi Bagh, New Delhi
Call No.........
Book No.........
Acc. No....LX3.....
152N46

000102

मुद्रक—
बम्बई प्रेस,
वाराणसी।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

लेखक के दो शब्द

जड़ी बूटियों द्वारा चिकित्सा का सुन्दर प्रबन्ध होने से ही हमारी अनेक बीमारियाँ दूर हो सकती हैं। यद्यपि इधर के दिनों में बूटियों को तो कौन कहे, आयुर्वेद के परिपक्व विधियों और कुशल वैद्यों द्वारा तैयार की हुई औषधियों को अपनाने में हमारे देशवासी उदासीनता ही दिखलाते आये और यह किसी कारणवश वस्तु-संगत भी प्रतीत होता था। क्योंकि जब अन्यान्य देशों से चूर्ण, स्वरस, अवहेल और गुटिका के रूप में नाना प्रकार की पौष्टिक औषधियाँ अपनी तड़क-भड़क के साथ आकर देश को सुशोभित कर रही हैं तब उनको त्याग कर भाँगरा और भटकैया को कौन लेने जाता है? परन्तु हम अपने घर को भूल जायें, यह कितनी खराब बात है। हम यह नहीं सोचते कि समय की गति के साथ-साथ हमें न जाने कितने कुचक्रों का सामना करना पड़ेगा और आज हम जिस गतिविधि को अपनाये हुए चल रहे हैं और दूसरे का पता भी नहीं लेते, वही आगे चलकर हमारे लिए खेद का विषय होगा।

यों तो पाश्चात्य प्रयोगों के साथ-साथ हमारे देश में भी बहुत से परिवर्तन हुए और पाश्चात्य देशों से बनकर आनेवाली दवाओं से टक्कर से टक्कर भिड़े। देखने में आया कि, दोनों की चमक-दमक और लाभ में भी काफी समानता है और पेटेन्ट औषधियों ने भी अपनी खूबी दिखलाई। हमारे देशभारत में दोचार ऐसे अच्छे फर्म भी खुले जिन्होंने अमेरिका और इङ्गलैंड के वैज्ञानिकों को भी मात किया, परन्तु वह इतने कम हुए कि उससे देश की विशाल जनता का भरपूर कल्याण नहीं हो सकता था। आखिर वह भी समय आया, जब देशको अपनी औषधियों की आवश्यकता प्रतीत हुई और अपने पाँवों खड़ा होना पड़ा। परन्तु इससे क्या हो सकता था, जब हमने अपनी उस शक्ति को जाग्रत ही नहीं किया कि जिससे हमारी आपत्तिकाल में भी रक्षा होती। सृष्टि में विकास होता गया। प्रजा बढ़ती गई। संघर्ष अनिवार्य हो गया। समय ने लाकर एक को दूसरे से भिड़ा दिया। बड़े बड़े वैज्ञानिक अपना चमत्कार दिखाने के लिए रंगमंच पर आये। क्या-क्या हुआ, गत पाँच छः वर्षों को संसार ने आँख पसार कर देखा। अभी उस दिन की बात है कि आजाद हिन्द फौज के प्रधान सेनानी मि० शाहनवाज साहब फर्मा रहे थे कि हम जहाँ अपने अन्यान्य साधनों से कमजोर थे, वहाँ हमारे साथियों एवं सैनिकों में भीषण व्याधि भी फैल गई थी और हम उसका कोई निराकरण नहीं कर सकते थे। कहना न होगा कि यदि हम अपने देश की जड़ी बूटियों का ध्यान रखते, हमारे देश का बच्चाबच्चा अपनी बातों से परिचित होता अपनी घरेलू दवाइयों का ध्यान रखता तो शायद आजादहिन्द फौज को कम से कम इन जड़ी बूटियों के द्वारा काफी सहायता मिलती और रोगों के लिये ही क्या, बल्कि अन्यान्य खाद्य सामग्रियों के अभाव में भी उन्हें प्राण-रक्षा के अनेक साधन उपलब्ध होते और वस्तुतः ऐसी अवस्था

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

में जब कि वे पहाड़ की दुर्गम घाटियों एवं भयानक बनोंसे ही चलरहे थे उन्हें किसी प्रकार का कष्ट नहीं होता। ओफ! कैसा भीषण संहार हुआ। औषधियों के अभाव में और अपनी अनभिज्ञता में फौजों में ही तो क्या सिविलियन बस्तियों में भी कैसी महामारी फैली। सर्वतोमुखी युद्ध के कारण देश का सहायकार्य तो बन्द ही हो गया था और हम अपने को भूल ही बैठे थे, फिर हमारा दुर्दमनीय ह्रास क्यों न होता? बड़े-बड़े बह गये। कितनों की कड़ियाँ टूट गईं, दवाओं का स्टाक साफ हो गया। होम्योपैथी, एलोपैथी सभी एक-सी साँस लेते रहे। जिस मेडिशन की जरूरत पड़े, वही गायब। कलकत्ता, करांची, कहीं नहीं। उनके अभाव में, उन्हीं पर भरोसा रखनेवाले कितने मरीज कालके घाट उतरे। चारों ओर संहार मच गया। विषमता तो विषमता ही? जब तक चारों ओर से न आवे, आने के अर्थ ही क्या? रोग-शोष अलग पेट की ज्वाला अलग। इस प्रकार कालचक्र ने बेदर्द काम किया। जब लोगों ने देखा कि, अब इस तरह भी काम नहीं चलता और विदेशी औषधियाँ नहीं मिल सकतीं तब अन्त में वही गंगाजल और तुलसी का पत्ता, कटाई के चूर्ण फिर सेवन में आने लगे। परन्तु इन्हें तो देश पहले ही से भूल बैठा था, समय पर उतने याद से उपकार ही कितना होता? अस्तु वही हुआ जो होना था? कहने का अभिप्राय यह कि ऋषियों ने हमारे लिये जो-जो मार्ग प्रशस्त किये हैं वे किसी भी काल में सेवनीय और सर्वथा ही नवीन हैं। इसलिए हमें उसी पर चलना चाहिए।

प्रस्तुत पुस्तक "बूटी-प्रचार" इसी ध्येय से तैयार की गई है। कहना न होगा कि मैं इस महान् कार्य के सर्वथा ही अयोग्य था। परन्तु वस्तुस्थिति भी कोई चीज है, वह अपना करके ही छोड़ती है। बस, इसी नियम से जैसे भी हुआ मैं इस महत् कार्य में लगा। एक बार और भी मुझे ऐसा मौका मिला था। परन्तु जैसा मैं चाहता था ठीक रूप में वैसा न हो सका। मेरे और प्रकाशक महोदय में कुछ मतभेद सा हो गया। इसलिए चाहे जैसे भी होता लोकोपकारी दृष्टि से उसे मैंने फिर एक नवीन रूप देना ही उचित समझा। श्रीमान् बाबू ठाकुर प्रसाद जी एक अच्छे प्रकाशक हैं और वे बहुत दिनों से यह चाहते थे कि बूटियों के सम्बन्ध में ऐसे कुछ नुस्खों का संग्रह किया जाय कि जिससे आयुर्वेद के विकास के साथ-साथ बूटियों के द्वारा घरेलू दवाइयों का अच्छा प्रचार हो जावे—मैंने इसका यह नवीन रूप इनको दिया। अब यह पुस्तक के रूप में आप सबके हाथ है। यदि इससे जनता जनार्दन का कुछ भी लाभ हुआ तो मैं अपना परिश्रम सफल समझूँगा।

ओम् शान्तिः शान्तिः शान्तिः

काशी
चैत्र-रामनवमी
बुधवार १० अप्रैल १९४६

सुहृद-सज्जन-समाज-सेवक —
रामलग्न पाण्डेय 'विशारद'

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

विषय सूची

विषय	पृष्ठ
अंकोल	१
ज्वर की दवा	२
पेट के कीड़े दूर हों	,,
अगस्त	३
शिरदर्द की दवा	४
जुलाब	४
आँख में जाला पड़ने की दवा	४
अजवायन	५
औषधियाँ १—४	६
औषधियाँ ५,७ सफेद कुष्ट की दवा	७
तथा च--	८
उपदंश अथवा गर्मी की दवा	८
जोड़ोंमें दर्द होने पर तैल	८
अडूसा	९
औषधियां १,२	१०
हृदयरोग की दवा	११
दाँत दर्द की दवा	११
भगंदर रोग की दवा	११
अरंड	११
दवायें	१४
बवासीर की दवा	१४
वायु शूल की दवा	१४
वायु और पेट की दवा	१५
तथा च--	१५
कमर की पीड़ा में	१५
नासूर की चिकित्सा	१६
अग्नि से जलने पर	१६
अतीस	१६
अँतरिया ज्वर की दवा	१७
अदरक	१८
दाँत के दर्द में	१९
आधा शीशी की दवा	२०
अदरक पाक	२०
अनार	२१
अतँड़ी के रोग में	२२
पेट के कीड़ों को मारने की दवा	२२
पेटकी ऐंठन में	२३
दस्त की बीमारी में	२३
सर्दी के शिरदर्द में	२४
मुंह आने पर	२४
मसूड़ों और दाँत के लिए	२४
कर्णरोग में	२४
वमन में	२४
स्त्री धर्म में अधिक रक्त रोकने में	२५
अफीम	२५
नेत्रपीड़ा में	२६
कानदर्द में	२७
अमरबेल	२७
जुकाम, ज्वर और शिरदर्द में	२८
अमलतास	२९
हृदय की पीड़ा में	३०
पित्तकी शान्ति में	३०
वातरोग की पीड़ा में	३०
उलटी के लिये	३०
प्रसव के लिए	३१
फोड़े में	३१
दाद पर	३१
अरहर	३२
फूली की दवा	३२
साजिशज़ुबां जीभ की	३३
जलन	३२
जलन पर	३३
हिचकी की दवा	३३
अलसी	३३

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

विषय	पृष्ठ
कफकी खाँसी और श्वास में	३४
असगंध	३५
अशोक	३६
आक सफेद और लाल	३६
बिच्छू के मारने पर	३८
अन्य १२ नुस्खे	३८ से ४२ तक
आम	४२
कंठ के रोग में	४६
हैजे के प्रकोप में	४६
नेत्र के रोग में	४६
पेट के कीड़े दूर हों	४७
खुजली तथा त्वचा रोग में	४७
रक्तविकार में	४७
प्रदर और धातु रोग में	४७
दस्त और ऐंठन में	४८
१९२३ के अकाल में	४८
गंज रोग पर	४८
दाद में	४८
फुन्सियों पर	४८
आमला	४९
श्वेत प्रदर में	५१
शिर के बाल पकने पर	५१
आलू	५२
जलने पर	५५
अरवी	५५
ओंगा (अपामार्ग)	५६
लाल ओंगा	५७
अगरु	५८
पीलीअगरु	६०
अरनी	६१
अकरकरा	६२
अर्द्धाङ्गवातकी दवा	६३
अन्य दवाइयाँ	६३

विषय	पृष्ठ
दाँत दर्द की दवा	६४
अखरोट	६४
खाँसी की दवा	६६
अपराजिता	६६
बवासीर की दो औषधें	६७
अतिबला (कंघी)	६७
मूत्रातिसार की दवा	६८
प्रमेह की दवा	६८
घाव पर	६९
अनन्नास	६९
नुस्खे २	७०
अन्धाहुली	७०
श्वास रोगकी दवा	७१
अनन्तमूल	७१
अग्निदमन	७२
अंजीर	७३
शिर दर्द की दवा	७४
रक्त पित्त की दवा	७४
नाक से खून गिरना	७४
बात पित्त ज्वर की दवा	७५
दाद की दवा	७५
अंगूर	७५
पक्की दाख	७६
अजीर्ण की दवा	७७
सूजन उतर जावे	७७
अश्वकर्णशाल	७८
प्रदर रोगकी दवा	७९
अर्कपुष्प	७९
खाँसी और कँवल की दवा	८०
आमिया हल्दी	८०
श्वास कास की दवा	८१
चोटपर	८१
नेत्ररोग में	८१

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

विषय	पृष्ठ
आलू बुखारा	८२
पेट दर्द, हैजे की दवा	८२
अरुचि की दवा	८३
अतिसार और संग्रहणी में	८३
अमरूद	८४
दवायें (१, २, ३,)	८५
आम्रातक	८६
अम्लपित्त के रोग में	८७
कर्ण-शूलकी दवा	८८
आम्रातिसार की दवा	८८
इलायची बड़ी	८९
गुजराती इलायची	८९
पाचक जिगर की बीमारी	
जलन्धर आदि में	९०
नित्य जी मचलाने और	
उबाकी आने में	९०
हैजे के रोग में	९१
निनावाँ जीभ की जलन में	९१
पित्त ज्वरादि में (एलादि-गुटिका)	९१
मूत्रकृच्छ्रकी औषधि	९२
तथा च	९२
इन्द्र जौ	९२
मरोड़े और आँतोंके दर्द में	९४
रक्तस्राव और अँतरिया ज्वरकी दवा	९४
अर्श खूनीबवासीर की दवा	९५
अतिसार के लक्षण	९९
दवा १, २,	९७
इमली	९७
सूजन की दवा	९९
फोड़े पर	९९
पित्तज्वर में	१००

विषय	पृष्ठ
आँखों के पलकों की सूजन में	१००
दुखते हुए बवासीर में	१००
जुलाब और पाचनशक्ति बढ़े	१०१
नासूर की दवा	१०१
उबकी और मिचली में	१०२
तथा च	१०२
मुँह आनेकी दवा	१०२
पित्तज्वर की दवा	१०२
इन्द्रायण	१०३
जलंधर की दवा	१०५
कान के बहरेपन की दवा	
इन्द्रायण तैल	१०५
तथाच	१०६
ईख	१०६
राब	११०
गुड़	१११
खाँड़	११२
ककड़ी	११२
कमल	११२
प्रदर की दवा	११५
दाहनाशकी दवा	११५
तथाच	११५
वमन की दवा	११६
कुच कठोर करने का लेप	११६
खूनी बवासीर में	११६
काँचका निकलना बन्द हो	११७
तरी लाने वाला तैल	११७
लाल कमल	११७
फोड़े के घाव की दवा	११७
कुकुरवंदा	११८
सूजाक की दवा	११८
कनेर	११९
पीली तथा काली कनेर	१२०

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

विषय	पृष्ठ
जीर्ण घावपर	१२१
जाँघों के दर्द में	१२१
शिरदर्द की दवा	१२१
घरमें दीमक पिस्सू आदि न लगें	१२१
श्वेत कुष्ट और पीठके दर्दकी दवा	१२२
कनेर घृत बनाना, इससे कई लाभ	१२२
कनेर घृत से अन्य लाभ	१२३
खुजली की दवा	१२४
घावपर	१२४
जोंकों की दवा	१२४
सिर दर्द और अधकपारी की दवा	१२४
कचूर	१२५
आमजात की दवा	१२६
जीर्ण ज्वर और विषमज्वरकी दवा	१२६
कंजा (करंज)	१२६
कन्धों की पीड़ा व शीत लगने की दवा	१२८
श्वास रोग की दवा	१२८
भूत बाधा निवारण	१२९
कचनार	१२९
दाँत दर्द की दवा	१३०
बवासीर में	१३१
कटहल	१३१
उकवँत की दवा	१३२
करील	१३२
नासूर की दवा	१३३
बरसाती फोड़ों पर	१३३
कपास	१३३
गलगंड की दवा	१३४
कत्था	१३४
अतरिया ज्वर की दवा	१३५
मसूड़ों से रुधिर आने की दवा	१३६
नासूर और कोढ़ के दागों पर	१३६
दाद पर	१३७
कटेरी	१३७
वात कफ ज्वर और खाँसी की दवा	१३८
मूत्रकृच्छ्र की दवा	१३८
बालक दूध नहीं फेंकता	१३९
जीर्ण ज्वर की दवा	१३९
संततादि शीत ज्वर की दवा	१४०
कफज्वर में	१४०
अथवा	१४०
खाँसी की दवा	१४१
नाकके रोग में	१४१
नेत्रपीड़ा में	१४१
मिरगी की दवा	१४१
तथाच	१४२
दाँतदर्द में	१४२
नासूर की दवा	१४२
कपूर	१४३
कपूर की परीक्षा	१४४
चोनियाँ कपूर	१४६
करेला	१४६
रतौंधी की दवा	१४९
बालक का पेट साफ करने की दवा	१४९
पारा खाने पर और हैजा होने पर	१४९
पेट के कीड़े निकल जावें	१४९
कामला रोग में	१४९
गठिया की दवा	१५०
जलन्धर की दवा	१५०
करौंदा	१५०
सर्प के काटने पर	१५२
खुजली की दवा	१५२
घाव के कीड़े दूर हों	१५२
तथा दूसरी विधि	१५२
तथा मूँगा भस्म करना	१५३

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

विषय	पृष्ठ
पेट के दर्द की दवा	१५३
चाँदी भस्म हो	१५३
ज्वर की दवा	१५३
खाँसी की दवा	१५४
तथाच अन्यान्य रोग में	१५४
जलंधर रोग की दवा	१५४
करही (मालकांगनी)	१५४
नपुंसकता नाशक मालकांगनी पाक	१६०
सफेद दागों पर	१६१
काकड़ासिंगी	१६१
खाँसी की दवा	१६२
कफकी खाँसी में	१६३
कुसुम	१६३
लकवा में	१६४
कसेरू	१६४
प्रथममास गर्भरक्षा	१६४
अथवा	१६५
द्वितीय मास गर्भ रक्षा	१६५
अथवा	१६५
"	१६५
तीसरे मास गर्भ रक्षा	१६६
चौथे मास गर्भ रक्षा	१६६
पाँचवें मास गर्भ रक्षा	१६६
छठवें मास गर्भ रक्षा	१६६
सातवें मास गर्भ रक्षा	१६७
आठवें मास गर्भ रक्षा	१६७
नवम मास गर्भ रक्षा	१६८
दशम मास गर्भ रक्षा	१६८
अथवा	१६८
ग्यारहवें मास की गर्भ रक्षा	१६८
बारहवें महीने में	१६९
कदम्ब	१६९
कमलगट्टा	१७०
बादी से उत्पन्न प्रदर रोग की दवा	१७१
मुखपाक की दवा	१७१
काला जीरा	१७२
मूत्र उतरने और गर्भमें सूजन की दवा	१७३
बवासीर में	१७३
मूत्रकृच्छ्र की दवा	१७३
जीरकादि चूर्ण	१७३
काला धतूरा	१७४
वीर्य के बहाव को दूर करे	१७४
स्तम्भनवटी	१७५
काला सेमर	१७५
कुचला	१७५
अजीर्ण का दवा	१७६
दाद की दवा	१७७
वात की दवा	१७७
बरसाती फोड़ों पर	१७७
वातशोथ विशूचिका रोग में	१७७
कुटकी	१७८
गंडमाला की दवा	१७८
ज्वर खाँसी की दवा	१७८
मलज्वर की दवा	१७९
ज्वर प्यास मूर्छा में	१७९
कुटज (इन्द्र जौ)	१७९
कुष्ठ (कूट या कूठ)	१८०
दाँतों से रुधिर बन्द हो	१८१
झाँई की दवा	१८१
केला	१८१
खाँसी की दवा	१८२
पेशाब की जलन दूर हो	१८२
केशर	१८२
पाँव की जलन में	१८३
संधिवात के दर्द में	१८४
केसू	१८४

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

विषय	पृष्ठ
कन्दरी (लहसन)	१८५
हृदयरोग की दवा	१८७
कौआ ठोंठी	१८७
कालादाना	१८८
तिल्ली और जिगर की सूजन में	१८९
खुजली की दवा	१८९
कुष्ठ (कोढ़) की दवा	१८९
केंवाच	१८९
कैंथ	१९१
कायफल	१९३
बात,कफ,ज्वर और खांसी की दवा	१९४
सन्निपातज्वर	१९४
कस्तूरी	१९५
कुटकी	१९७
बात पित्तज्वर में	१९७
मल ज्वर में	१९७
कूष्माण्ड (कुम्हड़ा-काशीफल)	१९८
नासूर, नाकसे रक्त गिरने की दवा	१९८
कूष्माण्ड (पेठा) पाक	२००
कद्दू	२००
आधा शीशी (अधकपारा) की दवा	२०१
गर्मीकी मस्तक पीड़ा में	२०१
करेला	२०१
खजूर	२०२
खिरनी	२०३
खेसारी	२०३
खस (उशीर)	२०४
उरुस्तम्भ और बात रोग की दवा	२०४
पित्तज्वर में	२०४
रक्तपित्त राजरोग में	२०४
खबूंजा	२०५
खीरा	२०५
खसखस	२०६
खेखसा (कोंड़ा)	२०६
गदहपूर्ना	२०७
गाजर	२०७
आधा शीशी की दवा	२०८
गजपीपल	२०८
आमवात की दवा	२०९
गावजुबाँ	२०९
गाँजा	२१०
गिलोय	२११
गिलोय का सत्त बनाना	२१२
सेवती गुलाब	२१४
मुँह आने पर	२१५
गूलर	२१५
प्रदर की दवा	२१५
नासूर की दवा	२१६
खूनी बवासीर में	२१६
शरीर के श्वेत दागों की दवा	२१६
श्वेत प्रदर की दवा	२१६
गूमा	२१७
गोरख मुंडी	२१८
गेंदा	२१९
गोभी	२२०
गोखरू	२२०
दवायें १, २, ३,	२२१-२२२
ग्वारपाठा (घीकुवार)	२२२
विभिन्न रोगोंकी दवाइयाँ१से७तक	२२३
बादी के रोग की दवा	२२४
गूगल	२२४
घी (घृत)	२२९
दादकी दवा १, २, ३, ४,	२२९
घुइयाँ (अरुई)	२३०
घुँघुँची	२३०
चमेली	२३१

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

विषय	पृष्ठ
रतौंधी की दवा	२३२
कामदेव की पुष्टकारक तैल	२३३
अथवा	२३३
तथाच	२३३
बालक के मुख पकने का यत्न	२३४
कान के रोग की दवा	२३४
खुजली की दवा	२३४
चव्य	२३५
चव्यादिचूर्ण	२३५
चित्रक (चीता)	२३६
आमवात की दवा	२३७
चना	२३७
जलंधर की दवा	२३८
कुष्ठ की दवा	२३८
प्रदर रोग में	२३८
चौराई	२३८
नाहरवा रोग में	२३९
झाईं की दवा	२३९
छीप की दवा	२३९
सब प्रकार के गरम विष में	२४०
राजरोग और बहुमूत्र की दवा	२४०
श्वेत प्रदर की दवा	२४०
तथा प्रदर में	२४०
चिरमिटी या गुंजा या घुँघची	२४०
सूजन पर	२४२
खाँसी में	२४३
चिरायता	२४३
खुजली की दवा	२४३
विषम ज्वर की दवा	२४४

विषय	पृष्ठ
छतिवन	२४४
सर्दी के ज्वर में	२४५
छिकनी (नकछिकनी)	२४८
छिरहिटा	२४८
छुईमुई	२४९
जंभीरी	२५०
जमालगोटा	२५०
जमीकन्द	२५१
अर्श (बवासीर) की दवा	२५२
जवासा	२५२
जामुन	२५३
अतीसार की दवा	२५३
जायफल	२५४
राजरोग, मन्दाग्नि तथा हर प्रकार के प्रमेह दूर हों	२५४
जेठी मधु (मुलहठी)	२५५
दवायें १, २,	२५६
हिचकी की दवा	२५६
अल्पकेशता दूर हो	२५६
पुष्टिकारक औषधि	२५६
गर्भ स्थिर रहे	२५६
जीरक (जीरा, कालाजीरा, कलौंजी)	२५७
सम्मतियाँ	२५९
जीरकादि चूर्ण, अजीर्ण, मन्दाग्नि की दवा	२६०
दूध बढ़ने की दवा	२६१
बायगोला की दवा	२६१
रक्तातिसार और प्रदर की दवा	२६१
जटामाँसी	२६२
सम्मतियाँ	२६३
तुलसी	२६४

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

विषय	पृष्ठ
दवायें १, २, ३,	२६७-२६८
बालकों के पेट की पीड़ा पर	२६८
बालकों को दस्त खुलासा होने के लिए	२६९
बालकों की सर्दी खाँसी में	२६९
बालकों के शीतला चेचक पर	२६९
बालकों का बल बढ़ानेके लिये	२७०
बालकों के ज्वर पर	२७०
तथा १,२,३,४,५,६,७,८,९,१०, ११,१२, से १३, तक	२७०-२७१
तथा १३ से २२ तक	२७१-२७२
तथा २३ से २८ तक	२७३
तथा २९ से ३६ तक	२७४
तथा ३८ से ४४ तक	२७५
तथा ४५ से ४६ तक	२७६
तरबूज	२७६
होंठ फटने और खुश्की में	२७६
शिर दर्द पर	२७७
झाईं की दवा	२७७
तिल	२७७
बिच्छू के डंक मारने पर	२७८
वातष्समार पर	२७८
पाद फूटन (पग फूटनी) की दवा	२७८
तगर	२७८
ताड़वृक्ष	२७९
सोमरोग की दवा	२८०
तूत, शहतूत	२८०
मुँह से लार गिरने पर	२८१
तथाच	२८१
त्रिफला	२८१
त्रिफला पाक	२८२
नेत्ररोग की दवा	२८३
प्रदर की दवा	२८३
तथा १,२,३,४,	२८३-२८४
थूहर	२८४
सन्निपात की दवा	२८५
जलोदर की दवा	२८५
वायुरोग की दवा	२८६
जोड़ों की पीड़ा में	२८६
अजीर्ण और मन्दाग्नि आदि की दवा	२८६
दवना	२८७
दशमूल	२८७
दाख	२८८
रक्तस्राव की दवा	२८९
अरुचि की दवा	२८९
दुद्धी	२८९
दूब	२९०
खुजली की दवा	२९०
बवासीर की दवा	२९०
देवदारु	२९१
धतूरा	२९१
बिवाई की दवा	२९२
मसूड़े की दवा	२९२
पग फूटनी की दवा	२९२
पीपल	२९३
खाँसी और ज्वर में	२९४
मन्दाग्नि की दवा, निद्रा के लिये	२९४
पुनर्नवा गदहपूर्ना	२९४
वायुनाशक प्रयोग	२९६
तिमिर रोग की दवा	२९६
सर्प काटने पर	२९७
वायुगोले की दवा	२९७
फालसा	२९७

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

विषय	पृष्ठ	विषय	पृष्ठ
धनियाँ	२९८	तथा अन्य	३२०
नागरमोथा	२९९	हाथ पाँव की जलन में	३२१
नारियल	३००	नेत्रों की ज्योति बढ़े	३२१
नारंगी	३०१	श्वास खाँसी की दवा	३२२
नींबू	३०३	बादाम	३२२
नीम	३०४	बायविडंग	३२३
नील	३०७	तथा १, २, ३,	३२४
पटोल या परवल	३०८	बाँस	३२४
पान	३०८	बिजौरा	३२५
प्याज	३११	वातशूल की दवा	३२६
धातुपुष्टि की दवा	३१२	ब्रह्मदंडी	३२६
नेत्रहितकारी सुर्मा	३१२	मडूक पर्णी	३२७
श्वेत दागों पर	३१२	बाबची	३२८
पित्तपापड़ा	३१३	श्वेत कुष्ट की दवा	३२९
मसूरिका पर	३१४	बालछड़	३२९
ज्वर की दवा	३१४	बाराही कन्द	३३०
पवाँर	३१४	बाँदा	३३१
दाद और खुजली की दवा	३१५	बोल·बीजाबोल	३३२
छीप की दवा	३१५	बेर	३३३
पालक	३१५	बबूल	३३४
दाद की दवा	३१६	मुसलमान हकीम	३३५
बनपसा	३१६	अंग्रेजी दवा में	३३५
खाँसी की दवा	३१६	धन्वन्तरी निघन्टु	३३६
बरगद	३१७	मुखपाक या जीभ की जलन पर	३३७
धातुपुष्ट की दवा	३१८	सूजाक की दवा	३३७
स्तनो को कड़ा करना	३१९	बीर्य को गाढ़ा करे	३३७
खुखण्डी की दवा	३१९	मूत्र कृच्छ्र की दवा	३३७
बहेड़ा	३१९	रक्तस्राव की दवा	३३७
अफरा की दवा	३२०	कुष्ट की दवा	३३७
नेत्ररोग में	३२०	हाथ पाँव में अधिक पसीना आने की दवा	३३८
तथा	३२०	बालक के चिनग की दवा	३३८

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

विषय	पृष्ठ
वंशलोचन	३३८
बच	३३९
गुल्म शूलकी दवा बनाना	
वचादि चूर्ण	३४०
बिरोजा	३४०
बेल	३४०
ज्वर की दवा	३४१
आँख की दवा	३४१
दस्त संग्रहणी की दवा	३४१
गुल्म रोग की दवा	३४१
सर्प काटने पर	३४२
बहरेपन की दवा	३४२
पेट के कृमि पर	३४२
अतिसार की दवा	३४२
देह की दुर्गन्धि दूर हो	३४२
हैजे की दवा	३४३
देह की जलन पर	३४३
भाँग	३४३
१ से ९ तक नुस्खे	३४४
१० से १३ तक	३४४
भिलावा	३४५
भिंडी	३४६
वीर्यदोष की दवा	३४७
सुजाक की दवा	३४७
भुइँ आँवला	३४७
१ से ६ नुस्खे	३४८
महाराष्ट्री	३४९
खाँसी की दवा	३४९
जीभ की सूजन में	३४९
मंजीठ	३४९
लक्ष्मीविलास तैल बनाना	३५०
दाँत दर्द में	३५१
मस्तक की पीड़ा में	३५१
खुजली और फोड़े की दवा	३५१
मसूर	३५२
मुँह आने पर	३५२
बिगड़ हुए घाव की दवा	३५२
बरसाती दाने (फोड़े) की	३५३
झाईं की दवा	३५३
मरिच	३५३
नेत्ररोग में	३५४
खाज और फोड़े की दवा	३५४
मूली	३५४
कर्ण रोगों में मूलीका तेल	३५५
गला बैठने पर	३५५
कंठमाला की दवा	३५५
दाद की दवा	३५५
जलंधर की दवा	३५६
खूनी बवासीर की दवा	३५६
पेशाब की पथरी	३५६
बिच्छू काटने पर	३५६
मुण्डी, महामुण्डी	३५६
मेथी	३५७
लकवा पर	३५९
मर्यादवेल	३६०
१ से ८ तक नुस्खे	३६२
मटर	३६२
झाईं की दवा	३६२
सूजन पर	३६२
मूसाकर्णी	३६२
१ से ६ तक नुस्खे	३६३, ३६४
दाँतों के कीड़े मर जायँ	३६४
मालकाँगनी	३६४
१ से ५ तक नुस्खे	३६४

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

विषय	पृष्ठ
सूँगा	२६५
बहरेपन की दवा	३६५
औषधियाँ	३६५
मकोय	३६५
सूजन की दवा	३६६
तिल्ली की दवा	३६६
जुकाम की दवा	३६६
नेत्र रोग में	३६७
मुख कंठ की सूजनपर	३६७
जलोदर की दवा	३६७
मैनफल २ मदन	३६७
प्रसव के लिये	३६८
सिर दर्द की दवा	२६८
फोड़ें की दवा	३६८
अन्न में कीड़ें न लगें	३६९
सोर गखा	३६९
अतिसार का दवा	३६९
बवासीर की दवा	३६९
शिर दर्द की दवा	३६९
तथाच	३७०
महाशतावरी	३७०
महुआ	३७१
मिरगी की दवा	३७१
पागल कुत्ता काटने पर	३७१
वात रोगों में	३७२
राई	३७२
रामफल	३७२
रेंड़खाबूज	३७३
रीठा	३७३
अधकपारी की दवा	३७४
वमन की दवा	३७४
लोध	३७४
बच्चे को नाभि व ठुड्ढी पकनेपर	३७५
गर्भ रक्षा	३७५
लहसन	३७६
कान की सूजन पर	३७६
बहरेपन की दवा	३७६
कई रोगों की दवा लहसन कल्प	३७६
वायु रोग में	३७६
लहसन पाक समस्त वायु रोग की दवा	३७७
गुदा की सूक्ष्म कृमि नाश होवे	३७८
आमवात की दवा	३७८
लिसोड़ा	३७९
लवंग	३७९
गर्भवती स्त्रियों की उल्टी में	३८०
नजले की दवा	३८०
तथ च	३८०
लवंगादि चूर्ण	३८१
लाल मिरचा	३८१
शतावर	३८३
सरुहालू	३८४
कुत्ता काटने पर	३८५
सर्प बिच्छू दूर हों	३८५
स्वप्नदोष का दवा	३८५
सरेसाम की दवा	३८५
बात रोग की दवा	३८६
सनाय	३८६
नष्ट आर्तव में १,२,३;	३८७
जलंधर की दवा	३८७
त्वचा का रंग बदले	३८७
सरफोंका	३८७
बवासीर की दवा	३८७
सहजना	३८८

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

विषय	पृष्ठ
घोरपीड़ा में	३८९
तथाच	३८९
शिर दर्द में	३८९
सम्मतियाँ	३८९
तन्द्रा और अतिनिद्रा में	३९२
सोंठ	३९२
ज्वरमें स्वाँस का उपाय	३९३
सौंफ	३९४
जोड़ों के रोगों की चिकित्सा में	३९५
सर्व शरीर की हड़फूटन को दूर करे	३९५
सिंघाड़ा	३९५
नुस्खे १, २, ३,	३९६
हल्दी	३९६
बन हरिद्रा (बन हल्दी)	३९७
कपूर हल्दी	३९८
दारु हल्दी	३९८
नुस्खे १,७३९९,	४००
हर्रे	४००
बालक के ज्वर की दवा	४०१
मूत्रकृच्छ्र की दवा	४०१
ज्वर सन्निपात की दवा	४०१
हंसराज	४०२
नासूर की दवा	४०२
नुस्खे १, २,	४०२
कुत्ता काटने पर	४०३
कवची यन्त्र	४०३
लवण यन्त्र	४०४
दौला यन्त्र	४०४
बालुका यन्त्र	४०५
विद्याधर यन्त्र	४०६
गर्भ यन्त्र	४०७
गौरी यन्त्र	४०७
संखिया का फूल उड़ाना	४०९
मुर्गाके का प्याला बनाना	४१०
प्रदर की दवा	४११
विरोजे का तेल निकालना	४११
खूनी बवासीर की दवा	४१२
भस्मक रोग की दवा	४१३
ज्वर नाशक दवा	४१३
तिमिरादि रोग की दवा	४१३
चन्द्रोदय का सेवन	४१४
रसकपूर	४१५
रसकपूर सेवन का नियम	४१५
रससिन्दूर की क्रिया	४१६
रससिन्दूर सेवन विधि	४१६
परिशिष्ट-चिकित्सा	४१७
धातु क्षीणता पर जल का व्यवहार	४१७
दूसरी विधि	४१८
३,४,५,६,७, तक	४१९
वायु चिकित्सा	४२१
धूप-चिकित्सा	४२२
पथ्यापथ्य विचार	४२५
धातुक्षीणता रोग पर कुछ	४२५
आयुर्वेद के चुटकिले नुस्खे	४२७
मक्खन का गुण	४३०

॥ इति ॥

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

❁ श्रीगणेशाय नमः ❁

बृहद् बूटी प्रचार वैद्यक

(जड़ी बूटियों द्वारा चिकित्सा का अपूर्व संग्रह)

अंकोल

इसे संस्कृत में अंकोट, दीर्घकील, अंकोल और निकोचक कहते हैं। हिन्दी में ढेरा, टेरा, अँकोल। बंगला में घल, आकोर। मराठी में आंबुल। तेलगू, उड़ीके। गुजराती में अंकोल और अँग्रेजी में एलोन्जियम लेमारकी आय कहते हैं।

यह कटु, तीक्ष्ण, स्निग्धोष्ण, कषैला, हल्का रेचक और विषघ्न गुणोंवाला होता है।

इसको प्रयोग करने से कृमि, शूल, आम, सूजन, ग्रह पीड़ा, विसर्प और कफजन्य रक्तपित्त, रोग अच्छे होते हैं। इससे सर्प और मूसे का विष दूर होता है।

इसका फल शीतल, स्वादु, कफनाशक, पुष्टिकर्ता, भारी, बलकारी और रेचक है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

यह वात, पित्तजन्यदाह, क्षय-रोग और रक्तदोष को भी निवारण करता है।

ज्वर की दवा

अंकोल वृक्ष के जड़ की छाल को ५० ग्रेन की मात्रा में लेकर काढ़ा कर देने से ज्वर शान्त हो जाता है और इससे उल्टी भी होती है।

इसकी छाल बहुत कड़वी होती है। त्वचा पर रखने से बहुत ही असर करती है।

पेट के कीड़े दूर हों

अंकोल की जड़ का रस काढ़ा करके पीने से जुलाब लाता है और पेट के कीड़ों को मल द्वारा बाहर निकाल देता है।

यह जलंधर रोग में भी काम आता है तथा इसकी जड़ को पीसकर पिलाने से सर्प काटने का विष उतर जाता है।

यदि शरीर के किसी सन्धि में (जोड़ों में) दर्द हो तो अंकोल वृक्ष की पत्ती लाकर उसकी पुल्टिश बना लेवे और उस पुल्टिश को उस स्थान पर बाँधे तो दर्द जाता रहता है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

अगस्त

इसे संस्कृत में अगस्त्य, वंगसेन, मुनिपुष्प और मुनिद्रुम कहते हैं। हिन्दी में अगस्तिया और हथिया नाम है। बंगला में वक, मराठी में हदगा, गुजराती में अकथियों, तेलगू में अनीसे, तामिल में अगंति। लाटिन में लार्ज फ्लावर्डए गेडी और-अंग्रेज़ी में ग्रांडी फ्लोर कहते हैं।

इसका वृक्ष लम्बा होता है और इस पर पत्तीवाली बेल अधिक चढ़ती है। इसके पत्ते इमली के समान छोटे होते हैं और इसका फूल सफेद पीला लाल और काला इस प्रकार चार जाति का होता है। यह केसूला के फल के

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

समान बाँका और उत्तम होता है। इसकी फली लम्बी, पतली और चिपटी होती है।

गुण में—यह शीतल, सत्व, वातकर्ता और कड़वा है।

इसके सेवन से पित्त, कफ, चातुर्थिक ज्वर और शिर का दर्द दूर होता है।

शिर दर्द की दवा

अगस्त के पत्तों का रस निकालकर नाक में दो तीन बूंद टपकाने से छींक आवेगी और नाक से पानी निकलेगा जिससे मस्तक की पीड़ा और भारीपन दूर हो जाता है।

अगस्त के फूलों का शाक बनाकर खाया जाता है। इसकी छाल पाचनशक्ति को बढ़ाती है। इसके पत्तों को गरम जल में भिगोकर देने से जुलाब आता है।

आँख में जाला पड़ने की दवा

अगस्त के फूल का रस आँख में डालने से जाला दूर होता है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

अजवायन

इसे संस्कृत में यवानिका, उग्रगंधा, ब्रह्मदर्भा, अजमोदिका, दीप्यका दीप्या और दवसाह्वया कहते हैं। हिन्दी में अजवायन, बंगला में अयमानी. मराठी में ओंवा, क० ओंडु, गु० यवान, जवाइन, वोडी, अजमों, तै० वायु, ता० अमन, फा० नानखाँ और अँग्रेजी में ओयमप्लन कहते हैं।

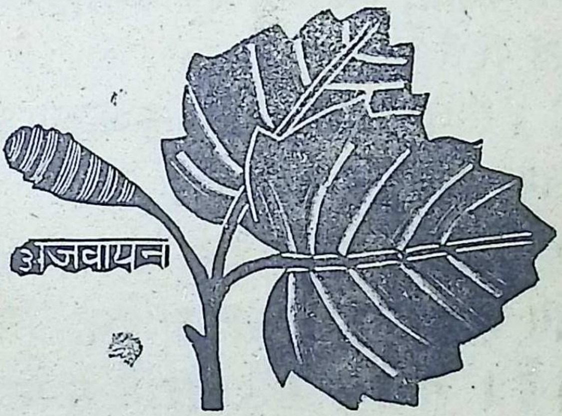

गुण—इसका रस चरपरा और तीक्ष्ण है। यह अग्नि दीपक और कफ तथा वात के रोगों में अत्यन्त लाभदायक है। यह उष्णो-वीर्य, दाह कर्ता, हृदय को हितकारी, वृष्य, बलकारी, हल्का नेत्र रोग हितकारी, कफ विकार नाशक, वमन, हिचकी और वस्ति (मसाने) की पोड़ा को दूर करती है। इसकी प्रतिनिधि सौंफ है अथवा पार्वता

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

अजमोदा है। इसके फल की मात्रा नौ माशे है। और काइ का फूल तथा मस्तगी इसका दर्प नाशक है।

(१) अजवायन में मिरचों अथवा राई की तीक्ष्णता, चिरायते की कड़वास और हींग का ऐंठन बन्द करना, वादी को दूर करना, यह तीन गुण एकत्र रहते हैं।

(२) संधियों के दर्द में—अजवायन का तेल मालिश करना लाभप्रद है।

(३) पेट की पीड़ा में—अजवायन, सेंधा नमक, हींग और हरड़ मिलाकर देना अत्यन्त लाभकारी है। तथा इससे शरीर में से निकलता हुआ प्रवाह बंद होता है और इसका पानी अंजन वगैरह बनाने में उपयोग किया जाता है।

(४) फेफड़े के और गले के पास नली में सूजन आ गई हो और कफ अधिक निकलता हो तो अजवायन देने से बन्द हो जाता है और अजवायन को पीस उसकी पुल्टिश बाँध देने से दर्द बिलकुल नष्ट हो जाता है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

(५) अजवायन बदहजमी और दस्त की बीमारी में अत्यन्त उपयोगी है। तथा खराब स्वाद वाली दवा अजमोद के पानी के साथ देने से उल्टी आने की सी शंका नहीं होती है इससे ये सब दवा पेट में शूल होने की सी शंका को बन्द करती और लार अधिक निकालती है।

(६) अजवायन खाने से पाचन शक्ति बढ़ती है। यह भूख प्रदीप्त करनेवाली है।

(७) सुश्रुत संहिता में अजमायन को बात कफ नाशक, अरुचि नाशक, दीपन, गुल्म शूल नाशक और आमपाचक कहा गया है।

सफेद कुष्ट की दवा

अजमोद पहले दिन चार माशे फिर एक माशे प्रतिदिन अधिक करके प्रातःकाल शीतल जल के साथ फाँके यहाँ तक कि आठ माशे तक पहुँचा देवे। यदि दो मास में गुण प्रकट न हो तो तीसरे मास में एक माशे वायविडङ्ग नित्य खावे और वादी वाली चीजों को न खावे। चने की रोटी खाना गुणदायक है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

तथाच—

अजमोद दो भाग, गेरू एक भाग कूट छान कर दो माशे नित्य खावे और बिना घृत के अलोनी रोटी खावे तो सफ़ेद कुष्ट (वहकुष्ट) जो बाह्य त्वचा में उत्पन्न होते हैं और मांस तथा त्वचा के भीतर भी प्रवेश कर जाते हैं, अच्छा हो जावे।

उपदंश अथवा गर्मी की दवा

खुरासानी अजवायन, अकरकरा, मुर्दाशंख और झँझर को फली एक माशे पीसकर बरेकी लकड़ी की आँच पर धूनी ले।

जोड़ों में दर्द होने पर तेल

अजवायन को पीसकर मीठे तेल में (तिल्ली के तेल में) मिलाकर जहाँ दर्द हो मालिश करे तो सब प्रकार का बादी दूर होता है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

अडूसा

इसे संस्कृत में वासक, वासिका, वासा, भिषङ्माता, सिंहिका, सिंहास्य, वाजिदंत, आटरूप, वृषताम्र और सिंहपर्णी कहते हैं। हिन्दी में अड़ूँस, रूसा, बासा। बंगला में बासक। मराठी में अडूलसा, तैलगू में आड़ासोरे, वाडायाकु; तै० अघ-घोड़े, गुजराती में अरडूसी ला० आधारोढ़ा, वासीका।

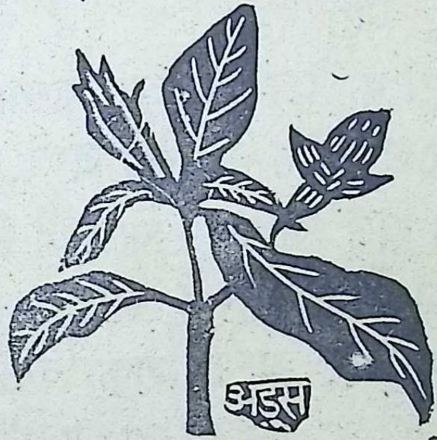

यह एक क्षुप जाति की वनस्पति है। यह एक या डेढ़ गज की ऊँचाई में होता है। इस वृक्ष के लम्बे पत्ते अनीदार आमने सामने चक्कर में होते हैं। इसका फूल सफेद रंग का नागफेन के समान होता है और फल मोंगरा के समान होता है। इसमें से पिस्ते के समान चार फल निकलते हैं और वह चपटे होते हैं। इसके दो भेद हैं। काला

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

और सफेद। यह बड़ा कटु होता है इससे इसे १० वर्ष से कम आयुवाले को नहीं देना चाहिए।

गुण—यह वातकारक, स्वरशोधक, कड़वा, कषला, हलका और शीतल है। यह कफ को बढ़ाता, रक्तपित्त, तृषारोग, श्वांस, खांसी, ज्वर वमन, प्रमेह, कोढ़, और दाय इन रोगों को दूर करता है तथा दाँतों को मजबूत करता है। इसके पत्ते और फूल प्रयोग में लिये जाते हैं।

(१) राज निघंटु में लिखा है कि अडूसे के वृक्ष की छाल में कड़वास है और छाल पत्तों को दीपन, रोचक और आमनाशक वर्णन किया है और इन गुणों के कारण यह पुरानी संग्रहणी और कफ के ऊपर दिया जाता है। छालका क्वाथ (काढ़ा) दो से लेकर तीन औंस की मात्रा में देने से बदहजमी दूर होती है।

(२) अडूसे की छाल को ज्वर की बीमारी में काढ़ा करके देने से पर्याप्त लाभ होता है और प्रसव होने के बाद स्त्रियों को देने से (छाल तथा

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

पत्तों का काढ़ा) अद्भुत लाभ होता है।

हृद्रोग की दवा

अडूसे का छोटा पेड़ जड़ पत्तों सहित छाया में सुखाकर कूट छान फंकी बनाकर एक हथेली भर नित्य खाए तो हृदय की समस्त शिकायतें दूर हों।

दांत दर्द की दवा

अडूसे के पत्ते औटाकर कुल्ले करे तो दाँत और मसूड़ों का दर्द दूर हो जाता है।

भगंदर रोग की दवा

अडूसा के पत्ते पीसकर उसमें थोड़ा लवड़ मिलाकर भगंदर के घाव पर छिड़के तो शीघ्र लाभ हो।

अरंड

संस्कृत में एरड को आमंड, चित्र, गन्धर्व, हस्तक, पंचागुल, बर्द्धमान, दीर्घदण्ड, अदंदक, वागरि, तरुण और सबूक कहते हैं। हिन्दी में अन्ड, अरन्ड, अन्डौआ। व० शुक्ल एरन्डम्वारेन्दा। म० एरड्डू आंडलके, गु० एरन्डो, तै० आमुडासु,

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

अ० खरूप, फा० वेदअञ्जीर, तुरकी० करचक, ला० रिसिनस और अँग्रेजी में कैस्ट्राइल कहते हैं।

यह लाल और सफेद दो जाति का होता है। अरंड का वृत्त मंजरी युक्त, पुष्पहस्तपर्णी और चित्रविचित्र फलवाले होते हैं। इसके प्रत्येक डोंड़ों में तीन तीन तीन अंडी निकलती है और वे डोंड़े काँटेवाले अथवा बिना काँटे के भी होते हैं और उनके ऊपर बहुत से रुआँसे-रुआँसे होते हैं।

गुण—दोनों प्रकार के अरंड मधुर, गरम और भारी होते हैं। अरंड के पत्ते वातनाशक,

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

कृमिनाशक और रक्तपित्त का कुपित कर्ता है। इसके फल अत्यन्त गरम, वातनाशक, चरपरे और अत्यन्त अग्निदीपक हैं।

दोनों प्रकार के अरंड, शूल, सूजन, कमर और मस्तक रोग, उदर रोग, ज्वर, व्रण (वद) श्वास, कफवृद्धि, अफरा, खांसी, कोढ़ और आमवात रोगों को नाश करता है।

अरंड के पत्ते मूत्रकृच्छ्र रोग को नाश करते हैं और इसके आगे के कोमल-कोमल पत्ते गोला, वास्तिशूल, कफ, वादी, कृमि और सात प्रकार की अंडवृद्धि को दूर करते हैं। अतएव गोला, शूल, यकृत, प्लीहा, उदररोग और अर्शरोग में इसका फल देना चाहिए।

अरंड की मज्जा (बीज के अन्दर का सफेद बीज) वादी, कफ और उदररोग को नष्ट करता है। इसकी जड़ पत्ते, तेल और बीज सभी प्रयोग में लाये जाते हैं। इसकी सेवन की मात्रा दो माशे की है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

दवायें

(१) अंडी के तीन बीज या छः बीज अथवा नौ बीजों को पीस शहद में मिलाकर चाटे तो कफ और वात को निकलकर उस प्राणी की देह शुद्ध हो जावे।

(२) अंडी को लोहे की सलाई में छेदकर जलाकर कज्जल पाड़े तो जिसको नींद न आती हो उसको नींद आवे और त्रिदोष रूप सर्प को मारने में यह गरुड़ के समान है। यह हृदय को अत्यन्त अप्रिय है इसका दर्पनाशक कतीरा है और प्रतिनिधि मूली के बीज अथवा निर्गुण्डी के बीज हैं।

बवासीर की दवा

अरंड के पत्ते जल में औटाकर बफारा लें

वायु शूल की दवा

अरंड की जड़ और सोंठ प्रत्येक साढ़े तीन माशे, हींग सोंचरनोन प्रत्येक एक माशे, सोंठ और अरंड की जड़ तीन पाव पानी में औटाये।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

जब आधा पाव रहे तो छानकर पहिले हींग और नोन को बारीक पीस कर गोली बनाकर लें। फिर ऊपर से काढ़ा पीवें।

वायु और पेट की पीड़ा में

अरंड की लकड़ी जलाकर उसकी राख को एक फकी लेने से दर्द जाता रहता है।

तथा च

अरंड की जड़ तीन तोले चार माशे और हरी हा तो छः तोले आठ माशे लेकर आधा सेर जल में औटावें जब चतुर्थांश शेष रहे छान-कर अरंडी का तेल दो तोले और हींग तीन माशे सबको मिलाकर गुनगुना २ पीवें तो वह वायुशूल जो प्रकृति के साथ सर्दी से होवे तो अजीर्ण सहित दूर हो जावे।

कमर की पीड़ा में

अरंड का बीज, सेंधा नमक, देवदारु की लकड़ी प्रत्येक एक तोला, हींग छ माशे गेहूँ का आटा आध पाव सबको परस्पर पीस मिलाकर

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

रोटी पकावे जब एक ओर पक जाय तो उसे पीड़ा के स्थान पर बाँधे।

नासूर की चिकित्सा में

अरंड की नवीन कोंपल (हरी, कच्ची, कोमल पत्तियाँ) को लाकर उसे पानी में पीस डाले, फिर मेंहदी की तरह लगावे।

अग्नि से जलने पर

अरंड के पत्तों का रस या धावा के फूल जलाकर सरसों के तेल में मिलाकर लगावें तथा अरण्ड की सफेदी मीठे तेल में मिलाकर लगावे॥

अतीस

विषा, अतिविषा, विश्वा, शृङ्गी, अरुणा, शुक्लकंदा, उपविषा, भंगुरा और घुणवल्लभा इसके संस्कृत नाम हैं। हि० अतीस, बं० आतइच, म० अतिविष, गु० अतिवखीनकली, क० अतीविषा तै० अतीवासा, ला० एकोनाइटस् हैटरोफाइलम् कहते हैं।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

यह एक क्षुप जाति की औषधि है जो करेले के शाक के समान होती है। इसके नीचे कंद होता है और यह तीन जाति को होती है।

अतीस का गुण गरम, कटु, तिक्त, पाचनी और दीपनकर्ता है। यह पुराने ज्वर में, अतीसार में, आमवात में, विष, खाँसी, वमन और कृमि-रोग में परम गुणकारी है।

अँतरिया ज्वर की दवा

अतीस का चूर्ण कुनेन के समान है। इसकी

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

मात्रा ५ माशे से लेकर ३॥ माशे तक की मानी जाती है।

अतीस तीन प्रकार की-सफेद, लाल और काली होती है। रस वीर्य और विपाक में तीनों ही समान हैं, परन्तु सफेद जाति की अतीस उत्तम होती है।

अदरक

इसे संस्कृत में आर्द्रक, शृंगवेर, कटुभद्र और आद्रिका कहते हैं। हि० अदरक—ख, बं० आंदा, म० आलें, क० अल्ले गु० आदु, फा० जंजवीलता, अरबी, जजवीलरतब, अंग्रेजी जिंजर ला० जंजीवर आफीसिनेली कहते हैं।

यह गुल्म जाति की बनस्पति का कन्द है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

यह रेतीली जमीन में जल के किनारे बहुत होती है। यह रस में कटु गुण में तीक्ष्ण, रुक्ष, भेदक, भारी, अग्निदीपक, उष्ण, पाक में मधुर और वात कफ नाशक है। जितने गुण सोंठ में होते हैं उतने ही अदरक में भी होते हैं।

भोजन के पहले अदरक और सेंधा नमक का सेवन सदैव करना चाहिए। यह अग्नि को दीपन करती है, रुचिवर्द्धक और जिह्वा और कंठ को शोधन करता है।

कुष्ट, पांडु, मूत्रकृच्छ्र, रक्तपित्त, व्रण, ज्वर और दाह इन रोगों में तथा गरमियों और शरद्-ऋतु में अदरक का सेवन वर्जित है। इसको मात्रा दो माशे की है।

दाँत के दर्द में

अदरक के पत्तों पर नमक छिड़ककर पीड़ा युक्त दाँतों के बीच में रक्खे तो सर्दी की दन्त पीड़ा दूर हो।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

आधा शीशी की दवा

अदरक को थोड़े से पानी में पीसकर छान ले और तीन बूँद नाक में टपकाये और सूर्य की ओर मुँह करके बैठे तो अधकपारी दूर होवे।

अदरक-पाक

अदरक १ सेर लेकर उसके छिलके उतार पिट्ठी बनावे अनन्तर दो सेर दूध में खोवा करे फिर आधा सेर घी मिलाकर उसे भून ले। पश्चात दो सेर कन्द अथवा शक्कर की चाशनी कर पाक बनावे। फिर मिर्च पीपर, पीपला मूल, चित्राक, नागकेसर, मोथा, पत्राज, और दालचीनी यह सब एक-एक तोला भर डाल दे। यह अदरक पाक दो तोला से एक छटाँक नित्य सेवन करे तो कमर पांवों की पीड़ा दूर होवे और शीत, पित्त, व खाँसी श्वास बस रक्त-गुल्म क्षीणता इन रोगों में हितकारी है। यह दीपन-पाचन और जठराग्नि को बढ़ाने वाला है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

अनार

इसे संस्कृत में दाडिम, करक, दंतबीज और लोहितपुष्पक कहते हैं। हिन्दी० अनार, गु० दाड़यम्, क० दालिंब, तै० दालिंबाकाया, दानिमचेट्टु ता० मादलई चेड्डि, उड़िया दालिंब अ० रुम्मान और इङ्गलिश में पोमग्रानेट कहते हैं।

यह मीठा, खट्टा और खटमिट्ठा तीन प्रकार का होता है। अनार त्रिदोषहर है और प्यास, दाह, ज्वर, हृदयरोग, कंठरोग और मुख की गंध को नष्ट करता है। यह तृप्तिकर्ता, शुक्रकर तथा हल्का, कषायरस, ग्राही, स्निग्ध, स्मरण शक्ति वर्द्धक और बलकारक है। किन्तु खट्टा और मीठा अनार अग्नि को बढ़ानेवाला, रोचक और थोड़ा पित्तजनक है। और केवल खट्टा अनार पित्तकारी वात कफ नाशक है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

अनार के रस को केसर के साथ मिलाकर शीतल प्रयोग में देने की प्रशंसा है। दस्त और कब्जियत की शिकायत न हो तो नेत्रपीड़ा में अनार की पत्ती पीसकर टिकिया बनाकर सोने के समय नेत्रों पर बाँधे।

अँतड़ी के रोग में

अनार के फल की छाल और फूल, लौंग, तज, धनियाँ और कालीमिरीच आदि खुशबूदार पदार्थों के साथ मिलाकर देते हैं।

अनार का फूल, फल और छाल भी प्रयोग में लाया जाता है और अनार के जड़ की छाल तो अन्य सर्व भागों से अधिक ग्राही है तथा—

पेट के कीड़ों को मारने की दवा

अनार के जड़ की ५ तोला छाल दो सेर पानी में डालकर आँच पर चढ़ावे जब एक सेर पानी शेष रहे तब उतार लेवे और शीतल होने पर इसमें से एक-एक प्याला आधी-आधी घड़ी में जहाँ तक सब निबट जाय तहाँ तक पीने को

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

देवे। जब कई बार इस प्रयोग को किया जाता है तो पेट से कीड़ों के निकलने की सी शंका होती है और थोड़ी ही देर में पेटके तमाम कीड़े निकल जाते हैं।

पेट की ऐंठन में

अनार के बीज और बीजों का रस पेट की ऐंठन को नष्ट करता है।

दस्त को बीमारी में

अनार के छाल का काढ़ा बनाकर उसमें थोड़ी सी अफीम डालकर देने से बहुत उत्तम लाभ होता है।

डाक्टर कर्क पेट्रीक का कहना है कि अनार के फल की छाल पाचनशक्ति को बढ़ाने को और ग्राही तथा प्राचीन मरोड़ा के रोग में उसको लौंग के साथ औटाकर देने से अन्य औषधियों से यह अधिक लाभदायक है।

चरक में लिखा है कि अनार वमननाशक और रुचि को उत्पन्न करके शरीर को उत्तेजन देनेवाला है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

सुश्रुत कहता है कि अनार वातनाशक, मूत्रदोषहर, तृषानाशक और रुचिकर है।

सर्दी के शिर दर्द में

अनार की जड़ को पानी में पीसकर शिर पर लेप करे।

मुँह आने पर

अनार और बबूल की छाल और सफेद कत्था औटाकर ग़रग़रा करे।

मसूड़ों और दाँत दर्द के लिए

अनार और अनार की कली और माजू फल एक-एक या दो-दो और सबकी बराबर मसूर पीसकर औटाकर कुल्ले करना मसूड़ों को मजबूत करता है तथा रुधिर को बन्द करता है।

कर्ण रोग में

खट्टे अनार का रस शहद में मिलाकर कान में टपकाना गरम पीड़ा को गुण करता है।

वमन में

अनार का शरबत वमन को बन्द करता है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

मीठे अनार का रस और बराबर घी चीनी की चाशनी बनाकर देवें।

स्त्री-धर्म में अधिक रक्त रोकने को

अनार का छिल्का औटाकर एक तोला पिये।

अफीम

इसे संस्कृत में खसफलक्षीर, आफूक और अहिफेनक कहते हैं। हि० अफीम, अमल, आफू, बं० अहिफेन, म० अफू, आफू, गु० अफीण, तै० नाल्लामंदु क० अफेन, फा० अफयून, तियाक अ० लेबनुलकखसखाश, ला० ओपम, अंग्रेजी ओप्यम और ग्रीक वाले ओपीआन कहते हैं।

यह मालवा, खानदेश, पटना और सिंध में बहुत होती है। यह क्षुप जाति की एक वनस्पति है। इसके फल में चीरा देने से जो रस निकलता है उसको अफीम कहते हैं।

यह गुण में शोषक, ग्राही, कफनाशक, वात वर्द्धक, पित्तजनक, आक्षेप-वातनाशक, मादक, स्वेदजनक और वेदना नाशक है।

प्रयोग—यह मूत्रातिसार, खाँसी, श्वास,

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

अतिसार और रक्तस्राव को निवारण करता है और विशेष कर जो-जो गुण पोस्ते के ढोंड़ों में होते हैं वही-वही गुण अफीम में होते हैं।

अफीम चार प्रकार की होती है। जारण, मारण, धारण, और सारण। इनके ये लक्षण हैं कि सफेद रंग की अफीम जारण है। काले रंग की मारण, पीले रंग की धारण और चित्रा-विचित्र रंग की अफीम सारण है।

जारण अफीम किये हुए भोजन को भस्म करती है और मारण मारती है। धारण अफीम अवस्था का संगटन करती है और सारण अफीम मलतोड़ देती है अर्थात् दस्त कराती है।

मात्रा—अफीम की मात्रा एक मसूर के बराबर अथवा दो मसूर या पाव रत्ती की है। अफीम को मारने वाला घी है।

नेत्र पीड़ा में

अफीम एक माशे, भुनी फिटकरी दो माशे, इमली की पत्तियाँ दश माशे सबको महीन पीसकर

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

पोटली बाँधे और पानी में भिगोकर नेत्रों पर फेरे और भीतर टपकावे।

कान के दर्द में

एक रत्ती अफीम जलाकर उसको चार चावल भस्म गुल-रोगन में घोरकर कान में टपकावे।

अमरवेल

इसे संस्कृत में आकाशवल्ली, अमरवल्ली और खवल्ली कहते हैं। हिन्दी में अमरवेल, आकाशबौंर, आकाशबँवरी। म० आकाशवेल, का० नेदमुदवल्ली, तै० इन्द्रजाल और अ० अफ्तीमून कहते हैं।

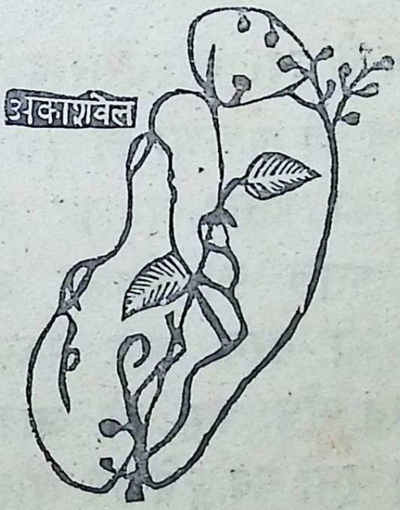

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

यह लता है। वृत्तों के ऊपर पीले रंग की सूत सी लटकी रहती है, इसीसे इसको अमरबेल कहते हैं। यह जिस वृत्त पर चढ़ती है उसको नष्ट कर देती है।

यह गुण में ग्राही तिक्त, पिच्छल (चिकनी) कषैली, अग्नि कारक और हृदय को सुख कारक है। यह पित्त, कफ, आम और नेत्र के रोगों को नष्ट करती है। इसका सर्वांश लिया जाता है। मात्रा इसकी चार रत्ती से डेढ़ तोले तक की है। इसके दर्पनाशक सेव, कतीरा, बादाम और रोगन हैं और प्रतिनिधि काली निसोथ है।

जुकाम के ज्वर और शिर दर्द में-

अमरवेल की लताओं को एक पाव लाकर महुवे के पत्तों का पत्तल बनाकर उस पत्तल पर घी लगाकर पत्तल को सेंककर अमरवेल की लताओं को भी गरम गरम सेंककर शिर पर पगड़ी की तरह बाँध कर सो जावे और पुनः अजवायन का धूनी सर्वाङ्ग में लेवे और कोई थोड़ा

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

या अधिक वस्त्र जैसा कि मौसम हो ओढ़ कर सो जावे तो जुकाम का ज्वर आदि दूर हो जावेगा।

अमलतास

इसे संस्कृत में आरग्वध कहते हैं। बंगला में सोंदाल, मराठी में बाहवा, गुजराती में गरनालो, फारसी में खियार शंबर डाक्टरी में कासिया फिसटुला कहते हैं।

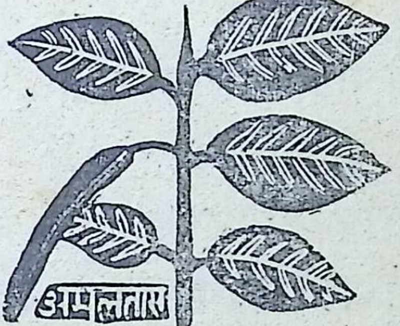

यह ठंढा है, भारी है, मधुर और दस्तावर है। इसके पत्ते दस्तावर, कफ मेदनाशक हैं और इसका फल दस्तावर, रुचिकारी, पित्त, कुष्ठ, कफ ज्वर, वात रक्त, उदावर्त और शूल को नाश करता है। इसका पेड़ पाँच पंखुरी का मधुर, शीतल, तिक्त, वीर्यवर्द्धक होता है और मल को संग्रह करनेवाला है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

अमलतास के फल का गूदा लेना चाहिये। इसकी मात्रा चार माशे को है। जुलाब में डेढ़ तोला तक डाला जाता है।

हृदय की पीड़ा में

अमलतास की कलियों को कुछ गरम कर गूदा निकाल थोड़ा बादाम रोगन के साथ मिलाकर देने से छाती की पीड़ा दूर हो जाती है। रुधिर की गर्मी कम हो जाती है।

पित्त की शान्ति में

अमलतास को इमली के साथ मिलाकर देने से बढ़ा हुआ पित्त शान्त हो जाता है।

बात रोग की पीड़ा में

अमलतास से सन्धि बात की पीड़ा शान्त होती है। जहाँ पीड़ा हो वहाँ पीस कर चुपड़ देवे।

उलटी के लिये

अमलतास के पाँच सात बीजों को पीसकर देने से उल्टी होती है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

प्रसव के लिये

अमलताश के फली के ऊपर का छाल, केशर, मिश्री और गुलाबजल के साथ पीसकर देने से स्त्रियों को तुरन्त प्रसव होता है।

फोड़े में

अमलतास की छाल और पत्तों का तेल में पीसकर फोड़ा के ऊपर लगाने से फोड़ा अच्छा हो जाता है। चरक में इसे दद्रू नाशक कहा है अर्थात् इसके लगाने से खुजली दूर हो जाती है।

दाद पर

अमलताश की हरी पत्तियाँ मलने से दाद दूर होता है।

अमलतास का वृक्ष बड़ा होता है पत्ता बड़े और द्रुमाशदार होते हैं और आमने सामने उगते हैं। इसके फूल पाँच २ पंखड़ो के हरदी के समान पीले और प्रत्येक डाली पर बहुत से होते हैं। इसकी फली एक फुट अथवा दो फुट लम्बी

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

होती है। इसके भीतर गूदा और इमली के से चीआँ निकलते हैं।

अरहर

इसे संस्कृत में आटकी, तुवरी, और शणपुष्पिका कहते हैं हिन्दी० अरहर रहर। म० तुरी, गु० तुरनी, दाल, कनाडी कटला कट्टु तोगरी, तै० कादुलु, फा० शखुल, अंग्रेजी पीजी अनपी।

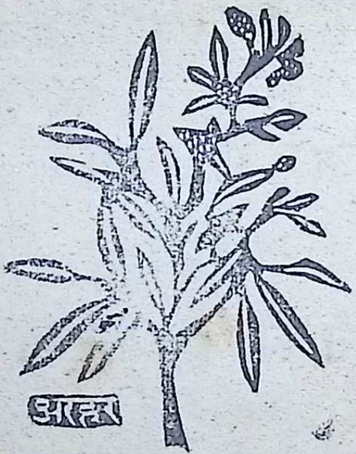

अरहर

यह गुण में कषैली, रूक्ष, मधुर, शीतल, हलकी ग्राहिणी, वातकर्ता; वर्णकारक, पित्त, कफ और रुधिर के विकारों को शान्त करती है।

फूली की दवा

अरहर की जड़ घिसकर नेत्रों में लगावे तो

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

फूली दूर हो।

सोंजिश जुबां (जीभ की जलन पर)

अरहर और मसूर की दालों को औटाकर छान के और कपूर मिलाकर कुल्ला करे। तथा (१) अरहर की पत्तियों का रस निकालकर उससे कुल्ला करे। (२) अरहर की दाल भिगोकर उसके पानी से कुल्ला करे।

हिचकी की दवा

अरहर की भूसी तमाखू के प्रकार से हुक्का वे में पीवे।

———

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

अलसी

इसके अलसी, नीलपुष्पी, पार्वती, उमा और क्षुमा से संस्कृत नाम हैं। हि० अलसी, तिसी, मसीना। म० जवस, का० असगे, तै० नल्लस गमिचेट्टु, अ० बजरुल्लू कतान, फा० तुरूमेकतान, अं० कायकफ्लेख सीड्स कहते हैं।

यह गुण में तिक्त, स्निग्ध, पाक के समय कटु, भारी, गरम, दृष्टि को बिगाड़ने वाली, शुक्र और वादी की नाशक तथा कफ और पित्त को नाश करती है।

कफ की खाँसी और स्वाँस में

अलसी और असगंध बराबर पीसकर दूने शहद मिलाकर नित्य एक तोले चाटे। तथा च—

१—भुनी अलसी आध पाव, कालीमिर्च तीन तोले लेकर तिगुने शहद में मिलाकर चाटे तो कफ युक्त खाँसी में अद्भुत लाभ पहुँचे। मिर्च के बदले पोदीना लिया जा सकता है। पोदीना न रहे तो निरा अलसी ही शहद में चाटे।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

असगंध

इसे संस्कृत में वारहकर्णी, वरदा, बलदा, कुष्टगंधिनी, हिन्दी में असगंध, नागौरी असगंध, म० आसंध का० अंगूर, आसंधिका गु० आसोद, तै० पिल्लीआंगा इ० विटरचेरी, फा० बेहमन ला० फिरेलिस सोम्नाफेरा कहते हैं।

यह गुण में बलकारक, रसायन, तिक्त, कसेली, गरम और अत्यन्त शुक्रकर्ता है। इसके द्वारा बादी, कफ, सफेद कोढ़, सूजन, रवई रोग आमवात, व्रण, खाँसी और श्वास के रोग नष्ट होते हैं।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

यह रास्ना के समान होती है और इसकी जड़ प्रयोग में ली जाती है। इसीसे अत्तार और पंसारी लोग असगंध के बदले रास्ना की लकड़ी देते हैं।

अशोक

अशोक का वृक्ष लम्बा होता है। अशोक, हेमपुष्प, वंजुल ताम्रपल्लव, कंकेलि, गंधपुष्प, और नट इसके संस्कृत नाम हैं। म० अरुपाल, गु० आसोपालव।

यह गुण में शीतल, तिक्त, ग्राही, व्रणकर्ता और कसेला है।

यह वातादि दोष, अपची, तृषा दाह, कृमि, रोग, शोथ, विष और रुधिर के विकारों को दूर करता है।

आक सफेद और लाल

श्वेत आक के ये नाम हैं। सं० अलर्क गणधूप, मंदार श्वेतपुष्प, सदापुष्प, वलार्क और प्रतापस। हि० आक, अकौवा, मदार, बंगला–श्वेत आकंद, म० रुई, गु० आकडो, तै० तेलाजन्लीड़, फा०खुर्क, अ०उषर,ला० केलाट्रोपीस, जारगारिया

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

रक्तार्क के नाम अर्कपर्ण, विकारण, रक्तपुष्प, शुक्लफल और स्टोफ। हि० आक, अकौआ आकड़ा और सब नाम श्वेत आक के ही समान समझना चाहिए।

गुण—दोनों आक दस्तावर और वायु-नाशक है।

प्रयोग—इनके सेवन करने से कोढ़, खजुली विष, व्रण, तिल्ली, गोला बवासीर, कफ, उदर रोग और मल के कृमि नष्ट होते हैं।

सफेद आक का फूल बलकारक, हल्का, अतिदीपन और पाचक है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

प्रयोग-इससे अरुचि मुख से लार का बहना, बवासीर, खाँसी और श्वास दूर होते हैं।

लाल आक का फूल—मधुर, कड़वा, कफ, नाशक और संग्राही है।

प्रयोग—यह कोढ़, कृमि, विष, रक्तपित्त, गोला और सूजनरोग में दिया जाता है। आक का दूध कड़वा, गरम, नमकीन, रसयुक्त और श्रेष्ठ विरेचन है।

इसके द्वारा कोढ़, रोग और उदर रोग नष्ट होता है।

आककी जड़ कफ को निकालनेवाली, पसीने लाने वाली और वमन कारक है। इसके सेवन करने से श्वास, खाँसी अतिसार, प्रवाहिका, रक्तपित्त संग्रहणी और कफ जन्य समस्त व्याधियाँ दूर होती हैं।

बिच्छू के मारने पर

१—आक की जड़ को या फल पत्ते किसी

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

को लेकर लेप करने से विष दूर होता है।

२-चक्रदत्त में लिखा है कि आक की जड़ की छाल देने से देह के भीतर का प्रवाह अधिकता के साथ निकलता है। त्वचा के रोग में तथा पेट के भीतर के अवयव मोटे हो गये हों या पेट के जीव, खाँसी, जलन्धर आदि रोगों में उत्तम असर करता है।

३-आकका दूध देने से तीव्र जुलाब लगता है और देह में लगाने से चमड़े लाल हो जाते हैं। इसके फूल पाचन शक्ति बढ़ाने वाले और ताकत देनेवाले हैं। पेट का दर्द निश्चयपूर्वक नाश हो जाता है। तथा खांसी स्वास सरकेफ और अरुचि में दिया जाता है इसको जड़ की छाल आकके दूध में भिगो कर सुखा लेवे, फिर इस छाल को आग में डाल कर इसकी धूनी स्वांस के साथ में लेने से खांसी जाती रहती है।

४-श्लोपद और अंडवृद्धि के रोग में

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

आक के जड़ की छाल को पीसकर लगाने से लाभ पहुँचता है।

५-आक का दूध त्वचा को लाल करके फफोला उठानेवाला, कफ को बढ़ानेवाला, बालों को नष्ट कर्ता तथा समग्र जाति के दूध सदृश रसों में सबसे अधिक तेज गिना जाता है। औषधि के तरह से दाद को मिटाता बवासीर को जड़ से नाश करता और दाँत पोले पड़ गये हों और दर्द होता हो तो इसका दूध शहद के साथ मिला कर उसमें थोड़ी सी रुई भिगो कर दाँत के नीचे रखे।

६-आक के दूध को कोढ़के रोग में तथा कलेंजा और तिल्ली बढ़ गई हो तो देने से अद्भुत लाभ पहुँचता है। इसके देने की यह रीति है कि नाज के दानों को उसमें भिगोकर सुखा लेवे और फिर उन्हें रोगी को खाने को देवे तो संधि का दर्द दूर हो और सूजन के ऊपर लगाने में दूध साधारण इलाज के तरीके पर व्यवहार में आता है। थोड़े के आक के पत्ते लेकर उसे सेंक कर बांधे।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

७-शरीर के जिस भाग में लकवा मार गया हो उसी भाग पर पत्ते तेल में सेककर उस तेल को लगावे।

८-घाव में अंकुर न आता हो तो आक के सूखे पत्तों का चूर्ण घाव पर बुरके।

९-डाक्टर एन्सली का कहना है कि आक के पत्ते और जड़ आदि में से जो दूध के समान रस निकलता है वह सुखाने के बाद देने से बहुत जल्दी जुलाब लाता है और शरीर सुधारने वाला समझा गया है। तामिल वैद्य इसे सफेद कोढ़ में अत्यन्त गुणकारी गिनते हैं।

१०-मि० फ्लेफेर लिखता है कि आक की छाल में शरीर सुधारने का, जागृत करनेका और शरीर से बिगाड़ निकालने का गुण है।

११-डा० डीमक का कहना है कि छाल की बनिस्वत दूध या रस को सुखादेने से अधिक उत्तम असर करता है। इसमें उल्टी लाने का भी गुण है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

१२-यह कृमि हर, व्रणशोधक और वात विकार नाशक है-ऐसा सुश्रुत का मत है।

आम

इसे संस्कृत में आम्र, रसाल, सहकार, अति सौरभ, कामांग, मधुदूत, मागध और पिकवल्लभ कहते हैं। हिन्दी में आम, म० आँबा, गु० आंबो, कनाडी में माविन, तै० मामाड़ी, अ० अंबा फा० अंबे, इङ्गलिश में मैङ्गोट्री कहते हैं।

आम के अनीदार और आधे से एक फुट तक लम्बे पत्ते होते हैं। फूल का बौर गुच्छेदार होता है। आम का फल जगत प्रसिद्ध एक उत्तम

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

मेवा है। औषधि में मुख्यतः इसकी गुठली काम में आती है।

गुण—आम का पुष्प (बौर) अतिसार, कफ, पित्त और प्रमेह को दूर करता है तथा रुधिर के विकार को नष्ट करनेवाला है। यह शीतल, रुचिकारी और ग्राही तथा वातल।

आम का कच्चा फल—कषैला, खट्टा, रुचिकारी, बादी और पित्तकारक है। तरुण आम अर्थात् बड़ा और बिना पका हुआ अत्यन्त खट्टा, रुक्ष, त्रिदोष और रुधिर के विकार को करता है।

अमचूर—कच्चे आम का छिल्का छील कर उसे चीर डाले और गुठली निकालकर फेक देवे तथा जो कतरे हों उन्हें सुखा डाले। फिर कूटकर चूर्ण बना लेवे, इसी को अमचूर कहते हैं।

अमचूर—खट्टा, स्वादु, कसैला, दस्तावर और कफ, वात को जीतनेवाला है।

पका हुआ आम—मधुर, वृष्य, स्निग्ध, बलकारी और सुखप्रद है। हृदय को हितकारी,

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

वातहरण कर्ता, भारी और देह के रंग को निखारनेवाला, शीतल और पित्तहरण करनेवाला है तथा रसयुक्त कसैला आम अग्नि, कफ शुक्र वर्द्धक है। आम यदि वृक्ष पर का पका हुआ होता है तो भारी, अत्यन्त बातहारक मधुर और खट्टा एवं कुछ-कुछ पित्त को कुपित करता है और जो आम थोड़ा पका हुआ होता है, वह पित्त नाशक होता है क्योंकि इसमें खट्टा रस थोड़ा और मिठास अधिक होता है। यदि यह वासित हो जाय तो परम रुचिकारी, बलकर्ता वीर्यकर्ता और हल्का है। यह शीतल, शीघ्रपाची, वात, पित्त हरणकर्ता और दस्तावर है।

आम का रस—जिसे अमरस भी कहते हैं बलकारी, भारी, बात हरणकर्ता, दस्तावर हृदय को अहित, तृप्तिकारी, अत्यन्त बृहण और कफ-वर्द्धक है तथा आम का टुकड़ा—भारी, रुचिकारी देर में पचनेवाला, मधुर, बृहण बलकारी, शीतल, बातनाशक है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

दूध के साथ भक्षण करने से आम—वात-पित्त नाशक, रुचिकारी, बृंहण, बलवर्द्धक, शुक्र संचयकर्ता और देह के रंग को निखारनेवाला है। दूध और आम अत्यन्त स्वादु, भारी और शीतल है। परन्तु अधिक आम चूसने से मन्दाग्नि, विषम ज्वर रुधिर दोष, अत्यन्त क्रोध, रोष अथवा चक्षु रोग की उत्पत्ति होती है, इसलिए अधिक आम न चूसे।

आम में जितने दोष कहे हैं वे सब कच्चे आम के दोष हैं किन्तु मीठे आम के खाने से ये सारे दोष नहीं होते। अधिक आम चूसने के पश्चात यदि सोंठ का जल पी लेवे अथवा जीरा और काला नमक भक्षण कर लेवे तो उसका अपच अतिशय जाता रहता है।

इस प्रकार आमके गुण अनेक प्रकार दर्शाये गये हैं। यूनानी मत से पक्का फल ताकत लाने-वाला, चरबी बढ़ानेवाला, खुश करनेवाला, दस्त साफ लानेवाला और मूत्र वर्द्धक है परन्तु उसकी

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

छाल और कच्चे फल का रेशा ग्राही और खट्टा गिना जाता है।

आम का अचार-पेट को शान्तिकर्ता तथा भूख को बढ़ानेवाला होता है।

कंठ के रोग में

आम के पत्तों को जलाकर इसकी धूनी गले के भीतर के अनेक रोगों को नष्ट करती है।

हैजे के प्रकोप में

आम के कच्चे फल के गूदे को सेंककर खाँड़ के साथ मिलाकर रख देवे फिर महामारी या हैजा के रोग में खिलावे तथा शरीर में लेप लगावे।

नेत्र के रोग में

आम के पत्तों की नस को जलाकर नेत्र के पलकों पर होनेवाली गुठली पर लगावे तो गुठली दूर हो।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

पेट के कीड़े दूर हों

आम की गुठली को पीसकर तीसग्रेन की मात्रा में देने से पेट के कीड़े निकल जाते हैं तथा दूखते हुए बवासीर के मस्से नष्ट हो जाते हैं।

खुजली तथा त्वचा रोग में

डाक्टर इन्सली कहता है कि आम के फल का तेल, छाल की गोंद लेकर दोनों को नीबू के रस अथवा तेल के साथ मिलाकर खुजली तथा अन्य त्वचा के रोग में लगावे तो ये रोग अच्छे हों

रक्त विकार में

पके हुए आम के रस को सुखाकर उसको पतली रोटी के समान जो बना लिया जाता है उसको अमावट या आम की रोटी कहते हैं, इसके खाने एवं निरन्तर सेवन से रक्तदोष दूर होता है।

प्रदर और धातु रोग में

आम की छाल को लाकर पानी में भिगो-

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

देवे। प्रातः उसे मीजकर जल को छानकर पी जावें तो आमदोष दूर होवेगा।

दस्त और ऐंठन में

आम के कच्चे फल के ऊपर से निकले हुए चिकने पदार्थ और अंडा की सफेदी तथा थोड़ी सी अफीम के साथ मिलाकर देने से पेट की ऐंठन और दस्त बन्द होता है।

१९५३ के अकाल में

आम की गुठली की रोटी से बहुत प्राणियों की जान बची थी।

गञ्ज रोग पर

आम के अचार का तेल जो सालभर का पुराना हो गञ्ज पर लगावें।

दाद पर

अमचूर पानी में पीसकर उसमें थोड़ा नमक मिलाकर दाद पर मले तो दाद अच्छी हो जायगी।

फुन्सियों की चिकित्सा में

अमचूर जल में पीसकर लगावे।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

आँवला

इसे संस्कृत में आमलक, आमलकी, त्रिफला और अमृता कहते हैं। हिन्दी आमेस, वं० आमलकी, म० आवले, आंवली, क० नेन्लि, गु० आमली वो० उसरकाय, फा०, आमक, आमलय, ला० फाईलेन्थस।

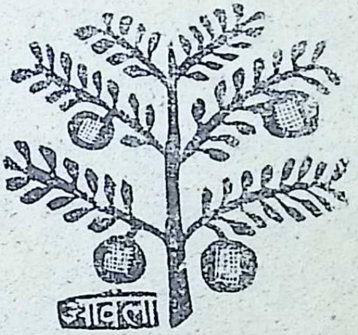

यह शाखी जाति का बड़ा वृक्ष होता है और हिन्दुस्तान में सर्वत्र मिलता है। इसके दो भेद हैं। एक बागी (बाग में होनेवाला) दूसरा जंगली। इनमें बागी उत्तम होता है। यह शरद्-ऋतु में फलता है। काशी (बनारस) में अच्छे आँवले मिलते हैं। आँवले के पत्ते छोटे-२ इमली के समान होते हैं। इसकी डालियों पर छोटे २ सई के दाने से पीले-पीले फूल होते हैं और उत्तम

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

फल फाल्गुन के महीने तक तैयार होते हैं। यह बहुधा पथरीली जमीन में होता है। और फल सुपारी के बराबर गोल आकार के होते हैं, परन्तु काशीके आँवले बहुत बड़े और सर्वत्र बहुत प्रसिद्ध हैं। इस फल के ऊपर बहुत बारीक रेखा में छः विभाग किये होते हैं और भीतर कठोर गुठली होती है। उसमें भी छः कोने से होते हैं इसका अचार लोग अधिकतर मुरब्बा बनाते हैं।

इसके रस, गुण, वीर्य और विपाकादि सब हरण के समान जाने। विशेषता केवल इतनी है कि रक्तपित्त और प्रमेह को नाश करता है, वाय-वर्द्धक और रसायन है। इसमें खट्टा रस होने के कारण यह वात का भी हरण कर्ता है और मधुर तथा शीतल होने के कारण पित्त को शान्तकर्ता तथा खट्टे रस के कारण बात को हरण करने-वाला है। मधुर और शीतल गुणों के कारण पित्त को, रूखे और कषैले गुणों से कफ को नष्ट करनेवाला है और इस प्रकार आमला त्रिदोष नाशक है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

प्रयोग में आँवले के फल की छाल ली जाती है। मात्रा इसकी चार माशे की है। और इसके अवगुण को नाशक शहद है। अर्थात् यदि आँवला सेवन करने से कोई विपरीत परिणाम होने लगे तो उसके ऊपर शहद खावे और इसकी प्रतिनिधि में हरण या आंवले का रस देवें।

आंवला सूखा, खट्टा पाक में चरपरा कषैला और मीठा होता है। बालों को बढ़ाता तथा टूटी हड्डी को जोड़नेवाला है।

श्वेत प्रदर में

आंवले का बीज पीसकर शहद और मिश्री में मिलाकर खावे।

शिर के बाल पकने पर

आंवला को लोहे में फुलाकर दो दिन के बाद सेवन करे।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

आलू

इसे संस्कृत में आरु, आलु, वीरसेन और आलुक कहते हैं। यह छः प्रकार का होता है। कष्टालुक, शंखालुक, हस्तपालुक, पिंडालुक, सप्तालुक और रक्तालुक।

कष्टालुक को हिन्दी में कठालू बं० काठ आलू। यह कठोर होता है। शंखालू को हिन्दी में शंखारू बं० शंख आलू, यह सफेदी लिये होता है। हस्तपालुक यह लम्बाई युक्त बड़ा भारी होता है। पिंडालुक गोल होता है। सप्तालुक मीठा रोमांचयुक्त और लम्बा होता है। रक्तालुक को रतालू अथवा रतड़ा कहते हैं। यह लाल रंग का होता है।

गुण—सब जाती के आलू शीतल, विष्टंभी, मधुर, भारी; मलमूत्र को प्रकटकर्त्ता, रुक्ष, दुर्जर और रक्त पित्त को नाश करनेवाले हैं। कफ और वादी कर्त्ता, बलकर्त्ता, वृष्णय और किञ्चिन्मात्र अग्निवर्द्धक है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

पाकदृष्टि से विचार करने में आलू अत्यंत पुष्टिकारक तथा खाने में स्वादिष्ट होता है। यत्न पूर्वक रखने से यह दो तीन वर्षों तक रखा जा सकता है। इसके हजम करने में कोई विषेश कठिनाई नहीं करनी पड़ती। यह सहज ही हजम हो जाता है। पर कहीं स्थान विशेष में बिलम्ब से हजम होता है। पर हजम हो अवश्य जाता है। बहुत से बेचारे गरीब, जिन्हें भर पेट अन्न खाने को नहीं मिलता वे इसी पर अपना गुजर बशर करते हैं। क्योंकि क्षुधाग्नि तो बिना भरपूर इंधन पाये शान्त होती नहीं पर इससे यह कदापि न समझना चाहिये कि केवल आलू खानेवाला अन्न खानेवाले से किसी प्रकार दुर्बल होता है। वह कभी रोगी व दुर्बल नहीं हो सकता। मांस मछली के साथ भी आलू खाया जाता है। ऐसी अवस्था में पका आलू केवल आलू से कहीं अधिक पुष्टिकारक होता है। ये सबगुण खेत में भली-भाँति पके हुए आलू ही में होते हैं। जो आलू

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

खेत में अच्छी तरह पकने नहीं पाता वह न तो पके आलू की भाँति पुष्टिकारक ही होता है और न शीघ्र पाकी हो। आलू के पाक करने में भी खूब सावधानी रखनी चाहिये। जब तक अच्छी तरह पक न जायगा तब तक वह जल्दी हजम न होगा। आलू का सार भाग अर्थात् पुष्टिकारक पदार्थ उसके छिलके के पास ही रहता है। इसलिए आलू को छीलते समय इस बात का ध्यान रक्खे कि उसके गूदे का अधिक अंश छिलके के साथ न जाने पावे। आलू को चाकू या अन्य किसी ऐसी वस्तु से न छीले जिसमें उसके छिल्के के साथ गूदे के भी जाने का डर हो। उसे पानी में उबाल कर तब छीले। ऐसा करने से छीलने में भी सरलता होती है और उसके सारभाग की भी रक्षा हो जाती है। यदि आलू पुराना हो गया हो तो काम लानेवाले दिन से पहले की रात में पानी में भिगोकर रख दे। ऐसा करने से वह पुराना आलू नये आलू के समान स्वाद और गुण से युक्त हो

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

जाता है। तरकारी की अपेक्षा भूने हुए आलू में अधिक पुष्टता होती है। जिस आलू में अंकुर फूट आता है, उसका वह गुण नष्ट हो जाता है। आलू जितना ही बड़ा और कड़ा होगा उतना ही अधिक पुष्टकारक होगा और यही आलू सर्वोत्तम माना जाता है। यही आहार के लिये विशेष लाभदायक है। जो आलू पकाने में लसदार होता है वह भी अच्छा नहीं समझा जाता। जो आलू उबालने पर भसभसाने लगे और जिसमें दाने पड़ जायँ वही खाने में पौष्टिक होता है।

आलू अत्यन्त बलकारी, स्निग्ध, गुरु और हृदय-कम्प को शान्त करने वाला तथा वीर्य को बढ़ानेवाला होता है।

जले पर

आलू पीस कर रख दो।

अरवी

इसे हिन्दी में अरवी, आई या घुइयाँ कहते हैं।

गुण—अरवी बलकारी, स्निग्ध, भारी,

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

हृदय के कफ को नाश करनेवाली, विष्टंभ कर्ता, तेल में तलकर जो बनाई गई हो वह अति रुचि-कारी है, मधुर और खुश्क होती है। इससे खांसी और हृद्रोग दूर हो जाते हैं। यह आँव और खुश्की को बढ़ाती है।

ओंगा (अपामार्ग)

इसे संस्कृत में अपामार्ग, शिखरी, अधःशल्य, मयूरक, मर्करी, दुर्ग्र, दुर्ग्रहा, किणिही और खरमंजरी कहते हैं। हिन्दी में ओंगा, चिरचिरा, लटजीरा, मा० सुफेद आंधी झाड़ा बं० आंपा, म० अवाड़ा, का० कुत्तणे, गु० अघेड़ी तै० दुचोणिके, फा० खखासगोता, इं० चेलफ्लावर ला० अचीरांथिस अस्पेरा कहते हैं।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

यह एक क्षुप जाति की बनस्पति है और बहुधा जंगलों में पायी जाती है। इसके पत्ते चौलाई के शाक के समान होते हैं। इसके फूल और फल एक लंबी डंडी में लगे हुए होते हैं और काँटे के समान अनीवाले होते हैं। ये कपड़े में चिपट जाते हैं।

गुण—यह दस्तावर, तीक्ष्ण, दीपक, कड़वा चरपरा, पाचक और रोचक होता है।

प्रयोग—यह वमन, कफ, मेदका, रोग, वायु, हृद् रोग, अफरा, बवासीर, खुजली, शूल, उदर रोग और अपची रोगमें किया जाता है। इसका सर्वाङ्ग प्रयोग होता है और इसकी मात्रा चार माशे की है।

लाल ओंगा

इसे संस्कृत में रक्तापामार्ग, वसिर, घृत्तफल, घामागत्र, प्रत्यक्पर्णी केशपर्णी और कपिपिप्पली कहते हैं। हिन्दी में लालओंगा, लाल चिरचिरा, बं० लाल आंपा म० तांबड़ा आघाड़ा का० केंपि गुत्तरणे, म० शांतो अघेड़ो।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

गुण—लाल औंगा बातकारक, विष्टंभी कफवर्धक, शीतल, और रूक्ष होता है। यह पहिले औंगा की अपेक्षा गुणों में न्यून है। औंगा के फल (उसमें जो चावल जैसा होता है) वे खाने में पचते नहीं और पाक में चरपरे तथा विष्टंभी, वातकर्ता, रूखा और रक्त पित्त को दूर करनेवाला है। मात्रा ४ माशे की है।

अगरु

इसे संस्कृत में अगुरु, प्रवर, राजार्ह योगज, वशिक, कृमिज, कृमिजग्ध और अनार्यक कहते हैं। हि० अगर, काला

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

अगर अगरसत और सब हिन्दुस्तान की भाषाओं में इसी नाम से प्रसिद्ध है। अ० फा० काशवेवबा ऊदगरकी कहते हैं इं० ईगलवुड, ला० एक्वोलेरिया ऐडोलोका।

यह परम कटु, त्वचा को हितकर, कड़वी तीक्ष्ण और हलकी है। इसका वृक्ष होता है। कान के रोग में, नेत्र के रोग में और सरदी वादी तथा कफ को नाश करने वाली है। अगरु दो प्रकार की होती है। उसमें काली अगर गुणों में अधिक गुण करनेवाली है और यह लोहे के समान जल में डूब जाती है। अगर का तेल कृष्णागर के समान गुण करता है। इसका दर्प-नाशक गुलाब है इसकी मात्रा ३ माशे की है। इसकी प्रतिनिधि में चन्दन, दालचीनी, केशर, बालछड़ और रूमी मस्तगी है।

यह खाँसी को नाश करता और सरदी को भी नाश करनेवाला है। चरक सुश्रुत संहिता में इसको वात, कफहर, वर्णप्रसादक (देह का रंग सुधारने वाला) खुजली नाशक और कुष्टनाशक

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

वर्णन किया है। अगर की लकड़ी को जल में औटाकर उस पानी के पीने से ज्वर में लगनेवाली तृषा न्यून होती है और इसे मृगी उन्मत्तता आदि रोगों में परमोपयगी गिनते हैं।

पीली अगरु

दूसरी जो पीली अगरु होती है उसकी लाल रंग देह के वर्ण को स्वच्छ करता है। पीतक, लोह, वर्णनप्रसाद, अनार्यक, असार, कृमिजग्ध और काष्टक ये काष्टागरु के नाम हैं।

काष्टागरु चरपरी, गरम लेप में रूच और कफ नाशक है।

इसी प्रकार दाहागरु होता है। यह चरपरी, गरम, बालों को बढ़ानेवाली देह के वर्ण को उजला करती, बालों के दोषों को दूर करती और देह को सुगन्धित करती है यह गुर्जर देश में प्रसिद्ध है। इसमें एक मगल्पागरु और है, गुणा गण में कुछ ही भेद है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

अरनी

इसे संस्कृतमें अग्निममंथ, जय, श्रीपर्णी, गणकारिका, जया जयंती, नादेयी और वैजयन्तिका कहते हैं। हिन्दी में अरनी, अगेतु मणियारी, म० पोर एरण, टाटला, नारवेल, गु० अरणी, तै० नेलीचट्ट, क० नरवल, ऐरणा, ता० नेलीचेट्ट, ला० क्लीरोडेंड्रम

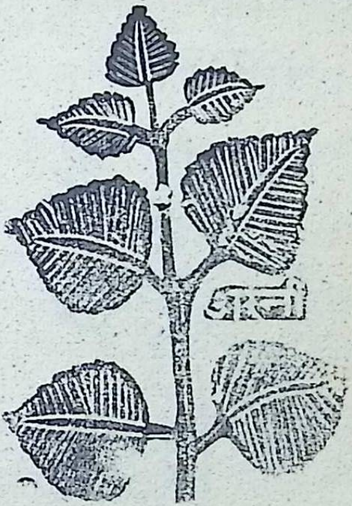

यह वृक्ष जाति की औषधि है। इसके पत्ते आमने सामने होते हैं और वे अनीदार होते हैं और उनकी जड़ में एक छोटा २ पत्ता निकलता है। इसका फूल सफेद पाँच पंखड़ी का बाहर के आच्छादन से ढका हुआ जिसमें पाँच पुरुष केशर और एक स्त्री केशर होती है। इसके फल बहुत

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

छोटे-छोटे और गोल होते हैं।

अरनी उष्णवीर्य, चरपरी, कड़वी, कषैली, मधुर, अग्निवर्द्धक, कफनाशक और वातनाशक होती है। यह सूजन और पाण्डुरोग को दूर करती है।

अकरकरा

यह एक प्रकार का पौधा है जो लगभग दो बालिश्त से ऊँचा होता है इसके पत्ते का आकार प्रकार पान के पत्ते के समान होता है इसकी जड़, पत्ता और डंठो भी औषधि के प्रयोग में आती है।

गुण में यह कटु, तीक्ष्ण, स्निग्धोष्ण, कषैला

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

रेचक और विषघ्न है। इसके पत्ते का रस निचोड़ कर सफेद कुष्ट पर कुछ दिनों तक लगाने से रोग दूर हो जाता है।

अर्द्धाङ्गवात की दवा

इसकी डंटो सुखाकर महुये के तेल में मिलाकर लगाने से अर्द्धाङ्गवात, लकवा एवं वायु के अनेक रोग दूर होते हैं। नसों का दर्द एवं झिनझीनी भी इससे दूर होती है। इसकी जड़ को पीसकर दाँतों में मलने से दाँत का दर्द दूर होता तथा जीभ में मलने से बच्चे का हल्कापन दूर हो जाता है।

४ अकरकरा के चूर्ण को शहद में मिलाकर सुँघाया जाय तो मृगीरोग दूर हो जावेगा।

५—अकरकरा, माजू, सिंगरफ, सुहागा और कच्चे हर्रको ४-५ माशा लेकर कूटकर पानीमें मिलाकर उसके चार भाग कर डाले पुनः रात्रि में निश्चित होकर बारी-बारीसे उन चारों हिस्सोंको तम्बाकूके समान चिलम पर रखकर रातभर में पी

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

डाले। स्मरण रहे नींद न आने पावे। प्रातःकाल होने पर ठंडे जलसे स्नान करके घी को सूखी, गेहूँकी रोटीके साथ खावे। इस औषधिसे गर्मी बहुत मालूम पड़ेगी और कै भी होगी, परन्तु व्यग्र न होना चाहिए। एक ही बार ऐसा करने से भयंकर बाद फिरंग (खुश्की) दूर हो जायेगा।

दाँत दर्द की दवा

अकरकराको दाँतों में दावे रहे तो सर्दी से दाँत में होने वाला दर्द शीघ्र दूर हो जावे।

———

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

अखरोट

इसे संस्कृत में पीलु, अक्षोठ, और कर्पराल कहते हैं। इसके गुण बादाम के समान जानना। यह कफ और पित्तवर्द्धक है।

यह शाखा जातिकी वनस्पति है। पर्वतों में उत्पन्न होती है। हि० अखरोट, बं० अखरोट, म० अक्रोट, कोंकणमें अखोड, द्राविणमें डब्बकाई, अरबी में जोज, फा० फिरदगां, चारमग्ज़, इंग० नट कहते हैं।

यह एक वृक्षका फल है। इसका वृक्ष बड़ा होता है। पत्ते चौड़े और कुछ लम्बे तथा कुछ कुछ मोटे होते हैं। फलके ऊपर तीन छिल्का होते हैं। पहिला हरा और मोटा। स्वाद में कषैला और कड़वाई लिये होता है। यह फल कच्चेपनमें नरम परन्तु सूखकर कठोर हो जाता है। दूसरा छिल्का पहिले छिल्के के नीचे कठोर होता है। फिर उसके नीचे दो टुकड़े आपस में मिले और सिरा उनका निकला हुआ तथा तीसरे छिल्के के नीचे मिगी और ऊपर बहुत बारीक छिल्का होता है। मिगी बहुत

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

सफेद और चिकनाई लिए पिश्ते और चिलगोजेके समान होती है। इस फलके चार भाग होते हैं। दो-दो आपसमें मिले हुए और इनके बीचमें बहुत बारीक परदा होता है।

अखरोट कफ और पित्त को बढ़ानेवाला, धातुको पुष्ट करनेवाला, और शरीर बलको शीघ्र बढ़ाकर मस्तिष्क को ताजा बनाने वाला है।

खाँसी की दवा

अखरोटकी मिंगी भूनकर यदि खाँसीमें सेवन को जाय तो खाँसी शीघ्र दूर होवे।

अपराजिता।

संस्कृत—अस्तोफा,ः गिरकर्णी, विष्णुक्रान्ता और अपराजिता। हिन्दी-सफेद और नीली कोयल। बं० श्वेत और नील अपराजिता। म० गोकर्णी के बीज, सुपनी, कर्नाटी—विष्णु काके। गु० गरणी। तेलगू-भील गंढुरा, लै०कैलिटीरियाटरेन्स्या।

यह लता जातिका एक पौधा है। इसके फूल दो तरहके—सफेद और नीले होते हैं। यह कड़वी स्मरणशक्तिको बढ़ानेवाली, शीतल, कंठकी शुद्धि-

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

कर्ता, दृष्टिको प्रसन्नकारक, त्रिदोषनाशक कषैला पचने में कटु, बुद्धिदाता और विषनाशक है।

यह कुष्ट, शूल, आम और शोथ तथा व्रणरोग को दूर करती है।

बवासीर की दो औषधें

(१) विष्णुक्रान्ता दो टंक काली मिर्च दो टंक और एक माशे भाँग को जलमें घोंटकर नित्य सेवन करनेसे बवासीर का रोग शान्त हो जायगा।

(२) शीशे की गोली गौके घृत में पीसकर १० दिन तक मसों पर लगाने से बवासीरके मसे कटकर गिर पड़ेंगे।

अतिबला (कंघी)

बला चार प्रकार की होती है। तहाबला, वाटयालिका, वाट्याये। यह तीन संस्कृत नाम सफेद बलाके हैं। हिन्दी में बरिमाला, बीजबंद या खिरेंटी, बं० श्वेत वेडेलो, म० चिकड़ा, का० बेणॉगरग, गु० बलदाणा अथवा खपाट तै० युरिंडी, ला० अबुटीलन इंडीकम कहते हैं। महाबला, पीतपुष्पा और सहदेवी ये तीन नाम पीतबला के हैं।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

चतुष्टयबलाको छाल, पत्ता और बीज प्रयोग में लिये जाते हैं।

गुण-चारों प्रकार की बला शीतल, मधुर, बलकारक, कांतिप्रद, स्निग्ध और ग्राही होती है।

मूत्रातिसार की दवा

चारों प्रकारकी बला की जड़ की छालके बारीक चूर्णको मिश्री मिले दूधके साथ सेवन करने से मूत्रातिसार रोग नष्ट होता। महाबला मूत्रकृच्छ्र रोग को दूर करती है तथा वायु अनुलोम होवे, तो अर्थात् वादी को गुदा द्वारा निकाले।

प्रमेह की दवा

अतिबलाको दूध और मिश्रीके साथ सेवन

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

करनेसे प्रमेह रोग अच्छा होता है। मात्रा इसका दो माशे की है।

१—अतिबला के पत्ते गरम कर घाव पर बाँधने से घाव भर जाते हैं।

अनन्नास

सं० हिं० अनन्नास, म० अननस गु० अननस, अं० पाइन एप्फल, लैटिन अननासा सेटिवा।

यह रुचिकार, हृदयको हितकारी, भारी कफ, पित्तकारक, अन्नरोचक तथा श्रम और कृमि-

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

नाशक है। पक्का अनन्नास स्वादिष्ट, पित्तकारक, तथा रक्तविकार और वातविकार को नष्ट करनेवाला है।

(१) धातु रोगी और बात रोगीको अनन्नास सेवन करना चाहिए। इसके सेवनसे शरीर बलवान् होगा और मस्तिष्ककी क्षीणता नष्ट होकर भ्रम दूर हो जायगा।

(१) अनन्नास का रस १ छटाँक एक तोले सोंठके चूर्ण के साथ घीमें भूनकर प्रतिदिन प्रातः और सायं लेनेसे बादीका रोग नष्ट हो जाता है।

अन्धाहुली

इसे संस्कृत में अन्धाहुली। हिन्दी में अन्धाहुली। बंगलामें चारहुली म० पाचरी और गुजराती में इसको फुली कहते हैं।

यह नेत्रों को हितकारी और मूढ़ गर्भको आकर्षण करनेवाली है। इसके डंठल कुछ लाल पत्ते लम्बे, गोल और रोमयुक्त होते हैं। फलका रंग नीला नीचे की ओर कुछ मुड़ा होता है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

श्वास रोगकी दवा

अन्धाहुलीकी जड़, सोंठ और मिर्च जीरेमें मिलाकर सेवन करनेसे एकमासमें श्वासका रोग दूर हो जाता है। नमक बिल्कुल नहीं खाना चाहिए। केवल बिना नमककी मूँगकी दाल और रोटी खावे।

अनन्तमूल

इसे संस्कृतमें सारिवा। हिन्दीमें गोरीसर सालसा, बंगला अनन्तमूल, म० श्वेत उपलसरी, गु० कपुरी, कर्नाटी सारिवा। तेलगू नीलतिग, उत्कल-गुपा पानमूल। अंग्रेजी, इन्डियन सार्सापरीला। लै० हेमीडेसमेस्ट इन्डिकस कहते हैं।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

अनन्तमूल—यह शीतल, मधुर, शुक्र जनक भारी, कड़वी और सुगन्धित होती है। इसका सेवन करनेसे शरीरको दुर्गन्धित, मन्दाग्नि, श्वास खाँसी, अरुचि, आम, त्रिदोष, विष, रुधिर-विकार-प्रदररोग, कफ, अतिसार, तृषा, दाह, रक्त, पित्त और बात नष्ट हो जाता है।

अनन्तमूल दो प्रकारकी होती है एक काली और दूसरी सफेद होती है। पंजाबमें कालकाके समीप इसकी अधिक उपज होती है। पत्ते अनारके समान होते हैं और उनमें सफेद छींटे पड़े होते हैं। इसकी बेलिसे और मुख्यतः जड़से कपूरकी-सी सुगन्धि आती है। इसकी जड़को सारसापरीला भी कहते हैं। रुधिर-विकारको दूर करनेमें इससे बढ़-कर दूसरी औषधि नहीं है।

अग्निदमन

इसे संस्कृतमें अग्निदमन और दमनक कहते हैं। हिं० दवना, दौना, बंगला दोन, म० दबना, रामदबना, गु० दमरो,

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

कर्नाटी, दबना। अं० वर्म्युवुड। ले० आर्टिमिस्या इन्डिका।

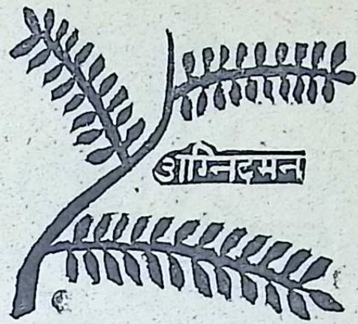

यह गुणमें कषैला, कड़वा शीतल, चरपरा, द्वन्द्वजदोष त्रिदोष, विष और विस्फोटक रोगको शान्त करनेवाला है। इसके अतिरिक्त इसमें और भी गुण हैं।

आचार्योंका मत है कि यह अग्निदीपक, रुचिकारक, हृदयको हितकारी, वात, कफ, गुल्म और प्लीहा रोगको शीघ्र नष्ट करता है, कुष्ट और कंडूके रोगी के लिए भी अत्यन्त लाभदायक है।

अंजीर

इसे संस्कृतमें मंजुल, हि० अंजीर, बं० आंजीर, मराठी जीर, गु० अंजरि, कर्नाटी, येडिपंड, इं० फिग, लैटिनमें फाइक्लेरिका और फारसीमें इसे तीन कहते हैं।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

अंजीर

इसका वृक्ष काबुलमें अधिक होता है; बल्कि यों कहा जाय कि, अंजीरकी उपज काबुलमें ही होती है।

शिर दर्दकी दवा

खूब अंजीर नित्य खावे।

रक्त पित्तकी दवा

अंजीरका मुरब्बा नित्य सेव करे।

नाकसे खून गिरना

अंजीर खावे।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

वात-पित्त-ज्वरकी दवा

अंजीर, लाल चन्दन, पद्माख, धनिया, गिलोय, नीमकी छाल इन छः चीजोंको चार-चार माशा लेकर डेढ़ पाव जलमें क्वाथ बना डाले और मिश्री डालकर प्रातःकाल पीवे। कैसा भी बात और पित्तका ज्वर होगा, शान्त हो जावेगा। यह अचूक औषधि है।

अंजीर गुणमें भारी, शीतल, मीठी, बात, रक्त और पित्तको नाश करने वाला, रुचिकारी, पाचक, विरेचक तथा कफ और आमवातको दूर करनेवाली है। रुधिर विकारको यह भी शीघ्र नष्ट करती है।

दाद की दवा

अंजीर का दूध मले।

अंगूर

भिन्न २ भाषाओंमें इसके भी भिन्न-भिन्न नाम हैं। इसे

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

संस्कृतमें द्राक्षा, हिन्दी में अंगूर, किसमिस और दाख कहते हैं। बंगला में किसमिस, मनेका आंगुर। मराठीमें बेदाणा, किसमिस,। गु० घराखु, किसमिस। क० चिक्कुद्राक्ष। तेलगू द्राक्षा। अंग्रेजीमें ग्रेपराफिन्स। लैटिन वाइटिन्स वेनिफेरा और फारसीमें अंगूर, मुनक्का तथा अरबी भाषामें किसमिस और हुबुस-जबीब कहते हैं।

पक्की दाख—दस्तावर, शीतल, नेत्रोंको लाभदायक, स्वर-शोधक, वीर्यवर्द्धक और मोह दाहको हरण करनेवाली है। परन्तु कच्ची दाख, कटु, उष्ण, विषद और रक्तपित्तकारक है। किन्तु मध्यम अवस्था की दाख खट्टी, रुचिकारक और अग्निवर्द्धक होती है।

अंगूर कई प्रकार का होता है। कोई लाल रंगका और कोई काला भी होता है और कोई पहाड़ी अंगूरके नामसे भी पुकारा जाता है। यह अधिकतर काबुलमें उत्पन्न होता है। पर कहीं-कहीं देशमें भी इसका होना पाया जाता है। देशी अंगूरके पत्ते हाथ के पंजेके आकारके होते हैं। फल गुच्छों में लगते हैं।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

सब प्रकार के मेवों में अंगूर उत्तम है। यह धातु-वर्द्धक होते हुए भी प्यास और वमनको नष्ट करता तथा सरस मधुर और वीर्य-वर्द्धक है। यह वात, पित्त और कफके ज्वर तथा मूर्छा और रुधिर रोगको नाश करनेवाला है।

अजीर्ण की दवा

दाख, हर्रकी छाल और मिश्रीको पीसकर मधुके साथ दो टंक प्रमाण की गोली बनाकर यदि जलके साथ नित्य एक गोली सेवनकी जाय तो अजीर्णमात्र रोग नष्ट हो जाय।

सूजन उतर जावे

दाख, अथवा महुआ, रक्तचन्दन, दूर्बा, आँवला, कमलनाल, खस, नेत्रवाला और पद्माख को ठंढे जलमें पीसकर लेप करनेसे पित्त व्रणकी सूजन उतर जाती है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

अश्वकर्ण शाल

इसे संस्कृतमें शाल, अश्वकर्न, हिन्दीमें अखुआ या साखू, बंगला शालगाछ, मराठी रालेचावृक्ष, क० सज्जर दायर, तामिल हुँगिलियम। अंग्रेजीमें शालट्री। लैटिन—शोरिया रोबष्टा।

इसके वृक्ष बड़े होते हैं। पत्तियाँ लगभग छः अंगुल चौड़ी और एक बालिश्त तक लम्बी और मुलायम होती हैं। इसके अश्वकर्ण, अज-कर्ण कई भेद हैं। आंव पड़ने पर इसका सेवन बहुत लाभ-दायक है। इसके बहुत बड़े २ जंगल होते हैं।

यह चरपरा, गरम, कषैला, कटु और तिक्त भी होता है। रक्त, पित्त, कुष्ट और विष्फोट आदि रोगोंमें बहुत लाभप्रद होता है। इससे वात रोग भी नष्ट होता है।

शालका दूसरा जोड़ा शीशम भी है। इसकी लकड़ियाँ बड़े कामकी होती हैं। इसके पत्ते अधिक से अधिक दो इञ्च लम्बे चौड़े और इतने ही लम्बे गोल और कुछ नुकीले होते हैं।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

शीशमके फूल और पत्ते दोनों ही औषधिके कामों आते हैं। शीशमका फूल २ तो० और पत्ते ३ तो०, कालीमिर्च ११ नग, सुफेद इलायची ३ नग और मिश्री ॥१॥ तोला, सबको एकमें बाँटकर ७ दिन पीने से स्त्रीका लाल व सुफेद प्रदर तथा धातुकी क्षीणता नष्ट हो जाती है।

अर्कपुष्प

सं० अर्कपुष्पी, क्रूरकर्मा, पयस्या, जलकामुका। हिन्दी अर्कपुष्पी। बं० नड़क्षीरुई, म० सूर्यफूलवल्ली गु० सूरजमुखी।

यह कृमि, कफ, प्रमेह और पित्त रोगको नष्ट

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

करने वाला है। इसका सर्वाङ्ग प्रयोगमें आता है।

खाँसी और कवलकी दवा

अर्कपुष्पके मध्यकी फूली और लौंगको पीस कर १ रत्ती प्रमाणकी गोली बनाकर नित्य खानेसे कवल और खाँसी दूर हो जाता है।

आमिया हल्दी

इसे संस्कृतमें कचूर, द्राविड, कल्पक, शठी। हिन्दी कचूर, आंबिया हल्दी। बंगला में शठी, म० कचोरा, गु० कचोरा कचुरो, कोकंशा, चककचरो, काहुली, अरसिन, षष्टकचाग। ते० कचोरा, अ० एरकुल, काफूर। फा० जरंबाद। अं० लांगजो-डोरीआ। लै० करक्यूमा जोडोरीया।

यह हल्दी जातिके एक वृक्षकी जड़ है। मालाबार और बम्बई आदि प्रान्तोंमें इसकी अधिक उपज होती है। इसका गुण अग्निदीपक, रोचक, चरपरा, कड़वा, सुगन्धित, गरम और हल्का है। कोढ़, बवासीर। व्रण, खाँसी आदि कई रोगोंमें इसका प्रयोग विशेष लाभदायक होता है। चार

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

माशेकी मात्रामें सेवनकी जाती है। इसका प्रति-निधि शतावर और दर्पनाशक सफेद चन्दन है।

श्वासकासकी दवा

हल्दी, कालीमिर्च, मुनक्का, पीपली, रास्ना, और कचूर इन सबका चूर्ण करके उसके एक टंक चूर्णमें थोड़ा-सा गुड़ और तिल्लीका तेल मिलाकर सेवन करनेसे श्वासकास नष्ट होता है।

चोट पर

आमा हल्दी, चोट मुसब्बर और प्याज एक में पीसकर गरम करके चोट पर रखा जाय तो चोटमें अनुभूत लाभ होता है। सूजन और दर्द दूर होता है।

नेत्ररोगमें

हल्दी और प्याजको पीसकर आई हुई आँख पर प्रयोग करे।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

आलूबुखारा

इसे संस्कृतमें आलुक, हिं० आलूबुखारा, म० नोएरुक, यु० आलु, अ० इज्जाम, अंग्रेजी चेरीप्लम।

यह बलखबुखारेमें होनेवाले एक छोटे वृक्षका फूल है। इसका फल लाल और कुछ-कुछ कालापन लिये होता है। इसका स्वाद मिठासके साथ-साथ कुछ फीका और खट्टा होता है।

गुणमें यह ठंढा है।

पेट दर्द, हैजे की दवा

आलूबुखारा, जीरा, पोदीना सोंठ, निर्बीज

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

मुनक्का, सेंधा नमक और काला नमकको चटनीकी भाँति पीसकर रोगियोंको दिया जाता है जिससे जीका मचलाना, वमन होना, पेटका दर्द, पतले दस्तोंका आना और हैजेमें लाभदायक है।

आलूबुखारा पित्त ज्वर और रक्त-ज्वरको भी लाभकारी है। खुजली, प्रमेह, गुल्म और बवासीरका नाशक तथा खट्टा होते हुए भी यह खाँसीको दूर करनेवाला है।

अरुचिकी दवा

आलूबुखारा, सेंधा नमक, सेंकी हुई भाँग, सोंठ, पीपल और द्राक्षाकी गोली बनाकर मुखमें रखनेसे अरुचि नष्ट होती है।

अतिसार और संग्रहणी में

एक रत्ती आलूबुखारा और एक रत्ती भाँगके चूर्णको मधुके साथ चाटनेसे भूख और निद्राकी वृद्धि होकर अतिसार और संग्रहणी दूर होती है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

अमरूद

सं० हिं अमरूद, बं प्यारा, अं० ग्वावा।

अमरूदकी लम्बी २ पत्तियाँ होती हैं जो आमके पत्तियोंसे छोटी और उसीसे मिलती-जुलती जान पड़ती हैं। इसके छोटे २ गोल सफेद रंगके फूल होते हैं। अमरूद दो प्रकारका होता है। एक सफेद गूदावाला, दूसरा लाल गूदावाला। दोनों ही खानेमें स्वादिष्ट होते हैं। इसका पेड़ बहुत बड़ा नहीं होता। शाखायें जड़से फूटकर तनेकी चारों तरफ फैलकर पेड़ों को छतनार बना देती हैं।

अमरूदकी तासीर ठंढी होती है और यह

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

पाचक, कफ़कारी और कषैला होता है। अमरूद का बीज अधिक कफ़कारी होता है।

इसका फल खानेके पहले उसके ऊपरी छिलकेको छील लेना चाहिए। फिर चाकूसे काट-कर भीतरसे बीज निकालकर फेक देवे और बाकी गूदा काट-काटकर खावे। सुबह और सायंकाल में इसका खाना अहितकर होता है। दोपहर वा तीसरे पहरमें भोजनोपरान्त खाना गुणकारी होता है।

(१) अमरूद खानेसे दस्त खुलासा होने लगता है। भोजनमें रुचि बढ़ती है।

(२) इसके टहनियोंकी दतौन करनेसे दाँत-का दर्द दूर होता है और हिलते हुए दाँत बैठ जाते हैं।

(३) अमरूद के टूसे को काला नमक और सौंफ के साथ पीसकर थोड़ा पानी मिला लेवे और आम वाले रोगीको सुबह साम पिलावे तो आमका गिरना बन्द हो जाता है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

आम्रातक

संस्कृत—आम्रातक, हिन्दी अम्बाड़ा गु० असेड़ा बंगला आमड़ा तै० अंबालम अंग्रेजी होगाप्लम वाहल्द्मेंगो।

आम्रातकका वृक्ष प्राय: हिन्दुस्तान के सभी भागों में पाया जाता है। परन्तु कहीं-कहीं पर इसकी अधिक उपज होती है। जैसे कर्नाटक और कोंकन। इसका वृक्ष अधिक से अधिक पच्चीस तीस फीट तक ऊँचा होता है। तना भी अधिक मोटा होता है। परन्तु टिकाऊ न होने के कारण इसे इमारत के काम में नहीं लगाया जाता। इसके पत्ते रायफलके ऐसे होते हैं और आम की तरह

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

इसमें भी बौर लगता है। इसके फल छोटे और खटमिट्ठे होते हैं।

यह गुण में तीखा, भारी, गरम, रुचिवर्द्धक कंठको हितकारी, दस्तावर, आमवात नाशक और पित्त तथा कफ़कारक होता है। इसके पके फलकी तासीर ठण्डी, तृप्तिकारक, मधुर और बलकारक होती है। इसके सेवन से धातु की वृद्धि, वातका नाश और मल स्तंभन भी होता है। नये नये निकले पत्तोंके सेवन से अग्नि बढ़ती है। ये रुचि-कर और ग्राहक होते हैं।

अम्लपित्त रोग में

आम्रातक का कच्चा फल तोड़ लावे और उसे कुचकुचा कर उसका रस चार रत्ती काली मिरच और पाँच तोला खाँड़, इन तीनों चीजोंको एकमें मिलाकर एक सप्ताह लगातार दोनों समय पीता जावे तो अम्लपित्त की बीमारी को लाभ पहुँचाता है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

कर्णशूल की दवा

आम्रातक के पत्तोंका रस निकाल लेवे। फिर उस रसको दो बूँद कान में डाले और बाकीको कानके बाहर चारों तरफ चुपड़ दे तो कर्णशूल जाता रहे।

आम्रातिसार की दवा

अंबाड़ेकी छालका काढ़ा बना डाले। फिर उस काढ़ेमें अंबाड़ेके पत्तोंका चूर्ण मिलाकर पीवे तो आम्रातिसार नष्ट होवे।

आम्रातकके वृत्तसे काफी गोंद निकलता है। उस गोंदको वृक्षसे छुड़ा लावे और पीसकर यदि किसी दवामें अधिक भरभराहट हो तो थोड़ा सा मिला देवे तो दवा की भरभराहट मिट जाती है।

आम्रातकके मुलायम २ फल बाजार से खरीद लावे और उसमें अन्दाजसे नमक, धनियाँ मिरच आदि चटनी के मसालोंको मिलाकर चटनी बना लेवे। यह चटनी अत्यन्त रुचिकर होती है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

इलायची बड़ी

यह क्षुप जातिकी बनस्पति है। इसकी दो जति होती है। छोटी और बड़ी। इसे संस्कृत में स्थूलएला, बहुला, पृथ्वीका, त्रिपुरा, भद्रैला, बृहदेला, चन्द्रवाला और निष्कुटि कहते हैं। हिन्दीमें बड़ी इलायची, लायची, बं० बडएलाइचि, म० बेलदोडा, थोरेला, तै० पेद्दएलाकुलु, ता० एलम, का० यरडुलक्की, गु० एलची, अ० काकेलकीबर, फा० हैलकलां, ला० अमोमम्।

बड़ी इलायची रस और पाक में कटु (चरपरी) अग्निकारक, हलकी, रुक्ष, और गरम होती है। यह कफ, रक्तपित्त, खुजली, श्वास, प्यास, उबकाई आना, विषरोग, खाँसी, वमन, वस्तिरोग, मुखरोग और शिररोग को नष्ट करनेवाली है। मात्रा १॥। रत्तीकी है। प्रतिनिधि (इसके अभावमें) छोटी लायची और दर्पनाशक गुलाब के फूल हैं अर्थात् इसका अवगुण गुलाबके फूलोंसे जाता है।

गुजराती (छोटी) इलायची

इसके सं० नाम सूक्ष्मैला, उपकुचिका, तुत्था, कोरंगी, द्राविणी और त्रुटि हैं। हिन्दीमें गुजराती इलायची, बं० छोट

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

इलाइच म० लघुवेल, एलदोडा, गु० एलची कागदो, तै० एलाक्कु अ० काकलेसर्गारखीर, बवाबहीलखुर्द, ला० इलेटेरिया।

यह मालावारमें बहुत होती है। गुणमें यह चरपरी, शीतल, हल्की, और वायुनाशक है। यह कफ, खाँसी, बवासीर, श्वास, और मूत्रकृच्छ्र आदि रोगोंको नाश करती है। इसके अभावमें बड़ी इलायची ली जाती है और इसके अतिशयका अवगुण गुलाबके फूलसे दूर होता है।

पाचक, जिगरकी बीमारी, जलंधर आदिमें

इलायची बड़ीका छिल्का और उसके बराबर भुनी सोंठ और उसके बराबर (एकके) भुनी सौंफ तीनोंको बारीक पीसकर चूर्ण बना डाले। एक-एक फंकी नित्य खावे।

नित्य जी मचलाने और उबाकी आने के रोगमें।

इलायची ६॥ तोला पीसकर पावभर बूरेकी चाशनी बना डाले। फिर उसमें गुलाबजल मिलाकर नित्य चटनी बनाकर चाटे।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

हैजेके रोगमें

छोटी इलायचीका छिल्का एक तोले या दो तोले, यदि गुलाबजल होवे तो उत्तम है, नहीं तो आध सेर पानीमें औटाकर जल आधा रहे तब पीवे तो हैजा दूर हो।

निनाँवाँ जीभकी जलन में

बड़ी इलायचीके दाने और छालियाँ दोनों जलाकर महीन पीसकर मुँहमें बुकें।

पित्त ज्वरादि में (एलादिगुटिका)

इलायची, पत्रज, बंशलोचन, तज, दाख, पीपली, इन सबको एक-एक पैसे भर लेकर, टका भर मिश्री, टका भर मुलहठी, टका भर खारिक सबको चूर्ण बना डाले। फिर उसमें १ टका भर मधु मिलाकर गोलियाँ बना लेवे। यदि इसमें से एक गोली नित्य खिलावे तो रक्तपित्त, श्वांस, कास, पित्त ज्वर, हिचकी, मूर्च्छा, मद, भ्रम, प्यास,

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

पार्श्वशूल, अरुचि, शोथ, स्वरभंग और क्षय ये सब रोग दूर होवेंगे। इसे एलादिगुटिका कहते हैं। यह सब यत्न वैद्यरहस्य में लिखा है।

मूत्रकृच्छ्र की औषधि

इलायची, पाषाण भेद, शिलाजित, पिप्पली, खीरा, ककड़ीके बीज, केशर, सेंधानोन, इन सबका दो टंक चूर्ण चावलके जलके साथ सेवन कराओ तो मूत्रकृच्छ्र दूर हो।

तथा च

इलायचीका महीन चूर्ण जलके साथ पिलाओ तो कफजन्य मूत्रकृच्छ्र दूर होवे।

इन्द्रजौ

इसे संस्कृत में कुटजबीज, यव, इन्द्रयव, कलिंग, भद्रयव और किसी किसी कोष में इन्द्रवाचक शब्द इसके पर्यायवाचक शब्द हैं। हिन्दी में इन्द्रजौ, का० कोडसिगेयबीज, गु० इंदरजव, फा० लिसानुक, असाफिर, कुंजघिजवा, ला० राइटयांडिसेंटेरिक कहते हैं।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

गुण—यह कुड़ावृक्ष के बीज हैं त्रिदोष-नाशक, संग्राही, कटुतिक्त शीतल, अग्निदीपक और दाहनाशक है।

इसके प्रयोग (सेवन) से रक्तपित्त, प्रवाहिका ज्वर, अतिसार, कृमि, विसर्प, कुष्ठ, खूनी बवासीर, गुदाकी कीलें, बादी, रुधिरके दोष, कफ और शूल रोग नाश होते हैं। मात्रा इसकी ५ रत्ती से ३० रत्ती पर्यन्त है। इसके अभावमें नारियलकी गिरी ली जाती है और इसका दर्पनाशक चीयाँके बीज हैं।

इन्द्रयव के सम्बन्धमें आयुर्वेद कहता है कि इसकी छाल और बीज बहुत प्राचीनकाल से जाने गये हैं। पेटकी पीड़ा और दस्तोंमें छालका मुख्य इलाज गिना गया है इसके बीज ग्राही, ज्वर-नाशक और पेट के कीड़े निकालने में मुख्य औषधि हैं।

अरबी और फ़ारसी ग्रन्थोंमें इन्द्रजौ के बीज को ग्राही और पेटकी पीड़ानाशक माना है और छाता के पुराने दर्दमें उसी प्रकार मरोड़ा और

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

पेशाब अधिक आता हो तो उसमें देनेकी प्रशंसा करते हैं और वह पेशाब की थैली में से पथरी को पिघलाकर निकालनेवाला है। यह पाचनशक्ति बढ़ानेवाला और कामोत्तेजक भी है। इसके सम्बन्ध में—

डा० डीमकका कहना है कि, इन्द्रजौ और शहद केशरके साथ मिलाकर स्त्रियोंकी जननेन्द्रिय में रक्खे तो गर्भधारण करने की शक्ति बढ़े तथा प्रसवके समय भी इसके बरतनेकी प्रशंसा करते हैं।

मरोड़े और आँतों के दर्द में

इन्द्रयव के बीजों को सेंककर गरमजल में भिगो देवे। फिर इस पानीको पीने से अँतड़ियोंका दर्द शान्त हो जाता है।

रक्तस्राव और अँतरिया ज्वर की दवा

बहुत दिन से अंतर देकर आनेवाले ज्वर में इन्द्रयव की छालका काढ़ा देवे तथा रक्तस्राव में भी इसी को देवे।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

डा० कस्ताग्री लिखता है कि १५ महीनेका अवस्थामें के बच्चेको मरोंड़ेके वास्ते जब अन्य यत्न न चल सके तो इस कुड़ाके वृक्षकी छाल ५ रुपया भरको २॥ सेर पानीमें औटावे, जब १। सेर जल बाकी रहे तब उतारके इसमेंसे १। रुपये भर को मात्रा से दिन में ४ वक्त प्रत्येक समय उसमें एक बून्द अफीमके अर्कको डालकर देनेसे आराम होता है।

अर्श, खूनी बवासीरकी दवा

इन्द्रयवके बीजोंको गरम जलमें भिगोकर उस पानीके देनेसे दर्द करनेवाला अर्श कि जिसमें रुधिर गिरता हो वह दूर होता है।

इन्द्रयवका बीज और छाल बवासीर-नाशक कंडुनाशक, स्तन्यशोधक और आमातिसारनासक वर्णन किया है। सुश्रुत

इन्द्रयवकी छाल और बीजको मूलव्याधिहर कंडुनाशक, कृमिनाशक, वातविकार नाशक, स्तन्य-शोधक और अर्शनिषूदन कहा है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

अतिसार के लक्षण

इसके पहले अतिसारके क्या लक्षण हैं, देखिए। अतिसार छः प्रकारका होता है। मैदा (गेहूँका आटा कपड़ेसे छाना हुआ) आदिके भारी पक्वान्न, अति चिकने पदार्थ, रूखे पदार्थ, अति उष्ण पदार्थ तथा ऐसे-ऐसे पदार्थ भक्षण से, भोजन बिना पचे हुए ही पुनः भोजन करने से और मलके वेगको रोकनेसे अतिसार उत्पन्न होता है।

१—वात, २—पित्त, ३—कफ, ४—सन्निपात जन्य, ५—शोक, ६—आमजन्य।

अतिसार होनेके पहिले हृदय, नाभि, गुदा, उदर और पेड़ूमें पीड़ा हो, अंगमें फूलन हो, गुदा की अपमान वायु रुक जावे, दस्तकी हाजत न हो, अफरा हो जावे और अन्न पाचन न होवे तो समझना चाहिये कि इस मनुष्य को अतिसार रोग उत्पन्न होवेगा।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

अतिसार की दवा

१—इन्द्रयव, नागरमोथा, देवदालाकी गिरी, आमकी गुठली और धावड़ेके पुष्पके २ टंक चूर्ण को भैंसके मट्ठाके साथ सात दिन तक पिलाओ तो वातातिसार दूर हो।

२—बड़ी हर्र, सोंठ और नागरमोथाका दो टंक चूर्ण प्रतिदिन ७ दिन तक पिलाओ तो त्रिदोषज अतिसार (सन्निपातातिसार) दूर हो।

इमली

इसके अम्लिका, चुक्रिका, अम्ली, चुक्रा, दंतशठा, अम्ला, चिंचिका, चिंचा, तिंतिडीका और तिंतिडी ये संस्कृत नाम हैं।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

हिन्दी इमली, अंबली, बं० आमरूल, तेंतुल, तेंतुल, का० हुणिसे, म० चिंच, गु० आंबली, तै० चीताचेट्टू, उडि० कम्रो ता० पुलि, फा० तमर, इं० टेमेरिन्ड।

इमली के कच्चे फलोंको कतोर कहते हैं। पकने पर खटमिट्ठी हो जाती है और रंगमें पीली लाल होती है और यह सर्वत्र मिलती है। यह गुणमें खट्टी, गरु, वातनाशक, पित्तकर्ता कफ-वर्द्धक और रक्तदोष निवारक है। पक्की इमली अग्निदीप्तिकर्ता, रूक्ष, दस्तावर, गरम और वात श्लेष्मा नाशक है। इमली अत्यन्त सेवनसे फेफड़े को बिगाड़ती है। इसके प्रतिमें शरबत बनफशा, शरबत खशखाश हैं। इसके अभावमें आलूबुखारा लिया जाता है।

इमलीको हिन्दुस्तानी वैद्य शीतल, पाचक, दस्त खुलासा लानेवाली और दस्तकी कब्जियत तथा ज्वरमें अत्यन्त उपयोगी बतलाते हैं।

इमलीको फली की ऊपरकी छालकी राख खारके सदृश दवा में डालते हैं।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

सूजन की दवा

इमली के पत्ते सूजन पर बाँधने से सूजन उतर जाती है।

इमली के दो प्रकार हैं। लाल और भूरी। लाल इमली उत्तम जाति की होती है। इमली के गूदे को मुसलमानी वैद्यग्राही, दस्त खुलासा लानेवाली, पित्तकी उल्टी बंद करनेवाली और जुलाब द्वारा पित्त को निकालनेवाली मानते हैं। जुलाबके लिए देनी हो तो उसके साथ जैसे बने अन्य प्रवाही बहुत थोड़े देने चाहिये। गले के भीतर की सूजन को दूर करनेके लिए इमली के पानी के कुल्ले करने से उत्तम आराम होता है। बीजमें भी ग्राही गुण है।

फोड़े पर

इमली को उबालकर पुल्टिस बनाकर फोड़े पर बाँधे तो फोड़ा अच्छा हो।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

पित्त ज्वर में

इमलीके पत्तोंको जल में पीस जलको निचोड़ ले और वही जल पित्त ज्वरवाले को देवे तथा पेशाब की गरमी के वास्ते भी देते हैं।

आँख के पलकों की सूजन में

इमली के फूलों की पुल्टिस बनाकर आँख पर बाँधे।

दुखते हुए बवासीर में-

इमली के फल का रस लगावे।

इमलीके वृक्षकी छाल ग्राही और पाचक है। इमलीके वृक्षकी वायु हानिकारक है। इमलीके वृक्ष के नीचे तम्बू बहुत दिन रखनेसे उसका कपड़ा सड़ जाता है। मद्रासके इलाकेमें मनुष्य इमलीका 'चार पानी' आदि पदार्थ बनाकर और कई प्रकार की कल्पना करके मिले हुए खुराकमें बहुत वर्तते हैं तथा इमलीके बीजको भी आगमें भूनकर या घृतादिमें सेंककर खाते हैं।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

इमली खट्टी, पित्तशामक और दस्तावर है। चरक—

जुलाब और पाचनशक्ति बढ़े।

इमलीका गूदा १। रुपये भर अथवा इससे भी अधिक खानेसे थोड़ा जुलाब होता है और पाचनशक्ति बढ़ती है तथा प्यास कम लगती है।

धतूरे वगैरहके जहर उतारनेको खजूर, दाख इमली का गूदा, अनारदाना, फालसे और आमले सब समान भाग ले तथा बारीक पीस और इसमें पचगुना पानी मिलाय औटाकर काढ़ा करके देना लिखा है। चक्रदत्त—

नासूरकी दवा

इमली के गोंद का चूर्ण नासूर के घाव पर बुरके। इससे घाव जल्दी भर आता है तथा इमली के पत्तों को घाव पर बाँधे।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

बच्चोंकी लाल पीली खाज या दादकी दवा

इमलीके बीज नींबूके रसमें घिसकर लगावे

उबकी और मिचलीमें

इमली मुखमें रक्खे तो मिचली और वमन दूर होवे।

तथाच—

इमलीका शरबत वायुकी वमनको गुण करता और उदर को बल देता है, और गरमीके ज्वरको गुण करता है। इमली का चीयाँ निकालकर उसमें आधा बूरा मिलाकर पानीमें भिगोवे। फिर छानके उसका पानी लेके दूने बूरेकी चाशनी करे।

मुह आनेकी दवा

इमली पानीमें भिगोकर उस पानीके कुल्ले करे।

पित्तज्वर की दवा

दो तोले इमली रातको जलमें भिगो देवे। पुनः प्रातःकाल उसका निथरा जल लेकर उसमें

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

बूरा मिलाकर पहले एक तोला ईसबगोल फाँककर ऊपरसे यह जल पीवे।

इन्द्रायण

ऐन्द्री, इन्द्रवारुणी, चित्रा, गवाक्षी और गवादिनी इसके संस्कृत नाम हैं। हिं० इन्द्रायन, फरफेन्द, इन्द्रारुणा, बं० राखा-लशशा म० लघुकाबडल, गु० इन्द्रवरणु, तै० एतीपुच्छा, अ० हिंजल, फा० खुरपुजेतलख, ला० कोलोसिंथिस।

यह बेल जातिकी बनस्पति है जो अक्सर रेतीली जमीनमें होती है। इसके पत्ते लम्बे बीच में कटे हुए, फूल पीले रंगका पाँच पंखड़ीका होता है। फल संतरेके समान पीले रंगका सुहावना

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

होता है। इसके भीतर बीज बहुत होते हैं। इसे ब्रजभाषामें फरफेन्दू कहते हैं। इसके भीतरसे इलेटीरिअम नामका सत्व निकलता है। इसे इन्द्र-वारुणी भी कहते हैं। गुणमें दोनों समान हैं।

गुण—इन्द्रायण कड़वी, पाकमें कटु, दस्ता-वर, हल्की और गरम है।

यह कमला, पित्त, कफ, प्लीहा, उदररोग, श्वास, खाँसी, कोढ़, गोला, गाँठ, घाव, प्रमेह, मूढ़, आम, गंडरोग और विषरोग आदिको दूर करता है। यह आम और कफके निकालनेमें अद्वितीय है।

प्रयोगमें इसके फलका गूदा लिया जाता है। मात्रा ६ रत्तीसे लेकर दो माशे तक है। यह खून और फेफड़ेको नुकसान करता है। इसके सेवनसे नुकसान पहुँचनेमें कतीरा, विहीदाना, मस्तगी और निशास्ताका सेवन करे। इसके अभावमें दसबंद, रसौत और निशोथ है।

सुश्रुत संहितामें इसको दस्तावर, दुष्ट दोषहर,

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

विषनाशक और व्रणदोषक मानते हैं। अन्य आयुर्वेदके ग्रन्थ इन्द्रायणको कड़वा तीखा और तीव्र जुलाब लानेवाला वर्णन करते हैं तथा पित्त-विकार, दस्तको कब्जियत ज्वर और पेटके जीव निकालनेको यह दी जाती है। इसकी जड़से जुलाब लगता है। तथा कामला, कलेजे में पानी भरना, जलंधर, मूत्रस्थानको व्याधि और संधि वात पर उत्तम असर करता है।

जलंधरकी दवा

इन्द्रायनको जड़ औटाके पोनेसे दोषको दस्तोंके द्वारा पचाकर दूर करता है।

कानके बहरेपनको दवा इन्द्रायण तेल

कानके भारीपन और भिन-भिनाहटको दूर करना चाहो तो इन्द्रायनका ताजा फल मीठे तेल (कड़ुवा तेल सरसों) में औटाकर छानकर रखे। दो तीन बूँद कानमें टपकावे।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

तथाच-

पके इन्द्रायनके फलका छिल्का मीठे तेलमें मिलाकर कानमें टपकाना, बहरेपनको दूर करता है।

ईख

इसके इक्षु, दीर्घच्छद, भूमिरस, गुड़मूल, असिपत्र और मधुतृण ये संस्कृत नाम हैं। हिन्दी ईख, म० उँस, गु० शेरडी, तै० चिरकु, का० कबुएदु, अ० कसुबुस, शकर, फा० नेशकर इं० शुगरकेन।

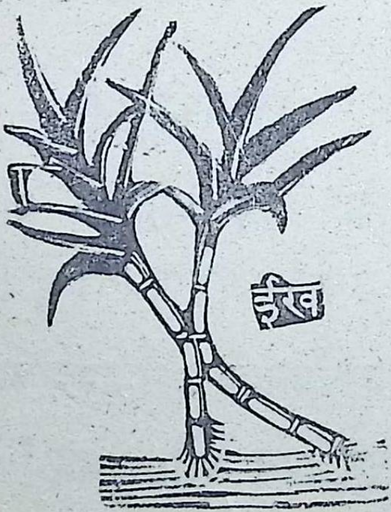

गुण—ईख रक्त-पित्तनाशक, बलकारक, वृष्य, कफजनक, स्वादुपाकी, स्निग्ध, भारी, मूत्र-

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

कारक और शीतल है।

इसकी कई जातियाँ है। पौंड्रक, भीरुक, वंशक, शतपोरक, कांतार, तापसेक्षु, कांडेक्षु सूचीपत्र, नैपाल, दीर्घपत्र नीलपोर और कोशकर। इसमें पौंड्रक भीरुक पौंडा, वात पित्तनाशक रस और पाकमें मधुर है। शीतल वृंहण और बलकर्ता है। इसको बं० में श्याम सांडा और भीरुक पौंडेको साद्धि इक्षु और म० में पांढराउस कहते हैं।

कोशकर—संज्ञक पौंडा भारी, शीतल, रक्तपित्त और क्षयको नष्ट करता है।

कांतारेक्षु (काले रंग-का पौंडा) भारी, वृष्य, कफकारी, वृंहण और दस्तावर है।

दीर्घपोर और वंशक-यह ईख कठिन और वंशक ईख क्षारयुक्त होती है। वंशक ईखको बम्बई ईख कहते हैं। शतपोरक ईक्षु अर्थात् जिसमें बहुत गाँठ होवे वह किंचित कोशकर ईखके समान गुण करती है। अधिकता यह है कि किंचित उष्ण, क्षारयुक्त और वातनाशक है।

Vaidyaraj ... Delhi-26
L X 3
152M46
1732

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

तापसेक्षु—इसको बं० में चीनेर बम्बई अर्थात् चीनियां बम्बई कहते हैं। यह मृदु (नरम) मधुर, कफ कुपितकर्त्ता, तृप्तिकारक, रुचिप्रद, वृष्य और बलकार है।

कांडेक्षु-यह तापसेक्षु के समान गुण करनेवाला है। विशेष करके बात कुपित करता है।

सूचीपत्र, नीलपोर, नैपाल, दीर्घपत्र-इसमें सूचीपत्र-(जिसके बहुत बारीक पत्ते होते हैं)

नीलपोर—(जिसकी गांठ नीले रंगकी होती है)।

नैपाल-(नेपाल देशमें होनेवाला) और दीर्घपत्र-(जिसके बहुत लम्बे पत्ते होते हैं) ये चार प्रकारके पौंडा वातकर्त्ता, कफ पित्त नाशक, कषैले और दाहकर्ता हैं।

मनोगुप्ता-यह ईख वातनाशक, तृषारोग नाशक, शीतल, अत्यंत मधुर और रक्त पित्त निवारक है।

अवस्थाभेद से ईखके गुण यह हैं कि, बाल

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

(छोटी) ईख कफ प्रगटकर्ता, मेदा बढ़ानेवाली तथा प्रमेह रोग कारक है। युवा (जवान) ईख वायु नाशक, स्वाद कुछ कुछ तीक्ष्ण और पित्त-नाशक है। वृद्ध (पुरानी) ईख रक्त-पित्तनाशक घाव निवारक, बलकर्ता और वीर्योत्पादन करने-वाली है।

अङ्गभेदसे ईख जड़की तरफ से अर्थात् नीचे का भाग अत्यन्त मधुर रसयुक्त, मध्यभाग मीठा और ईखके ऊपरी ग्रन्थि (पंगोली) में नमकीन रस रहता है अर्थात् नुनखरा रस रहता है।

दाँतोंसे चबाकर चूसी हुई ईखका रस रक्त-पित्तनाशक, खांड़के समान वीर्यवाला, अविदाही अर्थात् दाह नहीं करे और कफ करनेवाला होता है।

जिस ईखकी जड़को जन्तुओंने खाया हो तथा सकल गांठ कोल्हूमें पेरी गई हो अर्थात् दबाई गई हो तथा मेल आदिक मिलने से और कुछ अधिक काल पर्यन्त धरे रहनेसे वह कोल्हूका पिला हुआ रस बिगड़ जाता है ऐसा उक्त रूप

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

दूषित रस विदाहकर्ता, विष्टंभी और भारी है।

अग्नि पर पका हुआ रस भारी, स्निग्ध, तीक्ष्ण, वात कफनाशक, गोलानाशक और किंचिन्मात्र पित्त करनेवाला है।

इक्षुविकार अर्थात् गुड़ आदिक पदार्थ भारी, मधुर, बलकारक, स्निग्ध, वातनाशक दस्तावर, वृष्य, मोहनाशक, शीतल, बृंहण और विषघ्न हैं। इनका सेवन तृषा, दाह, मूर्च्छा और रक्त पित्त-रोगको नाश करता है।

राब

फाणित--(राब) कुछ-कुछ गाढ़ा और अधिक भाग पतला ऐसे पके हुए रसको फाणित या राब कहते हैं।

गुण—फाणित-रस भारी, अभिष्यंदी, बृंहण, कफकर्ता तथा शुक्रोत्पादक है। यह वात, पित्त, आम, मूत्रके विकार और बस्तिदोषोंको निवारण करता है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

गुड़

गुड़—जिस ईखके रसको पकायके समान दृढ़ किया गया हो उसको गुड़ कहते हैं।

परन्तु बंगालमें मिश्रीको गुड़ कहते हैं। म० गुल, गु० गोल, का० देल्ल, तै० वेदन्नामु, अ० कंदेअसवद, फा० कंदे सिआह, इंगलिसमें ट्रोकल मोलासोस कहते हैं।

गुण-यह वृष्य, भारी, स्निग्ध, वातनाशक मूत्रशोधक, मेदावर्द्धक, कफकर्त्ता और बलकर्त्ता है। यह विशेष करके पित्तनाशक नहीं है।

पुराना गुड़—हलका, पथ्य, अनभिष्यंदी अग्निकारक, पुष्टिकर्त्ता, पित्तनाशक, मधुर, वृष्य, वातनाशक और रुधिरको स्वच्छ करनेवाला है।

नवीन गुड़-अग्निकारक है। इसका सेवन करना कफ, श्वास, खाँसी और कृमिरोग कारक है। अदरकके रसमें गुड़ खानेसे कफ नष्ट होता है। हरड़के साथ गुड़ खानेसे पित्तनाशक है। और सोंठके साथ गुड़ खानेसे सम्पूर्ण वातविकारों को नष्ट करता है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

खाँड़

खाँड मधुर, वृष्य, नेत्रोंको हितकारी, वृंहण, शीतल, स्निग्ध, बलकारक और वमन निवारक है।

बं० खांड़को खांड़ गुड, म० साखर, तै० पांचादार, का० मालखंड, फा० शक्कर, ला० साकीरम, इं० शुगर।

ककड़ी

इसे संस्कृतमें एर्वारु, कर्कटी, हिन्दी, ककड़ी, कावरी, बं० कांकुड, त० दासूकाया, का० कोबसौत, इं० ककंबर।

यह गुणमें शीतल, रूक्ष, ग्राही, मधुर, भारी, रुचिकर्ता, पित्तको शान्त करनेवाली और आम कारक है। यह पक्की और कच्ची दो प्रकारकी होती है। उसमें पकी ककडी प्यास, अग्नि और पित्तको करनेवाली है। गर्मीकी मस्तककी पीड़ामें ककड़ी को सूँघे।

कमल

पद्म, नलिन, अरविंद, महोत्पल, सहस्रपत्र, कमल, शत-पत्र, कुशेशय, पंकरुह, तामरस, सारस सरसरिद्ध, बिसप्रसून, राजीव, पुष्कर और अंभोरुह ये संस्कृत नाम हैं। हि० कमल बं० पद्म, का० विलियताभेर, तै० कालावा, इं० लोटस।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

यह गुणमें शीतल, व्रणकर्ता, मधुर, कफ-पित्तनाशक और विषनाशक है। प्यास, दाह, रुधिर विकार, विस्फोट और विसर्प रोग को नष्ट करनेवाला है।

कमल सफेद, लाल, पीला और नीला कई रंगका होता है। सफेद कमलको पुंडरीक और लाल कमलको कोकनद और नीलेको इन्दीवर कहते हैं। श्वेत कमल शीतल, मधुर, कफ शांतिकर और पित्तनाशक है और लाल कमल आदि गुणोंमें इससे न्यून हैं।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

इसे सब अंगों सहित पद्मिनी के नाम से पुकारते हैं और जिसमें इसका बीज उत्पन्न होता है उसको कर्णिका कहते हैं। इसके फूलों के भीतर बीचमें एक बहुत बारीक रंग होता है जिस पर हाथ रखने से अत्यंत मुलायम लेप सा मालूम होता है जिसको मकरन्द और केसरको कमलकेसर और उसकी नाल यानी डण्ठलको मृणाल कहा जाता है। कमलकी जड़को भसीड़ वा कन्द और बीज-को कमलगट्टा कहते हैं।

कमलका सभी भाग बड़े कामका होता है। यहाँ तक कि इसकी जड़ भी गरीबोंको रोटी बना-कर खानेके काममें आती है। जब गरीबोंके खाने भरको काफी अन्न नहीं प्राप्त होता तो इसकी जड़ को तालाबोंसे खनकर निकाल लाते हैं और पीस कर रोटी बनाते हैं। कमलगट्टाका तो कुछ कहना ही नहीं। कच्चा रहने पर इसे लोग छील-कर इसके भीतरकी गिरीको खाते हैं और पकी यानी सूखी हुई गरीको पीसकर हलुआ बनाया

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

जाता है जो कि अति स्वादिष्ट और पौष्टिक होता है।

प्रदरकी दवा

नीले कमलकी केशर, जीरा, मुलहठी और सोंचर नोन, इन तीनों का चूर्ण बनाकर शहद और दहीके साथ सेवन करनेसे प्रदर रोग का नाश होता है।

दाह नाशकी दवा

भसींडा शालूक, कमलनाल, कमल केसर और चन्दन इन सब चीजोंको चन्दन में पीसकर जिस स्थानमें दाह होता हो पतला लेप करे तो मस्तकादि अंगो का दाह शान्त हो।

तथाच—

केलेके चौड़े-चौड़े पत्तोंको शयन करनेवाले बिस्तरे पर बिछा देवे और उस पर कमलका फूल बिछाकर उसके ऊपर रोगीको सुला देवे। फिर

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

बादाममें मिलाकर घाव पर छिड़के।

कुकुरबंदा

इसे संस्कृतमें ककुन्दर, ताम्रचूड (पीतपुष्प) सूक्ष्म पत्र और मृदुच्छद कहते हैं। हिं० कुकुरबंदा, कुकूसिमा, कुकुरसोंका, कुकरौंधा कहते हैं।

गुणमें यह कटु, तिक्त, ज्वर, रुधिर-विकार और कफनाशक है। इसके सेवन करने से रक्तपित्त, अतिसार और दाह शांत होता है। इसका सर्वाङ्ग लिया जाता है। मात्रा दो माशेकी है।

सूजाक की दवा

कुकुरबंदेको लाकर मीज डाले या पीस डाले। फिर उसको छानकर गायके दूधमें मिलाकर पीवे तो इससे इन्द्रीजुलाब होता है और पेशाबकी कड़क दूर होकर सूजाककी जख्म अच्छी हो जाती है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

कनेर

संस्कृत—करवीर, श्वेतपुष्प, शतकुम्भ, अश्वमारक ये नाम श्वेत कनेरके हैं। हिन्दीमें शफेद कनेर, बंगलामें श्वेत-करवनी। का० बीकणालिगे, म० श्वेतकणेर, गु० घोलीकणेर, अंग्रेजी में ओलीआन्डर। रक्त करवीरके संस्कृत नाम चंडत, और लगुड हैं। हिन्दीमें लाल कनेर। बं० रक्तकरवी। म० तांबडी-कणेर, गु० रातीकणेर, का० केंगणालिगे, तैलगू कानेरचेट्टु, प० सुमुल, फा० सरजेहरा, अंग्रेजीमें अलियंडर कहते हैं।

कनेर चार प्रकारकी होती हैं। एक का फूल सफेद होता है और दूसरे प्रकारके कनेरका फूल लाल होता है और तीसरी का फूल पीला और चौथी

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

का गुलाबी रंगका होता है। यह कनेर भी सात उपविषोंमें एक कही गई है

गुण—लाल और गुलाबी ये दोनों कनेर कडुवी, कषैली और कटु होती है।

प्रयोग—व्रण, कोढ़ उष्णवीर्य, नेत्रपीड़ा, कृमि, घाव खुजली आदि रोगों को हरण करता है। खाने पर विषका काम करती है।

पीली तथा काली कनेर

पीली कनेरको सुगन्धित कुसुम भी कहते हैं। इसका फूल पीले रंगका बड़ा सुहावना और सुगन्धि होता है। इसी प्रकार काले रंग की कनेर होती है परन्तु वह बाग बगीचोंमें इधर कहीं देखने में नहीं आती। हाँ, गुलाबी रंगकी कहीं-कहीं अवश्य दिखलाई पड़ती है।

कनेर खानेसे घोड़ा मर जाता है। प्लेगकी गिल्टी पर कनेर की छालको पीसकर लेप करनेसे गिल्टी बैठ जाती है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

जीर्ण घाव पर

कनेरके पत्तों को सुखाकर जला लेवे, फिर उसकी राखको पुराने घावों पर बुरक देवे। कई दिन बराबर बुरकनेसे घाव सूखकर अच्छे हो जाते हैं।

जाँघोंके दर्दमें

कनेरके पत्तोंको औटाकर तरेड़ा करेतो जंघेकी दर्द दूर होवे।

यह काढ़ा आँखकी लालिमा और खुजलीको भी दूर करता है। इससे आँखोंको धोवे।

सिर दर्दकी दवा

अफीम और उशुकके साथ कनेरका छाल पीसकर सिर पर लेप करे तो शिरका दर्द जाता रहे और पुराना घाव भी अच्छा हो जावे।

घरमें दीमक पिस्सू आदि न लगें

कनेरके पत्तों और छालको एकमें मिलाकर

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

औटा लेवे। फिर उस औटे हुए जलको घरमें छिड़क देवे तो घरमें दीमक, साँप, बिच्छू और पिस्सू उस घरको छोड़कर भाग जाते हैं।

श्वेत कुष्ट और पीठके दर्दकी दवा

ताजे-ताजे कनेरके फूलको उतार लावे और उसको मीठे तेलमें डालकर ४० दिनों तक उसीमें पड़ा रहने देवे। जब फूल गल जावे तब उसमें उतना ही जैतूनका तेल भी मिला देवे। फिर उस तेलको दवाके काममें लावे। इस तेलके लगानेसे शरीरके सफेद दाग, कोढ़, पुट्ठोंका दर्द तथा पीठका दर्द दूर होता है। पुरुषेन्द्रिय पर मालिश करनेसे सुस्ती जाती रहती है।

कनेर घृत बनाना

दश सेर दूधमें २० तोले सफेद कनेरकी जड़ मिलाकर भली प्रकार औटा डाले। फिर आगसे उतार कपड़ेसे छानकर दही जमा देवे। जब दही जम जाय तो उसको मथनीसे मथकर उसमेंसे घी

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

निकाल लेवे । यह घी भी उक्त रोगोंमें परम गुण-कारी होता है ।

जिनकी नसें कमजोर होगई हों उन्हें उपरोक्त घी को एक रत्ती मक्खनमें मिलाकर खिला देवे । फिर उसी घी को नसों पर मर्दन करे और ऊपरसे पान बाँध देवे । अवश्य लाभ होगा । उस लेपकी गरमीसे यदि फुन्सियाँ निकल आवें तो सौ बार धोए हुए घी को उनपर चुपड़ देवे और गुड़, तेल खटाई का सेवन न करे, जिसको सुस्ती होगई हो, उसको पान पर लगाकर खिलावे तो उस मर्दकी सुस्ती जाती रहे ।

कनेर घृत से अन्य लाभ

कनेर घृतमेंसे सींक भर घी निकालकर पान में लगाकर २१ दिनों तक सेवन करे तो स्त्री प्रसङ्ग में अनिच्छा, स्वाँस, खाँसी, निर्बलता, रोगों और पट्ठों की शिथिलता आदिका विकार जाता रहे ।

उपरोक्त घीके सेवन करनेसे अफीम खानेकी

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

आदत छूट जाती है। पथ्यसे रहे। घी दूधका सेवन करे।

खुजली की दवा

कनेर के पत्ते २० नग पाव भर सरसों के तेलमें जलाकर तेल बदन पर मले।

घाव पर

कनेर की सूखी पत्ती पीसकर घाव पर बुरके।

जोड़ोंके दर्दकी दवा

कनेरकी पत्तियाँ औटाकर कूटके मीठे तेलमें मिलाकर लेप करे।

शिर दर्द और अधकपारीकी दवा

सफेद कनेरकी पत्ती छायामें सुखाकर महीन पीसे जिस ओर पीड़ा हो उसी ओरके नथनेमें दो चावल फूंके छींकें आवेंगी और नाक से बहुत पानी टपकेगा और पीड़ा जाती रहेगा।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

कचूर

इसे संस्कृतमें कर्चूर, वध, मूरथ, द्राविड, कल्प और शठी कहते हैं। हिन्दीमें कचूर, अमिया हल्दी, बं० शठी, म० कचोरा, कलीआगिन, षटकचोरा गु० कचोरा, कचुरी, तै० कचोरालु, अ० एरकुल काफुर, फा० जरबाद, इं० लांगजेडोरी, ला० करक्यमा जेडोरिया।

कचूरके चपटे, गोल, रूपाके समान सुगन्ध-वाले जड़के टुकड़े होते हैं। यह एक हल्दीकी जाति है। यह मलेबार, मुंबई, थाना इत्यादि स्थानों में होती है।

गुण—अग्निदीपक, रोचक,चरपरा कड़वा, सुगन्धित, गरम और हल्का है।

प्रयोग-कोढ़, बवासीर, व्रण, खाँसी, श्वांस, गोला वादी, कफ, कृमि, गलगंड, गंडमाला, अपची और मुखकी जड़ता आदिको नष्ट करता है। मात्रा ४ माशेकी है। प्रतिनिधि (इसके अभावमें) सतावर है। यह दिल और दिमागको अवगुण करे तो इसका दर्पनाशक सफेद चन्दन है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

आमबातको दवा

कचूर, सोंठ, हरकी छाल, वच देवदारु, अतीस और गुर्चका दो टंक क्वाथ नित्य पिलावो तो आमबात दूर हो ।

जीर्ण ज्वर और विषम ज्वरकी दवा

कचूर, पित्त पापड़ा, सोंठ, नागरमोथा, कुटकी, कटिआली, और चिरायता समानके चूर्णमें से २ टंक क्वाथ प्रतिदिन ११ दिन पिलावे तो जीर्ण ज्वर और विषम ज्वर दोनों दूर होवेंगे ।

कंजा (करंज)

इसे संस्कृतमें करंज, नक्तमाल और चिरबिल्वक कहते हैं । हिन्दीमें कंजा, करंजुवा, कटकरंजा बं० डहर करंज, म० करंजाचेवृक्ष, चोपड़ा करंज क० नापसीय मरनू, तै० कंजू, ला० पोन गेम्याग्लेवरा कहते हैं ।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

यह तीन चार तरहका होता है। परन्तु गुणमें सभी समान हैं। इसका वृक्ष मध्यम कद का होता है। शाखी जातिका वृक्ष है, लता रूपमें भी होता है। पत्ते गोल आगेसे अनीदार और गुच्छेदार होते हैं तथा सफेद पुष्प होता है। पत्ते केसुला की तरह होते हैं। फली लम्बी और चपटी होती है। इसके फलको फोड़नेसे भीतरसे बादामी रंगका चपटा बीज निकलता है। यह प्रायः नदीके किनारे बहुत होता है। एक-एक डालीमें पाँच-पाँच सात-सात पत्ते होते हैं।

गुण—यह कटु, तीक्ष्ण, उष्णवीर्य और योनिका दोष हरणकर्ता है।

प्रयोग—कुष्ट, उदावर्त, गोला, बवासीर, व्रण कृमिरोग और कफ इन रोगोंको नष्ट करनेवाला है।

कुंजेके पत्ते भेदी, कटुपाकी, उष्णवीर्य, पित्त-

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

कर्त्ता और हल्के होते हैं। पत्तोंके प्रयोग से कफ, वात, बवासीर, कृमि और सूजन दूर होता है।

कंजेके फल वातनाशक, प्रमेह, बवासीर, कृमि और कोढ़को दूर करने वाले हैं।

कंजेके बीज, छाल और पत्ते प्रयोग में लिये जाते हैं। मात्रा दो माशेकी है।

कन्धों की व शीत लगने की दवा

कंजा औटाकर बफारा ले और वायु से बचे और जिसको शीत पकड़ ले तो सिर्स के पत्ते, सँभालू के पत्ते, सहजन के पत्ते औटाकर बफारा ले। पत्तों को अवयव पर बाँधे और वायु से बचता रहे।

स्वांस राग की दवा

कंजा की मिंगी और पीपल पीसकर अदरक के रस में मिर्च के प्रमाण की गोलियां बना ले। तीन गोली तड़के के समय खाया करे।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

भूत बाधा निवारण

करंज की जड़, दारु हल्दी, सरसों, कचूर हींग, वच, मजीठ, त्रिफला, सोंठ, काली मिर्च; पिप्पली और प्रियंगु पुष्प, इनको बकरे के मूत्र में पीसकर नास सुँघाओ तथा अंजन लगाओ तो भूत की बाधा दूर हो।

कचनार

इसे संस्कृत में कांचनार, कांचनक, गंडारि और शोण पुष्पक कहते हैं। हिन्दी में कचनार, बं० लाल कांचन म० रक्त कंचन, क० काच, कोचाले, ता० वेप कांचच, गु० कंचन वृक्ष, कांचनार, ला० वोहीनी आवेयेंगेटा कहते हैं।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

कचनार का वृत्त बड़ा होता है और पत्ता बीच में से फटा हुआ होता है। बम्बईमें इस पत्ते में तम्बाकू भरकर पीनेकी बीड़ी बनाते हैं।

गुण—शीतल ग्राही, कषैली और पित्तनाशक है

प्रयोग—कृमि, कुष्ट, गुदभ्रंश, गंडमाला और व्रण को दूर करता है।

इसके फूल हल्के रूखे और संग्राही हैं। यह रक्त, पित्त, प्रदर, क्षय और खाँसी के रोग को नष्ट करनेवाला है। इसकी छाल प्रयोग में ली जाती है। मात्रा दो माशे की है।

कचनार की फली का शाक होता है और कचनार के रस की पुट देने से सुवर्ण की भस्म बनती है।

दाँत दर्द की दवा

कचनारकी लकड़ी जलाकर पीसकर मंजन बनाकर मले। तथा कचनार की छाल औटाकर कुल्ले करे।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

बवासीरमें

कचनार, जामुन और मौलीसिरीकी छालका पानी में औटाकर आबदस्त ले तो बवासीर दूर हो।

कटहल

इसे संस्कृतमें पनश, कंटुकि फल और अतिबृहद्‌ फल कहते हैं। हिं० कटहर, कटैर, बं० कांठाल, म० फणस, क० हला सोनहणु, तै० पगसब काया, का० इलसीनहणु, ता० पिन्ली, उड़िया में पड़स, ला० अर्टोकार्पस इन्टेग्रिफोलिया।

गुण—कटहलका पका फल शीतल, स्निग्ध, वातपित्त नाशक, तृप्तिकरता, बृंहण, स्वादु, मांस और कफको बढ़ानेवाला, बलकर्ता और वीर्य वर्द्धक है।

प्रयोग—यह रक्तपित्त, क्षय और व्रणको दूर करनेवाला है।

कटहल का कच्चा फल विष्टंभी, वातकर्ता, कषैला, भारी, दाहकर्ता, मधुर, बलकारी, कफ और मेद को बढ़ानेवाला है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

कटहलके बीज- वीर्य वर्द्धक, मधुर, भारी, मलको बढ़ानेवाला और मूत्रको निकालने वाला है।

उकवँतकी दवा

कटहलके पत्ते घी से चुपड़कर थोड़ा गरम कर उकवँत पर बाँधे और चार घड़ी पश्चात् दूसरा पत्ता बाँधे।

करील

इसे संस्कृतमें करक, ग्रन्थिल और मरुभुरुह कहते हैं। हिं० करील, म० घट्टुभारङ्गी, गु केरडो कहते हैं।

यह एक क्षुप जातिका वृक्ष है। ऊसरमें, बहुत होता है। इसके फलको टेंटी कहते हैं। इसका फल लाल रंगका होता है।

यह गुणमें चरपरा, कड़वा, पसीना लानेवाला गरम और दस्तावर है। यह बवासीर कफ, आमवात, विष, सूजन और व्रणको दूर करनेवाला है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

नासूरकी दवा

करीलकी कोंपल एक माशे, मुर्दाशंख एक रत्ती, बर्गदका दूध एक बूँद पानीके साथ पत्थर पर पीसकर लगाकर उसपर एक बूँद बर्गदके दूधको टपकावे।

बरसाती फोड़ों पर

करीलका कोयला सरसोंके तेलमें मिलाकर लगावे।

कपास

इसे संस्कृतमें कार्पासी, तुण्डकेरी, समुद्रांता, हिन्दीमें कपास, बं० कार्पासी, गु० बण, म० कापसी, ते० पत्तीचेट्ट, अ० कुतुन फा० कुतुनपुवेदाना, ला० गोसिपियम, इं० काटन कहते हैं।

पीले और लाल फूलकी कपास हल्की किंचित् उष्ण, मधुर, और वातनाशक होती है। इसके सेवन करनेसे तृषा, दाह, चित्तकी बेकली, परिश्रम, भ्रम, और मूर्च्छा दूर होती है। कपासके

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

पत्ते वायुनाशक और रक्तजनक हैं। इसके सेवनसे कानका दर्द, कर्णनाद और कानसे राधका बहना दूर होता है।

१—कपासके बीजका लेप स्तनों पर चढ़ाने से दूध बढ़ता है।

२—कपासकी जड़का रस या भंटेकी जड़का रस पिलानेसे भंग तथा धतूरेका मदात्य दूर होता है।

गलगंडकी दवा

कपासकी छाल, गुरच, नीमकी छाल, छड़, दोनों पीपल, खरेंटी और देवदारुके क्वाथको तेलमें पकाकर वह तेल २५ दिन लगानेसे गलगंड रोग शान्त होता है।

स्त्री धर्ममें अधिक रुधिर आवे तो कपास के बीजोंका चूर्ण फाँके।

कत्था (खैर)

संस्कृतमें खदिर, रक्तसार, गायत्री, दंतधावन, चंटकी,

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

बालपत्र, बहुशल्य और याज्ञिक कहते हैं। हिन्दीमें खैर, लाल कत्था, म० कात, गु० खेरियो. क० कॅगिम खैर तै० रुवासु।

गुण—यह शीतल, दाँतोंको हितकारी, कड़वा और कषैला है।

प्रयोग—खुजली, खाँसी, अरुचि, मेदरोग कृमि, प्रमेह, ज्वर, व्रण, सफेद कोढ़, आमवात, रक्तपित्त, पांडुरोग, कुष्टरोग, और कफके विकारों-को दूर करता है।

खैरके बड़े-बड़े वृक्ष होते हैं। उनमें छोटे-छोटे और टेढ़े २ काँटे होते हैं। इसकी लकड़ीसे यज्ञके स्रुवा, स्रुवी बनाकर उनसे होम करते हैं और इसकी लकड़ी का कोयला आतशबाजीमें काम आता है।

मदनपाल निघंटु में लिखा है कि, इस वृक्षकी अत्यन्त रंगकी लकड़ी और कच्ची फलियों में से औटायके सत्व निकलता है। उसीको कत्था कहते हैं।

अँतरिया ज्वरकी दवा

चिरायते को पानीमें भिगोकर उस पानीमें

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

१०-१२ ग्रेन कत्था डाल देवे। फिर इस जलको पीवे तो अँतरिया ज्वरको शीघ्र लाभ हो।

मसूड़ोंसे रुधिर आनेकी दवा

रुधिरके विकारके कारण यदि मसूड़ों में से रुधिर निकलता हो तो कत्थेको मसूढ़के ऊपर मले तथा खानेको देनेसे अत्ययंत फायदा करता है।

नासूर और कोढ़के दागों पर

डा० एम० रोसना कहते हैं कि, यह अनुभव सिद्ध है कि, बहुत दुष्ट नासूर और कोढ़के दागों पर कत्थेको बारीक पीस अन्य पदार्थों के साथ मलहम मिलायके लगानेसे घाव शीघ्र भर जाते हैं।

चरकसंहिता—खैरकी छालको कुष्टनाशक वर्णन किया है तथा सुश्रुतमें उसको मेदहर, कुष्ट नाशक और मेद शोषणकर्ता माना है। इन पुस्तकों में कत्थेको स्तंभक माना है। पत्तों का क्वाथ करके देनेसे मूत्र स्थानके रोग नष्ट होते हैं।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

गुण—भारतीय लोग कत्थेको शीतल, ग्राही, और पाचक मानते हैं। तथा गलेके भीतरके रोगों-में मुखकी गरमी, फूले, मसूड़े, खाँसी, दस्त और शूलके रोगोंमें उपयोगी मानते हैं। पुराने नासूर, फोड़े और गाँठ पर इसको पीसकर लेप करते हैं। कत्थेको दवाओंके साथ मिलाकर देनेके लिए अन्य ग्रन्थकी अनेक सम्मतियाँ हैं।

मुसलमानी ग्रन्थोंमें भी ऊपर कहे हुए सब गुण कत्थेमें माने गये हैं। खैरकी लकड़ी के सार को ही खैरसार कहते हैं। खैरसार का स्वाद मीठा और कषैला होता है तथा देशी दवाओंमें उसको छातीके रोगोंमें अत्यन्त वेशकीमती माना गया है। इससे कफ जुदा होकर निकलता है।

दाद पर

कत्था और पलासपापड़ा लगावे।

कटेरी

इसे संस्कृत में कंटकारी, दुःस्पर्शा, क्षुद्रा, व्याघी, निदिग्धिका,

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

कंटालिका, कंटकिनी, धावनी कहते हैं। हिं० कटेरी, भटकटैया, रेंगनी, बं० कंटकारी, म० दिंगणी, क० तेलगुन्लु, गु० भोरीगणी।

यह एक क्षुप जातिकी बनस्पति है जो पृथ्वीमें फैली रहती है। इसका फूल नीले रंगका और पीले रंगका फल बेरके समान गोल होता है। कटेरीका गुण दस्तावर, स्वाद चर्परा, दीपन, हल्की, रूक्ष, गर्म और पाचक है।

वात-कफ-ज्वर और खाँसी की दवा

कटियाली, सोंठ, पित्तपापड़ा और गिलोय-को समान भागमें लेकर चूर्ण कर डालो। इसमेंसे छदाम-छदाम भरका क्वाथ १० दिन तक पीनेसे उक्त रोगोंमें तत्काल लाभ प्राप्त होता है।

मूत्रकृच्छ्की दवा

कटियाली का रस मधुके साथ पिलाने से मूत्रकृच्छ् नष्ट होता हैं।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

बालक दूध नही फेकता

कटियालीके फलोंका रस, पीपल, पीपलामूल, चव्य, चित्रक और सोंठका चूर्ण मधुके साथ चटाने से बालक दूध नही फेकता।

कटेरीका प्रयोग खाँसी, श्वास, ज्वर, कफ, बादी, पीनस, पार्श्वपीड़ा और हृद्रोगमें किया जाता है। यह वीर्यवर्द्धक, रेचक, भेदक, कड़वा, पित्तकर्ता, अग्निवर्द्धक और कफ, वायुनाशक है। इसीको लक्ष्मणा भी कहते हैं। परन्तु सुश्रुतने इसके शारीरिक भागमें लक्ष्मणाके अन्य ही लक्षण कहे हैं। पर गुणमें दोनों ही समान हैं। प्रयोगके लिए इसकी जड़ लेना चाहिए। परन्तु जड़ न मिले तो पंचाङ्ग लेना चाहिये।

जीर्णज्वर की दवा

कटियाली, गिलोय और सोंठ इन तीनोंका क्वाथ दश दिन पर्यंत पिलाओ तो जीर्ण ज्वर दूर हो।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

सन्ततादि शीत ज्वरकी दवा

कटियाली, धनियां, सोंठ, गिलोय, नागरमोथा, पद्मकाष्ठ, रक्तचन्दन, चिरायता, पटोलपत्र, अडूसा, पुहकरमूल, कुटकी, इन्द्रयव, नीमकी छाल, भारंगी और पित्तपापड़ा, समानके चूर्णमें दो टंकका क्वाथ दोनों समय १० दिन पिलाओ तो सन्ततादि शीतज्वर नष्ट हो। यह क्षुद्रादि क्वाथ है।

कफज्वरमें

कटियाली, गिलोय, सोंठ, पुहकरमूल और अडूसा धेले २ भर लेके क्वाथ बनाकर सात दिन पिलाओ।

अथवा—

कटियाली, पीपलि, काकड़ासिंगी, गिलोय और अडूसा दो-दो टंक लेकर क्वाथ बनाओ और इसे १० दिन पर्यन्त पिओ।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

खाँसी की दवा

छोटी कटेरी की जड़, मुलहठी, काकड़ासिंगी, कुलिजन, हडकाबक्कल पानी में औटाकर बबूल की छाल मिलाके चनेके प्रमाण गोलियाँ बनाकर मुँह में रखे।

नाक के रोग में

छोटी कटेरी पानी में पीसकर नाक पर लगावें और उसके पत्तों तथा जड़का रस निचोड़ कर नाकमें टपकावे।

नेत्र पीड़ा में

कटेरी के पत्ते पीसकर नेत्रों पर बाँधे और रस नेत्रों में टपकावे तो नेत्रों को गुण करता है।

मिरगी की दवा

कटेरी की जड़ और भाँग के बीज बराबर-बराबर लेकर बालकके मूत्रमें पीसकर जब

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

मिरगी आवे तो उसकी (रोगीकी) नाकमें टपकावे।

तथाच—

छोटी कटेरीका फल सुखाकर कायफल, नकछीकनी प्रत्येक छः माशे और कुतारा ४ तोले लेकर सबको महीन पीसकर दो माशे नित्य सूँघे।

दांत दर्द में

कटेरी का फल पुष्प सहित कूट निचोड़ कर उस पानी से कुल्ले करे तो दांतों की पीड़ा और कीड़ोंके खानेसे जो पोल पड़ गई हो तो गुण करे। तथा कटेरी को पानीमें औटकर चार दिन कुल्ले करे तो भी यही गुण हो।

नासूर की दवा

छोटी कटेरीका फूल कूट छानकर जलमें मिलाकर फाहा उसमें भिगोकर नासूर पर बाँधे।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

कपूर

कर्पूर, सिताभ्र, हिमबालुक, घनसार, जितने चन्द्रमाके और हिमके संस्कृत नाम हैं वे सब कपूरके जानो। हिं० कपूर, बं० कर्पूर, म० कापूर, गु० बरास कपूर, तै० कर्पूरम्, फा० काफूर, ई० कम्फर कहते हैं।

कपूर तीन प्रकार का होता है। भीमसेनी, पत्री और चीनिआ। ये तीनों आजतक बराबर व्यवहार में आते हैं। यह इब्तखुर्दा, चीन, हिन्दुस्तानमें पैदा होता है। भारत में यह (एक) केलेकी जाति से भी पैदा होता है। इसको कपूर केला कहते हैं। कानसूर शहर को बरास भी कहते हैं। उसमें प्रकट होने से यह बरास कपूर कहाती है। बरासका भीमसेनी कपूरका बड़ा भारी दरख्त होता है। एक वृक्षमें से अनुमानतः छः सवा छः सेर कपूर निकलता है और उसी जगह १४० रुपये सेर बिक जाता है। दूरसे आता है और खर्चा अधिक पड़ता है। इसीसे इसकी अधिक प्रशंसा।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

गुण—कपूर (बरास वा भीमसेनी) शीतल, बलकारक, नेत्रों का हितकारी, लेखन, हल्का, सुगन्धित, मधुर, दुर्गन्धनाशक, कड़वा आक्षेप वातनाशक, निद्राको प्रकटकर्ता, पसीने बढ़ानेवाला, वेदनानाशक और काम वेगको शान्त करनेवाला है।

प्रयोग—इसके सेवन करनेसे पित्त, कफ, विषदोष, दाह, तृषा, मुखकी निरसता, मेदरोग और शुक्र प्रमेह इनको दूर करता है।

इस कपूरके दो भेद हैं। एक पका हुआ, दूसरा कच्चा। इन दोनों में कच्चा कपूर विशेष गुणकारी है। इसकी मात्रा ४ रत्ती की है। इसके अभावमें सुगन्धित मोथा लेना चाहिये।

कपूरकी परीक्षा

जो भांगके पत्तोंके समान छोटे २ टुकड़े अत्यन्त हल्के और तोलमें अधिक चढ़े। खानेमें कड़वा लगे, शीतल, हृदय को प्रिय और अत्यन्त

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

सुगन्धिकी लपट देनेवाला, चिकनाई रहित, कठोर पत्रका ऐसा शुभ कपूर राजाओंके योग्य है। इससे विपरीत प्रायः फोड़े और घाव को प्रकट करनेके वास्ते कहा है।

यह वृत्तके शिर, मध्य और तल इन तीन भागोंके होनेसे कपूर तीन प्रकारक होता है। जो वृत्तके ऊपरके भागमें हो वह शिर है। मध्यमें और जो पत्तेके नीचे होवे वह तल संज्ञक कपूर है। तथा जो स्तम्भके गर्भमें स्थित हो वह कपूर श्रेष्ठ माना जाता है। और स्तंभके बाहर होने-वाला कपूर मध्यम है तथा जो स्वच्छ और कुछ २ हल्दोके समान पिलास लिये हो वह मध्यम और जो सफेद और रुखाई लिये हो वह अधम है।

इन सब भेदोंके अतिरिक्त एक 'पत्री कपूर' भी होता है। यह एक छोटे चुप जातिके वृक्षके पत्तों से निकलता है। यह वृत्त चीन देशमें होता है। इस वृत्तसे बस्नाके मुल्कके मनुष्य औटाय करके कपूर निकालते है। यह भीमसेनी कपूरकी

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

अपेक्षा भारी है और इनमें दोनों महुए वृक्षके समान गंध आती है और चीनीके लोग इसे नागाई कहते हैं।

चीनियाँ कपूर

यह बरास और पत्री कपूर दोनोंसे हल्का है और बाजारमें बहुत सस्ता मिलता है। इसको पक्व (पक्की) कपूर कहते हैं। यह बरास और पत्री कपूर दोनों से हल्का और बाजारमें बहुत सस्ता मिलता है। यह भी एक वृक्षसे निकलता है। इसीसे देव-मन्दिरों में आरती करते हैं और बहुतसे भारतवर्षके पामर जन इसको उड़ाकर स्वच्छ कर लेते हैं। फिर इसीको भीमसेनी कपूरके नामसे बेचते हैं।

भीमसेनी कपूर साधारण कपूरके बनिस्बत बहुत शीघ्र कामोत्तेजक है।

करेला

इसे संस्कृतमें कारवेल्ल, कठिल्ल, हिन्दीमें करेला, बं० करोला, गु० करेला, म० कधुकारलो, तै० करिला, का०

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

हागल, उड़ियामें फालरा, फा० कारेलाह और अंग्रेजीमें हरी मोडिका कहते हैं।

करेलेकी तासीर हल्की, दस्तावर, शीतल, कड़वा और बादी रहित है। यह गुणमें कफ-रुधिर, ज्वर, पित्त, पांडुरोग, रुधिर-विकार, कृमि-रोग और प्रमेहको दूर करनेवाला है। करेलीका गुण भी करेलेके ही समान होता है।

करेलीकी बेल खेतोंमें वा छोटे २ पेड़ों तथा कमरों पर देखनेमें आती है। यह बेलि बहुत पतली-पतली टहनियोंदार होती है जो अनेक शाखाओंसे अपने अगल-बगलकी जमीनको दोतीन हाथके दायरेमें घेर लेती है।

करेला दो तरहका होता है। एकको करेला,

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

दूसरेको बन करेला कहते हैं। करेला छोटा बड़ा सब प्रकारका होता है। बड़ा करेला ज्यादासे ज्यादा एक फुट लम्बा होता है। यह खाने में कड़वा होता है इसके ऊपर जो मोटा छिल्का होता है उसपर दाना-दाना निकला होता है और भीतरके मध्यमें बड़े २ बीज लगे रहते हैं। करेला भाजी एवं शाक बनाने के काम आता है। इसका अचार भी बनता है जो खाने में स्वादिष्ट होता है। जब करेला पक जाता है तो इसका भीतरी रंग लाल होता है और कच्चे पर बीजका रंग सफेद होता है।

पित्त विकारवाले रोगीको करेले की पत्तियों का रस पिलानेसे वमनके साथ पित्त निकल जाता है और यदि वमन न होवे तो किसी प्रकार की हानि भी नहीं होती और कुछ देर बाद दो चार दस्त होता है। और दस्तके साथ २ पित्त का प्रकोप भी दूर हो जाता है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

रतौंधीको दवा

सन्ध्या समय काली मिरचको करेलेके रसमें घिसकर आँखमें आँजे तो रतौंधीका रोग जाता रहता है।

बालकका पेट साफ करनेको

करेलेकी पत्तियोंका रस निकाल लेवे। फिर उस रसमें थोड़ी सी हल्दी घिसकर पिला देवे। फिर वमन द्वारा बच्चेका पेट साफ हो जावेगा।

पारा खाने पर और हैजा होने पर

करेलेकी जड़का रस पानीमें घोटकर पिला देवे। तथा तिलका तेल और करेलेका रस दोनों को बराबर २ मात्रामें लेकर पिलानेसे हैजेके रोगीको लाभ पहुँचता है।

पेटके कीड़े निकल जावें

करेलेके पत्तोंका रस निचोड़कर पिलानेसे पेटमें पड़े कीड़े नष्ट हो जाते हैं।

कामला रोगमें

करेलेकी पत्तियोंके रसमें बड़ी हर्रको घिसकर

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

कामलेके रोगीको पिलानेसे कामला रोग जाता रहता है।

गठियाकी दवा

करेला सूखा लेकर सिरकेके रसमें पीसकर आग पर थोड़ा गरमाकर कण्ठकी सूजन पर लगानेसे सूजन जाती रहती है और गठियाका रोग भी दूर होता है।

जलन्धरकी दवा

करेलेका रस पौने दो तोले निचोड़ छानकर पीवे और उसमें थोड़ा-सा शहद मिलावे तो दो-तीन दस्त लाकर दोषको दूर कर देता है।

करौंदा

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

इसे संस्कृतमें करमर्द, सुषेण, कृष्ण पाकफल, बं० करयचा, म० घरबन्द, गु० करयदा, ला० कोरेसा, कारेदास कहते हैं।

इसकी एक और जाति इससे भी छोटी होती है जिसको करमंदिका कहते हैं। इन दोनोंके गुण और सकल सूरत में कोई अन्तर नहीं होता। इसकी झाड़ कटीली और छतनार होती है। टहनियाँ भी दो-तीन या चार हाथसे अधिक बढ़ी देखनेमें नहीं आतीं। यह छोटा रहने पर ही फूलने-फलने लगता है और बराबर फूलता-फलता रहता है। इसकी झाड़िया वृक्षमें खूब फूल और फल आते हैं। यहाँ तक कि जब इसका फल बढ़कर सफेदसे लाल रंगका हो जाता है तो दूरसे देखने पर सारा वृक्ष लाल-हरा मिश्रित बहुत भला मालूम होता है। इसके फूल सफेद रंगके गुच्छेदार और कुछ सुगन्धि लिये होते हैं।

गुण—करौंदे जब कच्चे रहते हैं तो खट्टे और भारी होते हैं, उसके खानेसे प्यासकी शान्ति होती है। और रक्त-पित्तका हरण होता है। यह

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

कफनाशक भी है और गरम तथा रुचिकारी भी है।

जब करौंदा पक जाता है तो इसका गुण बदल जाता है। अर्थात् तब यह मीठा, हल्का, रुचिकर और बादीका शमन करनेवाला हो जाता है।

सर्पके काटने पर

करौंदेकी जड़को पानीमें औटाकर पिला देवे। सर्पका विष जाता रहेगा।

खुजलीकी दवा

करौंदेकी जड़ लाकर उसे पानीके साथ पीस लेवे। फिर उसे तेलमें पकाकर जिस स्थानमें खुजली होती हो वहाँ पर लेप करे। खुजली दूर हो जायगी।

घावके कीड़े दूर हों

इसी तेलको घाव पर लेप करे तो घावमें जितने कीड़े पड़े होंगे मर जायेंगे।

तथा दूसरी विधि

करौंदेके ताजे पत्तोंको पानीमें डालकर औटा

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

लेवे फिर उस पानीसे कीड़े पड़े घावको धोवे तो कीड़े गिर पड़ते हैं ।—तथा

करौंदेके कच्चे फलों को पत्थर या सिल पर पीसकर उसकी लुगदीमें मूँगोंका भरकर ऊपलोंकी दहकती आगमें तोप देवे तो कुछ देरके पश्चात् मूँगे भस्म हो जायँगे ।

पेटके दर्दकी दवा

करौंदेकी जड़को पीसकर उसकी फंकी लगाने से पेटका दर्द दूर होता है ।

चाँदी भस्म हो

उपरोक्त रीतिसे करौंदेको पीसकर उसकी लुगदीमें चाँदीकी बारीक-बारीक पत्तरें भरकर शराब संपुटकर (शराबमें डुबोकर) उसमें क्रमशः ११ बार अग्नि देनेसे चाँदी भस्म हो जावेगी ।

ज्वरकी दवा

करौंदेकी जड़का काढ़ा तैयार कर शरीर पर लेप करनेसे विषम ज्वर उतर जाता है ।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

खाँसीकी दवा

करौंदेके पत्तोंका रस निकालकर उसमें अन्दाजसे शहद मिलाकर चाटे तो सूखी खाँसी जाती रहे।

तथाच अन्यान्य रोगमें

यदि शरीरका रक्त सूखा जाता हो, पित्त-विकार होगया हो या लू लग गई हो तो पके करौंदेका शर्बत पिलावे।

जलंधर रोगकी दवा

करौंदेका शर्बत पहले दिन एक तोला, दूसरे दिन दो तोला, इस तरह प्रतिदिन एक-एक तोला अधिक बढ़ाता जावे। फिर दशवें दिन दश तोला पिलावे। इस क्रमसे दवा करनेसे जलंधर रोग दूर हो जायेगा।

करही (मालकांगनी)

इसे संस्कृतमें ज्योतिष्मती, कटभी, ज्योतिष्मका, कंगुनी, परावतपदी, गरायालता और ककुन्दनी कहते हैं। हि० मालकांगनी, बं० लताफटकी, म० मालकांगोड़ी, का० कौगुएरडु,

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

तै० वापजी, गु० मालकोकड़ा, ला० सिलास्ट सर्पनिक्युलेटा।

इसकी बेल होती है। पत्ते कुछ गोल और झुमकेदार होते हैं। फल भी झुमकेदार चना अथवा भारके समान बड़ा होता है। इसके भीतर लाल रंगके छः बीज होते हैं।

गुण—मालकांगनी लताजातिका वृक्ष है। कटु, तिक्त, सर (वायु) मलादिकों को निकालनेवाला, अत्यन्त उष्ण, वमनकारक, तीक्ष्ण, अग्निकारक, बुद्धि स्मृतिदायक तथा कफ वायुनाशक है।

इसके सम्बन्धमें यूनानी हकीमोंकी राय है कि मालकांगनीके बीज गरम, संधिवात, लकवा, कुष्ट और दूसरे सरदीसे प्रकट रोगोंमें वर्तनेमें उसी प्रकार बाहर लगाते हैं। ऊपर लिखे रोगोंमें बीज प्रथम रोगके प्रारम्भमें १ से प्रतिदिन एक २ वृद्धि क्रममें ५० तक बढ़ाकर केवल अकेले अथवा अन्य गरम औषधके साथ मिलाके खानेकी प्रशंसा करते हैं।

सुश्रुतमें इसको व्रणशोधन और कुष्ट प्रशमन

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

कहा गया है। चरकमें इसको शिरोविरेचन कर्ता कहा है और इसके पत्तोंके रससे जीभका जड़त्व दूर होता है और उनसे पेशाब अधिक आवे तथा जलंधरकी व्याधिमें देनेसे सूजन न्यून होती है तथा इससे जुलाब भी होता है।

मालकांगनीके पत्तोंका रस देनेसे स्त्रियोंका नष्ट हुआ ऋतुकाल फिर जारी हो जाता है।

चक्रदत्त और शारंगधरमें इसकी जड़को सुगन्धदार और जागृतकर्ता कहा गया है और ज्वर खाँसी, श्वांस, बदहजमी और त्वचा रोगमें देनेमें प्रशंसनीय है।

अन्य पुस्तकोंकी सम्मति है कि मौब्लिप्स शहरके सूर्यमन्दिरमें ईसवी सन्के २४३ वर्ष पहले वर्षमें सीरियाके राजा सेलूकस और उसका भाई एन्टीओक्स इन दोनोंने पुहकरमूल का होम कराया था।

डापोस्त कोरइन्डिसका कहना है कि अरब से आनेवाली वस्तुओंमें पुहकरमूल सबसे उत्तम

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

सौगात प्रशंसाके योग्य है। यह सफेद रंग की और हलकी होती है और इसकी मीठी खुशबू-दार बास आती है।

तोफेतुलमजीनमें लिखा है कि यह जड़ हिन्दुस्तान के किनारे से आती है और यह जिस वृक्षमें उत्पन्न होता है वह धड़के बिना और पीले पत्तोंका होता है। इसकी तीन जाति हैं। ये तीनों गरम खुश्क और पेशाब अधिक लाती हैं। यह पित्त को भी निकालनेवाली है और कलेजेके दर्दको नष्ट करती तथा पेटके बिगाड़को दूर करती है। यह जंगम विष सर्पादिको निकालने वाला, कामोद्दीपन कर्ता, पेटके कीड़ोंको निकालनेवाली और पेशाबकी थैलीमें प्रकट होनेवाली पथरीको पिघलाकर निकाल देनेवाली है।

मखजन उलअदवियामें लिखा है कि यह जड़ कामोत्तेजक, कुव्वत देनेवाली, दुष्ट हवासे उत्पन्न होनेवाली बीमारियोंमें अत्यन्त उपयोगी है। दमाके रोगमें तथा सुर खोलनेके काममें आती है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

डा० इर्विं लिखता है कि राजपूताने में अफीम उत्पन्न होने लगी। उसके पहिले इसको तमाखू की तरह पीते थे और उसका मुख्य उपयोग खुशबू और मालकी गठरीमें जीव न लागने पावे इसके दूर करनेको इसका बर्ताव करते थे।

मि० वेडह पोवेल कहता है कि पंजाब में इसका चूर्ण करके पुराने नासूर पर और जिस घावमें जीव पड़ गये हों उसमें तथा दाँतोंके दर्दके वास्ते वर्तते हैं। इसको सुखाय चूर्णकर सख्त छिली हुई चमड़ीके ऊपर जल्दी खुंड लानेको मलहमके समान काम आती है और सुखाकर चूर्ण कर बाल धोनेमें भी लाई जाती है। कालरा (हैजा) की बीमारीमें १ ड्राम इलायची और तीन ड्राम कूट दोनों को चार औंस गरम जलमें भिगो दे। फिर इसी जलको १ औंसकी मात्रासे प्रत्येक आधे २ घटे में देवे तों अत्यन्त उत्तम असर करता है।

डा० पेरिटस्मिथ कहता है कि पुहकरमूल,

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

खुशबूदार और जल्दी जगानेवाला पदार्थ है और शूल तथा देहका खिंचाव आदि बीमारियों में उपयोगी है। काश्मीरी कपड़े, शाल दुशालोंमें कीड़े न लगने पावें। इसके लिये व्योपारी लोग इसका उपयोग करते हैं। सूखी हुई पुहकर मूलकी जड़ खुशबूदार हवा उत्तम करनेके वास्ते जलाते हैं। चीनके मुल्कमें इस जड़के जलानेका अत्यन्त शौक है। इसका खुशबूदार धुआं चीनाई लोग अपने त्रिबुद्धदेवके पास जलाते हैं।

सरजार्ज वर्डवुड कहता है कि इससे सफेद होनेवाले बाल काले हो जाते हैं और पेटका कीड़ा, खराब दवाका असर रोकना, ग्राही और नींद लानेका गुण है।

चरकसंहितामें इसको शुक्रशोधन, लेखनीय (धातुओं को पतली करता) शुक्रजनक (वीर्य उत्पन्न करता) और हिचकीको नष्टकर्ता कहा है।

सुश्रुत संहितामें इसको योनिदोष हरणकर्ता और स्तन्यशोधन, व्रण प्रसादन (त्वचाका रंग

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

सुधारनेवाला) तथा खुजली और दूसरे विकार दूर करनेवाला कहा है।

चक्रदत्तमें लिखा है कि हरड़, अजमायन, हींग और सोंठके साथ मिलाके खाँसी, श्वास, ज्वर और जठराग्निकी मंदतामें देवे तो ये सब रोग नष्ट होवें।

नपुंसकता नाशक मालकांगनी पाक

यह पाक बलको बढ़ाता है। मालकांगनी, अकरकरा, केवड़ेके बीज, लौंग और केशर चौदह २ माशे, असपद सात माशे, सफेद पोस्तेके दाने डेढ़ तोले, सफेद तिल ४ तोले ८ माशे, इन सबको पाँच नग चौगुने शहद और कंदमें सबको मिलाकर पाक बनावे। अथवा इस प्रकार—

मालकांगनीको भांगरेके रसमें भिगो देवे और फिर गायके दूध और पानीमें, जब दूधको सोख ले तब, पीसकर बराबरके शहदमें पाक बनावे। प्रथम दिवस पौने दो माशे खाय और इतनी ही नित्य बढ़ाता जाय। दो तोले चार

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

माशे तक पहुँचावे और चालिस दिन तक खाय तो वृद्ध को तरुण करे।

सफेद दागों पर

मालकौंगनी गोमूत्रमें इक्कीस दिवस भिगोकर उसका तेज निकालकर शरीरके सफेद दागों पर लगावे तो दाग जाते रहें।

काकड़ासिंगी

इसे संस्कृतमें शृङ्गी, कर्कट शृङ्गी, कुलीरविषाणिका, अद्गशृङ्गी और रक्ता कहते हैं। हिन्दी और मराठीमें काकड़ा सिंगो, बं० काकड़ाशृङ्गी, गु० काकड़ाशींग ला० इससवसीडेनियम्।

यह एक वृक्षकी डालों के ऊपर जीवों के रहने के वास्ते ऊँचे-ऊँचे टीले होते हैं। और सींगके छिल्केके माफिक फल होता है। बहुतसे पंसारी और अचार सड़ी हुई हरणके छिल्केको काकड़ासिंगीके बदले बेचते हैं।

गुणमें यह कषैली कड़वी और गरम है।

यह कफ, वायु, क्षयरोग, ज्वर, श्वास, उर्ध्ववात, तृषा, खाँसी हिचकी, अरुचि और वमन होना इन सबको दूर करती है। अर्थात्

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

इन सब रोगोंमें इसका प्रयोग किया जाता है। औषधि प्रयोगमें इसके फलको १ माशे की मात्रा ली जाती है।

प्रचीन आयुर्वेदके ग्रन्थोंके मतानुसार काकड़ा-सिङ्गी पौष्टिक, कफको निकालनेवाली तथा खाँसी, श्वास, अरुचि और पेटके दर्दोंको नष्ट करनेवाली है।

यूनानी हकीम इसको गरम, खुश्क, और मुख्य करके बच्चोंकी छाती के पुराने दर्दों में, उसी प्रकार अजीर्णकी उल्टी और दस्तोंकी बीमारी में उपयोगी मानते हैं। इसलिये ज्वरकी पीड़ामें इसका देना परम लाभदायक है।

खाँसी की दवा

काकड़ासिंगी, कटेरी की जड़, मुलहठी, कुलीजन, हड़काबबूल पानीमें औटाकर बबूलकी छाल मिलाकर चने के प्रमाणकी गोलियाँ बनाकर मुँह में रखे।

चरक संहितामें इसे कासहर तथा हिचकी नष्टकर्त्ता कहा है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

सुश्रुतने इसे जीवनप्रद, पौष्टिक, बृहण और पित्तशोणित, चक्षरोगनाशक स्वीकार किया है।

कफ की खाँसीमें

काकड़ासिंगी को कूट छानकर काली मिर्चके बराबर गोलियाँ बनाकर मुँहमें रक्खे।

कुसुम

इसे संस्कृतमें कुसुम, वह्निशिख और वस्त्ररंजक कहते हैं। हिन्दीमें कसूम और कर्र कहा जाता है। बं० कुसुमफूल, म० करढ्याचे फूल।

कसूम दो प्रकार का होता है, एक कृशिम दूसरा बनकसूम इसका बीज सफेद होता है। उसको हिन्दीमें कईलाकरण कहते हैं। फा० गुलमास्फर, अ० अखरीज, हब्बुले अस्फर, इं० कार्थेमस, ला० कार्थेमसटि टोरियन।

गुण—कुसूम मधुर, रूक्ष, अग्निदीपक, रेचक, मल मूत्रके दोषोंको नष्टकर्ता, कटु, उष्ण, भारी, पित्त उत्पन्न कर्ता, कृमिनाशक, बातको बढ़ाने वाला, घोर रक्त पित्त नाशक तथा कफ शान्तिकारक है। इसके फूलकी मात्रा १ माशे की है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

लकवामें

कसुमके बीजोंका तेल मालिस करे।

डा० एन्शलीका कहना है कि सैकड़ों प्राणी इस तेलको संधिवात और लकवे पर लगाते हैं तथा दुष्ट नासूर पर भी चुपड़ देते हैं। जुलाबके वास्ते बीजोंको शहदमें पीसकर देते हैं।

कसेरू

इसे संस्कृतमें कसेरू, चिचोड़, बं० केसुर, म० कचरा, ते० इद्दिकोति, का० सेकिनगड़े, ला० क्रिप्स केसूर।

कसेरू दो प्रकारका होता है. जैसे राजकसेरू और चिचोड़। इसका आकार मोथाके समान होता है और हलका होता है। दोनों कसेरू शीतल, मधुर, कषैले, भारी, ग्राही, शुक्रोत्पादक, वात कफकारक, रोचक और स्तनोंमें दूध प्रकट-कर्त्ता है। साथ ही यह रक्तपित्त दाह और नेत्र रोगको नष्ट करनेवाला है।

प्रथम मास गर्भरक्षा

गर्भवती स्त्रीके गर्भ स्थित होने पर पहले ही महीनेमें यदि कोई उपद्रव खड़ा हो अर्थात् पेटमें

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

दर्द आदि होने लगे तो--कसेरू, सिंघाड़ा, कमलकी डण्डी और नीलकमलका फूल इन सबको शीतल जलमें पीसकर दूधमें मिलाकर पीवे तो गर्भ नहीं गिरे।

अथवा

मजीठ, चन्दन, कूट, तगर इन सबको बराबर लेकर पीवे और दूधके साथ पीवे तो गर्भ सुरक्षित रहे।

द्वितीय मास गर्भरक्षा

यदि दूसरे महीने गर्भमें पीड़ा हो तो तगर, केसर, बेलगिरी, कपूर इनको बकरीके दूधमें पीस-कर दूधमें मिलाकर पीवे तो गर्भ नहीं गिरे और शूल दूर हो।

अथवा

शालम मिश्री, नीलोफर, अदरख, कसेरू, इनको बराबर लेकर जल में पीसकर दूध के साथ पीवे।

अथवा

कसेरू, सिंघाड़ा, जीरा, खजूर, बेलपत्र,

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

इनको ठंढे जलमें पीसकर दूधके साथ पीवे तो गर्भ सुरक्षित रहे।

तीसरे मासमें गर्भ रक्षा

यदि तीसरे मासमें गर्भमें वेदना हो तो पद्माख, चन्दन, खस, तगर, इनको समान भाग ले शीतल जलसे पीस कर बकरीके दूधके साथ पीवे तो गर्भ सुरक्षित रहे।

चौथे मास गर्भरक्षा

चौथे मासमें यदि गर्भमें पीड़ा हो तो केलाके पत्ते, सिंघाड़ा, दाख, अनारदाना, केलाकी जड़, इन सबको शीतल जलमें पीसकर बकरीके दूधमें छान लेवे और पीवे तो गर्भ सुरक्षित रहे।

पाँचवें मासमें गर्भरक्षा

यदि पाँचवें मास गर्भ में पीड़ा हो तो कमलकी डण्डी, नीलोफर, नागकेशर, कमलगट्टा इनको बकरीके दूधमें पीसकर पीवे तो गर्भ सुरक्षित रहे।

छठवें मासमें गर्भरक्षा

छठे महीने यदि गर्भमें पीड़ा हो तो इलायची

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

बच, मुनक्का दाख, कमलगट्टा, नागकेसर, इन सबको शीतल जलमें पीसकर पीवे। अथवा पीपरि, पिपलामूल, कमलकी केशर, कमलका फूल, इनको शीतल जलमें पीसकर छान लेवे और बकरीके दूधके साथ पीवे तो गर्भ सुरक्षित रहे।

सातवें मास गर्भरक्षा

यदि सातवें मासमें वेदना हो तो कैथका फल, शालम मिश्री, इन्द्रजौ, धान की खील, इन औषधियोंको अथवा पीपलकी जड़, बड़की जड़, भौंगरा, सूर्यमुखीकी जड़, साठीकी जड़, लाल चन्दन, इन सबको समान भाग लेके बकरीके दूधके साथ पीवे तो गर्भ सुरच्छित रहता है।

आठवें मास गर्भरक्षा

यदि आठवें मास गर्भमें पीड़ा हो तो गज पीपरि, पद्माखका कमलफूल, कमलगट्टाकी गिरी और धनियाँ इनको ठंढे जलमें छान दूध मिलाकर पीवे तो गर्भ सुरच्छित रहता है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

नवम मास गर्भरक्षा

यदि नवें मास गर्भमें पीड़ा हो तो सोंठ, ढाकके पत्ते, इलायची, जीरा, गजपीपरि, वाय-विडंग, इनको कूट पीसकर बकरीके दूधके साथ पीवे तो गर्भ सुरक्षित रहे।

दसम मास गर्भरक्षा

यदि दसवें मास गर्भमें वेदना हो तो कमल का दूध, मिश्री, मुलहठी, कमलगट्टा, पद्माख इनको शीतल जलमें पीस दूधमें मिलाकर पीवै।

अथवा

नागरमोथा, बच, सोंठ, केसर, तगर, गोरो-चना, केलाकी जड़, इन सबको बकरी के दूधके साथ पीवे तो गर्भ सुरक्षित रहे।

ग्यारहवें महिनेमें गर्भरक्षा

यदि ग्यारहवें मास गर्भमें पीड़ा हो तो कमलाका फूल, कमलगट्टा, कमल का नली, मुलहठी, इनको शीतल जलमें पीस, दूधमें मिलाकर पीवे।

अथवा मजीठ, चन्दन, खस, सिंघाड़ा,

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

कसेरू, गिलोय, और पद्माख, इनको पीस बकरीके दूधके साथ फंकी लगाकर पीवे तो गर्भ सुरक्षित होता है।

बारहवें महीने में गर्भरक्षा

यदि बारहवें मास गर्भमें पीड़ा हो तो सिंघाड़ा, नील कमल का फूल, कमलगट्टा, मिलाकर पीवे तो गर्भ सुरक्षित रहता है।

इसप्रकार यह गर्भ रक्षाका प्रकार बारह मासका लिखा गया। ज्योतिषके जातक ग्रन्थ में कहीं कहीं तीन वर्ष पर्यन्त गर्भ धारण करना लिखा है, बारह वर्ष पर्यन्त भी गर्भ धारण करना लिखा है। किन्तु यह आधुनिक समयमें असत्य सा प्रतीत होता है। विशेष गर्भरक्षा प्रकार देखना हो तो बालतन्त्र ग्रन्थमें देखिए।

कदम्ब

संस्कृत कदम्ब, प्रियंक, वृत्तपुष्प। हिन्दी कदम, कदम्ब, अ० राजकंद, कर्नाटी कदऊ, तै० कदम्ब चेट्टू।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

इसका वृक्ष बड़ा होता है और पत्ते भी लम्बे पहुँचेके समान होते हैं। फल और फूल नींबू की तरह सुगन्धियुक्त होता है।

गुणमें—यह मधुर, शीतल, कसैला, नमकीन, रसयुक्त, भारी, दस्तावर, रूक्ष, कफवर्द्धक, आँव-कर्ता और स्तनोंमें दूध लाता है।

कदम्ब और काहूका बक्कल और तेंदूक के अन्तरछाल के क्वाथ (काढ़ा) से इन्द्री परके घाव शीघ्र अच्छे होते हैं।

कमलगट्टा

इसे संस्कृतमें पद्मबीज, पद्ममाख, गालोड, पद्म कर्कटी, और हिन्दीमें कमलगट्टा, म० कामलाक्ष, कमलकांकडी, इं० घालके क्रुवति, तै० तामारकाडा।

कमलगट्टा, बड़े-बड़े तालाबोंमें कमलनालसे उत्पन्न होता है। बल्कि यों कहना चाहिये कि

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

कमलका ही यह फल है। इसके पत्ते बहुत बड़े बड़े अरुई के पत्तेके समान होते हैं।

गुणमें-यह शीतल, स्वादु, कषैला, कड़वा, भारी, वृष्य, रूक्ष और सर्वोपरि, गर्भदाता और बल कारक होता है।

कमलगट्टा ग्राही, पित्त, रुधिर-विकार और दाहको उत्पन्न करनेवाला है।

बादी से उत्पन्न प्रदर रोग की दवा

कमलगट्टा, सोंचर नोन, जीरा और मुलहठी का क्वाथ करके मधुके साथ पिलानेसे प्रदररोग नष्ट हो जाता है।

मुखपाक की दवा

कमलनाल, हल्दी, निम्बपत्र और मुलहठी-को तेल में पकाकर उस तेलसे कुल्ले करे तो त्रिदोषज मुखपाक नष्ट होता है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

काला जीरा

जीरक, जरण अजाजी, कणा तथा दीर्घ जीरक, ये सब सफेद जीरे के नाम हैं। कृष्णा जीरे का नाम—उद्गार शोधक और सुगन्ध है। काले जीरेको संस्कृत में कालिका, उपकालिका, पृथ्वीका, कारवी, पृथ्वी, पृथुकृष्णा, उपकुञ्चीका, उपकुञ्चीका और बृहज्जीरक कहते हैं। सफेद जीरेको मराठीमें पांढरजिरे। कर्नाटीमें बिलिय जीरगे। काले जीरेको मराठीमें काळेजिरेही कहते हैं। कर्नाटीमें कारिजीरेगे, कलौंजी और जोडुजीगे तथा तेलगूमें जिस-कद्दर कहते हैं। गुजराती घोलुंबीरं, कलीजीरी, कलौंजी। फारसी—कमूनी शोनीजत, हब्ज असबद। अंग्रेजी—कम्मिननूसीड।

यह भी एक क्षुप जातीका पौधा है जो काबुल के राज्यमें तथा हिन्दुस्तान के उत्तरी पहाड़ो में अधिक उत्पन्न होता है। दोनों प्रकारके जीरे रूक्ष, कटु, गरम, अग्नि दीपक, हल्के संग्राहक, पित्तकारक, स्मरण शक्ति वर्द्धक, गर्भ शोधक ज्वर-नाशक रोगोंको लाभप्रद हैं।

श्वेत जीरा सुगन्धित, पेटकी ऐंठन को नष्ट करनेवाला और ग्राही है। इससे नेत्र धोने का पानी बनाते हैं जिससे नेत्रका तेज बढ़ता है। मूत्र

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

में कड़वापन हो तो जीरा पीसकर पीना चाहिये। इससे मूत्र अधिक आता है। और पेटके कीड़े भी निकल जाते हैं। गर्भ स्थानमें सूजन आकर अधिक दर्द होता हो तो जीरेके पानीमें स्त्रीको बिठा देना चाहिये।

बवासीरकी दवा

श्वेत जीरा पीस पुल्टिस बनाकर बाँधनेसे बाहर निकले हुए मस्से और अत्यन्त दर्द करने वाली बवासीर जाती रहती है।

मूत्रकृच्छ्रकी दवा

टकेभर जीरा और टकेभर गुड नित्य खानेसे मूत्रकृच्छ्र का रोग नष्ट हो जाता है।

किसी-किसी के मत से जीरा पाँच प्रकारका होता है। साधारण जीरा, काला जीरा, स्याह जीरा, कलौंजी और शंख जीरा।

जीरकादिचूर्ण

जीरा, सोंचर नोन, सोंठ, मिर्च, पीपलि, सेंधानोन, अजमोदक, सेंकी हींग, हर्रकी छाल (ये सब अधेले अधेले भर) और दो टके भर निशोथ

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

इन सबका चूर्ण बनाकर १ टंक नित्य उष्ण जलके साथ सेवन कराओ तो अजीर्णमात्र दूर होकर क्षुधा बढ़ेगी। यह योग तरंगिणीमें लिखा है।

काला धतूरा

संस्कृत—कृष्णपुष्प, विषाराति, क्रूरधूर्त, सिद्ध, कनक, सचिव, शिव। हिन्दी—काला धतूरा।

धतूरा एक क्षुप जातिका पौधा है। फूलों के रंग भेद से यह पाँच प्रकार का होता है। श्वेत, नीला, काला, लाल और पीला। सब में समान गुण होता है।

धतूरे के पत्तों का रस शरीर में मालिश करने से मेदरोग नष्ट हो जाता है।

वीर्य बहाव को दूर करे

धतूरे के बीज छः माशे काली मिर्च, छः माशे कूटछान कर उर्द के प्रमाण गोलियाँ बनावे और सदैव एक गोली प्रातः काल एक तोले सौंफ के शोरे के साथ खाय। एक ही दिन में आराम होगा।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

स्तंभन बटी

स्याह धतूरे के फूल सुखाकर चने के प्रमाण की गोलियाँ बनाकर एक गोली खाय।

काला सेमर

संस्कृत—कुत्सित, शाल्मलि, रोचन, कूट शाल्मलि, हिं० काला सेमर, म० काली साँरी।

काला सेमर, सेमरकाही एक भेद है, जिसका गुण कड़वा, चरपरा, दस्तावर और गरम है। कफ, वातके रोग, प्लीहा, उदर, यकृत (कलेजा) गोला, विष, भूतबाधा, अफरा, त्रिविध रुधिर विकार, मेदरोग, शूल और कफको नष्ट करता है।

सेमरका मूसरा महीन पीसकर बराबरका बूरा मिलाकर नित्य तोले भर गायके दूधके साथ फाँके तो बल बढ़े और वीर्य पैदा हो।

कुचला

संस्कृत—तिंदुक, जलद, दीर्घपत्रक, कुपील, कुतक, काकतिंदुक इत्यादि। हिन्दी-कुचला, मकर तेंदुआ। मराठी-काजरा। गुजराती-झेरकोचोला। तैलगू-मुष्टिगिजा। कलिंगडा-काजिवार। फारसी-इफाराकी।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

कुचला एक प्रकारके वृक्षका फल है जिसे जहरबला भी कहते हैं। यह शीतल, ग्राही, कड़वा बातकारी, मदकर्ता और हल्का होता है। यह अत्यन्त व्याथाको नष्ट करता तथा कफ, पित्त और रुधिर-विकार को दूर करता है। यह मूत्र लाने वाला, बलकारी, अग्निवर्द्धक, कामोत्तेजक, शूल एकांग बात, शुक्रप्रमेह, गुदभ्रंश अतिसार आदि रोगोंको दूर करनेवाला है। दुर्बलता दूर करता, मासिक स्राव लाता, पथरी को तोड़ता, दाहको नाश करता और पाण्डु रोग और कमलको नष्ट कर देता है।

अजीर्ण की दवा

कुचिला, हरेंकी छाल, सोंठ, काली मिर्च, पीपल, शुद्ध गंधक, सिंकी हींग और सेंधा नमक सबको जलसे खरल करके चनेके बराबर गोलियां बनाकर एक गोली नित्य प्रातः काल जलके साथ लेनेसे संग्रहणी, अतिसार, अजीर्ण और मन्दाग्नि दूर हो जाती है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

दाद की दवा

कुचला सिरके में पीसकर लेपकरे।

बात की दवा

कुचला चन्दनकी तरह घिसकर कालीमिर्च मिलाकर गुनगुना गुनगुना लेप करे।

बरसाती फोड़ों पर

कुचला साढ़े बारह तोले, फिटकरी साढ़े पांच तोला दशमाशे घीमें मिलाकर मले।

बात, शोथ विसूचिका रोग में

उत्तम नवीन अफीम, कुचला, कालीमिर्च इन तीनोंको महीन पीसकर १ रत्ती प्रमाणकी गोलियां बनाओ जो पानकेरसकेसाथ प्रभातकाल १ गोली नित्य खिलाकर ऊपरसे पान खिलाओ तो समस्त बातरोग, शोथ, विशूचिका, अरुचि और अपस्मार ये सब रोग अच्छे होंगे। यह समीरगज केसरी रस कहलाता है। ये सब यत्न वैद्य रहस्यमें लिखा है।

कुटकी

संस्कृत—कटुवी, कटुका, तिक्ता, कृष्णभेदा, कंटुमरा,

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

अशोका। हिन्दी-कुटकी। बंगला कटकी। मराठी-काली कुटकी। गुजराती-कडु। तैलङ्गी-काटक रोहिणी। फारसी-खर्बके सियाह। अंग्रेजी ब्लाकहेलीबोर। लैटिन हेलीबोरस नाइजर।

कुटकी की केवल जड़ प्रयोग में ली जाती है। इसका रस कटु, पाकमें कड़वी, रूक्ष, शीतल, हल्की, भेदक, अग्निदीपक और हृदय को हितकारी है। कुटकी सेवन करनेसे कफ, पित्त-ज्वर, प्रमेह, श्वांस, खांसी, रुधिर-विकार, दाह, कुष्ट और कृमि रोग नष्ट होते हैं।

गंडमाला की दवा

कुटकीको पीसकर घिया तुरईमें भरकर रातभर रख दे। तदनंतर प्रातःकाल उसी घिया तुरई को पीस छानकर ७ दिन तक पिलाने से गंडमाला नष्ट होती है।

ज्वर खाँसी की दवा।

कुटकी, गिलोय, इन्द्रयव, नीमकीछाल, पटोल, सोंठ, अगर, चदन, नागरमोथा और पीपलको समान भाग लेकर चूर्ण बना डाले, ४ माशा प्रति-दिन अष्टावशेष जलके संयोग से पिलाओ तो कफ,

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

पित्त-ज्वर, खाँसी, दाह, अरुचि और हृदय की पीड़ा भी दूर हो जायगी।

मलज्वर की दवा

कुटकी, पिपलामूल, नागरमोथा हर्रकी छाल और किरमालेका गूदा समानके चूर्णमें २ टंकका क्वाथ बनाकर पिलाओ तो मलज्वर दूर हो।

ज्वर, प्यास, मूर्च्छामें

कुटकी, किरवारेकी गिरी, नागरमोथा, हर्रकी छाल और पित्तपापड़ा छदाम-छदाम भरका क्वाथ बनाकर पिओ तो उक्त ज्वर, प्यास, दाह, प्रलाप (बकवाद) मूर्छा आदि नाश होवें। यह वैद्य विनोद में लिखा है।

कुटज (इन्द्र जौ)

संस्कृत—कुटज, कूटज कीट, वात्सक, गिरिमालिका, कालिंग, शक्रशाखी, इन्द्र, जयफल। हिन्दी—कुडाकोरैया (आ) बंगला-कुडची। मराठी-श्वेतकुडा। फारसी-तिवाज।

इसके वृक्ष बड़े होते हैं। इसी के बीज को इन्द्र जौ कहते हैं। यह कटु, रुक्ष, अग्निदीपक, कषैला,

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

शीतल, तिक्त और संग्राही है। बवासीर अतिसार रक्त-पित्त कफजतृष्णा, त्वचा के दोष, ज्वर, आम, कुष्टरोग, प्लीहा और अतिसार को भी नाशक है। कुटज की गिरी, धनियाँ, कुटकी, नागरमोथा, पिपलामूल, सोंठ और पीपल के चूर्णमें छदाम भरका क्वाथ दोनों समय १० दिन तक पिलानेसे कफ-पित्त-ज्वर, शूल, मूर्छा और उल्टी सब दूर हो जाती है।

कुष्ट (कूठ या कूट)

संस्कृत-कुष्ट। हिन्दी-कूठ। मराठी कोष्ठागु। गुजराती-कठ। फारसी-कोश्नह। अरबी-कुश्तबहरी। तैलङ्ग-चंगल कुष्ठ। अँग्रेजी कोसृसरुट्।

इसका सुगंधादिगुणमें पाठ है। परन्तु यह असल नहीं मिलता और सिन्धुनदीके किनारे होता है। इसका गुण गरम, कटु, स्वादु, शुक्र उत्पन्न-कर्त्ता, कड़ुआ और हल्का, बात-रक्त, विसर्प, खाँसी, कुष्ट, वादी और कफ को नष्ट करने वाला है। केवल जड़ प्रयोगमें ली जाती है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

(१) कूट, मिर्च, सेंधानोन, पाठ और नागरमोथेका चूर्ण गलशुण्डी पर मलनेसे गलशुण्डी अच्छी हो जाती है।

दाँतोंसे रुधिर बन्द हो।

कूट, धना सेंधानमक, खैरसार और सिंका हुआ जीरा सबको खरल कर मंजन करनेसे दाँतोंसे रुधिर का प्रवाह बन्द हो जाता है।

झाईं की दवा

कूट, रक्तचन्दन, मजीठ, लोद, बड़के अंकुर और प्रियंगुको जलमें पीसकर मुख पर लेप करे तो मुख पर की झाईं श्यामलता दूर हो जावे।

केला

संस्कृत-कदली, वरणा, मोचा, अम्बुसार। हिन्दी-केला, केरा। मराठी-केल। गुजराती-केल्य। कर्नाटकी-कावालेतव। तामिली-पाजम। अनपि-पसी। फारसी-पावज़।

कच्चा केला स्वादु, शीतल, विष्टंभी, कफनाशक, भारी, स्निग्ध, रक्त, पित्त, तृषा, दाह, क्षय, बृहण, क्षुधा, तृष्णा रोग और प्रमेह रोग भी नष्ट करता है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

केलेका फूल चिकना, स्निग्ध, मधुर, कषैला शीतल रक्त पित्त और क्षयको नाश करता है। केलेका मुख्य गुण दोषहीनता और हलकापन है। आँव गिरने पर भी केलेकी तरकारी और पक्की फली खानी चाहिये। केलेके कोमल पत्तोंपर सुलानेसे अतिदाहयुक्त पित्तज्वरसे पीड़ित रोगी को लाभ पहुँचता है।

खाँसी की दवा

केलेके पत्ते जलाकर उसकी राख थोड़ा नोन में मिलाकर नित्य दो तीन बार खाया करे।

पेशाबकी जलन दूर हो

केलेके वृक्षका रस निचोड़कर पीवे तो कड़क दूर हो।

केसर

केशरके पर्याय वाचक नाम कुंकुम, घुसृण, वाल्हीक और रक्त वाचक जितने संस्कृत नाम हैं सब केशरके भी नाम हैं। हिन्दी-केशर- बंगला-कुंकुम। फारसी-जाफरान। अरबी-लरकी-मास। ईरान-सेफरून।

काश्मीर, वाहूलीक (बलख) फारस, ग्रीक

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

(ईरान) देशोंमें केशर उत्पन्न होती है। इनमें जो केशर कश्मीरमें उत्पन्न होती है बहुत छोटे-छोटे बारीक बालोंके समान और कुछ-कुछ रक्त वर्ण तथा कमलकी गन्धके समान होती है। यह सब केशरों से उत्तम होती है। वाह्लीक अर्थात् बलख देशको केशर पीले रंगकी और उसमें केतकी के फूलके समान सुगन्धि आती है। यह भी बारीक होती है। पर यह मध्यम कोटिकी केशर कही जाती है। फारस देशकी केशरकी गंध शहदके समान, गोली और इसके तंतु मोटे होते हैं। यह अधम केशर है।

केशर चरपरा, स्निग्ध, कड़वी, वमन नाशक और वर्णको उज्वलकर्त्ता है।

मस्तकके रोग, व्रण, कृमि और मुखकी झाईं दूर करती है। मात्रा १ माशेकी होती है।

पाँव की जलन में

नाग केशरके सूखे हुये फलोंको पीसकर घी

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

के साथ मिलाकर दुखते हुये बवासीर तथा पैर के तालुयेमें लगानेसे जलन दूर हो जाती है।

संधिवातके दर्दमें

केशरकी छाल और जड़को पानीमें भिंगोकर पीनेसे पाचन शक्ति बढ़ती है। इसके बीजोंके तेलसे संधि बातके दर्द दूर हो जाते हैं।

केसू

संस्कृत—पलाश, किंशुक, वर्ण यतिय, रक्त, पुष्पक, क्षारश्रेष्ठ, बातहर, ब्रहन वृक्ष। हिन्दी-पलास, ढाक। मराठी छोला केसूला। उड़िया-परोशु। गुजराती-खाखरो। कर्नाटी-मुत्तलु लैटिन-डाउनी ब्रञ ब्युटिया बिबहा।

यह गुणमें दीपन, बलकर्त्ता, दस्तावर, गरम, कषैला, चरपरा, कड़वा और स्निग्ध है। इसका वृक्ष बड़ा और टेढ़ा-मेढ़ा होता है। इसके जड़ पत्ते और लकड़ियाँ तथा फूल भी काम आते हैं। इसके बड़े-बड़े जङ्गल होते हैं। यह व्रण, गोले और गुदाके रोगको नष्ट करता तथा टूटे हाड़को भी जोड़ देता है। पलासकी जड़ और लाल एरण्डकी जड़को चावलके पानीमें पीसकर लेप करने से गलगंड रोग अच्छा होता है। पलासका बीज

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

और गूलरके पक्के फलको तिल्लीके तेलमें पीसकर २१ दिन लेप करनेसे फटी हुई भग गाढ़ी हो जाती है। पलासका फल, काहूकी छाल, नीमकी छाल, खैरसार और कुटकीको घीमें पकाकर बालकको खिलाने और मर्दन करनेसे शीत पूतनाग्रहका दोष छूट जाता है।

कन्दरी (लहसन)

संस्कृत—लशुन, रसोन, उग्रगन्धा, महौषध, अरिष्ट, म्लेच्छ-कन्द, यवनेष्ट, रसोनक। हिन्दी-लहसुन । मराठी—लासूण, पढिरी, कर्नाटकी—बिलियबेल्लुल्लि। तेलगू—वेलाउल्ली । गुजराती-लसन। अरबी-सम। फारसी-शोर। अँगरेजी—गार्लिक। लैटिन आल्यमसटाइवम् ।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

लहसुन—इसकी उत्पत्तिके सम्बन्धमें ऐसा कहा जाता है कि समुद्र-मंथनके पश्चात् अमृत निकलते समय जब देवासुर संग्राम हुआ, तब उस समय गरुड़ अपनी चोंचमें अमृत कलशको पकड़ आकाशमें उड़ चला। पर उस समय गरुड़की बेहोशीमें कलशसे एक बूँद अमृत छलक कर पृथ्वी पर गिर पड़ा जिससे एक छोटा सा क्षुप उगकर खड़ा हो गया। कुछ काल पश्चात् १२ वर्षका एक घोर अकाल पड़ा और पृथ्वीके पौधे रस-रहित हो गये, किन्तु एक यह क्षुपपौधा ज्योंका त्यों हरा-भरा बना रहा। एक वृद्ध ऋषि उसी पौधेको चबा-चबाकर अपना शरीर रक्षा कर रहे थे। शेष समस्त ऋषि दुःखी और अन्न जल तथा फल-फूलके न मिलनेसे त्रसित हो सुदूर देशों, बनों और पर्वतको गुफाओंमें भाग चले। जब दुर्भिक्ष व्यतीत होकर सुकाल आया, तब फिर सब ऋषि एकत्रित हुये। यह वृद्ध ऋषिभी उनमें जा पहुँचा। तब वार्तालापके प्रसंगमें ऋषियोंको इस पौधेकी

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

महत्ता ज्ञात हुई। इस कारण ईर्षावश उन्होंने उस नृपको शाप दे दिया कि यह ब्राह्मण मात्रको अभक्ष्य हो जाय। बस यही कारण है जो लहसुन का खाना वर्जित हो गया। संसारमें जो परम छः रस हैं उनमें लहसुन ही एक ऐसा पदार्थ है जिस अकेलेमें ही पाँच रस विद्यमान हैं। केवल एक खट्टा रस इसमें नहीं है। इसकी जड़में चरपरा रस, पत्तोंमें कड़वा रस, नालमें कषैला, नालके अग्र भागमें लवण रस और बीजोंमें मधुर रस विद्यमान हैं।

हृदय रोगकी दवा

लहसुनका सेवन करनेसे हृदयके रोग, अजीर्ण, ज्वर, कोखका दर्द, गुल्म, अरुचि, खाँसी, मन्दाग्नि, कफ, और बादीका रोग नष्ट हो जाता है।

कौआठोंडी

इसे संस्कृतमें काकनासा, काकांगा, काक तुण्डफला, हिन्दीमें कौआठोंडी, बं० काकटूडी, म० पीर श्वेतकावली, का० वडिल कहुडली कहते हैं।

यह गुणमें कषैली, गरम स्वादिष्ट और

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

पाकके समय चरपरी, कफघ्न, बमनकारक और कड़वी होती है।

प्रयोग—इससे सूजन, बवासीर और कुष्टरोग अच्छा होता है। इसकी जड़ आदि ली जाती है, मात्रा १ माशेकी है।

कालादाना

इसे संस्कृतमें कृष्णबीज, हिन्दी कालादाना, बँगला नाल कलमी, म० कालेदाने, फा० हब्बुलनील, अँ० घेलब्लूइयामिया लाटिन—फारबाटिसलीन।

यह हिन्दुस्तानके उत्तरी खण्डकी तरफ एक प्रकारकी बेल होती है जिसके बीजका कालादाना

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

कहते हैं। इसकी खुराक छोटे बड़ेके अनुपातसे एक माशेसे चारमाशे तक का होती है। यह खासकर जुलाब लेनेके काममें आती है। इसके सेवनसे पेटमें पड़े कीड़े भी नष्ट हो जाते हैं। यदि इसका सत्त जुलाबके काममें लाना हो तो उसकी मात्रा ५ से १० ग्रेन तक होती है।

तिल्ली और जिगरकी सूजनमें

कालेदानेको बादामके तेलमें भूनकर खानेसे तिल्ली और जिगरके सूजनको आराम पहुँचता है।

खुजलीकी दवा

कालेदानेका कड़वे तेलमें जलाकर लगावे तो पुराने घाव, खुजली और गठियाका राग अच्छा होता है।

कुष्ट (कोढ़) की दवा

कालेदाने को अकरकराके साथ पीसकर कोढ़ पर लेप करनेसे कोढ़ नष्ट हो जाता है।

केवाँच

इसे संस्कृतमें कपिकच्छू, आत्मागुप्ता, वृष्या, मर्कटी

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

अजरा, कंडुरा, व्यंगा, दुःस्पर्शा, प्रावृषायणी, लांगली और शूकशिंबी कहते हैं। हिन्दीमें कौंछ, किवाँच। बं० आलकुशी, म० कुहिलींचेबीज, कपासकुहिरी, गु० कवचा, कौचा, तै० पिल्ली अडगु, ता० पूनार्दककालि, इं० कोहेज, ला० जेलीकीप्युविंस् कहते हैं।

यह लता जातिकी बनस्पति है जो चातुर्मास्यमें बहुत होती है। इसकी दण्डी तीन पत्ते वाली होती है। इसका फूल काला जामुनके रंगका आकारमें केसूलाके फलसे मिलता हुआ झुग्गेदार होता है। फली एक डंडीमें दो और इमलीके कतारेके आकारसे कुछ-कुछ मिली हुई होती है। इसके पत्ते और फलके रुआँ देहमें लगनेसे बड़ी खुजली होने लगती है। इसकी फलीमें इमलीके माफिक चीयाँ निकलते हैं। इनको कौंचके बीज कहते हैं।

गुणमें यह अत्यंत वृष्य, मधुर, वृंहणी (पुष्टिकारक) गुरु, तिक्त, बातनाशक, बलकारी, कफनाशक, रक्तपित्तको शान्त करता, व्रणदोष नाशक, और श्वास-कास निवारक है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

कौंच बादीको शान्ति करता, अत्यन्त बाजीकरण कर्ता है। प्रयोगमें इसकी जड़ पत्ते और बीज लिये जाते हैं। मात्रा दो माशेकी है।

यूरोपियन डाक्टर--कौंचकी जड़को ज्ञान तन्तुओंके लिये पुष्टकर्त्ता मानतेहैं तथा लकवेकी बामारीमें और पेटके कृमि निकालनेको फलीके ऊपरके बाल (रुओं) शरबतमें मिलायके शहदके समान गाढ़ा करके बनाते हैं। परन्तु देशी वैद्य फलीके ऊपरके रूँओंका उपयोग नहीं करते।

वेस्ट इण्डियन टापुओंमें इस वृक्षकी जड़का क्वाथ पेशाब अधिक लानेवाला और गुरदे को साफ करनेवाला मानते हैं। तथा इसका मलहम बनाकर श्लीपद पर लेप करते हैं। पत्तों को नासूर पर लगाते हैं और बीज कामोत्तेजक हैं। यह कौंचका बीज बिच्छूके विषको दूर करता है।

कैथ

इसे संस्कृतमें कपित्थ, दधित्थ, पुष्पफल, कपिप्रिय, दधिफल, और दंतशठ कहते हैं। हिन्दीमें कैथ, बं० कयेतबेल, म०

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

कक्ठ, कंवठ, गु० कोठ, तै० एल्लांगकाया, का० वेललु, ला० फेरोनियाँ एलफेटिगम्, इं० वुडस्पल।

इसका बड़ा भारी ऊँचा दरख्त होता है। इसके पत्ते एक इंच लम्बे तथा पौन इंच के लम्बाईमें गुलाई लिये होता है। डाली पर पत्ते एक-एक संख्यामें होते हैं। इसका फूल छोटा और सफेद तथा छूटी पाँच पंखड़ीवाले होते हैं। यह चूहेके जहर पर उपयोगी होते हैं। इसका फल नारंगीके बराबर कठोर गोल तथा मोटी छालका होता है। इसके भीतरका गूदा खट्टा और धनियेके समान बहुत बीज होते हैं। इन बीजोंके भीतर सफेद मिंगी निकलती है।

गुणमें कच्चा कैथका फल ग्राही, कषैला, हल्का और लेखन है। पका हुआ भारी, प्यास, हिचकी और बात-पित्तको नष्ट करनेवाला है तथा इसमें कषैलापन कम होता है। यह कण्ठका शोधन करता, ग्राही और दुर्जर है।

हिन्दुस्तानी वैद्य कैंथके फलको ग्राही मानते

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

है तथा कच्चा फल दस्त और पेटके दर्दमें तथा पका फल मसूड़े और गलेकी सूजन पर देनेकी प्रशंसा करते हैं।

मुसलमानी हकीम कहते हैं कि, कैथके पत्ते और फल शीतल और पाचक तथा ऐंठन होनेको दूर करनेके लिए तथा गलेकी सूजन उतारनेके लिए और दाँतोंके मसूड़े मजबूत करनेके लिए सेवन किये जाते हैं। इसके फलके गूदेका शर्बत पीने से भोजन की रुचि बढ़ती है। विष वाले जीवके डंकपर फलका गूदा अथवा छाल बाँधते हैं। कैथके वृक्षके गोंदको पीसकर शहदमें मिलाकर देनेसे दस्त तथा मरोरा दूर होता है।

चरक संहितामें कैथको खट्टा और ग्राही माना गया है। तथा पत्तों का रस अग्निदीपक और पाचक माना गया है।

कायफल

इसके कटुफल आदि नाम हैं।

यह हिमालय की ओर बड़ा वृक्ष होता है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

इसको छालको कायफल कहते हैं। इसकी छाल कड़वी, चरपरी और कषैली होती है।

इससे बात, कफ, ज्वर, खाँसी, श्वास, प्रमेह, कंठरोग, बवासीर और अरुचि रोग दूर होता है। इसकी मात्रा दो माशेकी है।

बात, कफ, ज्वर, और खाँसीकी दवा

कायफल, देवदारु, भारंगी, नागरमोथा, धनियाँ, पित्तपापड़ा, हर्रकी छाल, शुंठी और कँवाचकी जड़ समान भागके चूर्णमें से दो टके भरका क्वाथ पिलाओ तो उक्त रोग शीघ्र पलायन कर जावे।

सन्निपात यत्न

कायफल, पिपलामूल, इन्द्रयव, भारंगी, सोंठ, चिरायता, कालीमिर्च, पीपरि, काकड़ासिंगी, पोहकरमूल, रास्ना, दोनों कटाई, अजमोदा, कटीली बच, पाठ और चव्य समानका क्वाथ बनाकर पिलाओ तो सन्निपात के अतिरिक्त वस्तु अज्ञान (किसी वस्तु का ज्ञान न रहना)

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

पसीनाकी अधिकाई, शीत, उदरशूल, अफरा, बात और कफके सर्व रोग इस क्वाथसे नष्ट होंगे।

कस्तूरी

इनके मृगनाभि आदि नाम हैं। फा० और इं० में इसे मुश्क कहते हैं। यह कामरू देशकी काले रंग की अच्छी होती है। नैपाल की नीले रंगकी मध्यम होती है। काश्मीरकी भूरे रंगकी और मध्यम होती है। इसके पाँच भेद हैं। १ खारिका, २ तिलका, ३ कुलत्था, ४ पिंडिका, ५ नायका।

इसमें खरिका चूर्णके समान, तिलका तिलके वृक्षके समान, कुलत्था कुलथीके बीजके समान। कुलत्थासे मोटी पिंडिका, पिंडिकासे मोटी नायका होती हैं।

इसकी परीक्षा यह है कि स्वादमें कडुवा और रंग पीला केतकीके फूल की सी सुगन्धि वाली, जलमें डालनेसे जिसका रंग न पलटे, तोलमें हल्की ऐसी कस्तूरी राजाओंके योग्य होती है और अच्छी समझी जाती है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

गुणमें यह कटु, तिक्त रस, क्षारयुक्त, उष्ण-वीर्य, वीर्यवर्द्धक, और भारी है, तथा बात, कफ, वमन, दुर्गन्ध, विषदोष और शीतनाशक है और पसीना लानेवाली, कामवेगको बढ़ाने वाली, कुछ मद करने वाली, मूत्र को उत्पन्न करनेवाली होती है। इसकी मात्रा आधी रत्तीसे दो रत्ती तककी है। इसका अवगुण चन्दन और तबाखीर से दूर होता है। इसके न मिलनेपर अंबर लेना चाहिये। नकलीकी परीक्षा यह है कि उसको हथेलीपर रखकर पानी डाले, यदि रंग उस पानीका लाल और पीला हो जाय तो उसे नकली बनी हुई जानना तथा जो चिकनी हो, जिसके धुएँ में गन्ध हो, कपड़ेमें बाँधनेसे कपड़ा पीला पड़ जाय, आगमें डालनेसे तुरंत जल जाये, तोलमें भारी हो, भीजनेसे रूखी हो जाय-ऐसी कस्तूरी बनावटी होती है और लता कस्तूरी जिसको मुश्कदाना,

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

वेदमुश्क कहते हैं, वह नेत्रोंको विशेष हितकारी है। प्रयोगमें इसके बीज लिये जाते हैं।

कुटकी

इसके तिक्ता आदि नाम है। बं० कटकी, म० केदार कुटकी गु० कटु०, फा० खर्वके सियाह, ला० मामपाह कोंआ है।

गुणमें यह ठण्डी, रूखी और पाकमें कड़वी और हलकी है। यह जठराग्निको प्रदीप्त करती और हृदयको हितकारी है। कफ, पित्त, ज्वर, बात, कुष्ठ, श्वास, प्रमेह, रुधिर विकार और कृमिरोगको हरण करनेवाली है। इसकी मात्रा दो माशेकी है।

बात, पित्त-ज्वरमें

कुटकी, किरवारेकी गिरी, नागरमोथा, हर्रकी छाल और पित्तपापड़ा, छदाम-छदाम, भरका क्वाथ बनाकर पिये तो उक्तज्वर, दाह, प्रलाप (बकवाद) मूर्च्छा, सबका नाश होवे। यह वैद्य विनोदमें लिखा है।

मल ज्वर

कुटकी, पिपलामूल, नागरमोथा, हर्रकी

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

छाल और किरमालेका गूदा, समानके चूर्णमेंसे दो टंकका क्वाथ बनाकर पिलाओ तो उक्त ज्वर अच्छा हो जाय।

कूष्माण्ड (कुम्हड़ा-काशीफल)

इसे संस्कृतमें कूष्माण्ड, पुष्पफल, और बृहत्फल कहते हैं। हिन्दीमें पेठा, कुम्हड़ा, कोंहड़ा, काशीफल। बं० साचि कुमड़ा, म० कोहोला, पदकोला, तै० पुन्लाहा, का० दारकोहला, उडि० करवारू, अ० महद्धेवा, फा० भूरा कद्दू और इङ्गलिशमें पंपकीन कहते हैं।

यह वीर्यवर्द्धक, वृष्य, भारी, पित्त और रुधिर विकारको दूर करनेवाली है। कच्चा कुम्हड़ा पित्तनाशक, शीतल और अधकच्चा कफकारी एवं पका हुआ कोंहड़ा अत्यन्त शीतल है। यह स्वादुयुक्त, चारयुक्त, दीपन, हल्का, वस्ति-शोधक, मानसिक रोग (अपस्मार, उन्मत्तता आदि) को दूर कर्ता तथा सर्व दोष हरण कर्ता है।

नकसीर नाकसे रक्त गिरनेकी दवा

श्वेत कूष्माण्ड (भूरा कुम्हड़ा) को छीलकर

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

सब बीज निकालकर मृत्तिकाके पात्रमें डालके जलसे पकाओ। पकने पर ठंढा करके गाढ़े वस्त्रसे छानलो जिससे पानी निकालकर शुद्ध पेठा रहजाय। उसे घीके साथ कड़ाहमें डालकर मन्द मन्द आँच से तल डालो। इसके छाने हुए जलमें (जो पहले छानकर धरा था, मिश्रीकी चाशनी बनाकर उसमें वह पेठा जो तलकर धरा है) डालदो तथा उसीके साथही २ टके भर पिप्पलि, २ टके भर सोंठ, २ टके भर जीरा, २ टके भर धनियाँ, २ टंक पत्रज, २ टंक इलायची और ५ टंक वंशलोचनका महीन पिसा हुआ चूर्ण और पावभर मधु डालकर रखलो। अब यह कूष्माण्डावलेह प्रस्तुत होगया। यदि इसको नित्य १ या २ टंक खिलाओ तो रक्त पित्तज्वर, दाह, प्यास, प्रदर, क्षीणता, वमन, स्वरभंग श्वांस, कास, और क्षय ये सर्व रोग दूर होंगे। श्वेतके अभावमें पका हुआ पीत कूष्माण्ड भी उपयोगमें ला सकते हैं।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

ग्निवर्द्धक, हलका, पित्त, कफ, बवासीर, कृमि, गोला और विषके रोगोंको दूर करता है।

खजूर

इसे संस्कृत में भूमि खर्जूरिका, स्वामी, दुरारोहा, मृदुच्छदा, स्कंधफला, काककर्कटी और स्वादुमस्तका कहते हैं। बं० खेजूर, म० शिंदी, का० इंचिलु, तै० ईंटाचेट्टु, फा० खुर्मा, अ० तमरसतव, अं० डेट्पाम।

यह काबुल आदि देशोंमें उत्पन्न होती है। छुहारा नामक एक खजूर की और जाति होती है। इसको आकृति गौके थनोंके आकारकी होती है। इसको परद्वीप अर्थात अरब आदिकी विलायतसे लाते हैं। इस प्रकार यह खजूर तीन जाति की होती है और तीनों प्रकारका खजूर शीतल, मधुर, स्निग्ध, रुचिकारी, हृदयको हितकारी, भारी, तृप्तिकर्ता, पुष्टिकारी, विष्टंभी, शुक्रकर्ता, बलकारी, वमननिवारक और वात, कफनाशक हैं।

प्रयोग—यह घाव, क्षय, रक्तपित्त, कोठाश्रित, बादी, ज्वरातिसार, खाँसी, श्वास, मद,

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

मूर्च्छा, मद्यपानजनित रोग एवं भूख और प्यासको दूर करती है। बड़ी खजूरकी अपेक्षा छोटा खजूर के गुण अल्प हैं।

खिरनी

इसे संस्कृत में राजायन, फलाध्यक्ष, राजन्या, और क्षीरिका कहते हैं। हिन्दीमें खिरनी, खिन्नी, बं० क्षीरखेजूर, म० राजणी, गु० रायणा, का० खेरणेमारिले, ता० पल्ल, इं० ओवट् पुस्लीक माईमुसोप्स।

यह वृष्य, बलकारी, स्निग्ध, शीतल, भारी तृषा, मूर्च्छा, मद, भ्रान्ति, क्षय, त्रिदोष और रुधिर विकार को दूर करनेवाली है।

केसारी

इसे संस्कृतमें त्रिपुट और खंडिक कहते हैं हिन्दीमें खेसारी, म० लांक, लाग, अ० हबुल बकर और अं० मेचिकिलिर वेच कहते हैं।

गुणमें यह मधुर, कड़वी, कषैली, अत्यन्त रूक्ष, कफ, पित्त हरण करनेवाली, रुचिकारी ग्राहक और शीतल है। किन्तु यह अत्यन्त वात, कुपित करनेवाली है। यदि इसको अधिक दिन

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

तक खावे तो यह खंजा और पगु बना देता है।

खस (उशीर)

इसके उशीर आदि नाम हैं।

यह बीरण वृक्षकी जड़ है। यह शीतल, पाचक, वायु, तिक्त और मधुर रसयुक्त है। यह वमन, ज्वर, मत्ता, पित्त, प्यास, कफ, रुधिर विकार, विसर्प, दाह और सुजाक आदिको दूर करता है। इसकी मात्रा दो माशेकी है।

उरुस्तम्भ और वात रोगकी दवा

खसका रस या नींबूका रस मधु या गुड़के साथ पिलाओ तो गुणकारी होगा। यह काशीनाथ पद्धतिमें लिखा है।

पित्तज्वर में

यदि पित्त ज्वर अति दाहयुक्त हो तो रोगी को खस की टट्टियोंकी शीतलतामें रक्खो।

रक्तपित्त राजरोग में

खस, कमलगट्टा, अडूसा, गुरवेल, मुलहठी, महुआ, नागरमोथा, रक्तचन्दन और धनियाँके

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

दो टंक चूर्णका क्वाथ मधुके साथ पिलाना चाहिये ।

खर्बूजा

संस्कृतमें इसके दशांगुल, खर्बूजा ये नाम हैं । हिं० खर्बूजा, बं० खरमूंजा, म० खबुंज, फा० वितीख, इं० कुक्यूमिसमेलो, ला० मेलन ।

खर्बूजा मूत्र लानेवाला, बलकारी, कोठेको शुद्धकर्ता, भारी, स्निग्ध, स्वादुतर, शीतल, वृष्ण, पित्त और वातनाशक है । इसमें जो खबूंजा रस में खट्टा, मीठा और खारा होता है, वह रक्त-पित्त कर्ता और घोर मूत्रकृच्छ्र कर्ता है ।

खीरा

संस्कृतमें इसके त्रपुस, कंटकिफल, सुधावास और सुशीतल ये नाम हैं । हिं० खीरा, बालमखीरा, बं० ससा, म० काकड़ी, गु० वांसलि, का० ससेयकायि, ता० मद्देषे, हरिकोंकड़ो, फा० शियारखुर्द कहते हैं ।

खीरा हल्का, स्वादिष्ट, शीतल होता है । नवीन अवस्थाका खीरा नीले रंगका होता है तथा तृषा, दाह, पित्त और रक्तपित्त का हरण-

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

कर्त्ता कहा गया है तथा पका हुआ खीरा खट्टा, गरम पित्तकर्ता और वातनाशक है।

खीरेके बीज—मूत्र लानेवाले, शीतल, रूक्ष, पित्त, रक्तविकार और मूत्रकृच्छ्र को दूर करनेवाला है।

खसखस

इसके खसबीज आदि नाम हैं।

यह बहुत भारी, कफनाशक, बलकारक, वातनाशक, धातुशोषक, रूक्ष और मदकारक है। इसका अधिक सेवन करनेसे पुरुषत्व नष्ट हो जाता है।

खेखसा (ककोड़ा)

संस्कृतमें इसे कर्कोटकी, पीतपुष्पा और महाजाली कहते हैं। हिं० खेखसा, ककोड़ा, बं० काकरोग, गु० कंटोला, तै० अगोखर कहते हैं।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

गुण—ककोड़े मलको हरण करनेवाले, कोढ़, हुल्लास, अरुचि, श्वास, खाँसी और ज्वरका हरणकर्ता है। यह पाकमें कटु और दीपन कर्त्ता है।

गदहपूर्ना

संस्कृतमें इसको रक्तपुनर्नवा, रक्तपुष्पा, शिलाटिका, शोथघ्नि, क्षुद्रवर्षाभू, वृषकेतु और कपिल्लक कहते हैं। हिं० सोंठ, गदहपूर्ना बं० लाल पुनर्नवा, म० तागडीघेंटुली, का० केंपिनवेलडहिलु, करियमणजिले, गु० रोतीसाटोडी।

इसके पत्ते चौलाई शाकके समान होते हैं। फूल लाल रंगका होता है। यह कंकरीली जमीन में बहुत होती है और गुणमें कड़वी, पाकमें चरपरी, शीतल, हल्का, वातकर्ता और ग्राही है। कफ और रक्तपित्तको दूर करनेवाली है। प्रयोग में समस्त अंश लेवे। मात्रा दो माशेकी है। यह श्वेत, लाल और पीली तीन प्रकारकी होती है।

गाजर

संस्कृतमें इसको भल्लातक, अरुष्कर, अग्निक, अग्निमुखी, भल्ली, वीरवृक्ष और शोफकृत कहते हैं। हिं० गाजर।

गुणमें—यह मधुर (मीठी) रुचिकारी,

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

किंचिन्मात्र चरपरी, कफनाशक, अफरा, कृमि शूल, दाह, पित्त और तृषा आदिको दूर करने वाली है।

आधाशीशी की दवा

गाजरकी पत्तियोंमें घी लगाकर तावे पर गर्म करके उसका रस निचोड़कर कानमें टपकावे। नाकमें भी दो तीन बूँद डाले। छींक बहुत आवेगी और आधाशीशी भी दूर हो जावेगी।

गजपीपल

गज्यके फलको गजपीपल कहते है। संस्कृतमें इसको कपि-

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

वल्ली, काकवल्ली, श्रेयसी, वशिर और गजकृष्णा कहते हैं। हिं० गजपीपल, गु० गजपीपली, बं० गजपीपुल, म०, मोठेलाली, मोठीपिंपली, क० गजपिप्पुली, तै० पेद्दापिप्पुल, लै० सीडापसस आफिसोनेलिस कहते हैं।

गजपीपल—चर्परी, बात कफ नाशक, अग्नि-वर्द्धक और गरम है। अतिसार, श्वास, कंठरोग और कृमिनाशक है। इसके फल को ६ रत्ती की मात्रा है।

आमवात की दवा

गजपीपल, पिपलामूल, चित्रक, सोंठ, मिर्च, सम्भालू, इलायची, अजमोद, सरसों, पाठ, तिकी हींग, भारंगी, बकायन, इन्द्रयव, जीरा, मूर्वा, अतीस, कुटकी और वायबिडङ्ग इनका दो टंक चूर्ण गरम जलके साथ देनेसे गुल्म, शूल, आम और वात के समस्त रोग दूर होते और क्षुधाकी वृद्धि होती है।

गावजुबाँ

गावजुबाँ एक प्रकारकी घासका पत्ता है जो हरा सुफेद और बिन्ददार होता है। स्वादमें

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

यह कषैला और चरपरा होता है। इसका पत्ता चित्त को प्रसन्न करता, शरीरकी गरमीको दूर करता, प्रकृतिको कोमल करता, पित्तको पाखानेके रास्ते बाहर निकालता, छातीकी खसखसाहट, जकड़ और खाँसीको दूर करता है।

इसका फूल काले और लाजवरदी रङ्गका होता है जो स्वादमें कषैला और फीका लगता है। यह अनारके फूलकी तरह है; पर उससे बहुत छोटा होता है। इसके सेवनसे चित्त प्रसन्न होता, स्मरण-शक्ति बढ़ती, पित्त विकार दूर होता तथा उन्माद और प्यासको शान्त करता एवं कामलाको लाभकारी है।

इसका बीज सफेद होता है जो स्वादमें लसीला तथा फीका होता है। यह कुसुमके बीजके समान पर उससे छोटा होता है। यह गावजुवाँमें अधिक लाभदायक है।

गाँजा।

संस्कृतमें—भंगा, गंजा, मातुलानी, मादिनी, विजया

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

जया। हिन्दीमें—भाँग, गाँजा। बंगला-सिद्धि, भाँग, गाँजा। मराठी-भाँग, गांजा। गुजराती—गाँजा, चरस। फारसी-कनवजुज व वरठल रकाल। लैटिन-केनेबिस इन्डिका और अंगरेजी-इन्डियन हेम्प। एकही तरहके वृक्षसे गाँजा, भाँग और चरस तीनोंकी उत्पत्ति है।

गाँजा, अग्निवर्द्धक, बलकारक, कामोद्दीपक और पीड़ा निवारक है। कुत्ते और स्यारके काटने पर लाभदायक है। गाँजे का सत्व निकलता है जो गाँजे ही के समान होता है जिसे चरस कहते हैं। गाँजेके बीजोंका तेल पानीमें खानेसे ज्वर, खाँसी और तिजारी रोग नष्ट हो जाता है। भाँगमोहसी को कहते हैं। भाँग खानेसे अजीर्ण रोग दूर होता है।

गिलोय

संस्कृत-गुडुची, मधुपर्णी, अमृतवल्लरी, छिन्ना, छिन्न रुहा, जीवती, सोना। हिन्दी-गिलोय, गुरुच। बंगला-गुलाब। मराठी गुल्वेल, गरुडवेल, गरोल। कर्नाटकी-अमदरवल्ली। गुजराती-गलो। तामिली-सिंदी लकोदी। तेलगू—तिप्पतिगा। फारसी-गलो। अंगरेजी गुलाँच। लैटिन-टिनोस्पोरेकार्डिफालिया।

गिलोयकी बेल पीपलके पत्तोंके समान होती

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

है, इसके कोने अधिक निकले होते हैं और यह एक प्रकार की लता वृक्ष है जो बड़े बड़े वृक्षों पर चढ़ी होती है। इसका चढ़ाव नीम पर अधिक होता है और नीम चढ़ी हो गिलोय उत्तम होती है। इसीसे इसे नीम चढ़ी भी कहा है। वर्षाकाल में यह फूलती है। इसके पत्ते अधिक हरे होते हैं। फल चनेके बराबर गुच्छेदार और हरे रंगके होते हैं। पर पकने पर काले रंगके होते हैं। ग्रीष्म और शरद्कालमें इसमें पत्ते और फल एक भी नहीं रहते।

गिलोय, मधुर, कड़वी, पकनेके समय स्वादु रसवाली, ग्राहक, कषैली, हल्की और बलकारी होती है। आम, तृषा दाह, धातु चीणता, खाँसी, पाण्डुरोग, कामला, कोढ़, श्वास, ववासीर, मूत्रकृच्छ्र, हृदयरोग और वादीको भी यह नष्ट करनेवाली है।

गिलोयका सत्त भी बनता है:—

(१) विधि—गिलोयके छोटे छोटे टुकड़े कतर के कूट डाले। फिर जलमें डालकर चलनीसे

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

छान ले। फिर इसे मथ कर किसी चौरस लाईके पात्रमें भरकर रख देवे। दूसरे दिन उस जलको सावधानी से निकालकर उसको सुखा लेवे। बस सत्व तैयार हो गया।

(२) गुरच ३ मा०, नीमकी छाल ३ मा०, लाल चन्दन ३ मा०, धनियाँ ३ मा०, पद्माख ३ मा०, सबको कूटकर काढ़ा करके पीनेसे कफका ज्वर दूर हो जाता है।

(३) गिलोय (गुरुच) ३ मा०, पित्त-पापड़ा ३ मा०, नागरमोथा ३ मा०, चिरायता ३ मा०, सोंठ ३ मा०, इन सबका काढ़ा करके १० दिन पिलानेसे वात पित्त ज्वर शान्त हो जाता है।

(४) गिलोय (गुरुच) नीमकी छाल, छड़, कपासको छाल, दोनों पीपल, खरैटी और देवदारु के क्वाथको तेलमें पकाकर वह तेल पन्द्रह दिन पिलानेसे गलगंड रोग शान्त हो जाता है।

(५) गिलोय, रक्तचन्दन, सोंठ, कमलतंतु, कायफल और दारु हल्दी समान भाग लेकर

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

छदाम भर चूरेका क्वाथ १० दिन तक पिलाओ तो कफ पित्त ज्वर दूर हो।

(६) गिलोय, इन्द्रजौ, नीमकी छाल, पटोल, कुटकी, सोंठ, अगर, चन्दन, नागरमोथा और पीपलका तुल्य भाग लेकर चूर्ण कर ४ माशे प्रतिदिन अष्टावशेष जलके साथ पिलाओ तो कफ, ज्वर खाँसी दूर हो।

सेवतीगुलाब

संस्कृत—शतपत्री, तरुणी कर्णिका, चारुकेशरा, महाकुमारी, गन्धाढ्या लाक्षा, कृष्णा अतिमंजुला। हिन्दी-गुलाब, सेवती। फारसी-गुलसुर्ख। अरबी-वर्गे, अहमर। कर्नाटकी-चेबड़े। अंगरेजी-रोज़।

गुलाब-शीतल, हृदयको हितकारी, शुक्रजनक, हल्का त्रिदोषनाशक और रुधिरविकार को दूर करने वाला तथा शरीरके रंगको भी उज्वल करने वाला है। स्वादमें कड़वास और चर्परा तथा पाचक है। गुलाबमें हल किया हुआ सुर्मा नेत्रोंको हितकर है। गुलाबका तेल मर्दन करने से दाहयुक्त पित्त-ज्वर नष्ट हो जाता है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

मुँह आनेपर

गुलाब और कुलफेके पत्ते चबावे तो गर्मीको सोजिशज़ुबाँ दूर होवे।

गूलर

इसे संस्कृतमें उदुंबर, जन्तुफल, यज्ञाँग, हेमदुग्धक। हिन्दी-गूलर ऊमरो, पं० यज्ञडुमुर, म० उम्बर, फा० अंजीरे आदम, लै० फाइकस्ग्लोमिरेटा कहते हैं।

गूलरका वृक्ष बड़ा होता है। इसके पत्ते महुआके समान किन्तु उससे कुछ छोटे और दूसरी पृष्ठ पर कुछ खुरखुरापन लिये होते हैं। इसकी लकड़ी यज्ञके प्रयोगमें भी आती है। फल खाया जाता है। परन्तु फल कृमिकारक, कफ़कारक होते हैं। किन्तु रुधिर-विकार, पित्त, दाह, क्षुधा, प्यास और थकावटको भी दूर करनेवाले होते हैं। सूखी खाँसी और जकड़ को भी लाभ पहुँचाते हैं।

प्रदरकी दवा

गूलरके सूखे फलोंका चूर्ण, मिश्री और मधु:में छानकर टके भरकी गोलियाँ बना ले और एक

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

गोला नित्य ७ दिन खानेसे प्रदर रोग अच्छा हो जाता है।

नासूरकी दवा

गूलरके दूधमें फाया भिगोकर घावपर रक्खे और कुछ काल पर्यन्त इसी प्रकार करे तो नासूर और भगंदरको गुण करे।

तथा-गूलरके वृक्षको छाल पानीमें पीसकर तालुवे पर लगावें।

खूनी बवासीरमें

सूखे तथा हरे गूलर पानीमें पीसकर मिश्री मिलाकर पियें तो रुधिरकी उल्टी और रुधिरके दस्तकी बवासीर और स्त्री धर्मके रुधिरको अच्छा करता है।

शरीरके श्वेत दागोंकी दवा

गूलरकी छाल ललाके बीज दोनों बराबर कूट छानकर पानीसे ४० दिन फांके तो उक्तरोग अच्छा हो जावे।

श्वेतप्रदर की दवा

दो तोला भर कच्चा गूलर कुचल कर उसमें

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

दो तोला शहद, दो तोला मिश्री पासकर मिलावे और पीड़िया बनाकर खावे। ऊपरसे बिना रोग-वाली गायका आध पाव दूध पीवे तो श्वेत-प्रदर दूर हो।

इसप्रकार गूलरके अनेक गुण हैं और इससे अनेक रोगोंकी चिकित्सा होती है, लिखा जाय तो एक अलग पुस्तक बन सकती है।

गूमा

संस्कृतमें इसे द्रोणा, द्रोणपुष्पी, फलपुष्पी कहते हैं। हिन्दी—गोमा, गूमा। बंगला--गलघसिया। मराठी—तुंब। तो-जयल चेट। गुजराती—कुबा।

गूमा—गुरु, स्वादु, रूक्ष, गरम, वात, पित्त-कर्त्ता, रसयुक्त, पाकमें स्वादिष्ट, कटु और दस्ता-वर है। साथ ही यह कफ, आम, कामला, सूजन, तमक, श्वास और कीटादिको दूर करनेवाला है। इसका सर्वाङ्ग लिया जाता है।

यह एक क्षुप जातिका पौधा है जो गुच्छे-दार और गठीला होता है। इसका फूल श्वेत

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

रंगका होता है और इसके भीतर बीज होते हैं। इसके रसकी मात्रा दो तोलेकी होती है।

गोरखमुण्डी

संस्कृतमें इसे मुण्डी, भिक्षु, श्रावणी, तपोधना, श्रावणाहवा, मुण्डीतिका, श्रवणशीर्षका कहते हैं। हिंदी--गोरखमुण्डी। बंगला-मुडरी, मुईकदम। कर्नाटी-कियोबोलतर, तैलगू-बावसर पुचेट्ट। तामिली-कोदल। अरबी-कमादुरयूस। लैटिन-स्फिरेन्थस इण्डिकम कहते हैं।

यह एक प्रसर जातिकी बूटी है जो बहुधा काली पृथ्वी पर जल-स्थानमें अधिक होती है। इसका क्षुप पृथ्वीमें फैला हुआ रहता है। फूल गोल और कनेरी रंगका होता है।

यह पाक में कड़वी, उष्ण वीर्य, मधुर, हल्की और स्मरण शक्तिवर्धक है। मूत्रकृच्छ्र, कृमिरोग, योनिरोग, पाण्डु और अरुचि आदी रोगोंमें यह विशेष लाभ पहुँचाती है। वृक्षका सर्वाङ्ग लिया जाता है। मुण्डी का अर्क भी निकाला जाता है। जो खूनको साफ करता और शरीरके समस्त विकारोंको दूर कर बलवान बनाता है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

गेंदा

संस्कृतमें इसे पद्मचारिणी, अतिचरा, अव्यथा, पद्मा, शारदा गेंद कहते हैं। गेंदेका फूल पीला, लाल और सफेद रंगका होता है।

वृक्ष दो हाथसे अधिक लम्बा नहीं होता। किसीके डंठल सुफेद और किसीके लाल रंगके भी होते हैं। गुणमें सब एक समान। मूत्रकृच्छ्र, पथरी, शूल, श्वास और विषके विकारोंमें इसका अच्छा प्रयोग किया जाता है। यह कटु, तिक्त, कषाय और वात पित्तका हरणकर्ता है। गेंदेके पत्तेका अर्क कानमें डालनेसे कानका दर्द बन्द हो जाता है। जिस स्त्रीके स्तनोंमें अकारण अथवा खाज आदिसे सूजन आ गई हो तो उस पर गेंदे के पत्तोंका रस मलना चाहिये।

(१) गेंदाके फूलोंका अर्क बवासीरको गुण करता है। पाव सेर गेंदाकी पंखड़ी दो सेर केलेकी जड़के अर्कमें रातको भिगो देवे और प्रातःकाल अर्क खींच ले। दो तोले सायंकालके समय पीवे तो बवासीर का रोग दूर होवे।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

गोभी

संस्कृत—गोजिह्वा, गोजिह्वा, गोभी दार्विका, खरपिष्पनी। हिन्दी-गोभी। बंगला-गोजिया। मराठी-पाथरी। कर्नाटकी-यनुनालेगा। गुजराती-यलजिभी, भापाथरी।

गोभीके पत्ते लम्बे होते हैं और पत्तोंके बीचमें एक बड़ा पीले रंगका बँधा हुआ फूल होता है। जो शाकके काम आता है। गोभीका शाक प्रसिद्ध और उत्तम है।

यह वातल, शीतल, कफ पित्त नाशक और हृदयको हितकारी है। गोभी पाकमें स्वादिष्ट और स्वादमें कषैली और कड़वी है। प्रमेह, खाँसी, रुधिर विकार, व्रण और ज्वरको भी दूर करती है।

गोखरू

संस्कृत-गोक्षुर क्षुरक, त्रिकंटक, स्वादुकंटक, गोकंटक, गोक्षुरक, वनशृङ्गाट। हिन्दी-गोखरू। बंगला-गोक्षुरी। मराठी-गोखरू। कर्नाटकी-दोहनेग्गलु। तेलगू-पालेरु। गुजराती-गोखरू। अरबी-वजर, उलखलक। फारसी-तुख्म खारखसक।

गोखरू दो प्रकार का होता है। एक बड़ा और एक छोटा। इसके पत्ते इमलीके समान छोटे-

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

छोटे होते हैं और डालियों में रुयाँ तथा थोड़े २ अन्तर पर गाँठे होती हैं। इन्हीं गाँठों पर से पत्ते और फूल निकलते हैं। फूल सौंफके समान और पीले रंगका होता है। फल छोटे, गोल, तथा काँटेदार होते हैं। प्रत्येक फल को बाजू पर पाँच-पाँच कँगूरे और उन कँगूरों पर दो-दो-कोर तथा भीतर एक बीज होता है। गोखरू शीतल, स्वादु, बलकारक, बस्तिशोधक, मधुर, दीपक, शुक्रजनक वायुनाशक और पुष्टिवर्द्धक है। प्रमेह, पथरी, श्वाँस, खाँसी, बवासीर और कठिन हृदयके रोगों को भी यह अच्छा कर देता है। औषध के प्रयोग में इसका पंचांग आता है।

(१) गोखरू, अधोपुष्पी, खरेंटी, दारुहल्दी, पृष्ठपर्णी, इन्द्रयव, सलाई के फूल, बड़ के अंकुर, गूलर के अंकुर और पीपलके कोमल पत्ते, सबको दो-दो टंक भर लेकर कूटकर चूर्ण बना ले। नित्य दो टंक चूर्ण का क्वाथ बनाकर पीनेसे बवासीर का रोग नष्ट हो जाता है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

(२) गोखरूके क्वाथमें जवाखार डालकर पिलाने से मूत्रकृच्छ्र का रोग अच्छा हो जाता है।

(३) गोखरू कूट छानकर बूरा करे, गो घृत और शहद मिलाकर खावे तो स्त्रीगमन की शक्ति बढ़े।

ग्वारपाठा—(घी कुवार)

सं० कुमारी, गृहकन्या, घृतकुमारिका। हिन्दी—घीकुवार, ग्वारपाठा, बंगला—घृतकुमारी, मराठी-काकाड। गुजराती—कुवार। तेलगू--पिल्लगोराटकलबन्द। फारसी—दरख्तेसिब्र। अरबी—मुसब्बर। लैटिन—एलोय इण्डिका।

यह एक क्षुप जातिकी बनस्पति है। जलके तट पर यह अधिक होती है। इसके पत्ते लम्बे और दोनों किनारे पर कँटीले होते हैं। पत्ते का सिर अनीदार होता है। इसका फूल लाल रंगका गुच्छेदार होता है और वृक्ष के भीतर ही मोटे दलका सफेद और लुआबदार गूदा होता है जो बहुत ठण्ठा होता है। मस्तक की गर्मीमें यह गूदा निकाल कर मस्तकपर रखा जाता है। गुल्म रोग, प्लीहा, कफ, ज्वर, विस्फोटक, रक्त, पित्त

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

और त्वचाके रोगमें इसका प्रयोग अत्यन्त लाभदायक होता है।

विभिन्न रोगों की विभिन्न दवाइयाँ

(१) घी कुवारका गूदा और आमिया हल्दी के लेप से हर प्रकारकी सूजन जाती रहती है।

(२) इन्हीं दोनों के योग से दुखती हुई आँख का दर्द भी दूर होता है।

(३) नेत्र में चाहे कैसा भी दर्द हो केवल ग्वारपाठेका अर्क लगानेसे नेत्रोंकी पीड़ा दूर हो जाती है।

(४) ग्वारपाठेका गूदा पीसकर सोने समय कानमें टपकावे तो नेत्रोंके रोग दूर होवें।

(५) ग्वारपाठे को दो टूक करके थोड़ी रसौत और हल्दी गरम करके बाँधे तो फोड़ा बैठ जावे या पकाकर फोड़ देवे।

(६) ग्वारपाठे के रस में सोंठ डालकर खिलाओ तो हिचकी दूर हो।

(७) ग्वारपाठेका रस आँखमें टपकाकर सो रहे तो ढलका अच्छा हो जावे।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

बादीके रोग की दवा

ग्वारपाठेका रस १ सेर, गायका दूध २ सेर, मिश्री १ पाव, दालचीनी डेढ़ तोला। पहले ग्वारपाठको दूधमें छोड़कर तीन उफान देवे और मिश्री, दालचीनी मिलाकर औटावे। फिर गायका घी आध सेर मिलाकर रख छोड़े। प्रति दिन प्रातः समय आधि छटाँक भर खाय तो बात और कफ के विकार दूर हो जाते है।

बादीके रोगोंमें बादी की वस्तु खटाई, मांस, गुण तेलसे परहेज करे। गेहूँकी रोटी और मूँगको दाल खाये।

गूगल

इसे संस्कृतमें गुग्गुल, देवधूप, जटायू, कौशिक, पुर, कुस्ताल, खलक, महिषाक्ष और पलंकष कहते हैं। हिं० गूगल, बं० गुगुलु, गु० गुगल, क० हुबोल० अ० मुशकिले अर्जक, फा० बोयजुदान, इं० बेडल्यम, ला० बालसामाडेन्ड्रोन रोक्सबरघाई कहते हैं।

गूगलका वृक्ष बड़ा और पर्वतीय भूमिमें

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

होता है। इसकी छाल-से, बक्कल-से उतरते हैं। इसके पत्ते छोटे-छोटे नीमके सदृश मिले हुए परन्तु इनमें अनी नहीं होती। इसके फूल छोटे छोटे खिरनी के समान तीन धारवाले होते हैं।

गूगलके वृक्षमें से 'गूगल' गोंदकी जगहसे निकलती है। प्रयोगमें यही गोंद किन्तु नवीन होनी चाहिये और शुद्ध करके डालनी चाहिये।

गूगलकी पाँच जातियाँ हैं। जैसे महिषाक्ष (भैंसा गूगल), महानील, कुमुद, पद्म और हिरण्य। इसमें भैंसा गूगल भौंराके समान काले रंगकी और भैंसाके नेत्रके समान चमकनेवाली तथा कज्जल सदृश होती है। दूसरी महानील गूगल अत्यन्त नीले रंगकी होती है और कुमुदाख्य गूगलका रंग मानिक रत्नके समान लाल और गूगलका रंग मानिक रत्नके समान लाल और हिरण्याख्य गूगल स्वर्णके समान पीले रंगकी होती है।

इसमें महिषाख्य और महानील जातिको

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

गूगल हाथियोंके वास्ते हितकारी है तथा कुमुद और पद्म नामकी गूगल घोड़ोंके रोगमें दी जाती है और मनुष्योंके वास्ते हिरण्य (सुवर्ण) रंगकी गूगल देनी चाहिये। यदि सुवर्ण गूगल न मिले तो भैंसा गूगल लेवे।

गुणमें--गूगल विषद, कड़वा, उष्णवीर्य, पित्तकर्ता, दस्तवार, कषेली, कटु, और पाकमें चरपरती होती है। यह रूक्ष, हलकी, टूटे हुए स्थानको जोड़नेवाली बलकर्ता, सूक्ष्म, स्वर को उत्तम कर्ता, रसायन, अग्निदीपक और पिच्छिल है।

यह कफ, खाँसी, वादी, व्रण, अपची, मेद-रोग, प्रमेह, पथरी, वाय, शरीरका क्लेश, कुष्ठ आमवात, पीड़िका, गाँठका रोग, सूजन, बवासीर, गंडमाला और कृमि रोग का नाश करता है।

यह मधुर होनेसे वादी कषेली होनेसे पित्त और कड़वी होनेसे कफको नष्ट करती है। इस-लिये गूगल त्रिदोष नाशक है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

नवीन गूगल पुष्टिकारक और बलवर्धक है। पुरानी गूगल अत्यन्त लेखन है। नवीन गूगलके ये चिन्ह हैं कि वह चिकनी सुवर्णके समान उज्वल सुगन्धित पको जामुनके समान हो और पिच्छिल हो। पुरानी गूगल सूखी, दुर्गन्ध स्वाभाविक वर्णादि रहित औ हीनवीर्य है।

पथ्य—गूगल सेवनके समय खटाई, मिरच आदि तीक्ष्ण पदार्थ, मैथुन करना, परिश्रम, धूपमें डोलना, मद्यपान और क्रोध करना त्याग देवे।

गूगलके वृक्ष माड़वार देशकी पृथ्वीमें होते हैं और वह गरमियोंकी ऋतुमें सूर्यकी धूपसे संतापित हो और शिशिर ऋतुमें सरदोके मारे पाँच प्रकारके गूगल रसको छोड़ते हैं। जैसे सुवर्णके समान, महिष नेत्रोपम, पद्मरागके सदृश, भौंराके समान और कुमुदकी कान्तिके सदृश। इस रसको विधिपूर्वक लेकर परीक्षा करे।

हिन्दुस्तानी वैद्य—गूगलको प्रमेह और अन्य-अन्य बीमारियोंमें घीके साथ मिलाकर तथा

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

खुजली आदि तथा दुष्ट नासूर और घाव पर लगानेको नाबूके रस और नारियलके तेलके साथ मिलाकर देनेकी प्रशंसा करते हैं।

यूनानी हकीम-गूगलको रुधिर शुद्धकर्त्ता, बलबर्द्धक और दस्त खुलासा लानेवाला मानते हैं। तथा दूसरी सुगन्धित द्रव्योंके साथ मिलाकर संधिबात और अन्य सन्धिके रोग, त्वचारोग और मूत्रस्थानके रोगोंमें देनेको कहते हैं।

चरकसंहितामें-गूगल को पुरीष बिरंजनीय (मलका रंग बदलनेवाला) स्वर शुद्धिकर, कफहर और मूत्रस्थान तथा फेफड़े की बीमारी नाशकर्ता माना है।

सुश्रुत संहितामें गूलरको मेदहर और कफहर तथा योनि दोषहर माना है।

गूगल अग्निमें डालनेसे जल उठे और धूपमें रखनेसे पिघल जावे, गरम जलमें डालनेसे गलकर जलके समान हो जावे, इत्यादि लक्षणवाली गूगल उत्तम होती है। इसलिए तत्कालकी उत्पन्न हुई

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

गूगलको वैद्य ग्रहण करे और जो पुरानी है तथा जिसका रंग अंगारेके समान है, जिसमें राधके समान दुर्गन्ध आती हो वह निकृष्ट है। ऐसी गूगल को औषधिमें नहीं लेना चाहिए।

घी (घृत)

इसके "आज्य, हविष, घृत' आदि नाम हैं। यह रसायन, मीठा, भारी, ठण्ड, दीपन और चिकना है। नेत्रों की ज्योति देता, विषकर्ता, बादी, पित्त, उदावर्त, ज्वर, उन्माद, शूल, अफरा आदिको दूर करता, कान्ति, पराक्रमको बढ़ाता और कफको उत्पन्न करता है।

दादकी दवा

(१) दादको खुजलाकर घी से चुपड़ कर चूना लगा देवे।

(२) घृत और गुड़के भक्षणसे बात स्वर-भंग दूर होता है।

(३) घृत और मधुसे पित्त स्वर भंग दूर होता हैं।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

(४) घृतमें सेंधा नोन डालकर पिये ता बात दर्द दूर हो।

घुय्याँ (अरुई)

संस्कृत-गजकर्णालु। हिन्दी-घुय्याँ। अरबी-आलू। मराठी-अलवाया, काद्दा। गुजराती-अलवी।

अरवो बलकारी, स्निग्ध, कफनाशक और विष्टंभकर्ता है। तेलमें बनाई हुई अरवी अरुचिको उत्पन्न करती है। इसके पत्ते चौड़े और गोल होते हैं। इसका सर्वाङ्ग काममें लिया जाता है। अरवी की भाजी अच्छी होती है। इसको अजवायनसे ही छौकना चाहिये। यह धातु और संग्रहणी-के लिये अत्यन्त लाभदायक है।

घुँघुँची

संस्कृत-काकदनी, काकपीभू, काकचिंची, काकनन्ती, काक-बल्लरी। हिन्दी-घुँघुँची, चिरमिटी, गुञ्जा, चोटली। बंगला-श्वेतकुच, लालकुच। मराठी-गुञ्ज। कालिङ्ग-गुलगुञ्जे, एरड्ड। गुजराती-चणोठी। तेलगू-गुलविन्दे। फारसी-चश्मेखरुश। अरबी-हब्बशर्स। उड़िया-रुञ्ज।

चिरमिटी दो प्रकारकी होती है। एक लाल

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

दूसरो सफेद। आकार प्रकार तथा गुण दोनों ही समान है। इसके पत्ते इमली केसे छोटे-छोटे और पतले होते हैं। इसका फूल सफेद और भूरे रङ्गका होता है। फल बबूलके समान होते हैं। इसकी जड़ मुलहठोके समान मोटी होती है। बात पित्त ज्वर, मुखशोथ, भ्रमरोग, स्वास, तृष्णा, मदात्य, नेत्ररोग, खुजली और कृमिरोगकी औषधियोंमें इसका प्रयोग किया जाता है। औषधिमें इसके जड़ पत्ते और बीज लिये जाते हैं चिरमिटीके पत्तोंको इलायची और मिश्रीके साथ चबानेसे आनशकका रोग दूर होता है। चिरमिटाके पत्तों को चबानेसे निनावाँ और मुँहके छाले दूर होते हैं।

चमेली

चमेलीको संस्कृतमें राजपुत्रिका, चेतिका और हृद्यगन्धा, मालती और सुमना कहते हैं। हिन्दी में चमेली।

यह क्षुप जाति का पौधा है। यह दो तरहकी होती है। एक जाति और दूसरा सुवर्ण जाति।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

जाति का फूल सफेद तथा सुवर्ण जातिका पीलापन लिये होता है।

दोनों प्रकारकी चमेली गरम, कषैली, हल्की और दोषहरण कर्ता है। इसके द्वारा मस्तक और नेत्रकी पीड़ा दूर होती है। विषजन्य रोग, कोढ़, बादी और रुधिरके दोष दूर होते हैं। यह चित्त-को प्रसन्न करता है। इसके पीने से बात और कफके विकार पाखाने द्वारा बाहर निकल जाते हैं। यह लकवा और गठियाके लिये हितकर है। इसका लेप स्तम्भनशक्ति को बढ़ाता है। इसके पत्तों के काढ़ासे कुल्ला करनेसे दाँतों और मुखकी पीड़ा मसूड़ोंकी सूजन और मुँहके दाने अच्छे होते हैं। इसका तेल दिमागको ताजा और ठण्डा करता है।

रतौंधी की दवा

चमेलीका पत्ता या फूल, दोनों हल्दी, नीम का पत्ता और रसौंतको गोबरके रसमें पीसकर शिरमें लेप करनेसे रतौंधी अच्छी हो जाती है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

कामदेवको पुष्टिकारक तैल

सफेद चमेलीकी पत्तियाँ पीसकर उसका रस लेकर मीठे तेलमें जलावे। जब पानी जल जाय और तेलमात्र रह जाय तो उसे शीशीमें रख लेवे। स्त्री विलासके दो घड़ी पहिले लिंग पर मलके पान बाँधे।

अथवा

पाव सेर चमेली की पत्तियाँ पाव सेर मीठे तेलमें डालकर कड़ाहीमें औटावे। जब पत्तियाँ जलकर तेल रह जावे तब कड़ुवा कूट, कच्चा सुहागा, प्रत्येक चौदह माशे थोड़े तेलमें डाले जब मिलकर रंग लाल हो जाय, तब कड़ाही उतार कर तेलको फूल या कांसेके वर्तनमें दो पहर नीमकी लकड़ीसे रगड़कर शीशेमें भरकर रखे और एक माशे लिंगपर सिर छोड़कर मले और ऊपर से पान बांधे। इसी प्रकार एकसप्ताह पर्यन्त दो दिन का बीच देकर लगावे और इसकालमें स्त्री भोग न करे।

तथाच—

चमेलीकी पत्तियोंका रस तीन तोले चार

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

माशे, संखिया दश माशे, मीठेतेल, कड़वा कूट प्रत्येक १ तो० ८ माशे, सुहागा १ तो० ८ माशे, तिलका तेल ११ तोले १० माशे, पांचयों पीसकर टिकिया बनावे और तेलमें पानी मिलाकर उसको जलावे, जब पानी जलकर तेलमात्र रह जावे तब उसमें पिसी औषधियाँ मिलाकर रगड़े और एक सप्ताह पर्यन्त लिंग पर मले।

बालकके मुख पकनेका यत्न

यदि बालकका मुख पक जायतो चमेलीके कोमल पत्ते और फूलोंको शहदमें मिलाकर मुखमें लगानेसे अथवा चमेलीके पत्तों और फूलोंको उबाल शीतलकर कुल्ले कराने से रोगको दूर करता है।

कानके रोगकी दवा

चमेलीके तेलमें एलुआ रगड़कर कानमें डाले तो कानकी खुजली और पीड़ा दूर होती है।

खुजली की दवा

शुद्ध चमेली (उत्तम) के तेलमें कागजी नीबू निचोड़ कर सर्वाङ्ग लेप करे। प्रातः स्नान

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

कर लेवे। खुजलीके लिए इस प्रकारका लेप शरीर को शुद्ध कर्त्ता और खुजली को दूर करता है। १०-१५ दिन तक करता जावे।

चव्य

इसे संस्कृत में चव्य, चविका, ऊष्णा। हिन्दीमें चव्य, बं० चई। म० गु० चवक, ला० चवीका ऐक्सवर्घीआई कहते हैं।

यह क्षुप जातिकी लकड़ी है और सर्वप्रसिद्ध है। चव्य पिपरामूलके समान गुणकारी है। विशेषकर यह बवासीर को गुण करता है। औषधिमें इसकी छाल ली जाती है। मात्रा १ माशेकी है।

इसकी बेल बड़ी कठोर होती। कोई काली मिरचके वृक्षका भाग, कोई गजपीपलकी जड़ और कोई इसकी बेल पृथक मानते हैं।

चव्यादि चूर्ण

चव्य, अमलवेत, सोंठ, कालीमिर्च, पीपल, डाँसरे, तज, पत्रज, जीरा, चित्रक और इलायची इन सबका दो टंक चूर्ण तिगुने गुड़के साथ नित्य सेवन करावो तो स्वरभंग, पीनस, कफ रोग और अरुचि ये सब दूर हो। इसे चव्यादि चूर्ण कहते हैं।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

चित्रक (चीता)

इसे संस्कृतमें चित्रक, पाठ, व्याल और ऊष्ण कहते हैं। हिन्दीमें चित्रक, चीता और चितरक कहा जाता है। बं० चिता, म० चित्रक, का० चित्रमूल, तै० चित्रमूलनू, ता० शिवपु, चित्रिर, गु० चित्रो, अ० शीतरज, फा० बखवरंदा और इं० प्लंबिगो कौरुले ऐसो कहा जाता है।

गुण–यह पाकमें चरपरा है [जायका भी तीक्ष्ण है] अग्नि वर्द्धक, पाचन, हल्की, रूक्ष, गरम और ग्राही है।

यह ग्रहणी, कुष्ट, सूजन, बवासीर, कृमिरोग, खाँसी, बात, कफ, वातार्श और श्लेष्माको नाश करता है।

(१) यदि सिर्कामें पकाकरके लेप करे तो सफेद कुष्ट, खुजली, तिल्ली, अंडवृद्धि और उरुस्तंभ को करता है।

इसके प्रतिनिधिमें पिपरामूल अथवा अकरकरा लेवे। प्रयोगमें इसको छाल ली जाती है। मात्रा ४॥ माशेकी है। इसका दर्पनाशक रूमी मस्तगी और पीलाचन्दन कहा है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

आमवात की दवा

चित्रक, कुटकी, हर्रकी छाल, वच, देवदारु, अतीस, गुर्चके दो टंक चूर्णका क्वाथ नित्य पिलाओ।

चना

इसे संस्कृतमें चणक, हरिमंथ और सकल प्रिय कहते हैं। हिन्दीमें चना, छोला, पं० चणक, म० हरभन्या, का० कडले, गु० चण्या, तै० शलंगालू, अ० हुम्स, फा० नखुद, अं० ग्राम, ला० सीसरएरिएटिनम् हैं।

गुण—चना, शीतल, रूक्ष, पित्त, रक्त और कफको नष्ट करता है। यह हल्का, कषैला, विष्टंभ कर्ता, वातल और ज्वर नाशक है। यदि इनका अग्निपर या तेलमें भून लिया जाय तो भी पूर्वोक्त गुण करता है। गीला करके भुना हुआ चना बलकारी और रोचक है। सूखा भुना चना अति रूक्ष वात और कोढ़को कुपित करता है। उबला हुआ चना पित्त और कफको नष्ट करता है। भीगा हुआ चना अति कोमल, रुचिकारी, पित्त,

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

शुक्र हरणकर्ता, शीतल, कषैला, बातकर्ता, ग्राही, कफ और पित्त हरणकर्ता हल्का है।

जलंधर की दवा

साढे तीन तौले चना पावसेर पानीमें औंटाकर जब आधा रहे छानकर पीवे तो जलंधर व्याधिको गुण करता है।

कुष्टकी दवा

चनेकी भूसी आध पाव सेरभर पानीमें भिगोकर प्रातःकाल मल छानकर पिये इसी प्रकार एक मास उन्नीस दिन पर्यन्त सेवन करे। तन्दुल, दूध दधि और जो वस्तु श्वेतहों तथा खटाई से पथ्य करे, मांस गुड़, शक्कर जो इनमेंसे प्राप्त हो सके खाय। रोग कुछ शेष रहे तो और पिये।

प्रदर रोग में

चनाका सेवन हितकर है।

चौराई

इसे संस्कृतमें तंतुलीय, मेघनाद, कांडेर, तंदुलेरक, भंडीर तंदुलबीज, विघ्न और अल्पमानीष कहते हैं। हिन्दीमें चौराई,

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

चौलाई, बं० नटेशाक, म० तांदुलजार, गु० तांदुलजो, ता० मुल्लूक्किरई, का० किरुकुशाले, तै० मोलाकुरा, इं० फोडाईएमेरेंथ।

यह गुणमें लघु, शीतल, रूक्ष, पित्त कफ नाशक, रुधिरदोष निवारक, मलमूत्र निःसारक अग्नि कारक और विषनाशक हैं।

नाहरवा रोग में

जो एक ऐसा दाना है, जब फूट जाता है तब उसके अन्दरसे एक तागा निकलता है, उसपर चौराईकी जड़ पीसकर बाँधे।

झाँईं की दवा

चौराईको जड़ और टहनी जलाकर जलमें पीसकर झाईं पर मले और एक घड़ी धूपमें बैठे। सूख जानेके पश्चात् गरम जलसे धो डाले। और सेंधा नोन पीसकर मुख पर मले।

छीपकी दवा

चौराई को जड़ और टहनियाँ जलाकर उनको भस्म पानीमें मिलाकर छीप पर लगावे और एक घड़ी धूपमें बैठकर पश्चात् गरम जलसे धो डाले।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

सब प्रकारके गरम विषमें

चौराईकी ताजा जड़ १ तोला सूखी हो तो ६ माशे जलमें पीसकर गौ के घृतके साथ खावे।

राजरोग और बहुमूत्रकी दवा

चौराईको पकाकर घृतके साथ नित्य खिलाओ तो उक्त रोग दूर हो।

श्वेत प्रदरकी दवा

रसौत, तवाखीर, लाल चौराईकी जड़, इनका चूर्ण चार २ माशे सायंकाल और प्रातःसमय चावलोंके पानीके साथ पीनेसे श्वेतप्रदर रोग शान्त होता है।

तथा प्रदरमें

चौराईका रस, शहद एक तोला, रसौत दस माशा, इनको मिलाकर पीने से सात दिनमें प्रदर-रोग अवश्य दूर हो जाता है।

चिरमिटी या गुंजा या घुँघची

इसे संस्कृतमें उच्चठा और कृष्णला कहते हैं। यह दो प्रकारकी होती है। लाल और सफेद। हिन्दीमें सफेद और लाल घुँघची कहते हैं। चिरमिटी, गुंज, और चोटली भी

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

कहा जाता है। बं० श्वेतकुंच, लालकुच, म० गुञ्ज, गुलगुञ्जे, करडु, गु० चणोठी, तै० गुलुविंदे, फा० चश्मेखरुश, अ० हब्बशुर्ख, उ० रुंज, ला० आब्रसप्रीकेटोरिअस।

चिरमिटी के इमली के समान लम्बे पत्ते होते हैं और स्वादमें मीठे होते हैं। फूल सफेद भूरे रंग का होता है। फल बबूलकी फलीके समान होता है। इसमेंसे घुँघची निकलती है। इसकी जड़ मुलहठी के समान मीठी होती है। इसीसे बहुतसे पंसारी और अत्तार लोग मुलहठी के एवजमें घुँघची की जड़ दे देते हैं। घुँघची भी सात उपविषोंमें एक उपविष मानी जाती है।

गुण—दोनों प्रकारकी घुँघची बालोंको हितकारी, शुक्र प्रकटकर्त्ता और बलकारी है।

इसे बात, पित्तज्वर, मुखशोथ, भ्रमरोग, श्वास, तृष्णा, मदरोग, नेत्ररोग, खुजली, व्रण, कृमि और इन्द्रलुप्त (इन्द्रलुप्त वह रोग है कि जो शिरके बाल रुपये बराबर उड़ जायें और वह जगह खाली हो जाय) इन रोगों पर दोनों प्रकार

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

की घुंघची देनी चाहिए। प्रयोगमें इसकी जड़ पत्ते और बीज लिये जाते हैं।

गुंजा अर्थात् चिरमिटी दो जाति की कही है। लाल और सफेद। चिरमिटीके बीज विषैले हैं अर्थात् खानेसे जहरका असर करते हैं तथा ज्ञानतन्तुके रोगमें लिये जाते हैं। तथा त्वचा रोग और नासूर पर लेप किया जाता है। घुँघची की जड़ वमन लानेवाली है। (चक्रदत्त)

डाक्टर लोग-चिरमिटीकी जड़का उपयोग मुलहठीकी प्रतिनिधिमें करते हैं।

चिरमिटीकी जड़ मुलहठी के समान हूबहू मिली हुई होती है। बंगालेमें उसको मुलहठीके स्थानमें बेचते हैं। (डा० मुकर्जी)

चिरमिटीकी डालीमें पत्तेसे भी अधिक मिठास होती है तथा उसमेंसे सत्व काढ़ना हो तो निकल सकता है। (मि० मोहिदीन शरीफ)

सफेद चिरमिटीकी जड़ मीठी होती है और खाँसी के रोगमें बहुत उपयोगी है। (मि० केकर)

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

सूजन पर

चिरमिटीके पत्तों का शहदमें पीसकर सूजन पर लेप करे।

खाँसी में

चिरमिटीके पत्ते मिश्रीके साथ चाटे तो खाँसी दूर हो।

चिरायता

इसे संस्कृतमें अर्द्धतिक्त, ज्वरान्तक, नेपालनिंब, हिन्दीमें चिरायता, चिरेता, बं० चिराता, म० किराईत, क० नेलवेउव, गु० करिआंतु, तै० नेलानेमु, फा० कसबुजजरीरा नेनिहाद, इं० चिरेटा।

गुण चिरायता सारक (दस्तावर) रूक्ष, शीतल, कड़वा और हल्का है।

प्रयोग

यह सन्निपात, ज्वर, श्वास, कफ, रक्त, पित्त, दाह, खाँसी श्वास शोथ तृषा, कुष्ट, ज्वर, व्रण और कृमि रोगको नष्ट करता है। मात्रा १ माशेको है। प्रतिनिधि पीला चन्दन और केशर है।

खुजली की दवा

कड़वा चिरायता, पित्तपापड़ा, काली हड़,

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

प्रत्येक १ तोला रात को पानी में भिगोकर प्रातः काल पीस छानकर पिये।

विषमज्वरकी दवा

चिरायता, कुटकी, निशोथ, नागरमोथा, पीपली, वायविडंग, सोंठ और नीमकी छालको समान महीन पीस छानकर चूर्ण बनाओ और इसमेंसे १ टंक प्रतिदिन उष्ण जलके साथ ७ दिन तक सेवे तो विषमज्वर नष्ट होकर भूख बढ़ेगी।

छतिवन

इसे संस्कृत में सप्तपर्ण, विशालत्वक्, शारद और विषमच्छेद कहते हैं। हिन्दीमें सतवन, सतोंना, बं० छातिम, म० सातविण, गु० सातविण, का० एलेलेग, तै० एडाकुल, ला० आलस्टोनिन्या स्कांलारीस कहते हैं।

इस वृक्षके पत्ते सात खूँटवाले होते हैं और यह शरदऋतुमें फूलता है। यह गुणमें, कषैला दस्तावर, दीपन, स्निग्ध और उष्ण है। यह व्रण, कफ, बात, दाद, रुधिर विकार, कृमिरोग, श्वास, और गोलाको दूर करता है। प्रयोग में इसको छाल ली जाती है। यह स्वादमें कड़वा होता है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

सर्दीके ज्वरमें

छतिवनकी छाल, गिलोय और नीमके भीतर की छाल सब दो-दो तोले लेकर सबको एक कर क्वाथ करे और पीये।

त्वचारोगमें बहुतसे योगोंमें इसकी छालको डालते हैं।

इस वृक्षके विषयमें देशवालोंका ऐसा भ्रम है, कि जंगलके सब वृक्ष वर्ष दिनमें एक दिन उसको मान देनेके वास्ते इसके पास आते हैं। ईसवी सन् १६७८ में मेण्टिररीडे और ईसवी सन् १७४१ में रमपीअसने इस वृक्षका चित्र प्रकट किया। देशी वैद्य उसको औषधके तौर पर बर्तते हैं। इसके बाद सन् १८३६ में मि० निमोयाने इसके पाचनशक्ति वर्द्धक और ज्वर नाशक गुण प्रकट किया। डाक्टर गिवसन्‌ने ईसवी सन् १८५३ में इसके गुणों का वर्णन फारमेक्युटिकल जनरलमें छापा था।। डाक्टर यु इसको ग्राही, पाचनशक्ति वर्द्धक, पेटके

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

कीड़े निकालनेवाला और ज्वरनाशक मानते हं।

मनीलाके एक ग्रफ नामक, वैद्यने इसकी छालमेंसे डिएटीन नामका स्फाटिक नहीं बंधे ऐसा सत्व तलाश करके निकाला।

अमेरिकाके फारमेक्यूटीकल असोसियेशन ईसवी सन् १८७७ की रिपोर्ट में लिखता है कि, यह वृक्ष ल्यूआनके टापूमें जंगली उत्पन्न होता है। वहाँके रहनेवाले मनुष्य उसकोटोटा नामसे बोलते हैं। उस देशवाले उसको पाचनशक्ति वर्द्धक और ज्वर नाशक मानते हैं। वारम्बार आने वाले तथा बहुत दिनके अन्तर देकर और सरदीको हवामें उत्पन्न होनेवाले ज्वरमें इस औषधिको सर्वदा वर्तते हैं। तथा इसके परिणाम बहुत संतोषकारी हुए थे। इस रिपोर्टसे बड़े बड़े विद्वान अंग्रेज वैद्यों का ध्यान इसकी तरफ खिंच गया है। तथा हालमें ऊपर कहा हुआ सत्व उत्तमसे उत्तम कुनेनके समान गुणकर्ता मानते हैं और इस कारण विलायतसे

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

मँगाया जाता है। जनेन और डिपेटिन सत्व दोनों एक सी मात्रासे दिये जाते हैं और दोनोंका एकसा परिणाम होता है। तथा कुनेन से अधिक फायदा यह होता है कि, कुनेन अधिक देने से बहरापन उत्पन्न करती है, नींद नहीं आती, परन्तु इससे यह सब नहीं होता। तथा इसका असर बहुत जल्दी विश्वाससे और कभी निष्फल नहीं जाता। छोटे छोटे बच्चोंके वास्ते इस तत्वकी मात्रा आधा ड्राम और बड़ेके लिये १ ड्राम सब दिनके वास्ते है। यह मात्रा देते समय अवश्य करके अवस्था, जाति, प्रकृति, आदि विचारना अति आवश्यक है। पुल्टिशके रूपमें भी यह पदार्थ वर्तनसे लाभदायक होता है।

इसके बनानेकी विधि यह है--अतिवनकी छाल और कोर्नफ्लोर अथवा चून ये दोनों प्रत्येक आध-आधसेरको गरम जलमें मिलाकर खीलकेसमान करे और कपड़ेकेऊपर फैलाके बगलमें, हाथकी संधियोंमें और घोटुओंके ऊपर लगाके अच्छी

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

तरह सूख जानेके बाद बदलता रहे। इस प्रकार जहाँ तक हो लगाकर सुखाये। लश्करी अस्पतालोंमें डोटेइन कुनेनके बदले बर्तते हैं।

छिकनी, नकछिकनी

संस्कृतमें इसको छिकनी, क्षवकृत, तीक्ष्णा, छिक्किका और घ्राणदुःखदा कहते हैं। हिं० नकछिकनी, बं० हेचुटी, म० नाकशिकणी, फा० बेख गाउजबी, अ० उफरकुदुश कहते हैं।

यह कटु, रुचिदाता, तीक्ष्ण, गरम, अग्नि-कारी, पित्त प्रकटकर्त्ता, वात-कफ-नाशक और मस्तक-विरेचक है।

यह वात, रक्त, कोढ़ कृमि रोग और हँसलीके रोगोंको दूर करती है। इसका वृक्ष बहुत छोटा-छोटा जमीनसे सटा हुआ होता है।

छिरहिटा

इसे संस्कृतमें, छिलिहिंट, महामूल, पातालगरुड़। हिं० छिरहिटा, बं० पातालगुरुड़ी। म० तानीचावेल। ते० वासनवेल, वासनी, वासगसण्डा। कर्नाटकी-पातालगरुडी, निवली, चावेल, द्र० पाडज और सीता। गु० पातालतुवंडी कहते हैं।

छिरहिटाकी बेल गिलोयकी बेलकी तरह

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

होता है। गुजरातमें यह छोटे २ बालकोंके लिये उपयोगमें लायी जाती है। यह बलकारक, वात-नाशक और कफघ्न होती है। इसको लताका समस्त अंग काममें लाना चाहिये। इसका प्रयोग दो माशेकी मात्रामें होता है। इसके पत्तेका आकार सोसमके पत्तेके समान ही होता है और गुणमें भी यह वैसाही लाभदायक है।

छुई-मुई

संस्कृतमें इसे लज्जावन्ती और लज्जालु कहते हैं। हिन्दी छुई-मुई, बंगला-लाजुक, लज्जावती, मराठी-लाजरी, गुजराती-रिशालणी कहते हैं।

इसके दो भेद हैं। एक पीलो दूसरी लाल। दोनोंके वृक्ष और पत्तोंकी यह प्रधानता है कि, वे छूतेही मुरझा जाते हैं। रविवारके दिन इसका वृक्ष उखाड़ कर कमरमें बाँधनेसे आँतका उतरना बन्द हो जाता है। इसकी लुगदीसे मूँगा और सिंगरफका भस्म बनता है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

जंभीरी

संस्कृतमें इसको जम्बीर, दंतसठ, जम्भ और जम्भल कहते हैं। हिन्दी-जम्भीरी, बंगला-बोड़ा लेबू, और कागजी लेबू, म० लघुइंडनिंबु, कालिङ्गड़ा--कचिलबु कहते हैं।

यह एक क्षुप जातिका पौधा है जो गरम, भारी, खट्टा, बात, कफ और विषघ्नको दूर करता है। शूल, खाँसी, वमन, तृषा और आमके दोषको हरण करता है। मुखकी विरसता, हृदय की पीड़ा, मन्दाग्नि और कृमि रोगमें अचूक लाभ पहुँचता है। इसी प्रकार छोटी जंभीरीमें भी गुण हैं। विशेषता यह है कि यह तृषा और वमन होने को दूर करती है।

जमालगोटा

संस्कृत--जयपाल, दन्तजी, तन्तिली फल। हिन्दी-जमालगोटा, अजेपाल। बंगला-जयपाल। मराठी-जपाल। कर्नाटकी-जेपाल। गुजराती-नेपालो। अरबी-हब्बुस सलातीन। फारसी-तुख्मुवेदअञ्जीर। अंगरेजी-क्रोटनसीड। लैटिन-ओलियम क्रोटोनिस।

जमालगोटा, भारी, चिकना, दस्तकारक और

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

कफ पित्तको हरण करता है। इसका बीज हरी औषधिके काममें लाया जाता है और वह भी शुद्ध किया हुआ होना चाहिये। हकीम लोग जमालगोटेसे कोठेमें सूजन उत्पन्न होनेके कारण इसको देना वर्जित करते हैं। कदाचित किसीने भूलसे खा लिया हो तो उसका दर्पनाशक इसकी छाल तथा केवल घृतपान कहा गया है।

(१) जमालगोटेके दश टंक बीज, १ टंक काली मिर्च और एक टंक पिपलामूल—इन तीनोंको जँभीरी नीबूके रसमें ७ दिन खरल करके नेत्रोंमें लगानेसे नेत्र रोग शांत होता है।

जमींकन्द

संस्कृत-सुरण, कंद, ओल, कंदल,। हिन्दी-सूरन, जमींकन्द, ओल। बंगला-ओल। मराठी-सूरण। तेलगू-मंचाकन्दा।

यह दीपन, रुच, कषैता, खुजलीकर्त्ता, चरपरा, विषद्, रुचिकारी, कफ बवासीरको नष्ट कर्ता और हलका है। यह विशेष करके बवासीर रोगका पथ्य है। पील्हा और गोलेके रोगोंको नष्ट करता

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

है। सब कन्दोंके सागोंमें सूरण अच्छा है। दाद, कोढ़ और रक्त-पित्त के रोगियों के लिये हितकर नहीं है। इसका संधाना डालनेसे अधिक गुणकारी होता है। सूरनका संधाना सोरों और फीजी द्वीपमें बहुत डालते हैं।

अर्श (बवासीर) की दवा

जमींकन्द पर मिट्टी लपेटकर भुरता बनाओ इसे घृत या तेलमें लपेटके १ टके भर नित्यप्रति ३१ दिन खिलाओ।

जवासा

संस्कृत—यास, यवास, दुस्पर्श, धन्वयास, कुनासक। हिन्दी-जवासा। बंगला-यवासा। गुजराती-जवासो। अंगरेजी-खाज। फारसी-सुत्तर। लाटिन-अलहागीमोरोरम।

यह एक क्षुप जाति का वृक्ष है। इसका गुण बलकारक, अग्निको दीपन करनेवाला, कफ, पित्त तथा रक्त, खाँसी, ज्वर, अन्य रोगोंकी औषधिमें प्रयोग आता है। गर्मीसे उत्पन्न पुरानीसे पुरानी मस्तक पीड़ाको दूर कर देता है। पेशाब अधिक

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

लाता है, मूत्रकृच्छ्र (सूजाक) को लाभ पहुंचाता है। इसका सुर्मा नेत्रोंके जाला को लाभदायक है। इसका तेल गठिया के लिये अत्यन्त हितकारी हैं।

जामुन

संस्कृत-क्षुद्राजंबू, सूक्ष्मपत्रा, नादेयी और जलजंबूका ये छोटी जामुनके नाम हैं। बंगला-जाम। मराठी-जांबूला गुजराती-जाम्बू, अंगरेजी-जाम्बूल।

जामुन दो प्रकारकी होती है। एक कठ-जामुन होती है, जिसके पत्ते कनेरके समान लम्बे और भालेके समान होते हैं। दूसरी महा जामुन (फरेंद) के पत्ते मोटे और उससे कुछ छोटे होते हैं। इस वृक्षमें गुच्छा पुष्प और गुच्छा फल होता है। जामुन संग्राही, रूखी, कफ, रुधिर और दाहको दूर करता है।

अतीसार की दवा

जामुनकी गुठली, आमकी गुठली, अजमोद मोचरस और धावड़ेके फूल तथा इन्द्रजौके २ टंक चूर्णको भैंसके मट्ठेमें मिलाकर पीनेसे पक्वातिसार नष्ट होता है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

जायफल

संस्कृत—जातिफल, जातिकोष, मालतीफल। भारतवर्षकी समस्त भाषाओंमें इसे जायफल ही कहते हैं।

जायफलका वृक्ष बड़ा होता है। इसके फल जामुन के समान होते हैं। इसकी छाल निकाल डालनेसे लाल गुच्छा निकलता है। उसीको जावित्री कहते हैं। थोड़ी देरमें ही इसका रंग पीला हो जाता है। इसके भीतर कठोर छिलका और बीज होता है जिसे तोड़नेसे जायफल निकलता है। जायफल कड़वा, तीक्ष्णोष्ण, रोचक, लघु, कटु, दीपन, ग्राही और स्वरशोधक है। जायफल के सेवन करनेसे बादी, कफ, कृमि, खाँसी, वमन, श्वास, शोष, पीनस और हर रोग दूर होते हैं। मात्रा दो माशे की है। प्रतिनिधि जायपत्री।

(१) जायफल, सोंठ, कालीमिर्च, पीपली, तज, पत्रज, इलायची, लौंग, वंशलोचन, कपूर और अनारदानाको पीसकर सबके तुल्य कान्तिसार तथा इन सबके तुल्य मिश्री मिला देनेसे

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

गगनादिचूर्ण बनाया जाता है। इसे दो टंक प्रतिदिन बकरीके दूधके साथ खिलानेसे राजरोग, मन्दाग्नि, तथा बीस प्रकारके प्रमेह दूर हो जाते हैं।

जेठी मधु (मुलहठी)

संस्कृत—यष्टीमधु, यष्टीमधुक, क्लीतक, उपमधूलिका। हिन्दी-मुलहठी, मुरहठी, मीठी लकड़ी। तेलगू-यष्टीमधूकमु। बंगला-यष्टीमधु। मराठी-जेठीमधु। गुजराती-जेठीमधु। फारसी-रब्बुस्सुस। अरबी-बेखमहक। अंग्रेजी-लिकिरिस रूट।

मुलहठी शीतल, भारी, नेत्रोंको हितकारी, बलकारक, शुक्रोत्पादक, बलवर्धक और स्वरभंग नाशक है। मुलहठीके सेवन करनेसे व्रण, सूजन और खाँसीका रोग नष्ट हो जाता है। यह कान्ति कारी, कण्ठ हितकारी, दाह-प्रशमन-कर्ता और रक्तशोधक है। मुलहठीके सेवन करनेसे खाँसी चली जाती है। मुलहठी, काली तिल्ला भैंस का दूध और मक्खनको पीसकर लेप करनेसे भिलावे की सूजन नष्ट हो जाती है। शीतके कारण यदि

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

पेटमें पीड़ा होती हो तो मुलहठीका क्वाथ देना हितकारी होता है।

(१) नेत्रोंकी ज्योति बढ़ानेके लिये मुलहठाके रसकी बूँद नेत्रोंमें डालना चाहिए।

(२) यदि मस्तकमें फोड़े हो गए हों तो मुलहठोके पत्तोंकी पुल्टिश बाँधनी चाहिए।

हिचकी की दवा

मुलहठीका चूर्ण मधुके साथ चटावे तो हिचकी बन्द हो।

अल्पकेशता दूर हो

मुलहठी, नीलकमलकी नाल (जड़) और दाख इन सबको घी या तेल या दूधमें भली-भाँति पीसकर बालोंमें लगाओ तो बाल बढ़कर अल्पकेश रोग दूर हो।

पुष्टिकारक औषधि

मौरेठी चूर्ण सहित, दूध घी से खाव।
तो तिय संगम अति करै, वीर्य पुष्ट हो जाय।

गर्भ स्थिर रहे

लोध और मुरेठी बराबर पीसकर नौ मासा

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

भर लेकर गायके दूधमें मिलाकर पीनेसे गर्भ स्थिर रहता है।

जीरक (जीरा, कालाजीरा, कलौंजी)

इसके जीरा, जीरण, अजाजी, कणा तथा दीर्घजीरक ये सब सफेद जीरेके पर्यायवाचक नाम हैं। कृष्णजीर, सुगन्ध, उद्गार-शोधक ये सब कालेजीरे के नाम हैं। कालाजाजी, सुषवी, कालिका, उपकालिका, पृथ्वीका, कारवी, पृथ्वी, पृथुकृष्णा, उपकुंचिका, उपकुंची, कुंची और बृहज्जीरक ये सब कलौंजीके संस्कृत नाम हैं। म० सफेदजीरेको, पांढरेजिरे, क० बिलियजीरगे। कालेजीरे को कालेंजिरे, क० करिजीरगे, कलौंजी। क० में करिजोदुजीरगे, तै० जिलकरर कहते हैं। बं० शुक्लजीरा, कृष्णजीरा और कलौंजी कहते हैं। गु० धोलुं जीरुं, कालीजीरी और कलौंजी जरूं, फा० कमूनी शोनीजत, हब्ब, असबद, इं० कम्मिननसीड कहते हैं।

यह भी क्षुप जातकी बनस्पति है। और सर्वत्र प्रसिद्ध है। काला जीरा काबुलके राज्यमें तथा हिन्दुस्तानके उत्तरी पहाड़ों मे होता है।

तीनों प्रकार के जीरे का गुण रूक्ष, कटु, (चरपरा) गरम, अग्निदीपक, हलका, संग्राहक, पित्तकर्त्ता, स्मरणशक्ति वर्द्धक (भूलके रोगको दूर

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

करनेवाला) गर्भाशय (जारायु) शोधक, ज्वर-नाशक, पाचक, शुक्रवर्द्धक, बलकारक, रुचिकारक कफनाशक और नेत्रों को हितकारी है।

बादीसे पेटके फूलने पर, गोलेका रोग होने पर, वमन और अतिसारके रोग पर इसका प्रयोग किया जाता है, अर्थात् यह इन रोगों को नाश करनेवाला है। यथा—

(१) इसके चूर्णको सिर्काके साथ पीए तो मिट्टी खानेके रोगको दूर करता है।

(२) दाँतोंसे कुचलकर कपड़ेसे रस छानकर अंजन करे तो नेत्रोंका नाखुना विकार दूर होता है।

(३) यह शूल और अजीर्णको नष्टकर्त्ता और पक्वाशयको बदलता है।

इसके फलकी मात्रा दो माशेकी है और इसके उपद्रव का नाश करनेवाला कतीरा है और अजवायन इसकी प्रतिनिधि है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

सम्मतियाँ

१—यूनानी हकीम सफेद जीरेको खुशबूदार पेटकी ऐंठन नष्टकर्ता और ग्राही गिनते हैं। इसमें से आँख धोनेका पानी बनाते हैं कि जो उनके मतानुसार नेत्रका तेज बढ़ाता है और छातीके दर्दमें भी इसको बर्तते हैं। इससे मूत्र अधिक आता है तथा पेटके जीव (कीड़े) निकल जाते हैं। गर्भ-स्थानमें सूजन आकर अधिक दर्द होता हो तो इस जीरेके पानीमें स्त्रीको बैठानेकी प्रशंसा करते हैं। उसी प्रकार इस जीरेको पीसकर पुल्टिश बनाकर बाँधनेसे बाहर निकले हुए मस्से और अत्यन्त दर्द करनेवाली बवासीर जाती रहती है।

२—पञ्जाब प्रान्तमें जीरेसे मूत्र अधिक उतरता तथा स्तनों में दूध अधिक उत्पन्न होता है ऐसा मानते हैं।

३—इंगलिश औषधोंमें इसे पाचक और पेटको ऐंठन नष्टकर्ता कहा है और इसको पेटमें

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

वायगोला, पेट फूलनेकी औषधि, बदहजमी और अँतड़ोंका शूल होता हो तो इसे उपयोगी गिनते हैं।

४-सुश्रुत संहितामें इसको बात कफनाशक अरुचि-नाशक, दीपन, गुल्म, शूल और आमको नष्टकर्त्ता कहा है (अर्थात् सूजन, शूल और आम पड़ती को बंद करनेवाला है)।

५—चरकसंहितामें जीरेको शूल-प्रशमन (शूल-नष्टकर्त्ता) मानते हैं।

किसीके मतसे जीरा पाँच प्रकारका है। जैसे १ साधारण जीरा, २ काला जीरा, ३ स्याहजीरा, ४ कलौंजी, ५ शंखजीरा।

जीरकादि चूर्ण, अजीर्ण मन्दाग्निकी दवा

जीरा, सोंचर, नोन, सोंठ, मिर्च, पिपलि, सेंधानोंन, अजमोद, सेंकीहींग, हर्र की छाल (ये सब अधेले २ भर) और २ टके भर निसोथ इन सबका चूर्ण बनाके दो टंक नित्य उष्ण जलके साथ सेवन कराओ तो अजीर्णमात्र दूर होकर

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

क्षुधा बढ़ेगी। इसे जीरकादि चूर्ण कहते है, यह तरंगिणी में लिखा है।

दूध बढ़ने की दवा

सफेदजीरा, सॉंठी चावल और लोध छै-छै माशा भर लेकर गायके दूधमें औटाकर गायका घी मिलाकर पीनेसे दूध बढ़ता है। तथा सफेद जीरा सेंधानोन, पीपरि, बड़ी इलायचीके दाना तीन-तीन मासे कूट पीसकर सकोरेमें भरकर गायके दहीमें मिलावै। प्रातः समय खाय, सात दिनमें दूध बढ़ जाता हैं।

वायगोला की दवा

काला जीरा, भुनी हींग, अजवायन, सेंधा नोन, सोंठ, मिर्च, पीपरि इनको बराबर लेके बारीक पीसे और भोजनके आदि अन्तमें खाय तो वायु-गोला दूर हो।

रक्तातिसार और प्रदर की दवा

सफेद जीरा, पोस्ते का दाना, इमलीकी गिरी, आमकी कोपल, जायफल, पठानी लोध, बेलकीगिरी,

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

जावित्री, जायफल, मोचरस, सोंठ, मिर्च, पीपरि अफीम, नागरमोथा, धायके फूल, सोहागा, अजवायन, इन्द्रजौ धतूरेके फूल, धतूरेके शुद्ध बीज, एक एक तोले लेकर बारीक चूर्ण बनावे और केलाके पानीसे घोंटकर मटरके बराबर गोली बनाकर छायामें सुखावे। साँझ सबेरे एक-एक गोली चावलके धोवनके साथ खावे तो उक्त रोग दूर हो जावे।

जटामांसी

संस्कृतमें जटामांसी, भूत जटा, जटिला, तपस्विनी और मांसी कहते हैं। हिं० और बं० में जटामांसी। गु० वालछड़ फा० सुबुल, अ० सुबुलतीब, क० बहुल गंध और सब भाषाओंमें इसी नामसे प्रसिद्ध है। ल० नार्डेस्टीकस कहते हैं।

इसका वृक्ष सुगन्धदार होता है। इसकी जड़ कुछ-कुछ कड़वी होती है। यह गुणमें कड़ुवी, कषैली, स्मरण शक्ति बढ़ाने वाली, बलकारक, कांतिप्रद, स्वादु, शीतल त्रिदोषी और रुक्षतानाशक है। रुधिर दोष-दाह, अपस्मार (मृगी)

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

कोढ़, ज्वर और अनेक प्रकारके चर्मरोग अर्थात् सब प्रकार के कोढ़ इनको दूर करती है। प्रयोगमें इसकी जड़ ६ रत्ती ली जाती है।

सम्मत्तियाँ

१–मखजनमें लिखा है कि जटामांसी पेटके विकार निकालने वाली है। यह जागृत करता, साफ पेशाब लाने वाली और पित्तको निकालने वाली है। फेफड़ेकी बीमारीमें तथा ज्ञान तंतुओंको बलिष्ठ करनेको तथा हिस्टीरियाके रोगमें देनेकी प्रशंसा करते हैं। और इस प्रकार कहा है कि इसके उपयोग से मस्तकके बाल काले और लम्बे होते हैं।

२—डा० एन्सली, कहता है, इस पदार्थमेंसे मस्तकमें डालनेका सुगन्धित तेल निकलता है तथा रुधिर शुद्ध करने को उसे खानेके वास्ते देते हैं।

३—सरविलियम ओधशंगनेसा--जटामांसी को बेलेरियन दवाके बदलेमें इस्तेमाल करनेकी तारीफ करता है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

४—चरकसंहितामें इसे विकृत, चेतनास्थापन और उन्माद अपस्मार तथा बादीके विकारों के ऊपर अकसीर दवा मानते हैं।

५—सुश्रुतमें इसे बात-कफ-हरणकर्त्ता, वर्णप्रसादन, दुष्ट खुजली नष्टकर्त्ता और पीड़ा शामक वर्णन किया है।

तुलसी

संस्कृत—तुलसी, वैष्णवी, वृन्दा, सुगंधा, गंधहारिणी, अमृता, पत्रपुष्पा, सुरवल्लभी, पवित्रा, विष्णुवल्लभा, सुरभी, सुरदुन्दुभि, श्यामा, गौरी, त्रिदशमंजरी, भूतघ्नी, भूतपत्री, सुरसा-सुलभी, ग्राम्या, बहुमंजरी, अपेता, राक्षसी, शूलघ्नी और देव-दुन्दुभी। हिन्दी—तुलसी, काली तुलसी। बंगला-तुलसी। काली तुलसी। गुजराती-तुलसी। पंजाबी तुलसी, वनतुलसी। मराठी-तुलसचे झाड़, रानतुलसी, कृष्ण तुलसी। तैलगू-कृष्णगडोर चट्ट, इन्युषसि, तुलसी चेट्ट, कृष्णतुलसी। तामिल-तुलसी, अलंगई, पिरुन्दम्। कनारी-एरेड तुलसी, तुलसी गिडा। मद्रासी तुलस। द्राविड़-तुल्सि मलयालम-नियल्ल, तिरुनत्रा, नल्लूतिरत, कृष्ण तुलसी, सिंहली-मदुलतुल्ल। ब्राह्मी-लुन। फारसी-रेहान, रेहाँ, शाहशिफरम्। अरबी-तुलसीबदरूत लैटिन-ओसिनं आल्बं, ओसिन सेक्टम्। अंग्रेजी-ह्वाइटबेफिल, परपिल स्काक्डबेफिल।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

किन्तु यूरपके अनेक देशोंमें तुलसी 'हिलो-वेसिल' के ही नाम से विशेष प्रसिद्ध है।

पुराणोंमें इसके और भी नाम पाये जाते हैं। जैसे—श्री, लक्ष्मी, यशस्विनी, धर्म्या, देवी, देव-मनः प्रिया, प्रियसखी, अचला, धर्मानना आदि।

तुलसीके पौधे वन, बाग, एवं घरोंमें भी गमले आदिमें लगाये जाते हैं। यह पौधा डेढ़, दो तीन हाथसे अधिक नहीं पड़ता। किन्तु यदि मंजरी तोड़ता जाय तो अधिक लम्बा एवं मोटा भी हो सकता है। इसकी पत्ती कुछ गोलाई लिए लम्बी होती है। पत्तीके ही शाखाओंमें बालें निक-लती हैं, जिन्हें मंजरी कहते हैं। इसी मञ्जरीमें तुलसी के 'बीज' (बीआ) होते हैं। यह कोमल और सुगन्धित होती है। ऐसे तो इसकी कई जातियाँ हैं। साथ ही देश एवं प्रान्त-भेदसे भी इसमें अन्तर है, किन्तु वैद्यक शास्त्रोंमें मुख्य दो भेद ही माना गया है। काली-कृष्णा-श्यामा और

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

४—चरकसंहितामें इसे विकृत, चेतनास्थापन और उन्माद अपस्मार तथा बादीके विकारों के ऊपर अक्सीर दवा मानते हैं।

५—सुश्रुतमें इसे वात-कफ-हरणकर्त्ता, वर्णप्रसादन, दुष्ट खुजली नष्टकर्त्ता और पीड़ा शामक वर्णन किया है।

तुलसी

संस्कृत—तुलसी, वैष्णवी, वृन्दा, सुगंधा, गंधहारिणी, अमृता, पत्रपुष्पा, सुरवल्लभी, पवित्रा, विष्णुवल्लभा, सुरभी, सुरदुन्दुभि, श्यामा, गौरी, त्रिदशमंजरी, भूतघ्नी, भूतपत्री, सुरसा-सुलभी, ग्राम्या, बहुमंजरी, अपेता, राक्षसी, शूलघ्नी और देव-दुन्दुभी। हिन्दी---तुलसी, काली तुलसी। बंगला-तुलसी। काली तुलसी। गुजराती-तुलसी। पंजाबी तुलसी, वनतुलसी। मराठी-तुलसचे झाड़, रानतुलसी, कृष्ण तुलसी। तैलगू-कृष्णागडोर चट्ट, इन्युषसि, तुलसी चेट्ट, कृष्णतुलसी। तामिल-तुलसी, अलंगई, पिरुन्दम्। कनारी-एरेड तुलसी, तुलसी गिडा। मद्रासी तुलस। द्राविड़-तुल्सि मलयालम-नियल्ल, तिरुनत्रा, नल्लूतिरत, कृष्ण तुलसी, सिंहली-मदुलतुल्ल। ब्राह्मी-लुन। फारसी-रेहान, रेहाँ, शाहशिफरम्। अरबी-तुलसीबदरूत लैटिन-ओसिमं आल्बं, ओसिन सेक्टम्। अंग्रेजी-ह्वाइटबेफिल, परपिल स्कावडबेफिल।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

किन्तु यूरपके अनेक देशोंमें तुलसी 'हिलो-वेसिल' के ही नाम से विशेष प्रसिद्ध है।

पुराणोंमें इसके और भी नाम पाये जाते हैं। जैसे—श्री, लक्ष्मी, यशस्विनी, धर्म्या, देवी, देव-मनः प्रिया, प्रियसखी, अचला, धर्मानना आदि।

तुलसीके पौधे वन, बाग, एवं घरोंमें भी गमले आदिमें लगाये जाते हैं। यह पौधा डेढ़, दो तीन हाथसे अधिक नहीं पड़ता। किन्तु यदि मंजरी तोड़ता जाय तो अधिक लम्बा एवं मोटा भी हो सकता है। इसकी पत्ती कुछ गोलाई लिए लम्बी होती है। पत्तीके ही शाखाओंमें बालें निकलती हैं, जिन्हें मंजरी कहते हैं। इसी मञ्जरीमें तुलसी के 'बीज' (बीआ) होते हैं। यह कोमल और सुगन्धित होती है। ऐसे तो इसकी कई जातियाँ हैं। साथ ही देश एवं प्रान्त-भेदसे भी इसमें अन्तर है, किन्तु वैद्यक शास्त्रोंमें मुख्य दो भेद ही माना गया है। काली-कृष्णा-श्यामा और

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

श्वेत रामा ही विशेष प्रसिद्ध है। रामासे श्यामा विशेष गुणवाली होती है, किन्तु कृष्णाके अभाव में रामा साधारण तुलसी हो काममें लानी चाहिये। दोनों तुलसीके गुण एक ही समान है। तुलसीकी उत्पत्ति एवं विवरणके सम्बन्धमें विशेष लिखना व्यर्थ है। क्योंकि प्रत्येक हिन्दू जातिके घरमें इसका पौधा होता है। अथवा यह कहा जाय तब भी अनुचित न होगा कि, प्रत्येक हिन्दू तुलसीसे परिचित हैं।

यह खाँसी, विष, श्वास, एवं पार्श्वशूलको नाश करती है। साथ ही पित्तकारक, कफ, वायु और दुर्गन्धको नाश करती है।

इसका उपयोग प्रायः आमांश और कृमि आदि रोगोंमें होती है। मद्रास, पंजाब, ईरान आदिमें उत्पन्न होनेवाली बादो, प्रसूत और मंदाग्नि आदिमें इसका उपयोग विशेष लाभकारी होता है। बंगाल, नैपाल, बर्मा आदिमें उत्पन्न होने वाली

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

दुर्द्रिह कफ, विकार, अपान वायु, गठिया आदि रोगोंमें अपना प्रभाव शीघ्र दिखलाती है।

१—यूनानी मतसे तुलसीके गुण—तुलसी पहले दर्जेमें गर्म, दूसरेमें रूखी, मस्तिष्क के रोगों की उद्घाटक, शोथ, वायु, रोमविकार का नाश करने वाली है, एवं मन्दाग्निको दूर करती है। इसका पौधा घर-घरमें लगाने से जीव, जन्तु विशेष कर खटमल और मच्छर नहीं रहते। दूषित वायुको शुद्ध करती है। जहाँ इसका पौधा रहता है, वहाँ सर्प नहीं जाता।

२—एलोपैथिक मतसे तुलसीके गुण—तुलसी कफको निकालने वाली और मलेरिया आदि अनेक रोगोंको नाश करती है। सर्दीके कारण होनेवाले अनेक रोगों में, विशेष कर खाँसी पार्श्व शूल, ब्रोंकाइटिस न्युमोनिया, हैजा, इन्फ्लुएंजा आदि रोगोंमें तुलसी अधिक उपयोगी है। अल्प परिमाणमें मूत्रका स्राव होने पर मूत्रलाने के लिये

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

और स्निग्धता उत्पन्न करने के लिये तुलसी का उपयोग करना चाहिये।

३—एक फारसी पुस्तकसे तुलसीके गुण—तुलसी पेचिस और मरोड़के लिये आश्चर्यजनक गुण रखती है। पेचिसमें शक्करके साथ खिलाना चाहिये। सूखी धाँस, खाँसी और छाती की खरखराहटके लिये अत्यन्त लाभदायक है। वीर्यको गाढ़ा करती है। केवल इसका पौधा ही घरमें रखने से बात जनक रोगों से बचाता है। सर्पके विषमें भी बार-बार पिलानेसे लाभ होता है।

जंगली तुलसी कफजनित सूजनको नष्ट करती है। इसकी पत्तीका रस नाकमें डालनेसे दाँतके कीड़े मरकर गिर जाते हैं। यह इसमें विलक्षण गुण है।

तुलसीका मारक गुलाब है और तुलसीकी प्रतिनिधि कँवाच है।

बालकोंके पेटकी पीड़ा पर

तुलसी और आदी का रस समभाग लेकर

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

गरम करके दे। इससे बालकोंके पेटका समस्त विकार दूर हो जाता है। यदि इसे सदैव पिलाया जाय तो कभी भी बालकोंको उदर सम्बन्धी कोई रोग न होगा।

बालकों को दस्त खुलासा होनेके लिए

तुलसी और पानका रस गरम करके गरम सहन करने योग्य पिलावे। इससे बालकोंके पेटका फूलना और अफरा दूर होता है।

बालकोंके सर्दी और खाँसी आदि पर

तुलसीकी पत्तीका रस चार ड्राम, शुद्ध शहद एक औंस, आदीका रस दो ड्राम और अजवायन का चूर्ण दो ड्राम, सबको एकत्र खलमें घोंटकर मिलाले। इसकी मात्रा अवस्थानुसार ३० से ६० बूँद तककी है।

बालकोंके शीतलता और चेचकपर

तुलसीकी मंजरी, अजवायन और आदी सब भाग पीसकर दे।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

बालकोंका बल बढ़ानेके लिए

तुलसीके पत्तियोंका रस थोड़े पानीके साथ पाँचसे दश बून्द अवस्थानुसार, बालकोंको पिलाने से उनके जोड़ सुदृढ़ एवं बलवान होते हैं।

बालकों के ज्वर पर

तुलसीकी पत्ती, बबूलकी कोपल और अजवायन तीनों एक-एक माशा लेकर सबको ढाई तोले जलमें पकावे, जब वह चौथाई रह जाय, तब मिश्री मिलाकर दे।

(१) तुलसीका रस गरम कर कानमें छोड़े तो बालक की कान की पीड़ा दूर हो।

(२) एकसे तीन माशे तक, अवस्थानुसार तुलसीके रसमें शहद मिलाकर दे तो बालकका श्वास रोग अच्छा हो जावे।

(३) बालकोंको दांत निकलते समय एक या दो रत्ती तुलसी का चूर्ण अनारके शर्बत में देवे।

(४) तुलसीका रस शहदमें मिलाकर चाटे।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

(५) लू लगने पर तुलसी का रस चीनी मिलाकर पिये।

(६) तुलसीकी जड़का चूर्ण पानमें रखकर दे तो आमाशयका रक्तस्राव बन्द हो।

(७) घेचकमें तुलसी और अजवायन पीस-कर प्रतिदिन सेवन करे।

(८) रक्तस्राव और चक्कर पर तुलसीके रसमें खाँड़ मिलाकर देवे।

(९) प्रसव पीड़ामें, तुलसीका रस देवे।

(१०) मूत्रकी नलीमें दाह होता हो तो तुलसीकी पत्ती चाबे।

(११) वमन पर, तुलसीका रस, छोटी इलायचीका चूर्ण और चीनी मिलाकर देवे।

(१२) दाँत दर्दमें, तुलसीकी पत्ती और काली मिर्चकी गोली बनाकर दाँतों तले दबावे।

(१३) मुखके छाले पर, तुलसी और चमेलीकी पत्तियोंको चबावे।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

(१४) हैजे पर, तुलसी और कालीमिर्च-की गोली बनाकर देवे।

(१५) पेटमें पीड़ा हो तो, तुलसी और आदीका रस गरमकर पीये।

(१६) घाव पर, तुलसीके बीज पीसकर बाधे।

(१७) आमाशयमें दर्द हो तो, तुलसीकी चाय पीए।

(१८) पसीना लानेकेलिये, तुलसीकाकाढ़ा पीवे।

(१९) खाँसीमें, तुलसीकी मंजरी आदिके रसमें पीसकर शहदसे चाटे।

(२०) खाँसीमें तुलसी और अडूसेकी पत्ती का रस समभागमें मिलाकर लेवे।

(२१) प्रदरकी शिकायत हो तो तुलसीका रस दो तोला चावलके माँड़के साथ सात दिन देवे। दूध भात और घी भात खावे।

(२२) रतौंधी, हो तो तुलसीका रस दिन में कई बार आँखोंमें डाले।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

(२३) शीघ्रपतनमें, तुलसी के दो चार रत्ती बीजोंको पानमें खाया करे।

(२४) अँतरिया बुखारमें, तुलसीका रस तीन माशे, कालोमिर्चका चूर्ण दो आने भर लेकर दोनोंको मिलाकर चाटे। ऊपरसे गरम जल पी लेवे।

(२५) ज्वर और खाँसीमें, तुलसीका रस सवा तोले शुद्ध शहद ढाई तोले, आदी दश आने भर, सबको एकमें मिलाकर रख लेवे। ३० से ६० बूँद तक सेवन करे।

(२६) प्लेगमें तुलसी, कालीमिर्च और मिश्री खावे।

(२७) जीर्ण ज्वर, खाँसी और छातीके दर्दमें, तुलसीके रसमें मिश्री मिलाकर देवे।

(२८) ज्वरमें घबराहट हो तो तुलसीका शर्बत देवे।

(२९) विषम ज्वरमें काली तुलसीके रसमें मिर्चका चूर्ण मिलाकर पिलावे।

(३०) जड़ैयाके ज्वरमें तुलसीकी पत्ती ६ नग

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

और कालीमिर्च दो, एक तोले जलमें पीसकर सेवन करे।

(३१) मीठे ज्वरमें काली तुलसी, वन-तुलसी और पुदीनाका रस तीन अथवा सात दिन तक देवे।

(३२) दाद पर तुलसीकी पत्ती रगड़े।

(३३) शिरमें दाद हो तो तुलसी और नीबूका रस लगावे।

(३४) कुष्ट रोगमें तुलसीकी पत्ती खाए, लगावे।

(३५) बवासीरकी दवा—तुलसीका बीज दिनमें दो बार ले।

(३६) गर्भ-स्थितिके लिए, मासिक धर्मके दिनोंमें तीन दिन तुलसीका बीज चबावे। या बीजों का काढ़ा करके गरम २ पीवे।

(३७) सर्दी, जुकाममें तुलसीकी पत्ती काली मिर्च और सेंधानमकका काढ़ा पीए। तुलसी

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

का रस शरीर पर मालिस करे। तुलसी और आदीका रस शहदके साथ चाटे।

(३८) शिर-दर्दमें तुलसीका चूर्ण शहदमें प्रातःसमय लिया करे।

(३९) पित्त-प्रकोपमें, तुलसी और अदरकका रस और दोनों से दूने नीबू केरसमें मिश्री मिला कर देवे।

(४०) कान पर सूजन हो तो ताजी तुलसी मंजरी सहित का रस निकालकर दो चार बूँद कानमें छोड़े।

(४१) दाँतोंमें कोड़े हों तो तुलसी के रस में थोड़ा कपूर मिलाकर उसमें रूई भिगोकर पीड़ित स्थान पर रखे।

(४२) मुखमें छाले पड़ गये हों और मुख से दुर्गन्ध आती हो तो तुलसी का पत्ती फाँकाकरे।

(४३) पाचनशक्तिके लिये तुलसीकी पत्ती पीसकर पीवे।

(४४) सूजन पर तुलसी की पत्ती लेपकरे।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

(४५) पीनस पर तुलसी का रस दिनमें कई बार नाक पर छोड़े और तुलसी की सुँघनी सूँघे।

(४५) गलेमें दर्द हो तो तुलसी का रस शहदमें चाटे।

तरबूज

इसे संस्कृतमें कालिंद, कृष्णबीज, कालिंग और सुवर्तुल कहते हैं। हिं० तरबूज, बं० तरबूज, म० कालिंगड़, कालिंगण, तरबूज, गु० तडबूज, कालिंगड्ड, तै० तरबुज, पुच्चकाया, का० कौंडे, उ० तरबुज अं० वाटरमेलन्, ला० साइट्रूलस बलगेरिस्, फा० हिंदवाना कहते हैं।

यह गुणमें (कच्चा तरबूज) ग्राही है और नेत्र, पित्त और शुक्रका हरणकर्त्ता शीतल तथा भारी है। पका हुआ तरबूज गरम, क्षारयुक्त, पित्तकर्ता और कफ, बातको जीतने वाला है।

होंठ फटने और झुरकीमें

मीठे घीया और तरबूजकी मिगी पानी में घोटकर पतला लेप करे तो अच्छा हो जाये।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

शिर दर्द पर

तरबूजके बीज और मुचकुन्दके फूल दोनों या एक को पानी में पीसकर लगाना गुणकारी है।

झाईं की दवा

तरबूजमें छिद्र करके उसमें चावल भर कर दिन भर रख दे। फिर चावल निकाल कर उबटन लगाकर मुख पर मले।

तिल

इसे संस्कृतमें सवर्ण्य कहते हैं। हिं० तिल, म० तील, गु० तल, तै० नुव्वुलु, का० एलु, अ० सिमसिम, फा० कुंजद, अ० सिसेमनैजर सीडस, ला० सिसेमूस इंडिकम्।

यह काला, सफेद और लाल तीन प्रकार का होता है। यह गुणमें कटु, तिक्त, मधुर, कषैला और भारी होता है। पाकमें कटु, मधुर, स्निग्धोष्ण कफ पित्त-नाशक, बलकारक, बाल को हितकारी, स्पर्शमें शीतल, त्वचाको स्वस्थताका रक्षक, स्तनों में दूध प्रकटकर्ता, व्रणको हितकारी, दाँतोंका रक्षक, अल्प मूत्र कारक, ग्राही, वात-नाशक,

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

अग्निकारक और बुद्धिदाता है। तिलोंमें काला तिल उत्तम है। सफेद मध्यम और अन्य तिल हीन गुणवाले हैं।

बिच्छूके डंक पर

जहाँ बिच्छू मारे हो वहाँ तिल सिरके में पीसकर मले।

वातप्समार पर

तिल्ली और लहसन मिलाकर खिलावे।

पादफूटन (पगफूटन) की दवा

तिल, साँभरनोन, हल्दी और धतूरेके बीजों को पानीमें महीन पीसकर इन सबके बराबर गौ का मक्खन और इन सबसे चौगुना गौ मूत्र ये सब एकत्र करके आंचसे पकाओ। जब और औषधियां जलकर घी मात्र रह जावे, तब छानकर पेर के तलुओं में मर्दन करेतो पैरफूटन बन्द हो।

तगर

इसे संस्कृतमें कालानुसार्य, तगर, कुटिल और लघुसंनत कहते हैं। हिं० तगर, बं० तगर पादुका, म० गाँठ्या तगर,

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

गोंडे तगर और नेपाल में चम्पा, फा० असारून कहते हैं।

यह एक प्रकारका सुगन्धित तृण अल्मोड़े के पहाड़ पर होता है। दूसरी एक प्रकार की तगर और है। दोनों प्रकारकी तगर गरम, स्वादु, स्निग्ध और हल्की है।

प्रयोग—तगरका सेवन विष दोष, अपस्मार शूल, नेत्र-रोग और वातादि दोषभय को नष्ट करता है। मात्रा ३॥ माशे से लेकर ४॥ माशे तक है और प्रतिनिधि बच, कपूर और सोंठ है।

१—चरक संहितामें तगरको सरदी नष्ट-कर्ता और चेतनास्थापक कहा है।

२—सुश्रुतमें तगरको वात, कफहर, विषहर, वर्ण प्रसादन खुजली और कुष्टनाशक वर्णन किया है।

ताड़ वृक्ष

संस्कृतमें इसको ताल, लेखपत्र, तृणराज और मदोन्नत कहते हैं। हिं० ताड़, बं० ताल, ता० पनल, अ० तार, अ० पालमाई पाम, ला० कोरेसस फ्लेवेलि फोमिस कहते हैं।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

पका हुआ तालका फल, दुर्जर (सहज ही नहीं पचता) खानेसे रक्त पित्त और कफकी वृद्धि करता है। मूत्र अधिक लाता, अभिष्यंदी और शुक्रजनक है। किन्तु नवीन तालमज्जा किंचित् मद उत्पादक, हल्का, कफजनक, वात पित्तघ्न, स्निग्ध, मधुर और दस्तावर है।

सोम रोगकी दवा

तालवृक्षकी जड़, खजूरकी जड़, बिलाइकन्द और मुलहठी इनको कूट पीस छानकर चूर्ण बनावे और छः छः माशे प्रतिदिन प्रातःकाल गायके दूधके साथ अथवा चावलके धोवनके साथ सेवनकरे तो तीन सप्ताहमें सोम रोग शान्त हो जाता है।

तूत, शहतूत

संस्कृतमें इसको तूल, स्थूल, पूग, क्रमुक और ब्रह्मपाश कहते हैं। हिं० शहतूत, बं० तूत, म० तूत, तै० कंबलीचह्, ता० मघुकट्टाहचेडि, अं० मलबेरीज, ला० मोरस इन्डिका कहते हैं।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

पके शहतूत भारी, स्वादिष्ट, शीतल, पित्त, बादी, इनको नष्ट करते हैं। कच्चे भारी, दस्तावर खट्टे गरम और रक्त पित्तकारी हैं।

मुँहसे लार गिरने पर

शहतूतका रस, धनियाँ, मसूर भिगोकर उसका पानी मिलाकर गुनगुने २ गरारा करे।

तथा च

तूतकी जड़, पत्तियाँ और नरम २ डालियाँ पानी में औटाकर गरगरे करे।

त्रिफला

हरड़, बहेड़ा, आंवला तीनोंकी छाल समान लेना, इसको त्रिफला कहते हैं। तथा फलत्रिक वरा (और जितने वराके संस्कृतमें पर्यायवाचक शब्द हैं। जैसे श्रेष्ठा, अग्रया, सब त्रिफलाके जानो) हिन्दुस्तानकी सब भाषाओंमें यह त्रिफला के नामसे ही प्रसिद्ध है। त्रिफलामें बड़ी हरड़का छिल्का डाले, कोई त्रिफलाका प्रमाण इस प्रकार कहते हैं कि, एक हरड़ दो बहेड़े और ४ आँवले

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

लेना इसको त्रिफला कहते हैं, सो यह भी ठीक है। फारसीमें इसको इतरीफ़ कहते हैं।

त्रिफला कफ, पित्त, प्रमेह, कुष्ट इनको हरण करता है, (कफ, पित्तादि दोषोंको दस्तके मार्गसे निकालनेवाला) नेत्रोंको हितकारी, अग्नि दीपनकर्ता, रुचि करता और विषम ज्वरको नाश करनेवाला है।

त्रिफला-पाक

एक भाग हर, दो भाग बहेड़ा, चार भाग आँवला, इस प्रकार यह त्रिफला लेकर चूर्ण करे और आध पाव लेकर एक पाव भर जलमें भिगोय पाव भर घीमें मन्द अग्निसे सेंके, फिर १ सेर मिश्रीकी चासनीमें डाले। फिर सोंठ मिर्च, पीपरि इलायची, मोथा, तज पत्रज, चित्रक, पोहकरमूल यह सब चीजें आठ आठ, माशा, धनियाँ दो तोले, शुद्ध शिलाजीत और केशर छः छः माशा, औरशहद पाव भर मिलावे। यह प्रतिदिन दोनों समय एक-एक तोला अथवा दो-दो तोला सेवन करे तों शिर

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

रोग, सब प्रकारका प्रमेह, नेत्रों से पानी बहना, जुकाम, रक्त-विकार आदि यह सब रोग दूर होवेंगे।

नेत्र-रोगकी दवा

यदि बच्चेकी आँख किचड़ाती हो तो त्रिफलाके पानीसे धोवे।

प्रदरकी दवा

त्रिफला (हरड़, बहेड़ा एक-एक भाग, आँवला ४ भाग) लेकर चूर्ण बनाय शहदके साथ दिनमें तीन बार छ माशे भर चाटे। अथवा—

त्रिफला १ तोला, गोखरू ६ माशा दोनों को पानीमें भिगोकर शहद डालकर पीवे तो श्वेत प्रदर रोग जावे।

(१) त्रिफलाका चूर्ण मधु या मिश्रीके साथ चटानेसे पित्तगुल्म नष्ट होता है।

(२) त्रिफलाका चूर्ण मधु या घीके साथ देनेसे शूल रोग नष्ट होता है।

(३) जिसके हाथ और पांवके तलुओंमें जलन हो, रातको नींद न आती हो, भोजन करने

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

में अरुचि हो उसे चाहिये कि त्रिफला और नीम-की गुर्चिको किसी मिट्टीके पात्रमें रात भर भिगो छोड़े। प्रातःकाल होने पर उन तीनोंको खूब मसल-मसलकर छानले। पुनः आधा अर्क तो पी डाले और आधेसे हाथ पांव और मस्तकको धोवे। दस दिन ऐसा करनेसे उपरोक्त सभी विकार नष्ट हो जायँगे।

[४] त्रिफला नेत्र-ज्योतिको बढ़ाता और प्रमेह रोगको शान्त करता है।

थूहर

संस्कृत—सेहुण्ड, स्नुही, गुडा। हिन्दी—थूहर सेंहुड़। बं० सिजवृक्ष, मनसागाछ। मराठी—निवडुङ्ग, सावर। गुजराती-थोर। कर्नाटकी—निवडुङ्ग। तेलगू—चेमुण्डु। फारसी—लादनाम। अरबी—जक्कुम्। अंगरेजी—युफोर्व्या।

थूहरका वृक्ष कटीला होता है। इसमें श्वेत रंगका किन्तु गाढ़ा दूध निकलता है जो अनेक औषधियोंके प्रयोगमें लाया जाता है। इसमें एक प्रकारकी गन्ध होती है। यह कटु, स्वादु, तिक्त,

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

स्निग्ध, त्रिदोषनाशक, मेधा-शक्ति-बर्धक, कृमि-नाशक, रुचिकारी और शुक्र-प्रगटकर्ता है। इसका वृक्ष अधिकसे अधिक ८, १० हाथ लम्बा होता है। पत्तोंको बकरियां अधिक खाती हैं और कानकी पीड़ा में गरम करके इसके पत्तोंका रस तथा भुनी हुई कौड़ीका चूर्ण डाला जाता है। अबोध बालकको खांसी, दस्त, दुर्बलता और सर्दी होने पर माताएँ थूहरके पत्तोंके रसमें अपने स्तनका दूध और राई भर हींग मिलाकर पिलाती हैं। इससे बच्चे प्रसन्न रहते हैं।

सन्निपात की दवा

थूहरके दूधमें पीपल या हर्रको तीन दिन भिगोकर सुखा लेना चाहिये। इसका दो टंक चूर्ण दस दिन सेवन कराने से सन्निपात रोग दूर हो जाता है।

जलोदर की दवा

थूहरके दूध तथा किरमालेके गूदेके रससे नीला थोथा, गन्धक, पीपलकी छालका चूर्ण पांच

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

दिन खरल करके गरम जलके साथ नित्य एक माशे-का सेवन करनेसे जलोदर रोग अच्छा होता है।

वायु रोग की दवा

थूहरपत्र, अरंडपत्र, बकायनपत्र, संभालु पत्र, शोभांजनपत्र, और कनेरपत्र इन सबका रस, इन सब रसोंसे चतुर्थांश तेल और सोंठ इन सबको एकत्र कर पकाओ। रस जल-जलकर तेलमात्र रह जाने पर छानकर मर्दन करो तो सर्व बातरोग दूर होंगे। अष्टांग तेल कहलाता है।

जोड़ोंकी पीड़ा में

काँटेदार थूहरको फाड़कर पीड़ा-स्थान पर एक दिन रात बांधे और कई एक दिवस इसी प्रकार करे तो दर्द दूर हो।

अजीर्ण और मन्दाग्नि आदिकी दवा

थूहर, आक, चित्रक, अरंडी, पुनर्नवा, तिल्ली, औंधाफोड़, कदली, पलास और ढाकरा (इन प्रत्येकका खार) अजवायन, अजमोद, जीरा, सोंठ, कालीमिर्च, पीपरि और सेकी हुई हींग, इन सब-

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

का चूर्ण अदरकके रसमें छः पुट देकर खरल करे। यह चूर्ण नित्य शीतल जलके साथ सेवन कराओ तो बहुत लाभ हो। इसे वैश्वानर चूर्ण कहते हैं।

दवना

इसे संस्कृतमें दमनक, दाँत, मुनिपुत्र, तपोधन, गंधोत्कर, विनीत और कलपत्र कहते हैं। हिन्दीमें दवना, दौना, म० दवड़ा, बं० चित्तरेटे, गु० डमरो, तै० सबित्रटेच, अं० वर्मवुड।

यह गुणमें कषैला, कड़वा, हृदयको हित-कारी, बलकारक और सुगन्धित है। यह सेवन करनेसे विषविकार, कोढ़, रुधिर—विकार, क्लेद, खुजली और त्रिदोषको दूर करता है।

दशमूल

एक प्रकारकी औषधियोंके योगको दशमूल कहते हैं। उनके नाम ये हैं—शालपर्णी, पृष्ठपर्णी, छोटी कटेरी, बड़ी कटेरी, गोखरू, खम्भारी, पाढ़र, अरणी और स्योनक। दशमूल त्रिदोषको नष्ट करने वाला। श्वाँस, खाँसी, मस्तक रोग, तन्द्रा, सूजन अफरा और अरुचि रोगमें भी प्रयोग किया

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

जाता है। यह गुणमें हल्की, बलकारी सुस्वादु, वात-पित्त नाशक और पुष्टिदा है। दशमूल, रास्ना, आँवला, खश, घमासी, गुरच, धनियाँ और नागर-मोथाका क्वाथ पिलानेसे बादीकी बवासीर अच्छी हो जाती है।

दाख

संस्कृत-स्वादुफला, द्राक्षा, मधुरसा। हिन्दी-दाख। गु०-धाख। तामिल-कोडिमंडिरिष्पभ्काम। अंगरेजी-ग्रेपरोभ्फिन्स लैटिन-वाइटिस, विनीफोरा।

पक्कीदाख-शीतल, दस्तावर, नेत्रहितकारी, पुष्टिकारी, भारी, स्वादु, स्वर-सोधक, मूत्रकारक, कफकारक, पुष्टिकर, तथा ज्वर, श्वाँस, कामला, रक्त-पित्त-प्रमेह दाह और शोथ आदि रोगोंको नष्ट करता है। कच्ची दाख अल्प शक्तिवाली भारी, खट्टी और रक्त पित्त रोगोत्पादक है। दाख किसमिस और मुनक्काके ही समान गुणकारी है।

रक्तस्राव की दवा

दाख, चन्दन, लोद, गोदिनीके पुष्पको पीस

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

कर मधुके साथ १० दिन सेवन करनेसे सब प्रकारके रक्त पित्त रोग नष्ट हो जाते हैं रक्त-स्राव बन्द हो जाता है।

अरुचि की दवा

दाख, गिरी, धनियाँ, कुटकी, नागरमोथा, पिपलामूल, सोंठ और पीपलके चूर्णमें छमाद भर का क्वाथ १० दिन तक पिलानेसे कफ पित्त ज्वर, शूल, भ्रम, मूर्छा, अरुचि और उल्टीके रोग दूर होते हैं।

दुद्धी

संस्कृत—दुग्धि, स्वादुपर्णी क्षीरा, अविक्षीरिणी। हिन्दी-दुद्धि, दूधी, दूधिया। बंगला-क्षीरूइ। मराठी-दुधो, खिलकुला, गुजराती—दुधेली, नागार्जुनी।

दुद्धी दो प्रकार की होती है। एकके डंठल लाल, पत्ते भूरे और दूसरीके डंठल और पत्ते दोनों हरे रंगके पृथ्वीमें फैले हुए रहते हैं। पत्ते छोटे २ और अनीदार होते हैं। उसकी शाखाओं और पत्तें में दूध होता है। गुणमें यह कफको शान्त

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

करती और कोढ़, पाँवकी बेवाई, सूजाक कृमिरोग और तिजारी रोगको हितकर और मूत्रकृच्छ्रको भी दूर करने वाली है।

दूब

यह दो प्रकार की होती है। एक हरी और दूसरी श्वेत। संस्कृतमें इसे श्वेतदूर्वा, गोलोमी और शतवीर्या कहते हैं। हिं० सफेददूब। मराठी--पांढ़रा, हरियाली। गुजराती--गोलीओ।

दूब, कषैली, स्वादु, बलकारक, जीवन शक्ति-वर्द्धक, कड़वी और शीतल है। रुधिर दोष और तृषाको हरण करती है।

खुजली की दवा

दूब, हर्रकी छाल, सेंधा नोन, पँवारके बीज, कनेरकी छाल, इन सबको काँजी या छाछमें पीस कर लेप करनेसे दाद-खाज और खुजली दूर होती है।

बवासीरकी दवा

दूब, काली मिर्च, छोटी इलायची और मुलहठी को समान भागमें लेकर सात दिन तक पीनेसे बवासीरके रोगमें पर्याप्त लाभ पहुँचता है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

बवासीरकी दवा

हरी दूबको लाकर पानीमें खौलाकर बफारा देनेसे बवासीरकी पीड़ा शान्त होती है।

देवदारु

संस्कृत—दारुगंध, गंधमादिनी, तरुणी, तारा। हिन्दी-चाढ़, देवदारु।

यह एक प्रकारका पहाड़ो वृक्ष है। यह स्वाद में चरपरा होता है और खाँसो तथा कफ पित्त दोष और परिश्रमको दूर करता है। देवदारु, कायफल, भारंगी, नागरमोथा, धनियाँ, पित्त, पापड़ा, हर्रको छाल, सोंठ, केवाँचकी जड़को समान भागमें चूर्ण कर दो टंक भरका क्वाथ पिलानेसे बात, कफ, ज्वर खाँसी और सूजन नष्ट होती है।

धतूरा

संस्कृत-धतूर, धूर्त, धुत्तूरा, उन्मत्त, देवता, महामोही, शिवप्रिय, मातुल, मदन। हिन्दी—धतूरा। बंगला-धतूरा। मराठी--धोतरा। का० मदकुड़िके। तैलंगू--नाल्लाउम्मोते। अरबी-जाजमलसिल। फारसी-तातूरह। अंगरेजी-हस्टेमूनियम।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

धतूरे का वृक्ष अधिकसे अधिक दो ढाई हाथ का ऊँचा होता है। फूल सफेद और लम्बे आकार के होते हैं। धतूरा पाँच प्रकारका होता है। सबके फूलोंका रंग भिन्न २ होता है। किन्तु फल सबके एक समान गोल और काँटेदार होते हैं। धतूरा मादक, अग्निकारक, वातजनक, कड़ुवा, कषैला-गरम, विषनाशक, पीड़ा निवारक, निद्राकर्ता और मूत्रवर्द्धक है। धतूरेको पीसकर नेत्रके ऊपर चारों ओर लेप करनेसे नेत्रका तारा फैलता है।

बिवाईकी दवा

धतूरेका बीज और जवाखारको कड़वे तेलमें पकाकर बिवाई पर मलनेसे वह अच्छी हो जाती है।

मसूड़ेकी दवा

धतूरा, मजीठ, गोखरू, चमेलीकीपत्ती, करियाली, लोद, खैरसार और मुलहठीके क्वाथमें कड़ुवे तेलको पकाकर उस तेलका कुल्ला करनेसे मसूड़ेके समस्त रोग अच्छे होते हैं।

पगफूटनीकी दवा

धतूरेका बीज, हल्दी, साँभरनोन और तिल्ली

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

को जलमें महीन पीसकर इन सबके बराबर गौका मक्खन और इससे चौगुना गोमूत्र सबको इकट्ठा करके आंचसे पकाओ। जब जल और औषधियां जलकर घी मात्र ठीक रह जावे, तब उसे छान कर पैरके तलुओं में मर्दन करो तो पैरका फूटना बन्द हो जावे।

पीपल

संस्कृत—पीपली, मागधी, कृष्णा, वैदेही, चपला, कणा, शौंडी, कोला और तंडुला। हिन्दी-पीपली, पीपर। बंगला-पिपुल। मराठी-पिंपली। कर्नाटकी-पिप्पली। गुजराती-लिंडा, पीपल पीपर। तैलगू-पिप्पलु। फारसी फिलफिलदराज। अरबी-दार-फिलफिल। अंग्रेजी—लांगपेपर।

यह एक गुल्म जातिकी औषधिका फल है। मालव आदि देशोमें अधिक होती है। पंसारियोंके यहाँ मिलती है। यह दो प्रकारकी होती है। एक छोटी, दूसरी बड़ी। छोटी पीपर अधिक गुणकारी होती है। पीपल अग्नि दीपनकर्ता, बलकारक तथा पाकमें मीठी है। इसका स्वद चरपरा है। यह स्निग्ध, वात और कफको हरण करनेवाली तथा

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

हल्की होती है। दस्तकारक, श्वांस, खांसी और उदर रोगको नष्ट करती है।

खाँसी और ज्वरमें

पीपलके चूर्णको शहदमें मिलाकर खानेसे मेद, कफ, श्वांस, खांसी और ज्वर दूर होते हैं।

मन्दाग्नि की दवा

पीपलके चूर्णको गुड़में मिलाकर खानेसे जीर्णज्वर, मन्दाग्नि, खांसी, अजीर्ण, हृदयरोग, पाण्डु और कृमिरोग दूर होते हैं, पर गुड़ पुराना होना चाहिये।

निद्राके लिए

पीपलीका चूर्ण मधुके साथ खानेसे नष्ट हुई निद्रा फिर आ जाती है।

यह वीर्यको बढ़ाती, दाह और ज्वरको दूर करती है, दमा, रक्तातिसार, प्यास और वमनको रोकती तथा बात, रक्षा और फोड़ोंको लाभदायद है।

पुनर्नवा-गदहपुर्ना।

संस्कृत—श्वेत पुनर्नवा, श्वेतमूला, दीर्घपत्रिका, शोथघ्नी।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

हिन्दी—विषखपरा। बंगला-श्वेतपुनर्नवा। मराठी-पुनर्नवा। गुजराती-साटोडी।

इसकी कई जातियाँ होती हैं, जैसे सफेद, लाल तथा नीला। इनमें सफेद फूलवालेको विषखपरा और लाल फूल वालेको सौंठ या गदहपूर्ना कहते हैं। इसके पत्ते चौंलाईके साकके समान एवं गोल, पर लाल किनारेदार होते हैं। यह कंकरीली और पथरीली जमीन पर अधिकता से उत्पन्न होती है। यह प्रसर जातिकी बनस्पति है तथा इसका क्षुप पृथ्वी पर फैला हुआ होता है।

यह कटु, किंचितमात्र कषैली, अत्यन्त अग्निकारक और वायुनाशक है। पाण्डुरोग, शोथ, वायुवृद्धि, कफाधिक्य, उदररोग, खाँसी, हृदयरोग, बवासीर और शूल रोगोंको यह नष्ट करती है। इसका समस्त अंग प्रयोगमें लेना चाहिये।

यह तो हुस्ना श्वेत पुनर्नवाका वर्णन है। रक्त पुनर्नवाको संस्कृतमें रक्त पुष्प, शोथघ्नि, वृषकेतु और कपिल्लक कहते हैं। हिन्दी—सौंठ, गदहपूर्ना, मराटी-तावड़ीघेंटुली। गुजराती-राती साटोडी। बंगला—लालपुनर्नवा।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

इसका फूल लाल रंगका होता है। यह कड़वी, पाकमें चरपरी, शीतल, हल्की, वातकर्ता और ग्राही होती है। यह कफ और रक्त पित्तको दूर करती है। इसका भी सारा अंग प्रयोगमें लिया जाता है। मात्रा दोनोंकी बराबर है।

इसके अतिरिक्त जो नीली पुनर्नवा होती है वह भी गुणमें कड़वा, चरपरी गरम और कसायनी होती है। हृदयरोग, पांडुरोग, श्वास, बादी और कफको हितकारी है।

वायुनाशक प्रयोग

(१) पुराने विषखपराकी छाल तथा जड़को घिसकर शहदमें मिला आँखकी फूली पर लगानेसे अधिक आँसू गिरना रुक जाता है।

बकरीके दूधमें घिसकर लगानेसे आँखों पर का केश गिरना बन्द होता है और वहाँके केश फिर उग आते हैं।

तिमिर रोग की दवा

पुनर्नवाकी जड़को भंगराके रसमें घिसकर

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

लगानेसे मोतियाबिन्द शान्त रहता है। पहले हरें घिसकर फिर विषखपराकी जड़ घिसकर उसमें मिलाकर लगानेसे तिमिर रोग शान्त हो जाता है।

सर्प काटने पर

साँपके काटे प्राणीको विषखपराका रस तुरन्त पिला देना अत्यन्त लाभकारी है।

वायुगोलेकी दवा

विषखपराके पत्ते और नमक मिलाकर खानेसे वायुगोला अच्छा होता है।

फालसा

संस्कृत परूषक, अल्पास्थि परापर। हिन्दी-फालसा। बंगला-फलसा। का०- बेदहा। तैलगू-पुटकी। अङ्गरेजी-एशियाटिक ग्रेविया।

फालसेके वृक्ष मध्यम आकारके होते हैं। इसके पत्ते बड़े पर बेलके समान एक-एक डालीमें तीन तीन लगते हैं। फल दो-तीन एक साथ लगते हैं जो बच्चेपनमें हरे और पकने पर ऊदे रंगके हो जाते हैं।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

कच्चे फालसे कषैले, खट्टे, पित्तकर्ता कफनाशक तथा हल्के होते हैं। पके हुए फालसे पाकमें मधुर, शीतल, वृष्टंभी, वृंहण और हृदयको प्रिय होते हैं। ये रुचिको बढ़ाते तथा पित्तको नाश करते हैं। मुसलमानी वैद्योंके मतानुसार फालसा, दिल, मेदा और जिगरके लिये हितकारी होता है। गर्म प्रकृति वालोंके लिये यह गर्मी के दस्तों और वमनको दूर करता है। हिचकी और प्यासको शान्त करता है। ज्वरकी गर्मीको दबाता है। छाती में दाह और पेशाबकी जलनको मिटाता, सूजाकको अच्छा करता, पागलपन और छातीके धड़कन को शान्त करता है (१) इसके जड़को छालको टुकड़े २ करके सन्ध्या समय जलमें भिगो कर प्रभातमें छानकर पीनेसे पेशाबकी जलन और पीड़ाका नाश होता है।

धनियाँ

संस्कृत-धान्यक, धानक, धान्य, धाना, धेनिक। हिं०-धनियाँ। बं०-धनियाँ। मराठी-धणे, कोंकोथिंवया। तैलङ्गी-कोथमीलूँ।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

गुजराती-धाणा। फारसी-कजबुर, कशनीजा। अरबी-तुख्मे कसनीज। इंगलिश-कोरिएन्डर फ्रूट।

यह एक क्षुप जातिका पौधा है। जिसका गुण कषैला, चिकना, मूत्रकारी, और वमन तथा कृमिरोग नाशक है। त्रिदोष, ज्वर, तृषा, दाह, वमन, श्वांस, खाँसी और कृमिरोगमें भी इसका प्रयोग लाभप्रद है। पित्तका तो मानो शत्रु है। धनियां आंवला, अडूसा, दाख और पित्तपापड़ा को जल में भिगोकर ठंडाईके समान पीस डाले और चार टंक छान कर पिलाने से रक्त-पित्त-ज्वर दाह और प्यास सब दूर होता है।

नागरमोथा

संस्कृत—मुस्तक, मुस्त, क्रोड़, कसेरुक। हिन्दी—मोथा नागरमोथा। बंगला-मुथा। गुजराती-मोथा। कर्नाटी-भद्रमुस्त। तैलगू—तुगमुस्त। फारसी-मुश्क जमीन।

मोथा ठंढी जमीनमें होता है। एक प्रकारका हरित तृण है। इसकी कई जातियाँ होती हैं। परन्तु सबसे श्रेष्ठ नागरमोथा है। इसका पौधा ३ फीट

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

से अधिक लम्बा नहीं होता, ऊपर के सिरपर लम्बे पत्ते और लाल तथा भूरे रंगके फूल होते हैं। पथरीको तोड़ने, मुँह और शरीरकी दुर्गन्धि को दूर करने, बुद्धिको बढ़ाने और मैथुन शक्तिको उत्तेजित करने तथा मेदा और पट्ठोंको बलिष्ठ बनानेमें यह प्रधान गुण रखता है। इसका मंजन दातोंको सुदृढ़ और चित्तको प्रसन्न करता है यह शीतल, कफ-नासक, पित्त-ज्वर, अतिसार, अरुचि प्यास और दाद तथा श्रमको भी दूर करता है। गुणमें शीतल, कड़वा, कषैला चरपरा, कांतिवर्द्धक विषघ्न और कफनाशक है। रक्त, पित्त, कोढ़ और खुजलीमें भी इसका प्रयोग लाभदायक है। नागरमोथा, त्रिफला, लोद, मुलहठी और मिश्री को शीतल जलमें पीसकर धोनेसे रक्तज नेत्र रोग-नष्ट होता है।

नारियल

संस्कृत—नारिकेल, दृढ़फल, लांगली, कूर्मसीर्षक, तुङ्ग, स्कन्धफल, तृणराज, सदाफल। हिन्दी-नारियल। मराठी

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

नारलमाड़। गुजराती-नालीएर। तैलगू-ठकाया। का०-रमु। उड़िया-नड़िया। तामीरी-टेन्ना। अङ्गरेजी-कोकोनट। अरबी-नारियल। फारसी-जोर्जहिन्द।

नारियलका वृक्ष ताड़के बराबर ऊँचा होता है। इसके पत्ते दो फुटसे लेकर चार फुट तक लम्बे आमने सामने होते हैं। फूल, जैसा गेहूँ की बालमें से गेहूँ फूटकर निकलते हैं। किन्तु वह तीन पँखड़ियों वाला होता है और उसके भीतर वह स्त्री केसर होती है। फलके बाहर कठोरता और बीचमें एक गिरी शीतल, दुर्जर, वस्तिशोधक, बलकारी, वात, पित्त, रुधिर और दाह रोगको हरण करनेवाली है। पित्तदोषमें तो यह अचूक लाभ पहुँचाती है। किन्तु पुरानी गिरी भारी, पित्तकर्ता विदाही और विष्टम्भी है।

नारङ्गी

संस्कृत-नारङ्ग, नागरंगु, त्वक्सुगन्ध, मुखप्रिय। हिन्दी-नारङ्गी। मराठी-नारङ्ग। कर्नाटी-माधवला। तैलगू-दयाकाया। तामिली-किविल। उड़िया-दारङ्गी। अरबी-नारज। अंग्रेजी-आरेंज। लैटिन-साइट्रसओरेंटियम।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

यह एक क्षुप जातिका पौधा है जिसके पत्ते नीबूके समान और फूल सफेद रंगके पाँच पखड़ियों वाले होते हैं। नारंगी मधुर, खट्टी, दीपन और वातनाशक है। इसकी छालको हकीम लोग गरम कहते हैं। पर इसका रस खट्टा होनेके कारण शीतल और मिठासके कारण ठंढ पहुँचाने वाला होता है। पित्त प्रकोपके कारण आनेवाली वमनको यह बन्द करती तथा पाचन-शक्तिको बढ़ाती है। वमनके समय जब नारंगीका रस दिया जाय तो पहले खाँड़ अथवा शहदके साथ मिलाकर थोड़ी देर रखकर देना चाहिए। संतरा और नीबूकी छालको सुखाकर कूट पीसकर चूर्ण करले और पुनः मीठे तेलमें उसे भिगो दे। पश्चात् निचोड़ कर वह तेल सर्दीकी सूजन पर मालिश करनेसे विशेष लाभ होता है क्योंकि यह तेल गरम तथा रूखा है। फूल और पत्तोंमें भी इसी प्रकार तेल निकलता है, उसका भी गुण वैसा ही होता है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

नारंगी की छाल खानेसे पेटके कोड़े मर जाते हैं। पित्तको अधिकताके कारण दर्द करता हुआ मस्तक और वमनके लिए नीबूका रस अचूक लाभ करता है। रक्तदोषमें नारंगी अत्यन्त लाभदायक है। नारंगीकी छालका चूर्ण मग्नेशिया और श्वेत चोनीका शीरा इन तीनोंको मिलाकर देनेसे सन्धिबात, दर्द और बदहजमी दूर होती है। नारंगीके अर्कमें सेंधा नमक, कालीमिर्च पीस-कर पीनेसे पित्त और दाह शान्त होता है। नारंगी का अर्क ४ तोला, सफेद। इलायची ५, मिश्री १ तोला, पीसकर देनेसे पित्तजनित दाह शान्त हो जाता है। पुराने नासूर पर नारंगीका गूदा सेंक कर बाँधनेसे घाव शीघ्र भर जाता है। कपड़ोंमें संतराका फल रखनेसे कीड़े नहीं लगते। विष-प्रकोपमें भी यह उत्तम लाभ पहुँचाती है। नारंगी पित्तनाशक और रक्तशोधक है।

नीबू

संस्कृत-निंबू, निंबुक, । हिन्दी-नीबू। बंगला पाति-

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

लेबू। कर्नाटकी-कचिलें। फारसी-लेमु। अंगेज़ी-लेमन्स। लैटिन-लेमोनएसिड।

नीबू खट्टा, बातनाशक, दीपन, पाचनकर्त्ता तथा हल्का होता है, नीबू कृमिनाशक, तीक्ष्ण, उदर पीड़ाको हरनेवाला तथा अरुचि, मंदाग्नि, क्षयरोग, बातव्याधि, कण्ठावरोध और विसूचिका रोगमें लाभदायक है। मीठे नीबूका गुण स्वादु, गुरु, बात, पित्तनाशक, विषघ्न, विष तथा रक्तदोष नाशक है। बलकारक, पुष्टिदा, अरुचि, तृषा और वमनका निवारक है। नीबूका अचार खानेसे अजीर्ण दूर होता है। इसके अचार कई प्रकार के होते हैं। पर निमकीन अचार ही अधिक लाभकारी है। नीबूके रसको सायंकालमें खानेसे प्रातःकालमें होनेवाली अजीर्णकी वमन दूर होती है। संधिवात सदृश रोगोंमें नीबूका रस जवाखार और शहदको मिलाकर दिया जाता है।

नीम

संस्कृत—निम्ब, पिचुमर्द, पिचुमन्द, तिक्तक, अरिष्ट, परि-

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

भद्र। हिन्दी-नीम। बंगला-निम। मराठी-कटुनिम्ब। कर्नाटी-बेउ। गुजराती-लिंबडो। तैलगू-वेपा। अर०-आजाददरख्त। फारसी-दरख्त हक। अंग्रेजी-निम्बट्री।

नीमका वृक्ष बड़ा होता है। पत्ते छोटे और कँगनीदार और अनीदार होते हैं। फूल श्वेत रंगका छोटा तथा पाँच पंखड़ियोंवाला झुमकदार होता है। फल अर्थात् निंबौरी खिरनीके समान होती है। इसकी लकड़ी पीले रंगकी होती है और बीज ज्वरघ्न हैं। बसन्त ऋतुमें इसमें फूल लगते हैं। नीम शीतल, हल्का, ग्राही, पाकमें कटु, वात हरणकर्ता, हृदयको अरुचिकारी और श्रम शान्ति कर्ता है। तृषा, खाँसी, ज्वर, कृमि, व्रण, पित्त, कफ, वमन, कुष्ट और प्रमेह रोगोंमें इसका प्रयोग अत्यन्त लाभदायक है। नीम अथवा निबौड़ी खानेमें कड़वी और पाकमें कटु, दस्तावर तथा कृमि और प्रमेहको दूर करनेवाली है। अवस्थानुसार छाल और पत्ते प्रयोगमें लिए जाते हैं। इसकी मात्रा दो माशेकी होती है।

नीमका पत्ता और गेहूँके चोकरकी पुल्टिश

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

बाँधनेसे फोड़ेकी गाँठ बैठ जाती है। शीतलाके घाव पर नीमका पत्ता पीसकर लेप करना चाहिये। नीमके पत्तोंका रस पान करनेसे पेटके कीड़े निकल जाते हैं। नासूर रोग पर नीमके पत्तों और तिलकी पुल्टिश बाँधनेसे दर्द दूर हो जाता है और घाव अच्छा हो जाता है। कुष्ट रोग और गाँठ युक्त फोड़ेके ऊपर नीम का तेल लगाना चाहिये। कुष्ट रोगीको चाहिये कि १ तोला नीमका तेल नित्य सेवन करे। नीमके पत्तोंका बफारा देनेसे घाव और घावकी सूजन अच्छी हो जाती है। नीमके कच्चे पत्तोंकी पुल्टिश बाँधनेसे फोड़ा शीघ्र फूट जाता है। नीमके पत्तोंका क्वाथ कालरा (हैजा) के आक्रमणमें लाभकारी है। नीमके कोमल पत्ते ७, कालीमिर्च ४, दोनोंको पीसकर सेंधा नमक डालकर पीनेसे ज्वरका प्रकोप शान्त होता और फोड़े फुन्सीके घाव अच्छे होते हैं। नीमकी पत्तीका अर्क पीनेसे रुधिर दोष नष्ट होता है। नीमकी मींगी, रसौत और कपूरको

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

बराबर मात्रामें लेकर पीस डाले, उस लुग्दीको बवासीर रोगके मस्सों पर लगानेसे दर्द और खुजली शान्त हो जाती है। नीमकी पत्ती और मोमको सरसों अथवा अलसीके तेलमें जलाकर, घोटकर मलहम बना ले। इस मलहमके लगानेसे फोड़े के घाव भर जाते हैं।

नील

संस्कृत—नीलो, नीलिनी, तूली, कालदोला, श्रीफली, तुत्थ्या, ग्रामीणा, मधुपर्णिका, कालकेशी, नीलपुष्पा। हिन्दी-नील, लील। मराठी गुली। गुजराती-गली। कर्नाटी-हिरिय नीली। तेलगू-नीलीजेट्ट। अंगरेजी-इंडिगो।

नीलका वृक्ष मेथीके शाक-वृक्षके समान होता है जिसमें नील रंग निकलता है। नील रेचक, कड़वी, बालोंको उत्तम और मोह, भ्रम नाशक है। जिनके बाल सफेद हो गए हों उन्हें चाहिए कि बालों पर पहले मेंहदीके पत्तोंको पीसकर लगावे। ऐसा करनेसे जब बाल लाल हो जाँय तब फिर उनपर नीलके पत्तोंको पीसकर लगा दें।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

फिरतो बालका रंग ठीक-ठीक काले भौंरे के समान हो जाता है। मात्रा दो माशेकी है।

पटोल या परवल

संस्कृत-पटोला, कुलक, राजीफल, पांडुफल, राजेय, अमृतफल, बीजगर्भ, प्रतीक, कामभंजन। हिंदी-परवल। बंगला वद्युतालता। मराठी-कटुपडवल। तैलगू-कोम्बुपुडले। तामीली-सेसपसला। कर्नाटी—मोरहठी।

यह एक प्रकारका लता-वृक्ष है। इसके पत्ते तीन या चार इञ्च लम्बे और दो इञ्च चौड़े, कुछ नोकीलेदार और काली हरियाली लिए होते हैं। फूल सफेद होता है। परवल पाचक, हल्का गरम खाँसी, रक्त, और ज्वर तथा कृमि दोषको दूर करता है। परवल की जड़ पीसकर पीने से सुख पूर्वक दस्त आते हैं। परवलकी लता कफको हरण करनेवाली, पत्ते पित्तनाशक और फल त्रिदोषको नष्ट करने वाले हैं। परवलको जड़का क्वाथ पिलानेसे पित्तकी मसूरिका अच्छी हो जाती है।

पान

संस्कृत—तांबूलपल्ली, तांबूली, नागिनी, नागवल्ली।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

हिन्दी-पान, नागरबेल का पान। गुजराती-नागबेल। फारसी तंबोल। अंग्रेजी—बिटिललीफ।

पानके कई भेद हैं और सब अपने-अपने भेदानुसार कुछ न्यूनाधिक्य गुण रखते हैं। प्रत्येक प्रान्तोंका पान भिन्न-भिन्न ढङ्ग आकार-प्रकार का, भिन्न-भिन्न गुण और स्वादुका होता है, जिन सबका वर्णन यहाँ नहीं हो सकता। ताजा तोड़ा हुआ पान खानेसे मुख रोग तथा जड़ता नाशक होता है। बात, पित्त तथा कफका वृद्धिकर्त्ता, जलन उत्पन्न कर्ता, अरुचिको बढ़ाने वाला तथा रक्त रोगोंका उत्पन्नकर्ता और (वमन) लाता है। पका हुआ पान रुचि उत्पन्न करता है, शरीरके वर्णको उत्तम करता है और त्रिदोषका नाश करता है। पानकी नसें खानेसे शिथिलता आती है और रक्त सूख जाता है। सूखे और गले हुए पान चर्मरोग, दाँतोंके रोग और मुँहके रोग पैदा करते हैं। पानकी जड़ खानेसे व्याधियां उत्पन्न होती हैं। पानका अग्र

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

भाग अर्थात् फुनगियों को खानेसे भी विकार उत्पन्न होते हैं। पानका फल हृदयको हित करनेवाला, सुगन्धयुक्त, कफ और वातका नाश करनेवाला है। पान कत्था, कफ और पित्तनाशक है। चूना वात कफका नाशक है। सुपारीमें भी वही गुण है। अतएव कत्था, चूना और सुपारी के साथ पान खानेसे तीनों दोषों का नाश होता है, शरीर हल्का और मुख सुगन्धयुक्त होता है। प्रातःकालका खाया हुआ पान उस दशामें बहुत लाभकारी होता है जब उसमें सुपारी कुछ अधिक मात्रामें हो। दोपहरमें कत्था और रातमें चूना अधिक श्रेयस्कर है। पानकी पहली पीक विषके समान है। दूसरी पीक भारी और दस्तावर है। अतएव पान खाकर पहली और दूसरी पीक अवश्य थूकनी चाहिए। इसके बादकी सभी पीकोंको निगल जाना लाभदायक है।

जुलाब लेने तथा भूख लगने की दशामें अधिक पान न खाना चाहिये। यदि उस दशामें

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

पान खाया जाय तो शरीर, आँखकी रोशनी, बाल, दाँत, कान, बल और अग्नि नाश होता है। ऐसी दशामें शोष भी हो जाया करता है। पित्त, बात और रुधिरकी वृद्धि होती है।

निर्बल, दाँतोंकी बीमारी, आँख के रोगी मनुष्योंको अथवा विष खाये हुए एवं मूर्छित, नशा खाकर मतवाले तथा मुँह नाक, कान आदि से खून निकलनेवालेरोगीकोपान खानाहानिकारक है।

(१) पानका पत्ता हरेंकी छाल और कूटको जलमें पीसकर शरीरमें मालिश करने से शरीरकी दुर्गन्धि जाती रहती है।

प्याज

संस्कृत—पलांडु, यवनेष्ट, दुर्गन्ध, मुखदूषक हिन्दी-प्याज। बंगला-पेयाज। मराठी, कांदा। कर्नाटी-लोहिबीउल्ली। गुजराती-डुंगरी। तैलगू-नीरउल्ली। फारसी-अस्कील वसुलन्फार ऊन्सल् अस्कीलुलूअविमज, अंगरेजी-एलियम।

यह क्षुप जातिका पौधा है जो खेतोंमें बोया जाता है। इसका वृक्ष लगभग दो फुट लम्बा

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

होता है। पेड़में पत्ती होती हैं जो हरे रंगकी पीली और गोल होती हैं। इसी पेड़की जड़की गाँठको प्याज कहते हैं।

प्याज पित्तनाशक, कफ दोषको नष्ट करने वाली, शीतल, गाढ़ी नींद लानेवाली, दीपन और अत्यन्त उत्तेजक है। यह स्वभावको कोमल करती, वायुको शमन करती, पेशाब और मासिक स्रावको आरंभ करती और वायु-नाशक है। सर्दीसे उत्पन्न हुई सूजनोंमें प्याजको पकाकर बाँधना चाहिए। खट्टी डकार और जल-विकारको नष्ट करती है।

धातु पुष्टिकी दवा

प्याज सफेद तथा लाल दो प्रकार की होती है। लाल प्याज शीतल और पित्त कफको नाश करने वाली है। प्याजका रस ५ तोले और शहद ५ तोले लेकर आग पर चढ़ा कर औटानेसे जब तारदार चाशनी बनजाय, तब उतार लेना चाहिए। इस चाशनीको सेवन करनेसे धातु पुष्ट होती और शक्ति बढ़ती है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

नेत्र हितकारी सुर्मा

प्याजके रसमें १ छ० कलमी शोरा डालकर मंद-मंद आँचपर ऐसा पकाना चाहिये कि, जब प्याजका रस जलकर केवल शोरामात्रा शेष रह-जावे, तब उसे उतार शीशोमें बन्द कर रख दे। नेत्रों की धुन्ध मिटाने के लिए यह अचूक सुर्मा है।

श्वेत दागों पर

प्याजका रस निकाल कर बारम्बार पिलानेसे कै दस्त शीघ्र बंद होती है। शरीर के गंज और श्वेत दागोंपर प्याजका अर्क मलनेसे यह रोग अच्छा हो जाता है। प्याज खानेसे भूखबढ़ती है।

पित्तपापड़ा

संस्कृत-पर्पट, पर्पटक, वरतिक्त। हिन्दी-पित्तपापड़ा, दवनपापड़ा। बंगला-क्षेतपापड़ा। गुजराती--खडसलोओ, पीठपापड़ो। अरबी-शहतरज। फारसी--शाहतरा। अंगरेजी-जस्टिस। याप्रोकंबेस।

सूखा पित्तपापड़ा पुराने ज्वर और बातरोग और बालोंको हितकारी है। भूखको बढानेवाला, स्वभावको कोमल करने वाला और इसके पत्तोंका रस मेदेको बलिष्ठकारक है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

मसूरिका पर

पित्तपापड़ा, नीमकी छाल, पटोल, खास, दोनों चदन, कुटकी, आँवला, अडूसा, और जवासेका क्वाथ मिश्री के संयोग से पिलाओ तो पित्त की मसूरिका अच्छी हो।

ज्वरकी दवा

पित्तपापड़ा ४ मा०, काली मिर्च ७, दोनोंको पीसकर फंकी लगा गरम जलका घूँट पीनेसे ज्वर शान्त होता है। यथा—

पित्तपापड़ा १ तो०, काली मिर्च सात दाने को पीसकर पानीमें औटाकर सेंधानोन मिलाकर पीने से सब प्रकारका ज्वर अच्छा हो जाता है।

पवाँर

इसे संस्कृत में चक्रमर्द, प्रपुन्नाट, दद्रुघ्न, मेषलोचन, पद्माट, एडगज, चक्री और पुन्नाट कहते हैं। हिन्दी में पमाड, चीकवड़, हरमल, बं० चाकुन्दा, म० टांकला, का० तगचे, के० तरवटा, गु० कुवाडीओ, तै० ताटेयागु, फा० संजिसबोया, ला० कश्या आबेटा।

यह क्षुप जाति को बनस्पति है। इसके फल

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

पीले होते हैं। इसमें फली लगती है जिसमें काले रंग के बीज निकलते हैं।

यह गुण में लघु, स्वादु, रूक्ष, पित्त वात-नाशक और हृद्य तथा शीतल होता है। कफ श्वास, कुष्ठ, दाद, कृमिरोग इनको नष्ट करता है।

पमारका फल ऊष्ण और कटु तथा कोढ़, खुजली दाद, विषरोग, बादी, गोला, खाँसी, कृमि और श्वास इन सबको नष्ट करता है।

दाद और खुजली की दवा

पवाँर के बीज लेकर उन्हें पानी में भिगो देवे। जब सड़ जाय तब पीसकर मले। फिर उसी जलसे स्नान करे।

छीप की दवा

पवाँर के बीज जोकुटकर दही के पानी में मिलाकर दो-तीन दिवस रक्खे। फिर शरीर पर मलकर नहा डाले।

पालक

पालक्या, वास्तुकाकारा, छुरिका और चीरितच्छदा इसके

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

संस्कृत नाम हैं। हिन्दी-पालक, बं०-पालेक, म०-पालल, का०-पालक्य, फा०-इस्फनोख, इं० स्पाईनेज।

यह गुण में वातकर्ता, शीतल, कफकारी, दस्तावर, भारी और विष्टंभकारी होता है। यह मद, श्वास, रक्तपित्त और कफको दूर करता है।

दाद की दवा

पालक, जुही की जड़ नीबूके रसमें रगड़कर मले और इनके पत्ते भी रगड़ना गुण करता है।

बनप्सा

यह एक पहाड़ी घास है। इसके पत्ते और जड़ काममें लाए जाते हैं। यह पित्तके दोषोंको मलके रास्तेसे बाहर निकालता है। प्यास और हृदयकी गरमीको शान्त करता है। छाती और गले की खरखराहट को मिटाता है। सूजनोंको पचाता है। मसानेकी जलनको शान्त करता है।

खाँसी की दवा

खाँसीके लिए हितकर और नींद लाने वाला है। बनप्सा, गावजबाँ, मुलहठी, लसोड़ा और काली मिर्च तथा मिश्रीका क्वाथ बना कर तीन

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

दिन पीने से जुकामके कारण शरीर तथा शिरका दर्द, रुकी हुई सर्दी और उससे उत्पन्न ज्वर दूर हो जाता है।

बरगद

संस्कृत-वट, रक्तफल, शृङ्गी, न्यग्रोध, स्कंधज, ध्रुव, क्षीरी, बहुपाद, वनस्पति। हिन्दी-बड़। बंगला-बट। कांगड़ी-बाल। उड़िया-बोरु। तैलगू-मूरोलचट्टू। फारसी-दरख्ते रेशा। अंग्रेजी--बैनियंट्री।

बरगद का वृक्ष बहुत बड़ा होता है। इसके पत्ते भी लम्बे चौड़े और मोटे होते हैं। फल छोटे और गोल तथा लाल रंगके होते हैं। इसकी शाखाओं से लाल अंकुर निकलते हैं। कोमल अवस्थामें इसको बड़की डाढ़ी कहते हैं। जब यही खूब बढ़ जाती है, तब बरोह कही जाती है। यही बढ़ते२ जमीनमें पहुंचकर जम जाती है और इस प्रकार बरोहके भी वृक्ष हो जाते हैं। और तब यह बरगदके वृक्षको बहुत दूर तक फैला देती है। बरगदके वृक्षसे बड़ा और सघन छायावाला कोई भी वृक्ष नहीं होता।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

गुण--बरगद शीतल, भारी, कषैला, कफ और पित्तको दूर करता है तथा देहका वर्ण उज्वल करता है। यह वर्णरोग, विसर्प और दाहका भी नाशक तथा दस्तोंको बन्द करनेवाला है। पित्त और बात दोषको दूर करता और फोड़े फुन्सियोंको अच्छा करता हैं। इसका दूध सूजनों को पचाता है, धातुको पुष्ट करता है। बवासीर और प्रमेहको लाभ पहुँचाता है। स्वप्नदोष पेशाब और पाखानेके बाद वीर्य निकल जानेको तथा धातु दोषोंको भी नष्ट करता है।

धातुपुष्ट की दवा

यदि किसीका वीर्य (धातु) पेशाबके मार्ग से बाहर निकल कर चूनेके समान जम जाता हो तो बरगदका दूध बताशेके अन्दर भर कर प्रातः काल बासी मुँह खानेसे अवश्य लाभ पहुँचता है। और यदि नित्य प्रातः बरगदका दूध खाया जाय तो धातु अत्यन्त पुष्ट होकर स्तम्भन शक्तिका बढ़ाता है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

स्तनोंको कड़ा करना

बरगदकी ताजी बरोहको पीस कर स्त्रियोंके लटके तथा ढीले हुए स्तनों पर लेप करनेसे शीघ्र ही बहुत कड़े हो जाते हैं।

सुखण्डी की दवा

बरगदका दूध बताशेमें खिलानेसे बच्चोंका सुखण्डी रोग अच्छा होता है।

बहेड़ा

संस्कृत—विभीतक, विभीतकी, अक्ष, कर्षफल, कलिद्रुम, भूतवास, कलियुगालय। हिन्दी, बंगला-बहेड़ा, बहेरा। मराठी-बेहेड़ा। तमिली-तानिकाईक। का०-तोरे। गुजराती-बेहेडां। फारसी-बलेलज, बलेलय। लैटिन-टरमीनेलिया बेलेरिका। अंग्रेजी-बेलेरिक माइरबोलम।

यह शाखी जातिके वृक्षका फल है। बहेड़ा का वृक्ष ऊँची जमीन में होता है। इसके पत्ते महुएके समान और फूल बहुत बारीक होते हैं। भारतवर्षमें बहेड़ेका वृक्ष प्रायः सभी स्थानोंमें पाया जाता है। बहेड़ेका रस मीठा और पाकमें कषैला है। यह फल पित्तको हरण करनेवाला, खाँसी-

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

का नाशक, नेत्रहितकारी, बालोंको उत्तम दृढ़कर्ता और कृमिरोग तथा स्वर-भेदको नष्ट करता है। प्रयोगमें बहेरेकी छाल ली जाती है।

अफरा की दवा

मुसलमानी वैद्य इसे वद्धक, पाचक, खुलासा दस्त लानेवाला, बदहजमी और अफरा (पित्त) से जो मस्तक पीड़ा होती है। तथा उससे आँख दुखती हो, इस पर लेप करनेसे लाभ होता है।

नेत्र रोग में

आँखें दुखती हों तो बहेड़ेको शहदमें घिसके लगाओं या लेप करें।

तथा—

जलंधर, दस्त, बवासीर, कोढ़ और खांसी की बीमारियोंमें देनेसे लाभ होता है। यह मेदनाशक और शुक्र दोष हरता है।

तथा अन्य—

बहेड़ेके पेड़की छालका काढ़ा कोढ़ और पाण्डुरोगको दूर करता है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

हाथ-पाँवकी जलनमें

बहेड़ेके बीजको पानीमें घिसकर चुपड़नेसे हाँथ पावका दाह मिट जाता है।

नेत्रोंकी ज्योति बढ़े

साढ़े तीन मशे बहेड़ा और इतनी ही खाँड़ मिलाकर सबेरेके समय गरम पानी के साथ फाँकनेसे आँखोंकी ज्योति बढ़ती है।

श्वास खाँसी की दवा

एक समूचा बहेड़ा लेकर उसके ऊपर घी चुपड़ दे और आटेमें बन्द कर पुट पाककी रीतिके अनुसार पकादे। पीछे बहेड़ा निकालकर उसकी छालको सेवन करे। यह अकेले ही अत्यन्त प्रबल श्वास और खाँसीको दूर करती है। थोड़ी-थोड़ी छाल मुँहमें डाल कर चूसना चाहिए। औषधि सेवनकी अवस्थामें खटाई मिर्चा, तथा स्त्री प्रसंगसे परहेज करना आवश्यक है।

बादाम

संस्कृत- वाताद, वातवैरी नेत्रोपमफल। हिन्दी-बादाम। तैलगू-बैदम। अरबी-लौज। अंगरेजी—स्वीटअलांड।

इसके वृक्ष महुएकी तरह काबुल और

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

मालावारमें अधिकता से होते हैं। पत्ते लम्बे और गोल होते हैं। इसकी मिगी, मधुर, वृष्ण, बात-पित्तनाशक, स्निग्धोष्ण, कफवर्द्धक तथा रक्त पित्तवाले रोगियोंको हितकर नहीं है। यह मस्तिष्क और शरीरको बलवान् तथा सुन्दर और सुदृढ़ बनाता है। आँखोंकी रोशनीको बढ़ाता है, कण्ठको कोमल बनाता, हृदयको लाभ पहुँचाता, वीर्य पैदा करता और गाढ़ा कर बलवान बनाता है। सूखी खाँसीको यह हितकर है। सुजाकके लिये यह हितकरी तथा वायुको शमन करता है।

कच्चाबादाम—भारी, सीरक, पित्तको उत्तेजित करनेवाला तथा कफ और वायुके दोषोंको नाश करता है। पक्का बादाम—मधुर, वृष्ण, स्निग्ध, पुष्टिकारी, वीर्योत्पादक, कफ उत्पन्न करनेवाला तथा रक्त पित्त और बात पित्तको नाश करता है। सूखा बादाम—मीठा और धातुको बढ़ानेवाला, अत्यन्त बलको बढ़ानेवाला, किंचित् पित्तको उत्पन्न करनेवाला तथा कफके दोषों और बात पित्तको नाश करता है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

बादामका तेल, बाजीकर, मस्तकके समस्त रोगोंको नाश करनेवाला और दिमागको बलवान् बनानेवाला होता है। यह पित्त, वात और दाह को नाश करता है। मुखाकृतिको सुन्दर और चमकदार बनाता, प्रमेह उत्पन्न करता तथा शीतल है।

एक प्रकारका कड़वा बादाम भी होता है जो सूजनोंको पचाता, शरीरको शुद्ध करता, दूषित खूनको जलाता, सूखी और तर दोनों ही खाँसियों को लाभदायक, छातीकी खरखराहट और फेफड़ेकी सूजनको मिटाने वाला, जिगरकी बीमारियों और कामलामें हितकर है। यह पथरीको तोड़ता है। ४॥ माशा बादाम शहदमें रगड़कर खिलाने से पागल कुत्तेका काटा जहर नष्ट होता है।

बायविडंग

संस्कृत-विडंग, कृमिघ्न, जन्तुनाशन, तंडुल, वेल्ल, अमोघा और चित्रतंडुला। हिन्दी-बायविडंग। बंगला-विडंग। मराठी-गुज०-वावडींग, कारकुनी। कर्नाटकी-वायुवीडंग। तामिली-वायविलं। तैलगू--वायवीडंयमु। फारसी--बीरंजकावली। अंगरेजी--बैब्रेंग।

बायविडंगका स्वाद उत्तम, कुछ कषैला और

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

कुछ सुगन्धियुक्त होता है। माताके दूधमें अथवा गौके दूधमें बायविडंगके थोड़े दाने मिलाकर देनेसे बालकोंके पेटमें बादीका रोग नहीं उत्पन्न होता। बायविडंग पंसारियोंके यहां मिलता है। यह कृमिनाशक, विरेचन, गुल्म-शूल-नाशक, खांसी और श्वास रोगको भी हरण करनेवाला है। इसका जुलाब भी लिया जाता है।

(१) इसको पानीमें मिलाकर पीनेसे पेटके कीड़े निकल जाते हैं।

(२) बायबिडंगके ऊपरकी छाल, साबूदाना और मक्खन एक साथ मिलाकर देनेसे दस्तोंका आना बन्द हो जाता है।

(३) इसको नीबूके रसमें मिलाकर देनेसे आंवका पड़ना बन्द हो जाता है।

बाँस

संस्कृत-वंश, वेणु, शतफली, त्वचिसार, तृण-ध्वज। हिन्दी और बंगला-बाँस। मराठी-वाँबु। कौ०-वेलू। तेलगू-बेन्ने-मुक्क तामिली-मंगल। फारसी-कसब। अंगरेजी-बम्बूकेन।

बाँसका वृक्ष बहुत लम्बा और पतला गांठ-

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

दार होता है। वृक्षका फल घासके फूलके समान होता है। बांसके कई भेद हैं। स्थानाभावके कारण सब नहीं लिखे जा सकते। गुणमें सभी समान हैं। बांस-खट्टा, कषैला कुछ कड़ुवा और शीतल है। मूत्रकृच्छ्र, प्रमेह, बवासीर, पित्त, दाह और रुधिर रोगों में इसका फल प्रयोग किया जाता है।

बिजौरा

संस्कृत में इसे बीजपूर, मातुलुङ्ग, फलपूरक कहते हैं। हिन्दीमें बिजौरा, बंगलामें टावालेबू, मराठीमें महालुङ्ग गुजराती में बीजोरू, तैलंगी-दवाकावा, कर्नाटी—माधवाला, उड़िया—कलंवा, अरबी—उतरंज, फारसी—तुरंजं, लाटिन—साइट्र-समेडीका कहते हैं।

इसका वृक्ष छोटा, पत्ते नीबू के समान छोटे-छोटे कँगनीदार होते हैं। फल, लम्बा, गोल अनीदार और खरदरो छालका होता है। यह रसमें स्वादु, खट्टा, दीपन, हल्का, रक्त, पित्त, स्वाँस, खाँसी और तृषा को हरण करता है। यह कण्ठ, जिह्वा और हृदय को शोधन करता तथा हितकर है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

वात शूल की दवा

सांचर नोन १ टंक, जीरा ३ टंक, काली मिर्च ४ टंक, सबको चूर्ण कर अम्लवेत के रस की सात पुट में बिजौरा के रस की सात पुट देकर चार-चार माशेकी गोलियाँ बना ले। उस गोलीको गरम जल के साथ देने से बात शूल दूर होता है।

ब्रह्मदंडी

इसे भारतवासी अनेक भाषाओंमें ब्रह्मदंडी ही कहते हैं।

इसके पत्तों और फलों पर कांटे होते हैं। कफ और सूजनकी बिमारियों में इसे देने हैं। खारिश, खुजली, दाद, आदि चर्म रोगों में इसका काढ़ा बड़ा गुणकारी है।

संस्कृत--ब्राह्मी। ब्रह्ममंडूकी, कपोतवंका, सरस्वती, सोमवल्ली। हिन्दी-ब्राह्मी। बंगला-ब्राह्मीशाक। मराठी-ब्रह्मी। फारसी-जरनब। ला-हैड्रोकोटाइलएसिआटिका।

ब्राह्मीकपोत बंकाच-सोमवल्ली सरस्वती,
मंडूकपर्णी, मांडूकीत्वाष्ट्री-दिव्या महौषधी॥

यह पहाड़ी जलाशयों और नदियों के किनारों पर मिलती है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

मंडूकपर्णी

ब्राह्मीकी एक जाति मंडूकपर्णी भी है। इसे संस्कृतमें महौषधि, मांडुकी, दिव्या, त्वाष्ट्री। हिन्दीमें ब्रह्ममांडुकी, मडुकपानी बंगला—थुलकुडी।

ये दोनों ब्राह्मी प्रसर जातिका औषधि हैं। दोनों शीतल तर, कड़वी, हलकी स्मरण शक्तिको बढ़ानेवाला, कषाय मधुर स्निग्ध होने पर स्वादिष्ट, आयुको बढ़ानेवाली, स्वरको शुद्ध करनेवाली रसायन हैं।

ज्वर, सूजन, प्रमेह, रक्तदोष, विषदोष, पांडु, कोढ़ आदि इससे दूर होते हैं। इसके स्वरस को मात्रा दो माशे है। इसका दर्प दूर करनेवाला मलयाचन्दन और जुलाब जल है। दालचीनी इसकी प्रतिनिधि है।

प्राचीन महर्षियोंने यह सिद्ध किया है कि, इस बूटीके सेवनसे स्मरणशक्ति बढ़ती है। अतः विद्यार्थियों के बड़ कामकी है। उन लोगोंको भी लाभदायक है जिनका दिमाग कमजोर है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

इसके पत्तोंको घीमें घोंटकर पिलानेसे स्वर-भंग दूर होता है। और इसके पत्तोंके रसमें कूट और शहद मिलाकर पागलों को देते हैं।

बावची (बाकुची)

संस्कृत—सोमबल्ली, सोमराजी, शशिलेखा, सोमा, कृष्णफल अवल्गुज। बाकुची। हिन्दी-बाँवची। बंगला-सोमराज मराठी-बाँवचा। कर्नाटी-बउचिगे। तैलगू-तिप्पतीगे। तामिली-वोगिविट्टलु। ला० सोरालिआ कोरिलीफोलिआ।

यह क्षुप जातिकी औषधि है। इसके पत्ते मोटे २ गोल और अनीदार होते हैं। बालोंकी फूलोंका गुच्छा होता। बावचीके काले २ चपटे दाने इन्हीं बालोंमें होते हैं।

यह मधुर, तिक्त और पाक करने पर कटु, रसायन, विष्टंभनाशक, कफनाशक, रक्त-पित्तनाशक, रूखी, रोचक, सारक और शीतल है।

ज्वर, प्रमेह, कृमिरोग, कुष्ट, श्वाँसको दूर करती है। इसका रूख पित्त पैदा करता है। यह बालों को लाभदायक है। त्वचाके रोगोंको दूर करता है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

खाँसी, सूजन, वादी, वमन, कफ, कुष्ट और कमलका नाशक है। औषधिमें बीज ही लिया जाता है। इसकी मात्रा १ माशेकी है।

श्वेत कुष्ट की दवा

कुछ वैद्योंके मतसे यह दस्तावर और उत्तेजक है। बावचीके बीजका तेल श्वेत कुष्टपर बड़ा फायदा करता है।

बालछड़ (जटामासी)

संस्कृत—जटामासी, भूतजटा, तपस्विनी मांसी। हिन्दी-जटामासी। गुजराती-बालछड़। फारसी—सुबुंल।

इसका पौधा सुगन्धित होता है और कुछ कड़वा होता है। पहाड़ी धरती पर होती है।

यह कड़वी कषैली, स्मरणशक्तिवर्द्धक शक्ति देनेवाला, कान्ति बढ़ानेवाली, स्वादु, शीतल और त्रिदोष दूर करनेवाली है।

रक्त विकार, दाह, मृगी, कोढ़, ज्वर और समस्त चमड़े के रोगों में इसका व्यवहारलाभदायक है। जटामासीका तेल बालोंमें लगाते हैं। इससे दिमागमें ताकत होती है, सर दर्द और जुकामको लाभ होता है। बाल काले और लम्बे हो जाते हैं।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

जिसे गालोंका रंग बदलना हो वह जटामासीको पीसकर उबटनमें मिलाकर मले। गाल साफ हो जावेंगे। जिनको आँखकी पलकें गिर गई होवें वे जटामासीको हरे धनिये के पानीमें पीस कर लेप करें।

बाराहीकन्द (बिदारीकन्द)

संस्कृत-विदारी, स्वादुगंधा इक्षुगंधा, क्षीरशुक्ला, बाराहवदना, बदरी। हिन्दी—विदारीकन्द। मराठी—भूयकोहले। का०—नेलकुम्बुल। गुजराती-फगबेलानो कद। तैलगू—नेलगुम्बुडू। ला०—आईपोमियाडिजोटेडा।

यह नीची धरती में होता है। इसकी गाठों पर काटोंके सेमोटे२ बाल होते हैं। इसीसे इसका नाम बाराहकंद पड़ा है। यह मधुर, स्निग्ध, शीतल बलकारक और भारी है। आयु का बढ़ाने वाला-स्वरदोष दूर करने वाला, वीर्य्य-बर्द्धक, स्तनों में दूध उत्पन्न करने वाला, बल बढ़ाने वाला। रक्त पित्त बादी और दाहको दूर करता है। इसकी जड़ को सूत में बाँधकर बाँह या गले में बांधनेसे तिजारी ज्वर जाता रहता है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

यह पहाड़ी जमीन पर होता है। इसकी बेल पर जो कन्द लगते हैं, वे बहुत जहरीले होते हैं। उन कन्दों को तीन चार बार पानी में उबालकर तब व्यवहार करना चाहिये। यह दवा बड़ी तेज है इसकी तेजी दूर करने के लिए घी पिलाना चाहिये।

बांदा

संस्कृत-वन्दा, वृक्षरुहा, वन्दाक, वृक्षादनी। हिन्दी बांदा। बंगला—परगाछा, बांदरा। मराठी बादांगुल। गुजराती-गुन्दी। तैलगू-वसनिनिके। लाटिन—लोरेन्थस, लोंगिफोलियम।

यह एक प्रकार का पौधा है जो वृक्षों के डालियों पर उगता है। इसके पत्ते जैतून के वृक्ष की तरह गोल होते हैं और फूल तथा पत्ते लाल होते हैं। यह जिस पेड़ पर उगता है, उसी पेड़ के गुण के समान गुणकारी हो जाता है।

यह शीतल, कड़वा, कषैला और मीठा होता है। कफ, विष, पित्त दाह और श्रम का नाशक है। बलकारक और रसायन है। जिसके मुखसे खून गिरता हो वह इसको अंजीर के साथ घोटा कर पीये तो खून बन्द हो जाता है। इसी प्रकार

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

खूनी दस्त और बवासीर वाले रोगी यदि रविवार के दिन सूर्य निकलने के पहले इसे कमर में बाँध लेवें तो बड़ा लाभ होता है। इसके पत्तों को जला-कर दाद पर छिड़कने से दाद नष्ट हो जाता है।

यदि स्त्री गर्भवती न होती हो तो जो बांदा अनार या बेल के पेड़ पर उगा हो उसे लाकर और दूध के साथ औटाकर मासिक धर्म के निपटने के पश्चात् तेरह दिन तक बराबर पिलाने से गर्भ धारण की आशा है।

बोल—बीजाबोल

संस्कृत-हीराबोल, बीजाबोल। गुजराती-हीराबोलाई। फारसी-मुर। बंगला-बीजाबोल। मराठी-बीजाबोल।

यह एक प्रकार का गोंद है जो गूगल की तरह होता है और अरब में पैदा होता है। इसका सबसे बड़ा गुण यह है कि जिस स्त्री का मासिक धर्म न हो तो उसको इसके सेवन से ऋतु धर्म जारी हो जाता है। सूँघने से सिर का दर्द जाता रहता है। दो मासे खा लेने पर पेट के कीड़े मर जाते हैं। गुलाब जल के साथ सेवन करने से दस्तों की बीमारी में फायदा पहुँचता है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

संस्कृत—कर्कंधु, काल, फेनिल, कुवल, घोटा, सौवीर हि०—बेर। बंगला-कुलम्र। म०-बोर। उड़िया-कुडि। गुजराती-बोरडी। कर्नाटी—येरनु। तैलङ्गी रेगुचेट्टा। तामिली-रेयंति। अरबी जुजब। लाटिन-झिझिफस जुजबा। फारसी-सिद्र, कुनार।

बेर का वृक्ष भी बड़ा और काँटेदार होता है। पत्तियाँ छोटी-छोटी और गोल होती हैं। फूल पीले रंग के गुच्छेदार होते हैं। उन्हीं गुच्छों में फल का गुच्छा होता है।

बेर गर्मी को शान्त करता, खट्टा, गरम और तृषा को शान्त करने वाली है। यह आतों और मेदे के कीड़ों को मारती और इसका पानी दद्द रोग को सुखकर है। इसकी लकड़ी का बुरादा रक्त प्रवाहको रोकनेवाला है। इसके पत्तोंका लेप गरमीकी सूजनको पचाता और पकाता है। इसके पत्तोंका काढ़ा पोनेसे दिमाग तर रहता है। बेरकी जड़ कई प्रकारके काढ़ोंमें ली जाती है, जो ज्वर रोगोंको शान्त करती है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

बबूल

इसे संस्कृत में बब्बूल, किंकिराट, सपीतक और आभाषपद मोदिनी, हिं० बबूर, कीकर बं० बाबला, म० बांभूल, गु० बावला क० पुलई, तै० बलपत्तडु, कौ० गुइडा अं० एकाश्याट्री कहते हैं।

एक बबूलका भेद जालबब्बूल होता है।

गुण—बबूर कफको नष्ट करता और ग्राही है। यह कोढ़ कृमिरोग और विषविकारोंको नष्ट करनेवाला है।

बबूरका गोंद होता है। जो संग्राही, शीतवीर्य जलन, वातनाशक, भग्नसंधायक और रुधिरके तेजीको बन्द करनेवाला है।

गुण—रक्तातिसार, रक्तपित्त, प्रमेह और प्रदर को दूर करता है।

राजनिघंटुमें लिखा है कि—बबूरकी कलियोंमें से काला रंग निकलता है, औषधि तरीके से छालका सत्व चिकना और ग्राही तरहसे व्यवहारमें आता है। जाड़ेमें आंव पड़ती हो तो इसके पत्ते दिये जाते हैं। फलियोंको खाँसीके रोगमें देते हैं। बबूल का गोंद भी बहुत उपयोगमें आता है तथा नरम

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

डालियों की छाल अधिक रेशेवाली है। इससे कागज बनता है।

इसे फारसीमें अमुधीलान अथवा मुधीलान् कहते हैं। यह पीलापन लिए सफेद रंगका चमकता और पानीमें सब पिघल जाता है। यह स्वच्छ चिकना, मिश्री बनाने योग्य होना चाहिये-यह मखजनउल अदवियामें लिखा है।

मुसलमान हकीम

बबूलके गोंदको दवाके तरीके उपयोग करते हैं और इसको छातीकी पीड़ा मिटानेवाला कुव्वत देनेवाला और नम्रता देनेवाला मानते हैं।

अंग्रेजीदवा में

जो मत हैं उससे कोई गुण नहीं मिलते। बबूलकी फलियोंका रस निकालकर उसका सत्व निकालते हैं। उसको फारसी तथा अरबीमें अकाकिया कहते हैं। यह पदार्थ, भारी, कठोर और खुशकारक बालवाला होना चाहिये। इसके छोटे टुकड़ेको उजेलेमें देखा जाय तो कुछ कुछ नीलास लिए दीखते हैं। यदि वह टुकड़ा बड़ा हो तो

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

इसका रंग काला देखनेमें आता है। यह शीतल, ग्राही, और पाचक, गिना जाता है। यदि आँखोंमें से अत्यन्त कीचड़ और राध निकलती हो तो इसको आँजते हैं। इसे पानीमें गलाके मुखपर लगानेसे चमड़ेका रंग सुधरता है इसको अण्डे की सफेदीके साथ मिलाके जली हुई चमड़ीपर लेप करनेसे उत्तम असर करता है। अकाकियेके चूर्णको बुरकनेसे घाव होने से जो नस कट गई है उनसे बहता हुआ रुधिर बन्द होता है।

धन्वन्तरि निघण्टु

में लिखा है कि बबूलकी छाल अत्यन्त ग्राही है तथा पाचन-शक्ति बढ़ानेके लिए वैद्य देते हैं। तथा अंग्रेजी दवा ओककीछाल बदलेमें ली जाती है। इसका क्वाथ घाव धोनेमें बर्तनेसे जल्दी अंकुर लाके भर जाता है। बबूलके गोंदमें लाल किस्म का गोंद अत्यन्त गुणकारी गिना जाता है। यह खांसी और संधिवातके सदृश रोगमें वर्ता जाता है। तथा पेशाबमें शक्करके समान पदार्थ निकलता हो तो यह खाया जाता है। जिस नासूरमेंसे पीले

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

रंगका पानी बहता हो उसके वास्ते कोमल बबूल के पत्तों की पुल्टिश अत्यन्त गुणकारी है। फली भी खांसीके रोगमें उपयोगी है। देशी लोग बबूल की गोंदको तिलके साथ मिलाके खाते हैं।

मुखपाक या जीभकी जलन पर

बबूलको कोंपल पीसकर मलना सब प्रकारके मुँह आनेको गुण करता है।

सूजाककी दवा

बबूलको कोंपल एक तोले, गोखरू एक तोले, दोनोंका शीरा निकालकर थोड़ा बूरा मिलाकर पीवे।

वीर्यको गाढ़ा करे

बबूलकी कच्ची फली, मौलसिरी की छाल, शतावर, और मोचरस समभाग लेकर और सबको बराबर बूरा मिलाकर चूरन बनावे। मात्रा एक हथेली भर।

मूत्रकृच्छ्रकी दवा

बबूलकी कच्ची फली छायामें सुखाकर, कूट, छानकर घी में भूनकर थोड़ा बूरा मिलाकर सबेरे अठन्नी भर खाया करे।

रक्तस्रावकी दवा

बबूलका गोंद भुना हुआ बराबरका गेरू पीसकर प्रातःकाल नौ माशे खावे।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

कुष्टकी दवा

बबूलकी छाल ३ तोले ८ माशे जौकुट करके जलमें भिगोकर प्रातःकाल मलकर-छानकर नित्य इसी प्रकार पीवे।

हाथ पाँवमें अधिक पसीना आनेकी दवा

बबूलकी सूखी पत्तियाँ पीसकर हाथ पावों पर मले।

बालकके चिनगकी दवा

यदि बालक मूत्र करते समय रोने लगे तथा बार-बार अपनी डण्डी पकड़कर खींचे तो जानना चाहिये कि बालकको चिनग रोग है। उसके दूर करनेका उपाय यह है कि बबूलके गोंदकी चार-पाँच डली कपड़ेमें बाँधकर पानीमें भिगो देवे। अन्तर उस पानीमें मिश्री मिला दिन भरमें पाँच बार पिलावे।

बंशलोचन

इसके तुगाक्षिरी आदि नाम हैं। बंग भाषामें बंशलोचन, गु० बाँसकपूर, फा० तबासीर, अं० दी मात्रा आफ दी बम्बु है।

यह मोटे और पुष्ट बाँसके भीतरसे निकलता है। यह एक प्रकारका पत्थर है। जब यह सफेद

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

रस बासमें सूख जाता है तब इसके कंकर बन जाते हैं। यह ठण्ढा, मधुर, पुष्ट, बलवर्द्धक, प्यास, क्षय, ज्वर, दमा, खांसी, पित्त, रुधिर विकार और कमल वायु रोगको शान्त करता है तथा पाण्डु, दाह, कामला, व्रण, और वातज मूत्र-कृच्छ्रको दूर करता है। इसकी मात्रा ६ रत्ती है।

बच

इसके उग्रगन्धा आदि नाम हैं। बं० बच, म० वेखंड फा० सोसन, अं० अकोरस केलोमस कहते हैं।

यह गुल्म जातिकी बनस्पतिकी लकड़ी है इसका रंग काला और सुगन्धित होता है। कलकत्ते में यह असली मिलती है। सफेद बचको खुरासानी बच कहते हैं।

बच गरम है, वमन लाती है। अग्निको प्रदीप्त करती है। यह निबन्ध, उदराध्मान, मृगी शूल, कफ, उन्माद, मूत्ररोग, कृमिरोग और वायु रोगको हरण करती है। इससे मल मूत्रका कोप दूर होता है। इसकी मात्रा १ माशा है।

बड़ी बचको लोग कुलींजन और कुलंजन

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

कहते हैं। यह पानकी जड़ है। कफनाशक है, खाँसीको दूर करती है, रोचक है, हृदय और मुख को निर्मल करती है तथा कण्ठको सुधारती है।

गूल्म शूलकी दवा
बचादि चूर्ण बनाना

बच, हर्रकी छाल, सेकी हींग, सेंधा नोन, अमलवेत, जवाखार और अजवायन इनका दो टंक चूर्ण उष्ण जलके साथ सेवन कराओ।

बिरोजा

इसके कुंदुरु आदि नाम हैं।

यह मीठा है, तिक्त है, तीक्ष्ण और कडुवे रसवाला है। त्वचाको हितकारी है और पसीना, ज्वर, बात, पित्त, कफ, दाह, मुखरोग और प्रदर रोगको हरता है। इसका लेप ठण्ढा है। इसकी मात्रा ४ रत्ती है। इसका प्रतिनिधि दोनों बहमन अथवा रूमी मस्तगी है। इसका दर्पनाशक उन्नाव है। यह शल्यकी वृक्षका गोंद है।

बेल

सं० बिल्व, हिं० बेल, बं० वेल, बिल्व, म० बेल, बेलफल गु० बिलोबिलू, अं० बंगाला किंङ्गस।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

बेलके बृक्ष बड़े बड़े होते हैं। इसकी डालियों में काँटे होते हैं। पत्ते तीन-तीन एक डालीमें होते हैं। फूल सफेद और सुगन्धदार होते हैं। ग्रीष्म ऋतुके आरम्भमें इसके पुराने पत्ते झड़ कर नये पत्ते निकल आते हैं। इसकी लकड़ी चन्दन की तरह सफेद रंगकी होती है। इसकी जड़ दश-मूलकी प्रथम औषधियोंमें से एक है।

ज्वरकी दवा

बेलके पत्तोंका ताजा रस शहदमें देनेसे ज्वर जाता रहता है और दस्त भी साफ आते हैं। बेलका जड़का काढ़ा पिलाने से ज्वर जाता रहता है और हृदयकी धड़कन दूर होती है।

आँखकी दवा

इसके पत्तोंकी लुगदी दुखती आँख पर बाँधनेसे दर्द और सूजन भी दूर होती है।

दस्त संग्रहणीकी दवा

बेलके कच्चे और सूखे हुये चूर्णको खाँड़के साथ फाँकनेसे दस्त और संग्रहणी दूर होती है।

(१) लू लगने पर बेलका शर्बत पिलाना चाहिये।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

(२) बेलका मुरब्बा, अतिसार और बहुत पुरानी संग्रहणी तथा रुधिर विकारको दूर करता है।

गुल्म रोगकी दवा

कच्चा बेल और गिलोयका निरन्तर सेवन करनेसे बात-गुल्मका रोग दूर हो जाता है।

सर्प काटने पर

बेलकी जड़ और कैथकी जड़को पीसकर पिलानेसे सर्पका विष उतर जाता है।

बहरेपनकी दवा

बेल-फलको गोमूत्रमें पीसकर और तेलमें पकाकर उस तेलकी बूँद कान में टपकानेसे बहरा-पन जाता रहता है।

पेटके कृमि पर

बेलके पत्तोंका अर्क पीनेसे पेटके कीड़े मर जाते हैं।

अतिसारकी दवा

बेलकी छाल और आककी छालका काढ़ा कर शहद और मिश्री मिलाकर पीनेसे सब प्रकारके अतिसार दूर हो जाते हैं।

देहकी दुर्गन्धि दूर हो

बेलके पत्तोंका रस देह पर मलनेसे देहकी

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

दुर्गन्धि जाती रहती है।

हैजेकी दवा

बेल और सोंठका काढ़ा देनेसे उबकाई और विशूचिका जाती रहती है।

देहकी जलन पर

बेलकी कच्ची गिरीको तिलके तेलमें ७ दिन तक पड़ी रहने दे। फिर इस तेलको देह पर और तलुओं पर मर्दन करके स्नान करे तो जलन मिट जाती है।

इस प्रकार बेल अनेक रोगोंमें लाभदायक है।

भाँग

संस्कृत—भंगा, गंजा, मातुलानी, विजया, जया, मादिनी। हिन्दी—भाँग, भंग। बंगला-सिद्ध। मराठी, गुजराती-भाँग। फारसी—कनब, जुजवआजम। ला०—केनेबिष इन्डिका। अंगरेजी इन्डियन हेम्प।

यह एक क्षुप जातिका पौधा है। इसके पत्ते लम्बे, कँगूरेदार और नीमके पत्ते के समान पर इससे छोटे होते हैं। भाँग गाँजा और चरसका रस इसी वृक्षमेंसे निकलता है। यह वादी को साफ करती, कोढ़ नाश करती, मेदा उत्पन्न करती, बल और

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

वीर्यको बढ़ाती, अग्निकारक, कफनाशक, और रसायन होती है, साथ ही यह रुचि उत्पन्न करती मलको रोकती, अन्नको पचाती, निद्रा अधिक लाती, कामदेवको बढ़ाती और बातको नाश करती है।

(१) भाँग दूधके साथ बवासीरपर लेप करने से बवासीरको आराम करती है।

(२) भुनी हुई भाँगका चूर्ण शहदके साथ खानेसे अतिसार संग्रहणी और मन्दाग्नि दूर होती है।

(३) इसके पत्ते घोंटकर पीनेसे गालोंपर लाली छा जाती है।

(४) भांगका पूरा किन्तु छोटा पेड़ पोसकर घावपर लगानेसे घाव आराम होता है।

(५) चोटकी पीड़ा दूर करनेमें इसका लेप बहुत ही लाभदायक है।

(६) भांग सेवनसे स्तंभन शक्ति बढ़ती है।

(७) बवासीरमें जब रोगी व्याकुल हो तब इसका धुआँ देनेसे तत्काल शान्ति मिलती है।

(८) इसके पत्तोंका सूँघनेसे छींक आती है।

(९) भांगके पत्तोंका रस सीरपर मलनेसे जूँ मर जाती है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

(१०) कानमें डालने से कानका दर्द और कीड़े मर जाते हैं।

(११) खाँड़के साथ खानेसेवीर्य गाढ़ा होता है।

(२) इसके पत्तें पीसकर अंडकोष पर बाँधने से सूजन दूर होती है।

(१३) इसका बीज पेशाब अधिक लाता, वीर्यको सुखाता धातुको फाड़ता, आँखोंकी रोशनी कम करता और स्तंभन करता है।

भिलावा

संस्कृत—भल्लातक, अरुष्कर, अग्निक, अग्निमुखी, भल्ली, वीरवृक्ष। हिन्दी—भिलाए, भिलावा। बँगला-भेला। उड़िया-भल्लीय। तै-शलगूनकोट्टई। मराठी-बिबवी। कर्नाटी-गौडबी, कौरबीज। को०-बिब, बिबे। गुजराती—भीलामूं। फारसी-बिलादर। अरबी हबुलकल्ब। अंग्रेजी-मार्किंगटन।

भिलावाके पेड़ बड़े२ तथा इसके पत्ते गूमाके समान होते हैं। यह कषैला, गर्म हल्का, बात, कफ, उदर रोग, कोढ़, बवासीर, संग्रहणी, गुल्म, ज्वर, मन्दाग्नि, प्रमेह, क्रिमि तथा व्रण रोगोंको नाश करता है। इसका फल स्निग्ध, मीठा और कृमि रोगोंको दूर कर दाँतोंको स्थिर करनेवाला

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

है। इसके फलमें जो गुण हैं, वे ही छालमें भी हैं। पका भिलावा पानीमें छोड़नेपर जो डूब जाये वही उत्तम होता है। इसकी मज्जा मधुर होती है। यह बृंहण वीर्यको उत्तम करनेवाली, जठराग्निको प्रदीप्त करनेवाली, शोष, अरुचि, दाह और पित्त को भी नाश करनेवाली है। भिलावा की ठंडल मधुर कषैली बातको कुपित करनेवाली, स्वादिष्ट, पित्तका नाश करनेवाली, जठराग्नि दीपक तथा बालोंको हितकारी है।

भिंडी

संस्कृत-भेंडा। हिन्दी-भिंडी, रामतरोई। बंगला-भिंडा शाक। गुजराती–भींडा, रामभंडा। लाटिन–हिबिस्कस एस्क्यूलेन्ट्स।

इसका पेड़ हाथ डेढ़ हाथका होता है। पत्ते कटे हुए हथेली के समान होते हैं। यह हिन्दुस्तान के हर हिस्सेमें पैदा होती है। इसकी भाजी स्वादिष्ट होती है।

यह ग्राही, पौष्टिक, बलवर्धक, शुक्रोत्पादक और कफकारक है। खाँसी और मन्दाग्निमें बड़ी लाभदायक है। जिस पुरुषको चाहे जिस कारण

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

पुरुषत्व खो गया हो, यदि वह पाव भर भिंडीकी जड़का चूर्ण गायके दूधके साथ सेवन करे तो फिर पुरुषत्व प्राप्त कर लेवे।

वीर्यदोषकी दवा

प्रमेहके रोगियोंको चाहिये कि भिंडीकी जड़को दूधमें औटाकर उसमें घी और खाँड़ मिलाकर सेवन करें तो सब प्रकारके वीर्यदोष नष्ट हो जावेंगे

सूजाककी दवा

किसी प्रकारका मूत्र और वीर्यमें दाह होता हो तो भिंडीका सर्वत सेवन करनेसे दाह नष्ट हो जाता है। भिंडीकी जड़के साथ काली मिर्च और इलायची मिलाकर पीनेसे कठिन सूजाकको लाभ होता है

भुइँआँवला (भद्रआँवला)

संस्कृत–शिव बहुपुत्रा, बहुवीर्य्या, बहुफला, तामलकी। हिन्दी–भुइँआँवला, जरआँवला। बंगला-भुइँआँमला। मराठी–भूयआँवली। गुजराती-भोंआमली। का०-आरुनेल्ली। तैलगू–नेलाऊसीरके।

यह कड़वा, कसैला, मधुर और शीतल होता है। कफ खुजली, रक्तपित्त, खाँसी, प्यास और घावको लाभदायक है। इसका केवल फल लिया

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

जाता है, जिसकी मात्रा दो माशे की होती है।

यह गर्म मुल्कोंमें होता है, इसके पत्ते लजाधुरके पत्तेकी तरह होते हैं और वर्षामें उत्पन्न होता है। इसका फल खट्टा और कड़वापन लिये होता है।

(१) कैसा ही पुराना बुखार क्यों न हो इसका पञ्चाग पिलानेसे जाता रहता है।

(२) यदि कहीं खुजली हो तो इसके हरे पत्तोंको पीसकर उसमें नमक मिलाकर लगाने से खुजली दूर हो जाती है।

(३) जलोदरके रोगियों को इसका पञ्चांग पिलाना चाहिये। इससे खूब पेशाब आता है।

(४) जाड़ा बुखारवालेको यदि इसकी नई पत्तियाँ और मिर्चको एक साथ पीसकर पिलाया जावे तो बड़ा लाभ होता है।

(५) इसकी जड़को चावलके पानीके साथ उस स्त्रीको देनेसे जिसका मासिक स्राव बहुत बढ़ गया हो, तुरत घट जाता है।

(६) इसके कोपलोंको मेथीके दानेके साथ देनेसे पेचिस दूर हो जाती है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

महाराष्ट्री

संस्कृत—महाराष्ट्री। हिन्दी मरहठी। मराठी—मराठी। गुजराती—मरेठी। फारसी—बाबुनगाउ। अरबी—उकवाहान। अंगरेजी—पेनिरायल।

इसका पौधा एक हाथ लम्बा, फूल पीले रंग का होता है। गुणमें चरपरी तीक्ष्ण गरम है। बात और कफके रोगोंमें लाभदायक है। यह अकरकराके समान स्वादयुक्त तथा गुणकारीभी है।

खाँसीकी दवा

महाराष्ट्रीकी ठोंड़ी पानीमें रखकर खाने से खाँसी अच्छी होती है।

जीभकी सूजनमें

महाराष्ट्रीक ठोंड़ी दोनों लवणके साथ रगड़ कर जीभ पर रखे तो जीभकी सूजन दूर होती है।

मंजीठ

इसके मंजिष्ठा, विकसा, जिंगी, कालमेषिका, मंडूकपर्णी, भंडीरी, मंडी, योजनवल्ली, रसायनी, अरुणा, काला, रक्तांगी, रक्तयष्टिका, भंडीतकी, गंडीरी, मंजूसा और वस्त्ररंजनी ये संस्कृत नाम हैं। हि० मजीठ बं० मंजिष्ठा, मं० मंजिष्ठा, ता० मंजिल फा० रूनास, अ० फुवह तुसिवग उरुकुस्सुवागीन, इं० मडररूट, ला० रुबीया।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

यह लता जातिकी औषधि है। बहुत लम्बी बेल और पत्ते कुछ लम्बे मेढकके रंगके होते हैं। इसकी उत्पत्ति नेपाल, अफगान और ग्रीकके मुल्क में होती है। वहाँ इससे कपड़े रँगते हैं और यह खेतोमें बोई जाती है। मजीठकी जड़ लाल रंग की होती है। यही प्रयोगमें ली जाती है।

गुण—मजीठ मीठी, कड़वी, कषेली, भारी और उष्णवीर्य है।

प्रयोग—मजीठके सेवन करनेसे स्वर और वर्ण उत्तम होता है। एवं विषदोष, कफ, सूजन, योनिरोग, कर्णरोग, रक्तातिसार, कुष्ट, रुधिरके दोष, विषर्प और प्रमेह रोगका शमन करती है।

लक्ष्मीविलास तेल बनाना

मजीठ, देवदारु, भीड (वृक्षविशेष), दोनों कटियाली, वच, पत्रज, शुद्धगंधक, हर्रकी छाल, बहेड़े की छाल, कपूर, आँवला और नागरमोथा ये सब दो दो टके लेके क्वाथ बना लो। यह क्वाथ १ सेर भर तेलके साथ पकाकर तेल मात्रा रह जानेपर इस तेलमें छड़, मूर्वा, मैनफल, तज,

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

चम्पाकी जड़, शमलतंतु, पिपलामूल और सोंचर नोन ये दो दो टके भर तथा लोबान (ऊद), गंधा पिरोजा, असगन्ध, नख (जो कि अष्टांगमें सुगन्धि विशेष होती है) और छड़ टके-टकेभर और इलायची, लौंग, चंदन, जूहीके फूलोंकी कली, कंकोल, अगर और केशर ये पैसे-पैसे भर और दो टंक कस्तूरी इन सर्व औषधोंका बारीक चूर्ण करके डाल दो। इसको मन्द-मन्द आँचसे पकाते-पकाते औषधें मिलाकर तेल मात्र रह जानेपर दो टंक कपूर डालकर छान लो। अब इस तेलका मर्दन करो तो सर्व वातरोग, समस्त प्रमेह, शोथ, गुल्म, ज्वर ये सर्वरोग दूर होवेंगे।

दाँत दर्द में

मजीठ लगावे।

मस्तक की पीड़ामें

मजीठको मस्तक पर बाँधे।

खुजली और फोड़ेकी दवा

मंजीठ, त्रिफला, कुटकी, वच, दारुहल्दी, गुर्च और नीमकी छालके दो टंक चूर्णका क्वाथ १ मंडल

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

(चालीस दिन) पर्यन्त पिलाओ तो वातरक्त, कुष्ठ, पामा (खुजली) और फोड़े ये सब दूर होंगे। यह लघु मंजीष्ठादि क्वाथ है।

मसूर

सं० मंगल्यक, मसूर, मंगल्या और मसूरिका, हिं० कपूर, मसुरा—शे, तै० मसूर पुष्पु, ता० मिसूर पुरपुर, फा० बनोसुर्ख, अ० अदस, अं० लेंटिन, ला० हर्बेलेन्स।

गुण—पाकमें मधुर, संग्राही, शीतल, हलकी, कफपित्त निवारक, रक्त-दोषनाशक, रूक्ष, बादीकर्ता और ज्वरघ्न है।

मुँह आने पर

मसूर जलाके उसकी बराबर सफेद कत्था मिलाके पीसकर मुँहमें बुर्के।

बिगड़े हुए घावकी दवा

मसूर जलाकर भैंसकेदूधमें मिलाकर दोनों समय घाव पर लगावे तो अशुद्ध घावको गुणकरे।

बरसाती दाने (फोड़े) की दवा

मसूरके छिल्के जलाकर, आँवला जलाकर उसकी बराबर मेंहदी, कवेला, थोड़ा नीला थोथा ना, थोड़े तेलमें मिला पीसकर दानों पर मले।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

झाईं की दवा

मसूर नींबूके रसमें पीसकर लगावे ।

मरिच

इसे संस्कृतमें मरिच, वेल्लज, कृष्ण, उषण और धर्मपत्तन, कहते हैं । हिं० कालीमिरच, गोलमिरच, बं० मरिच, म० मिरें, क० मेणसु, तै० मरियाल-मरियन, अ० फिलफिल्ले अवीदक, गु० मरी. तिखां, फा० फिलफिले अस्वद, स्याहगिर्द, इं० ब्ल्याक पेपर, ला० पाईपरनिग्रम ।

यह गुल्मजातिकी औषधका फल है । काली मिरच दो प्रकारकी प्रायः देखनेमें आती है । एक पूरबी और दूसरी दक्षिणी मरिच उत्तम होती है और कोई धुली हुई मिरचों को सफेद मिरच कहते हैं । परन्तु सफेद मिरचकी जाति ही पृथक् है ।

मिरचका रस चरपरा है । गुणमें तीक्ष्ण, अग्निदीपक, कफ, वात हरणकर्त्ता, उष्णवीर्य, अतएव पित्तकर्त्ता, रूक्ष, श्वांस, शूल और कृमिरोगको दूर करता है । आर्द्र (गीली) काली मिरच पाकमें मधुर और अत्यन्त गरम नहीं है । चरपरी और किञ्चित् तीक्ष्ण, गुणविशिष्ट, कफ निःसारक और पित्तकर्त्ता नहीं है ।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

मिर्च कफके जालको काटनेको लिए तलवारके समान है। सन्निपात ज्वरको नाशकर्त्ता, रक्तपित्त को बढ़ाने वाली, वादीको हिचकी को दूर करती है। गांठ, गलगंड, अ ची, कानका शूल इनको नष्ट करती है।

नेत्र रोगों में

काली मिरच, कच्ची खाँड़ और घी इनको मिलायके खा तो समस्त नेत्र रोगोंको नष्ट करे।

खाज और कोढ़की दवा

काली मिरचके साथ जौ मिलाय गोमूत्रमें पीसकर लेप करनेसे विस्फोट (खाज) और कोढ़ दूर होता है।

इसकी मात्रा १ माशेकी है। यदि सेवन करने से अवगुण करे तो मिश्री, घी, दूध, शहद और चावल यह सब इसके दर्पनाशक अर्थात इसके अवगुणको दूर करनेवाले हैं। मिरचका प्रतिनिधिके अभाव में पीपल लेनी चाहिये।

मूली

इसे संस्कृतमें लघुमूलक, शालमर्कट, विस्र, शालेय मरुसंभव, चाणक्यमूलक, तीक्ष्ण और मूलकपोतिका। गु० मूला, क० मूलंगी, तै० शूतिदंपा, फा० तुरब, इं० रेडीश कहते हैं।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

मूली दो प्रकारकी होती है। एक छोटी, दूसरी बड़ी। छोटी मूली कटु, उष्ण, रोचक, हल्की पाचक त्रिदोष नाशक और स्वर-शोधक है।

यह ज्वर, श्वास, नासिका रोग, कंठपीड़ा और नेत्र रोगको नाश करती है।

बड़ी मूली-रूखी, गरम, भारी और त्रिदोष प्रकटकर्त्ता है। यदि इसको तेल डालकर बनावे तो यह त्रिदोषनाशक हो जाती है।

कर्ण रोग में मूली का तेल

मूली के पत्तों का रस तीन भाग। एक भाग मीठे तेल में औटावे, जब रस जलकर तेल मात्र रह जाय, तब उसी तेल को कान में टपकावे।

गला बैठने पर

मूली के बीज कूटकर गर्म पानी में पीसकर लेप करे।

कंठमाला की दवा

मूली के बीज बकरी के दूध में पीसकर लेप करे।

दादकी दवा

मूलीके बीज नीबूके रसमें खरलकर गोलियाँ बनाकर लगाया करे। तथाच—

मूलीके बीज, सीताफलकी पत्तियोंके रसमें पीसकर गोलियाँ बनाकर लगावे।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

जलंधरकी दवा

मूलीके पत्तोंका रस पीना चाहिये ।

खूनी बवासीरकी दवा

मूलीके पत्ते काटकर छायामें सुखावे । फिर कूट छानकर एक हथेलीभर बराबर बूरा मिलाकर फंकी बनावे और चालिस दिवस पर्यन्त फाँके ।

पेशाबकी पथरीमें

मूलीके पत्तोंका रस चार तोले आठ माशे निचोड़कर तीन माशे अजमोद फाँककर उसीसे निगल जाय ।

बिच्छू काटनेपर

मूली नोन मिलाकर घावपर रखे और यदि मूलीको बिच्छूपर रखे तो मर जाय ।

मुंडी, महामुंडी

मंडी, भिक्षु, श्रावणी, तपोधना, मुंडतिका और श्रवणशीर्षका इसके ये संस्कृत नाम हैं। हिं० छोटी बड़ी गोरखमुंडी, बं० मुडरी, मुँइकदम, का० कियोबोलतर, तै० बोडसरपुचेट्टु, ता० कोदउ, अ० कमादरयूस, ला० स्फिरेंथ सद्दंडिकम कहते हैं।

यह प्रसर जातिकी रूखड़ी है । काली जमीन में तथा जलप्राय स्थानमें बहुत होती है । इसका

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

छुवा पृथ्वीमें फैलाहुआ रहता है। फूल गाल कनेरी रंगका होता है।

यह पाकमें कड़वी उष्णवीर्य, मधुर, हल्की, स्मरणशक्तिवर्द्धक होती है।

प्रयोग—गलगंड, अपची, मूत्रकृच्छ्र, कृमि, योनिरोग, पाण्डु, श्लीपद, अरुचि, अपस्मार, प्लीहा, मेदरोग और गुदाकी पीड़ाको निवारण करती है।

इसका सर्वाङ्ग ग्रहण किया जाता है। मात्रा ६ माशेकी है।

मेथी

इसे संस्कृतमें मेथिका, मेथी, पीपनी, बहुपत्रिका, बोधिनी, हुवीजा, जाति, गंधफला, बल्लरी, चन्द्रिका, मन्था, मिश्रपुष्पा, कैरवी, कुंचिका और बहुपर्णी कहते हैं। हिं० मेंथी, ता० वेमठ्यम, गु० कदम, फा० तुख्मेशमपीत, अ० बजरुल हुल्बा, क० मेंथयक, तै० मेतुलु, इं० फेनग्रीक, ला० ट्राइगोनेला।

यह गुणमें वायुनाशक, कफनाशन, ज्वरघ्न, रुचिप्रद, अग्निदीपक और रक्तपित्त प्रकोपक है।

आयुर्वेद ग्रन्थोंमें—मेथीमें दर्द नष्ट करनेकी, पाचन करनेकी, उसी प्रकार कामोत्तेजन करनेकी शक्ति है। बदहजमी, अरुचि, स्त्रियोंका अतिसार

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

और संधिवातके दर्दमें खानेको मेथीमोदक वगैरह नामसे उसके लड्डू बनानेकी विधि कही है और उसमें बहुतसे खुशबूदार पदार्थों का एक भाग और सबके बराबर मेथी लेनी कही है।

यूनानी हकीम—मेथीके बीजोंको गरम, फोड़े पकानेवाले, खुश्क, दस्त खुलासा लानेवाले, पित्त निकालनेवाले और पुरानी खाँसी तथा तिल्ली और कलेजा मोटा हो गया हो, ऐसे रोगोंमें अत्यन्त गुणदाता मानते हैं। बाहर और भीतर की सूजनके लिये और जली हुई चमड़ी के ऊपर तथा बाल झड़ते हों उनको रोकनेको मेथीके पत्तों की पुल्टिश बहुत ही गुणकारी है।

प्राचीन ग्रीक वैद्य डायोसको राइडीस—सूजनके दर्दोंमें मेथीके चूनकी पुलटिश बाँधनेकी प्रशंसा करता है।

दक्खिनके वैद्य—मेथीके बीजोंको प्रथम अग्नि पर, सेंकके फिर पानीमें मिलाय ऐंठनके रोगोंमें देते हैं।

सुश्रुत संहितामें—मेथी पित्तशोणित और वादीनाशक है (अर्थात् पित्त काटकर रुधिरको

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

सुधारनेवाली (पौष्टिक) स्तन्य अर्थात् स्तनमें रुधिर शुद्ध कर दूध उत्पन्न करती है।

यूनानी हकीम—मेथीको मूत्रज और आर्त्तव दोषहर मानते हैं और संधिबातमें प्रसूतमें स्त्रियोंकी भूख कम होगई हो तो मेथीके लड्डू खानेको कहते हैं।

मेथी का काढ़ा बवासीर को गुण करता है।

मेथीका चूर्ण २ सेर लेकर १ सेर तेलमें एक महीना भर भिगो रक्खे। अनन्तर ४ सेर गुड़ अथवा लाल शक्करका चाशनी करे। मेथीको आँच पर उस तेलमें भूनकर चाशनी में डाल दे, और भूना हुआ गोंद पाव भर, सोंठ, मिर्च, पीपरी, दो दो तोला डाले। इसमेंसे दो तोलासे ४ तोला तक सरदीमें खाय तो कमर और घुटनोंका दुखना अकड़ना आदि वायुके सभी रोग दूर हो जाते हैं। यह मेथी पाक बहुत गर्म होता है। ग्रामीण लोग प्रायः इसका सेवन किया करते हैं।

लकवा पर

मेथी डेढ़ छटाँक, गुड़ आध पाव, गेहूँकी भूसी पाव भर, सहजने की छाल आधी छटाँक

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

लहसन डेढ़ तोला, गायका दूध डेढ़ सेर, इनकी खीर बनाकर खानेसे लकवा जाता रहता है।

मेथी-इसके दीपनी आदि नाम हैं, फारसी में तुख्ममें शमपीत डाक्टरी नाम फेजग्रीक है। यह बलिष्ट और दीपन है, विषके कीडोंको खाती है। वीर्य दोष, गोला, शूल, ज्वर, कफ इनको हरती है। रक्त व पित्तको कुपित करती है। बाजीकरणको हितकर है। इसकी मात्रा दो माशे की है। बनमेथीमें मेथीसे कमती गुण है। मेथीमें पीड़ा हरनेकी ताकत है। अजीर्ण, अरुचि, स्त्रियोंके अतिसार और संधिवातमें इसके लड्डू हितकर हैं। यूनानीमें इसके बीज गरम, फोड़े पकानेवाले खुश्क दस्तावर हैं। तिल्ली, पुरानी खाँसी, खाँसीसे कलेजा फूलना इनको गुण करती है। सुश्रुतमें कहा है कि मेथी स्तनोंमें रुधिर को शुद्ध कर दूधको बढ़ाती है। पित्त, शोणित और बादी को हरती है।

मेथी-इसके मेथिका आदि नाम हैं। यह दीपनी और उष्ण है। हृदयको बल देती, विष्टाके कृमि, गोला, कफ और वायुको नष्ट करती है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

मर्यादबेल

संस्कृत—मर्याद वल्लि । हिन्दी—मर्याद बेल ।

यह बेल धरती पर फैली हुई पाई जाती है और बारहो महीने मिलती है । वर्षा ऋतुमें बहुत पीले रंगके आकारमें घण्टीकी तरह होती है । फल गोल अनीदार होते हैं ।

गुणमें—भारी, ग्राहक, तीक्ष्ण, शीतल, रेचक और वातकर्त्ता है ।

(१) इसकी जड़ या फूलको पीसकर गाँठों पर बांधनेसे गाँठ बैठ जाती है ।

(२) जड़ वा पत्तेको अगरके साथ पीसकर मस्तक पर लेप करनेसे मस्तककी पीड़ा दूर होती है ।

(३) इसका काढ़ा खाँसीको दूर करता है ।

(४) इसके पत्तों पर रेंडीका तेल लगाकर सेंककर पेट पर बाँधनेसे उदर शूल अच्छा होजाता है ।

(५) जलोदर रोगमें इसके पत्तों का रस पिलाते और पेट पर बांधते हैं ।

(६) इसे पीस छान कर खांड़के साथ देने से प्रमेह अच्छा होता ।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

(७) किसी-किसीके मतसे इसका प्रयोग स्त्रियोंमें गर्भ धारणके लिये करना लाभदायक है।

(८) इसके फलोंकी पुल्टिस फोड़ेोंको बैठाने और पकाने के लिए लगाते हैं।

मटर

संस्कृत-कलाय, वर्तुल, हरेणुक। हिन्दी-मटर। मराठी-बटाणे। गुजराती-बटाणा। तैलगू-पेद्दहर्च। ला०-पाइसम सेटीवियम। अंगरेजी--फील्डपी।

यह छोटी बड़ी दो प्रकार की होती है। मधुर, स्वादु, पाकमें रूखी और वितल है। बात पैदा करती और बिकार उत्पन्न करती है।

झाँई की दवा

जिसके मुखपर झाँई आदि हो वे इसका उबटन करें।

सूजन पर

उँगलियोंके सूजनको मटरके काढ़ेसे धोना लाभदायहै।

मूसाकर्णी

संस्कृत--आखुकर्णी पर्णिका। हिन्दी- मूसाकर्णी। बंगला-इदूरकाणिपाना। मराठी-लघु उन्दिरकानी। कर्नाटी-बल्लीहरुहे। गुजराती--उन्दरकनी।

यह बेल तीन चार फीट लम्बी होती है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

चौमासे में बहुत होती है। बारहो महीने मिलती है। इसके पत्ते चूहेके कानकी तरह होते हैं। इस कारण इसका नाम मूसाकर्णी है। इसका सर्वाङ्ग दवाके काममें आता है।

गुणमें कटु, तिक्त, कषाय, शीतल और हलकी। मूत्ररोग, कफरोग, कृमिरोगमें लाभदायक है। शूल-ज्वर, मूत्रकृच्छ्र, प्रमेह, अफरा, कोढ़, कामला, भगन्दरमें लाभदायक है। चूहेके काटने पर इसका रस लगानेसे विष दूर हो जाता है। इसकी पुलटिस फोड़े पर बाँधते हैं।

(१) पेशाब न उतरता हो तो इसे काली मिर्चके साथ पीस छानकर देव।

(२ बच्चोंके पेटमें कीड़े हों तो इसका रस उन्हें दें, कीड़े मर जायँगे।

३) नाकड़े (पीनस) के रोगमें इसके पत्तोंका रस भाँगरे के रसमें मिलाकर नास लेवं।

(४) सर्पदंशमें इसका रस पिलाते हैं।

(५) कानके दर्दमें रसको गरम कर तेल मिलाकर कानमें छोड़ते हैं।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

(६) मस्तक पीड़ामें इसके पत्ते मस्तकपर बाँधते हैं।

दाँतोंके कीड़े मर जायँ

इसके रसको शहतमें मिलाकर कुल्ली करनेसे दाँतोंके कीड़े मर जाते हैं।

मालकांगनी

संस्कृत-ज्योतिष्मती, कटभी, कंगुनी, ककुन्दनी। हिन्दी-मालकाँगनी। बंगला-लताफटकी। मराठी-मालकांगोणी। का०-कौगुएरडू। तैलङ्गी-गावजी। गुजराती-मालकांगणी। लाटिन-सिलास्टसपेनीक्यूलेटा।

मालकाँगनीका तेल निकालने की विधि

मालकांगनीको कूट गजीकी थैलीमें भर उसका मुँह सुईसे सीकर ताँबेके बासन में रखकर उसके नीचे कोयलोंकी आग सुलगावे और थैलीके ऊपर एक भारीसा पत्थर रख दे तो तेल निकल आवेगा।

(१) मन्दाग्निको मिटाता है।

(२) अजीर्णताका नाश करता है।

(३) पक्षाघात और मृगी रोग दूर होते हैं।

(४) इसके तेलके व्यवहारसे सन्धिवात और बादीके रोग मिट जाते हैं।

(५) इसका तेल बुद्धिको बढ़ानेवाला है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

और (६) हाथ पर मलनेसे आँखोंको बड़ा लाभ पहुँचाता है।

मूँगा

संस्कृत—प्रवाल। हिन्दी मूँगा। मराठी—प्रबाल। गुजराती—वराला। अरबी—बुसुर अहमर। फारसी—मिरज। लाटिन—कोरेलमरूब्रम। अंगरेजी—रेड कोरेल।

मूँगा समुद्रमें होता है, और भोरके सूर्यकी भाँति लाल चमकता है।

मूँगा भस्म दमावाले रोगीको बड़ा लाभ पहुँचाती है।

बहरेपनकी दवा

इसको रोगनबलसाँमें मिलाकर कानमें छोड़नेसे बहरा सुनने लगता है।

औषधियाँ

गोंदके साथ खिलनेसे बवासीर मुख द्वारा खूनका आना, मेदेका घाव आदि दूर हो जाते हैं।

मकोय

संस्कृत—काकमाची, वायसी, ध्वांक्षमाची। हिन्दी—मकोय, कवैया। बंगला—काकमाची, गुडकामाई। मराठी—लघुकावली। का०—काके कामोणी। गुजराती—पीलुडी। अरबी—एनबुस्सालक फारसी—रोवातरीख। अंगरेजी, नाइट सेड। ला० सोलेनमनइर

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

यह क्षुप जाति का पौधा है। इसके पत्ते गोल, लम्बे नोकदार होते हैं। फल छोटी मटर के बराबर गुच्छेदार तथा फूल सफेद, छोटा, पाँच पंखड़ी का होता है। फल आरम्भ में हरा तथा पक जाने पर लाल रंग का होता है।

गुणमें मकोय त्रिदोश नाशक है, स्निग्ध, उष्ण, वीर्यवर्धक, स्वरशोधक, कटू, चरपरा और आँखोंका सुखदायक है।

कुष्ठ, बवासीर, शोथ, ज्वर, प्रमेह, हिचकी, कै और दिलकी बीमारियोंमें इसका व्यवहार लाभदायक है। इसकी जड़ और पत्तोंका स्वरस दो मासेकी मात्रामें बनाकर लेना उचित है।

सूजन की दवा

सूजन पर इसका रस सोंठ डालकर करके लगावे।

तिल्लीकी दवा

जिसको तिल्ली बढ़ी हो वह इसका साग खावे।

जुकामकी दवा

जुकाममें जब आँख नाक से मल ज्यादा

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

गिरने लगे तो इसके सूखे पत्तोंका धूआँ सूँघे।

नेत्र रोगमें

आँख दुखने पर इसके हरे पत्तोंको पीसकर उसमें फिटकीरी डालकर आँखों पर बाँधे।

मुख कंठकी सूजन पर

इसके पंचांगकी कुल्ली करनेसे मुख और कंठकी सूजन तथा दर्द दूर हो जाता है।

जलोदर की दवा

यदि गुदा सूज गई हो, पेटमें मरोड़ हो, मुखसे रुधिर गिरता हो तो इसका साग खिलावै। जलोदरके लिये इसका शाक वा स्वरस बड़ा लाभकारी है।

मैनफल—मदन

संस्कृतमें इसको मदन, पिंडी, विषपुष्पक, शल्यक और राठ कहते हैं। हिन्दीमें मैनफल, बंगलामें मयनाफल, तामिलीमें मडुक्कारु, तैलगूमें बसन्त कडिमीकेट्टू, मराठामें गोलफल, गुजरातीमें मींढल, फारसीमें अजौजुलक ला० में रेंडिया डयमेटोरम् कहते हैं।

यह पहाड़ी देशोंमें होता है। इसका आकार मझोला होता है। पत्ते लम्बे, गोल, खुदरते और

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

आमने सामने होते हैं। फूल—सफेद कछ पीलो पन लिये, पाँच पंखड़ीवाला होता है। फल आखरोटकी तरह पकने पर पीले होते हैं। गुणमें मधुर, कड़ू, उष्ण, लेखन, लघु, कै लानेवाला, मुख, नाक, आँख आदिसे जल उत्पन्न करनें वाला, घातक, रूखा, कफकारक है। सूजन, वायगोला, कोढ़, फोड़ा और मांस वृद्धिको मिटानेवाला है।

(१) कै लानके लिए मैनफलके गिरीका चूर्ण फँकाते हैं।

(२) मरोड़में भी लाभदायक बताते हैं, मरोड़में अफीमके साथ देवे।

प्रसव के लिये

कहते हैं कि प्रसवकालमें मैंनफलका धूनी। प्रसूतोको देनेसे सद्यः प्रसव होता है।

सिरदर्द की दवा

आधी शीशीके दर्दमें सूर्य निकलनेके पहले मैंनफलको गायके दूधमें रगड़कर सूँघा देवे।

फोड़ेकी दवा

फोड़ेको पकाना हो तो रेवंद चीनाके साथ मैंनफलको पीसकर फोड़े पर बाँध दें।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

अन्न में कीड़े न लगें

अनाजको चौमासेमें कीड़े से बचाव हो तो इसका फल ढेरोंमें गाड़ दें, कीड़े न लगेंगे।

मोरशिखा

संस्कृत—सहस्राहि, मधुमच्छदा, मयूरशिखा। हिन्दी—मोरशिखा। फारसी—असनानेअसलान्।

मोरशिखाके छोटे-छोटे पौधे होते हैं जो प्रायः पकी दीवारोंकी दरारों अथवा सूखी भूमिपर पाये जाते हैं। इसके पत्ते कंटीले तथा सिरेपर मोरकी कलँगीके समान चोटी होती है।

अतिसारकी दवा

यह हल्की तथा पित्त कफ अतिसारको नष्ट करती है।

बवासीरकी दवा

छः माशा मोरशिखा और पाँच मिर्चोंका कल्क नित्य लेप करनेसे सब प्रकारके बवासीर को लाभ होता है।

सिर दर्दकी दवा

इसके बीजकी मींगी और लौंगको बराबर ले घिसकर आँचपर गरम करे और मस्तकपर लगावे

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

तो सिर दर्द और माथेकी ठनक अच्छी होती है।

तथा च—

मोरशिखाका फल या इसका अतर सूँघनेसे भी सिरका दर्द दूर होता है। इसका सर्वाङ्ग ग्रहण करना चाहिये।

महाशतावरी

संस्कृत—शतावरी, बहुसुता, भीरु, इन्दीवरी, वरी, नारायणी, शतपदी, शतवीर्या, पीवरी, महाशतावरी। हिन्दी छोटी शतावर, शतमूली, सहस्रमूली। फारसी—बूजीदाँ। अरबी-शकाकुल मिश्री।

इसकी बेल होती है। इसके पत्ते सोयेके सागसे मिले हुए बारीक होते हैं। फूल सफेद होता है। इसकी जड़ दवाके काममें बर्ती जाती है। महाशतावरी, छोटीसे कुछ मोटी तथा सफेद उत्तम होती है।

यह भारी, शीतल, कड़वी, स्वादिष्ट रसायन, मेदाको बढ़ानेवाली, अग्निकारक, पुष्टिकर, स्निग्ध, नेत्रोंको हितकारी, वीर्यकर्त्ता, स्तनोंमें दूध कर्ता, बलकारक और वातनाशक होती है। यह गोला, अतिसार, रक्त, पित्त और प्रमेहको शान्त करती

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

है। इसका दर्पनाशक बड़हर और शहद है। इसकी मात्रा ७ माशे की है। इसकी प्रतिनिधि सफेद बहमन।

महुआ

संस्कृत—मधूक, गुड़पुष्प, मधुपुष्प, मधुश्रव, वानप्रस्थ, मधुष्ठिल। हिन्दी—महुआ। बंगला-मोल महुया, जलमोल। मराठी-मोहाचा वृक्ष, मोहीवृक्ष। गुजराती—महुड़ों। तैलगू-ईपा तामिली—कठईल्लुपी। अंगरेजी-इलूपा ट्री। फारसी—सफजब, अवीविही।

यह गुणमें मीठा, शीतल, भारी, बल और शुक्रकर्ता तथा वात पित्त नाशन है। तृषा, रुधिर-विकार, दाह, श्वास, क्षत, और क्षयको भी दूर करता है।

मिरगीकी दवा

महुये की आधी गुठली और ढाई काली मिर्च पानीमें पीसकर नौबतके साथ नाकमें टपकावे तो फौरन चेत हो जावे।

महुयेको मुखमें रखे तो तृषा दूर हो।

पागल कुत्ता काटने पर

महुआ और कुचला पीसकर लेप करे।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

वातरोग में

महुये का तेल मालिस करें।

राई

संस्कृत—राई, राजिका, तीक्ष्णगंधा, आसुरी। हिन्दी—राई। बंगला—सरिषा। मराठी—महुरि। क०-सासि राई। तैलगू-वर्णालु। अरबी-खरदल। अंग्रेजी-मस्टर्ड।

राई कफ पित्तका नाश करनेवाली, रक्तपित्त को मिटानेवाली, तेज, रूखी, अग्निवर्द्धक है। कोढ़ खाज और कीड़ोंके रोगों को लाभदायक है। राई मसालेके काममें आती है। शरीरके विविध स्थानों परकी दर्द दूर करनेके लिए राईका चूर्ण गरम जलमें फेंटकर पलस्तरकी तरह लगाते हैं।

रामफल

इसे महाराष्ट्रमें रामफल। हिन्दी-लवली या लोता कहते हैं। इसका पेड़ ऊँचा और पत्ते अशोककी तरह होते हैं। फल कई रसका, बीज सरीफेके समान होता है।

यह स्वादिष्ट, मीठा बात और कफ पैदा करनेवाला खट्टा होता है। इसके सेवनसे दाह, प्यास, थकावट, और भूख जाती रहती है। इसकी छाल ग्राही और बलकारक है। फल पेटकी कीड़ियों का नाशक है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

पके हुए रामफलको छील कूटकर रस निचोड़ ले, पावभर रसमें मुलहठी, इलायची, शत गिलोय वंशलोचन और मिश्री मिलाकर पीनेसे गर्म बादी, धातु गिरना, सुजाक आदिको लाभदायक है।

रेंड खरबूजा

अंगरेजी—पपीता। हिन्दी-रेड़ खरबूजा, अंडखरबूजा।

यह रेड़के पेड़ ऐसा बड़ा होता है पर इसमें शाखाएँ नहीं होती। पत्ते चौड़े और फल बिजौरे के समान होते हैं।

कच्चा फल हाजमे के लिए बड़ा उत्तम है। इसके दूधको सुखाकर चूर्ण करके खिलानेसे मेदे और आंतोंको बड़ा लाभ होता है। जिगर और तिल्लीके रोगियों को देनेसे बड़ा फायदा होता है। हृदयकी जलन इससे मिट जाती है। इसका पानी दादको बड़ा फायदा करता है। पक्का फल दस्तावर होता है।

रीठा

इसे संस्कृतमें अरिष्ठक, मांगल्य, कृष्णवर्ण, अर्थसाधन, रक्तबीज, पीतफेन, फेनिल और गर्भपातन कहते हैं। हिं०-रीठा,

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

म० रिठा, तै० कुकुड, अरीठा, फा० फिंदकहिन्दी, अ० बुन्दक, ला० सेपिस्त इमार्जिनट्स, अं० सोपबेरी, सोपनट।

यह वृक्ष विश्वपत्र, मंजरीका फूल और गुच्छ-फलवाला होता है।

गुण—यह त्रिदोषनाशक, स्कन्दादिग्रहोंको जीतनेवाला और गर्भको गिराता है।

अधकपारीकी दवा

रीठेके छिलकेको पानीमें खूब मले। जब झाग निकले गरम करके ढाई बूँद दोनों नथनेमें टपकावे।

वमनकी दवा

रीठेकी मिंगी एक घंटातक पानीमें भिगोवे, जब नरम हो जाय, तब चबावे। उसके टुकड़े गले से नीचे उतर जायँ तो वमन बन्द हो जाती है।

लोध

इसे संस्कृतमें लोध, तिरिटक, शावर और गालव कहते हैं। हिं० लोध, पठानी लोध, म० लोध्र, गु० लोदर, पटिया लोदर, फा० मगाम, ला० सिम्पलोकोस रासीमोसा।

लोधका वृक्ष होता है जिसके जड़की छाल प्रयोगमें ली जाती है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

लोध, ग्राही, हल्की, शीतल, नेत्रोंको हित-कारी, कफ पित्तनाशक और कसाय होता है।

प्रयोग—रक्तपित्त, ज्वर, अतिसार और शोथ रोग को दूर करता है। विशेष करके इसमें विषनाशक गुण हैं। मात्रा ५ रत्तीसे लेकर ५ माशे तक।

संस्कृत ग्रन्थोंमें लोधको शीतल और ग्राही मानते हैं और आँतड़े, आँख तथा नासूरके घावमें उपयोगी गिनते हैं। मसूड़े नरम हो गये हों अथवा उनमेंसे रुधिर निकलता हो तो छालका क्वाथकर कुल्ले करनेसे रक्तस्राव बन्द हो जाता है।

बच्चेकी नाभी व ठुड्डी पक जाने पर

लोध, हल्दी, फूल प्रियंगु, इन सबको शहदमें बारीक पीसकर ठुड्डीके ऊपर लेप कर देवे तो लाभ होगा।

गर्भ रक्षा

लोध, मुलहठी बराबर पीसकर नौ माशा भर लेके गायके दूधमें मिलाकर पीनेसे गर्भ स्थिर रहता है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

लहसन

उधर "कन्दरी" के प्रकरण में लहसन के नाम आदि लिखे हुए हैं। यहाँ 'लहसन' से दवाइयाँ लिखी जाती हैं।

कानकी सूजन पर

लहसनकी जड़ पीसकर गुनगुना २ पतला लेप करे।

बहरेपन की दवा

लहसनमें बकरीका पित्ता मिलाकर थोड़े तेलमें गुनगुनाकर कानमें टपकावे तो कानका बहरापन दूर हो।

कई रोगोंकीदवा, लहसन कल्प

दूध या घृत या तेल या मांस रसके साथ १४ दिन पर्यन्त खिलाओ तो सर्व प्रकारका बात, विषम-ज्वर, शूल, गोला, अग्निमांद्य, प्लीहा, मस्तक रोग और वीर्यके सर्व रोग दूर होंगे।

वायु रोगमें।

टके भर लहसनका रस और १ टके भर तेलमें सेंधा नोन डालकर पिलाओ तो वायुके सर्व रोग दूर होंगे।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

लहसन पाक

समस्त वायु रोगकी दवा

पैसे भर लहसनको जीरे के सदृश कतर के पैसे भर दूध और धेले भर पानीमें पकाओ। दूध पानी सूख जाने पर लहसनको खरल करके लुगदी बाँध लो। इस लुगदीको अधेले भर घी के साथ आँच देकर लाल हो जाने पर निकाल लो। अनन्तर आधी रत्ती कस्तूरी चार रत्ती लौंग, १ माशा जायफल, एक माशा दालचीनी, २स्वर्णपत्र (सोनेके वर्क) और उपर्युक्त निर्मित लहसन की लुगदी यह सब पीस के दो पैसे भर मिश्री को चासनीमें डाल दो, तदनन्तर इसको चार गोली बनाकर १ गोली प्रातःकाल (और अधिक वायु का रोग हो तो १ गोली पुनः सायंकाल को) खिलाओ तो सर्व वायुजन्य वेदना शान्त हो जायगी। यदि वात-व्याधि की विशेष तीव्रता हो तो उक्त क्रमानुसार २२ तथा ३६ दिन पर्यन्त इसी गोली का सेवन कराओ तो समस्त वातरोग दूर होकर शरीरको पुष्टता और क्षुधा प्राप्त होगी।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

ये गोलियाँ जितनी चाहो उक्त प्रमाण से ही बनाओ।

गुदाकी सूक्ष्म कृमि नाश होवें

लहसुन, कालीमिर्च, सेंधानोन और हींगको पानीमें पीसकर गुगदाके भीतर लेप करो तो सूक्ष्म कृमि नाश होंगें।

आमवात की दवा

दो टंक लहसनका रस, दो टंक गौ के घीमें नित्य पिलाओ तो आमवात दूर हो।

लिसोड़ा

इसके श्लेष्मान्तक, पिच्छिल और भूतवृक्षक ये संस्कृत नाम है। हि० लिसोड़ा, लिसोरा और लमेरा कहते हैं। म० भोकर ता० विरि, तै० नाकेरु, उ० श्रडु, फा० शिपिस्तां, सरपिस्तां, अं० नेरोलिव्ड सेपिस्टन, ला० कोर्डिया एगस्टीफोलिया।

यह गुणमें मधुर, कषाय, कडुवे, बालोंकी सुन्दरता कारक और कफ पित्तनाशक है। प्रयोग विष विस्फोट और कुष्टरोग का नाश करता है। यह कलेजे को अहितकर है। इसका दर्पनाशक उन्नाब है।

लौंग

इसे सं० में लवंग, देवकुसुम, श्रीसंलक और श्रीप्रसून कहते हैं। हि० लौंग बं० लवंग, गु० लवींग, तै०-किरमवेर, अ०-करनफल, फा० मेहक, इं० क्लव्ज, ला० काफिओफिईलस।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

यह यवद्वीप, बलीद्वीप, चीन, यूरप आदि स्थानों में यहाँ से जाती है।

यह गुणमें कटु, तिक्त, हल्की, नेत्रोंको हितकारी, शीतल, दोपन, पाचन और रुचिकारी है।

यह कफ, पित्त, रुधिरके विकार, तृषा, वमन, अफरा, शूल, खाँसी, श्वास, हिचकी और क्षयरोग को शीघ्र दूर करती है। मात्रा ३॥ माशेकी है। दालचीनी, कुलिंजन और जायफल इसकी प्रतिनिधि है और अरबी बबूलका गोंद इसके अवगुण को दूर करता है।

यह रसयुक्त, नवीन, लम्बी, लाल और काले रंगकी तथा मोटी लौंग उत्तम होती है। यह प्रायः मशालेमें डाली जाती है।

हिन्दुस्तानी वैद्य लौंग को गरम, पाचक, कफ नष्टकर्त्ता, कुपित आमको मिटानेवाली मानते हैं। उसी प्रकार पेटकी ऐंठन नष्टकर्ता तथा प्यास बन्द करनेको और वमन तथा वायु आदिके दूर करनेको औषधके तरीके पर देते हैं।

यूनानी हकीम लौंगको खुश्क और गरम

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

गिनते हैं और देहके बाहरी भागमें लगानेको अथवा विष खाकर आवे तो इसको विषके प्रभाव को न्यून करनेको तथा माथेके दुखनेको नष्ट करनेकी इसमें शक्ति है। तथा इसके चूर्णको खाने और लगानेसे मसूड़े मजबूत होते हैं। श्वास सुगन्धित निकलता है, कफ बैठ जाता है तथा पाचनशक्ति बढ़ती है।

अंग्रेजी औषधोंमें लौंगको गरम जागृतकर्त्ता तथा पेटकी पीड़ाको नष्टकर्त्ता मानते हैं तथा बद-हजमी और अन्य-अन्य बीमारियोंमें अनेक पदार्थों के साथ मिलाकार देते हैं।

गर्भवती स्त्रियोंकी उलटीमें

यदि उलटी होती हो तो लवंग को गरम जलमें भिगोकर उस जलको पिलावे।

नजलेकी दवा

लौंग पीसकर तालू पर लगावे तो सर्दीका नजला दूर होवे।

तथाच—

दो लौंग और चार रत्ती अफीम पानीमें

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

पीस गुनगुना कर मस्तक पर लगाने से नजलेकी पीड़ाको दूर करता है।

लवंगादि चूर्ण

लौंग, कंकोल, कालीमिर्च, खश, चन्दन, तगर, कमलगट्टा, कालाजीरा, इलायची, अगर, नागकेसर, सोंठ, पीपली, चित्रक, नेत्रवाला, भीम-सेनी कपूर, जायफल, बंशलोचन और इन सबसे आधी मिश्री इन सबका महीन चूर्ण कर नित्य १ टंक खिलाओ तो राजरोग, मन्दाग्नि, कास हिचकी संग्रहणी, अतिसार, भगन्दर, प्रमेह ये सब दूर हों।

लाल मिरचा

संस्कृत—कटुवीरा। हिन्दी—लाल मिरचा, मिर्चा। बंगला—लंका। मराठी-मिरची। अरबी-फिल्फर अहमर। फारसी-फिल्फर सर्ख। लाटिन—कंफिसकम। अंगरेजी—डीपेपर।

इसका पोधा मकोयकी भाँति और फूल सफेद होते हैं। शुरूमें फलका रंग हरा और पकने पर लाल हो जाता है। यह सारे हिन्दुस्तानमें उत्पन्न होता है और बहुत खर्चमें आता है।

इससे पित्त और दाह उत्पन्न होता है। यह जठराग्निको बढ़ाता है। लाल मिरचेसे कफ,

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

आंव और शूल उत्पन्न होता है। इसके बीजोंका तेल गठियामें बहुत लाभदायक है।

यदि किसीको पागल कुत्ता या स्यार काटे हो तो उसके घावमें पिसी हुई लाल मिरच भर देनेसे विष दूर हो जाता है।

काटे हुए सर्पके विषसे मनुष्य यदि अचेत गया हो तो पिसी हुई लाल मिर्च रोगीके मुखमें छिड़क देवे तो वह इससे सचेत हो जायगा।

जहां पर बिच्छूने डंक मारा हो, उस स्थान पर लाल मिरचेको पानीमें पीसकर लेप करनेसे आराम होता है।

लाल मिरचा कपूर और हींगकी गोली बनाकर हैजे में देते हैं,। रेंवतचीनी, सोंठ और मिरचा इन तीनोंको बराबर २ लेकर गोली बनाकर सेवन करनेसे कब्ज जाता रहता है।

लाल मिरचके बीजके तेलको अम्हौरियों पर लगानेसे अम्हौरियाँ मर जाती हैं।

जिनको मल द्वारा खून जानेकी बीमारी (रक्तातिसार) हो गई हो तो इसके बीजोंको तेलमें

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

डालकर जला डालें और उसे छान लेवैं, इस तेल को दस बूँद खाँड़में मिला कर खिलानेसे लाभ होता है।

जिसको तिजारीका बुखार आता हो उसे चाहिये कि इस लाल मिरचको पानीमें भिगो कर मसल डाले और छानकर दो बूँद आधी बटाँक जलमें डालकर सेवन करे तो लाभ होगा।

शतावर

सं०--सतावरी, बहुसुता, सत्ववीर्य्या, नारायणी, पीवरी, महासतावरी। हिं०-छोटी सतावरी, शतमूली सहस्रमूली। मराठी-सानी कांटेसेरु। गुजराती-सत्तावलि। अंग्रेजी--शकाकुलमिश्री। फारसी-बूजीदा। लाटिन-ऐस्पेड सेरशिमोसस।

सोवेके सागके समान महीन पत्ते होते हैं। इसमें सफेद फूल लगते हैं। इसकी जड़ खी जाती है। शतावर मोटी और सफेद उत्तम होती है।

गुण—भारी, शीतल, कड़वी, स्वादिष्ट, रसायन, मेधावर्द्धक, अग्निकारक, पुष्टिकर, स्निग्ध, नेत्रों को हितकारी, वीर्यकर्त्ता, स्तनों में दूधकर्ता, बलकर्त्ता और बातनाशक है।

प्रयोग—यह गोला, अतिसार, रक्तपित और

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

प्रमेह रोग को शान्त करे। इसके दर्पनाशक बहहल और शहत हैं। बवासीर, संग्रहणी और नेत्ररोग शांत करती है।

सह्मालू

हिं०—सह्मालू, निर्गुंडी, मेउड़ी, सेदुआरि। बं०—निसिन्दा। म०—निर्गुंडी, निगड़ी, बनय। को०—निगूड़। का०—करियल्लौकि। गु०—निगोड़, नगड़। तै०—तेलवा, वीली। ता०—नोकची। फा०—सानूवालि। ला०—वाइटेक्स निगंडो।

सम्हालूके पत्ते नीमके पत्तेके आकारसे कुछ बड़े तथा अनीदार होते हैं। काले रंगवाले सम्हालूको निर्गुण्डी भी कहते हैं। इसके पत्ते अरहरके पत्तेके आकारके बहुत मुलायम और गुलगुले होते हैं। इसके पत्तोंको पुस्तकमें रखनेसे पुस्तकमें कीड़े नहीं लगते। पेड़ तीन चार हाथ बड़ा होता है।

गुण—स्मरणशक्तिको बढ़ानेवाला, कषैला चरपरा, हल्का, बालोंको लाभदायक, नेत्रको हितकारी। आम, बात, शूल, कृमि, कोढ़, स्वांस, अरुचि तथा कफ ज्वरको दोनों प्रकारका सह्मालू लाभ पहुँचाता है। इसकी जड़ दवाके काममें आती है। दो मासेकी एक खूराक होती है। इसके पत्ते

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

भी कृमि आदि कीड़े और बात कफको हरण करते हैं।

कुत्ता काटनेपर

सम्हालू और करफस अनारकी कली तीन तीन माशे घोंटकर पिलानेसे कुत्ता काटनेका विष उतर जाता है।

सर्प बिच्छू दूर हों

जिस घरमें साँप और बिच्छुओंके रहनेको आशंका हो उस घरवालों को चाहिये कि घरमें सम्हालूकी पत्तीकी धूनी देवें। दो चार दिन लगातार धूनी देनेसे साँप बिच्छू घर छोड़कर आपसे आप भाग जावेंगे।

स्वप्नदोषकी दवा

यदि किसीको अधिक स्वप्नदोष होता हो तो रातमें सोते समय बिस्तरेके नीचे सम्हालूके पत्तोंको रखकर सोवे स्वप्नदोष नहीं होगा।

सरेसामकी दवा

सँभालूका बीज खानेवाला मनुष्य नपुंसक हो जाता है। बीजोंको घिसकर लगानेसे सरसाम और दिमागकी सूजन दूर होती।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

वातरोगकी दवा

गठियाके रोगपर सम्हालूके पत्तोंका काढ़ा पीनेसे बड़ा लाभ होता है। सूजन और प्रसूतिका रोग भी जातारहता है। सूजन और गाँठपर गरम पत्तोंको बाँधनेसे गाँठकी सूजन को तत्काल लाभ पहुँचाती है।

सनाय

इसे संस्कृतमें स्वर्णपत्री, कल्याणी, हेमपत्रिका, रेचिका, स्वर्णानी, हि० सनाय, सोनामुखी, इं० टिनेवेलीसिना, ला० सिनाइडीका कहते हैं।

पलासके और कबूतरकी जिह्वाके समान लम्बे बारीक पत्ते और रंगमें कुछ-कुछ पीली हो ऐसी उत्तम होती है।

यह गुणमें दस्त करानेवाली और मलको निकालने वाली है।

यह मन्दाग्नि, विषमज्वर, अजीर्ण, प्लीहा बद्धगुद, कलेजेके रोग, पांडुरोग की दवा और कफको हरणकरनेवाली है। इसकी मात्रा दो तोले की है। प्रतिनिधि निशोत और दर्पनाशक विही-दाना और ईसवगोल है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

नष्ट आर्तवमें

(१) सनायकी धूनी देवे।

(२) सनाय की पत्ता या बीजका जुलाब लेवे।

(३) इसके सेवनसे बुढ़ापेमें सफेदबाल काले होते हैं।

जलन्धरकी दवा

सनायके ताजे फलके रसको खाँड़के साथ मिलाकर जलंधरके रोगमें देवे।

त्वचाका रंग बदले

सनाय की पत्तोका लेप करे।

सरफोंका

इसे संस्कृतमें शरपुंखा, सितसायका, सितपुंखा, श्वेतपुंखा और शुभ्रपुंखा कहते हैं। म० कं० उन्हली, का० मुलुग्गोगी। हिं० सरफोंका, गु० शरपुंखा।

यह दो प्रकारका होता है। परन्तु दोनों गुणमें समान हैं तथापि सफेद सरफोंका अत्यन्त गुणकारी और रसायन कर्ममें उत्तम हैं।

बवासीरकी दवा

सरफोंका १ भाग तथा भाँगके पत्ते दो भाग मिलाकर देनेसे दुखती बवासीर नष्ट होती है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

(१) काली मिरचके साथ देनेसे पेशाब अधिक उतरता है तथा (२) मुख्य करके प्रमेह को नष्ट करता है।

सहजना

इसे संस्कृतमें शोभांज़न, शिग्रु, तीक्ष्णगंधक, अक्षीव और मोचक कहते हैं। हिं० सहजना, बं० सजिणा, म० शेवगा, फा० अरसिनवणादहूविनन्नु, गु० सरगवा, तै, मुलङ्गा, ता० मोरंग, ला० होर्सरेडीशट्री।

इसके तीन भेद हैं। श्याम, श्वेत और लाल। सहजनेके बीजको श्वेत मिरच कहते हैं और लाल रंगके सहजनेको मधुशिग्रु कहते हैं।

यह गुणमें कटु और पाकमें भी कटु है। यह तीक्ष्ण, गरम, मधुर, हलका, दीपन, रोचन, रूक्ष, खारीगुणयुक्त, कड़वा, दाहकर्त्ता, संग्राही, शुक्रकर्त्ता, हृदयको प्रिय, नेत्रोंको हितकारी और रक्तपित्तको कुपित करता है।

प्रयोग—यह वादी, कफ, विद्रधि, सूजन, कृमि, मेदरोग, अपची, विष, प्लीहा, गोला, गंड-माला और व्रणको नष्ट करता है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

घोर पीड़ामें

सहजनेकी छाल और पत्तोंका स्वरस देवे।

तथाच—

सहजनेके बीज तीक्ष्ण, गरम, विषनाशक, बलनाशक और बात कफनाशक हैं।

सिर दर्दमें

सहजनेके पत्तियोंका रस निचोड़कर नास लेवे।

इसकी छाल तथा फली प्रयोगमें ली जाती है। मात्रा ४ माशेकी है।

सम्मतियाँ

हिन्दुस्तानी वैद्य—सहजनेको गरम, तीक्ष्ण, मूत्रवर्द्धक और त्वचा पर लगानेसे चमड़ीको लाल करनेवाला मानते हैं। सहजनेके बीजोंको भी गरम मानते हैं और उसको श्वेत मरिचके नाम से बोलते हैं।

हारीतसंहिता में-सहजनेकी दो जाति कही है। लाल और सफेद-चमड़ीको लाल करनेसे लालकी अपेक्षा सफेद अधिक गुणवाला है तथापि भीतरी खाजके उपयोगकरनेको लालजातिकाअधिक पसन्द आता है तथा यदि कलेजा और तिल्लीकी

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

मोंठ मोटी हो गई हो तो इसको देते हैं। शरीरके भीतरी भागमें गहरी सूजन हो तो जड़की छाल का क्वाथ करके सूजनके ऊपर सेक करनेके काम आती है तथा पेशाबकी थैलीमें पथरीके वास्ते भी परमोपयोगी है। इस वृक्षका गोंद तिलके तेल में मिलाकर कानमें टीस मारता हो तो डालनेसे आराम होता है।

मुसलमानी हकीम लिखते हैं कि सहजनेके फूल गरम हैं और उनके देने से सर्दी मिट जाती है। सूजन उतर जाता है। पाचनशक्ति बढ़ती है। पेशाब अधिक उतरता है तथा पेशाबकी थैलीमें पथरीका उत्पन्न होना बन्द होता है तथा श्वासके रोगमें उत्तम लाभ करता है। जड़का चूर्ण डालकर बनी हुई पुल्टिस बाँधनेसे सूजन बिल्कुल उतर जाती है, परन्तु चमड़ीमें खुजाल चलकर पीड़ाको उत्पन्न करती है। इसकी फली शाकमें तथा कढ़ी आदिमें डालते हैं और इसका आचार भी बनाते हैं। इसके सेवन करनेसे पेटमें कीड़े कदापि नहीं पड़ते।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

डाक्टर एन्सला कहता है कि सहजनेके वृक्ष की जड़ २० ग्रेनकी मात्रामें लकवाकी बीमारी तथा बारम्बार आनेवाले ज्वरमें दी जाती है तथा मृगी और स्त्रियोंको होनेवाली हिस्टीरिया बीमारी में उत्तम असर करती है। बीजमें से निकला हुआ तेल संधिवातके रोगमें संधियोंके ऊपर चुपड़ते हैं। खिचाव अथवा शूल होता हो तो इसकी जड़का क्वाथ करके जलन्धरके रोगमें देते हैं।

डाक्टर रीड कहता है कि सहजनेके पत्ते छाल और जड़में खिचाव बन्द करनेका शक्ति है। पत्तोंका रस निकाल उसमें काली मिर्चोंको पीस मृगी आनेवालेके नेत्रोंमें चुपड़ते हैं तथा निमक मिलाकर छोटे-छोटे बच्चोंके पेटमें अफरा आनेपर दिया जाता है। फोड़ेपर पत्तोंको पीसकर बाँधते हैं। जल्दी पकाता है। छाल और जीरा चावलके जलमें पीसकर मुखमें रखे तो मसूड़ोंका फूलना और दाँतोंमें टीस मारना कम होता है।

सहजन के पत्तों को गरम कर नासूर और नहरुवापर बाँधा जाता है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

शिर दर्दमें इस वृक्षका गोंद कनपटी तथा बद और गुह्येन्द्रियके रोगमें लेप किया जाता है।

चरकसंहितामें—इस वृक्षकी छाल और जड़को शिरोविरेचन और पसीने निकालनेवाली माना है।

सुश्रुतसंहितामें—इसको कफ—मेद—निवारक, मस्तक-शूलनाशक और गुल्म तथा विद्रधिनाशक माना गया है।

तन्द्रा और अति निद्रामें

सहिजनेके बीज, सेंधानोन, सरसों कूट इनको बकरेके मूत्र में पीसकर नास दो।

सोंठ

इसे संस्कृतमें शुंठी, त्रिश्वा, विश्व नागर, विश्वभेषज, उषण कटुभद्र, (यानी चरपरे पदार्थोंमें श्रेष्ठ) शृङ्गवेर और महौषध कहते हैं। हिं० सोंठ, सुंठ, बं० सुंठ, म० सुंठ, गु० शुंठ्य, तै० शोंठी, फा० लंजबील, इंग्रेजी डाईजिंजर कहते हैं।

यह गुल्म जातिकी बनस्पतिका कन्द है। रेतीली जमीन में और जलके किनारे बहुत होती है। पूरब आसाम आदि मुल्कसे आती है। इसकी अनेक जाति है। परन्तु इसमें घाटकी सोंठ उत्तम होती है। जिसमें रेशे (टुष) अधिक

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

हो उसको न लेव। मोटो रेसेको तोड़नेमें नरम और जो सफेद होती है वही लेनी चाहिये।

सोंठका रस चरपरा है। गुणोंमें स्निग्ध और हलकी, वीर्यमें उष्ण और विपाकमें मीठी है।

गुण–यह रुचिकारी, आम वातका नाशक, पाचन करता, कफ वातको और मलादिकके रुकने को नाश करता, बलकारक तथा सर (मलादिक प्रवर्तक) वमन, श्वास, शूल, खाँसी, हृदयके रोग श्लीपद, शोथ, बवासीर, अफरा, उदर और वादी के रोग इनको नष्ट करती है।

(१) सोंठके चूर्ण को गरम जलके साथ फाँके तो पीड़ायुक्त आम वातको नाश करती है, बुद्धि को बढ़ाती और शिरके तथा गलेकी सरदी को नष्ट करती है।

इसकी मात्रा दो माशे की है। दर्पनाशक कपूर और शहद हैं। सोंठके अभावमें अदरक ली जाती है।

ज्वरमें श्वासका उपाय

सोंठ, मिर्च, पीपल, नागरमोथा, काकड़ा-

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

सिंगी, मारंगी और पोहकरमूलके १ टंक चूर्णका क्वाथ प्रतिदिन सात दिवस पर्यन्त पिलाओ तो ज्वरका श्वास दूर हो।

सौंफ

इसे संस्कृतमें शतपुष्पा, शताह्वा, मधुरा, कारवी, मिसि, अतिलंबी, सितच्छत्रा, संहिता और छत्रिका कहते हैं। हिं० सौंफ, बं० शुलफा, मौरी, म० बालन्तशोप, बड़ी सोप, क० कासब्बसिगे, गु० वरीयाली, फा० एजयानज, एजयाना, बादियां, अं० पीम्पेनेल अनीसम्।

यह चैत्र, वैशाखमें फूलती है और दूर दूर तक इसकी सुगन्धि जाती है।

यह गुणमें हलकी, तीक्ष्ण, पित्तकर्ता, दीपन, चरपरी, गरम, ज्वर, वादी, कफ, व्रण, शूल और नेत्रके रोगोंको हरण करती है। सोआमे भी सौंफ के समान ही गुण है। विशेष करके योनिशूल, मंदाग्नि, हृदयको हितकारी, मलकी बद्धता, कृमि और शूलको हरण करती है।

यह रूखी, गरम, पाचनी, खाँसी, वमन, कफ और वादी इनको हरण करती है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

जोड़ोंके रोगोंकी चिकित्सामें

सौंफ कासनोके बीज, मकोय, हंसराज प्रत्येक सात माशे, सौंफकी जड़, कासनीकी जड़, मुलहठी की जड़ प्रत्येक नौ माशे, बाबूनेके फूल, गुलकन्द तीन तोले औटाकर पीये।

सर्व शरीरकी हड़फूटनका दूर करे

काबली हड़का बक्कल, कालीहड़, सौंफ काली मिर्च, पीपल, कंजाकी मिंगी, कालीजीरी प्रत्येक एक भाग, मुनक्का ५ भाग कूट छानकर गोलियाँ बनावे। मात्रा ७ माशे।

सिंघाड़ा

सिंघाड़ेमें दोनों ओर बड़े-बड़े काँटे होते हैं, यही कारण है कि संस्कृतमें इसका नाम शृङ्गाटक है।

इसका फल एक काले मोटे छिलकेसे ढका रहता है, जिसको छील कर निकाल देनेसे भीतरसे सफेद रंगका सिंघाड़ा निकल आता है, परन्तु जब यह अच्छी तरह पक जाने पर छीला जाता है तो इसके गरीका ऊपरी भाग कुछ लालिमा लिये सफेद रहता है। परन्तु भीतरकी गरीका रंग

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

चाहे कच्चा हो वा पक्का सदा सफेद निकलता है। इसकी गरी कच्ची वा पक्का कर दोनों प्रकार से खानेके काममें आती है। इसको सुखाकर पीस लेने पर आँटा बन जाता है, जिससे पूड़ी वा हलुआ बनाया जाता है।

सिंघाड़ा, पुष्ट, ग्राहक और हल्का, वीर्यवर्द्धक बातकारक, कफवर्द्धक, दाहनाशक और मीठा होता है।

(१) सिंघाड़ेकी बेल को पीस कर दाद पर लगानेसे दाद रोग नष्ट हो जाता है।

(२) सिंघाड़ेकी हलुआ खानेसे वीर्यकी वृद्धि होती है।

(३) सिंघाड़ेका हल्वा दूधके साथ सेवन कराने से गर्भवती स्त्रियोंका रक्तस्राव बन्द हो जाता है।

हल्दी

संस्कृत—हरिद्रा, कांचनी, वरवर्णिनी, कृमिघ्ना, हलदी, योषितिप्रया, हट्टविलासिनी और जितने रात्रिके संस्कृत नाम है सब हल्दीका नाम जानना। हिन्दी–हलदी, हरदी। बंगला-हरिद्रा। मराठी-हलद। का० अरसिन। तैलगू-पांसुपृ। गुज-

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

राती-हलदर। फारसी-अरूकुलसबागैन, जर्देचोब, इंगलिश टरमेरिक। लाटिन-करक्युमालोगा।

यह एक तरह की कन्द है और मसाले के काम में आती है।

गुण—कटु, रूक्ष, तिक्त, गरम और वर्ण-कर्त्री है। इसके सेवनसे कफ, पित्त, त्वचादोष, रक्त-दोष, प्रमेह, सूजन पाण्डुरोग और व्रण ये नष्ट हो जाते हैं। दो माशेकी एक मात्रा होती है।

बनहरिद्रा (बनहल्दी)

हिन्दी—बनहल्दीका कन्द जंगली हल्दी। मराठी-राम हलद। गुजराती—बनहलदर।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

यह बात, रक्त और कोढ़को नष्ट करनेका दवा है। इसकी मात्रा दो माशेकी है।

कपूरहल्दी

संस्कृत—दार्वीभेदा, आम्रगन्धा, दारूकर्पूरा, सुरीमत् पद्मपत्रा, सुगतारका। हिन्दी-आंबाहल्दी। बंगला-आमआंदा। मराठी-आंबेहलद। कर्नाटी-हलीअरसोन। तैलङ्ग-कारुपासुपु। अंग्रेजी-मेगोजिजर। लाटिन-कर्क्यूमा एरोमेटिक।

कपूरहल्दी, शीतल, पित्त हरण करनेवाली, बातकर्त्ता, कड़वी मीठा और सब प्रकारकी खुजली को नष्ट कर देती है। इसकी जड़को लेकर दो माशेकी एक खुराक बनाकर दवाके काममें लावे।

दारुहल्दी

संस्कृत—पर्जन्या, दार्वी, पर्जनी, दारुहरिद्रा, कटकटेरी, पचंपचा, पीता, कालेय, पीमद्रु, हरिद्र, कतिक, पीतदारु। हिन्दी-दारुहल्दी। बंगला-दारुहरिद्रा। गुजराती-दारुहलद्दर। कामारनरिसिन्। तैलङ्गी-पासुपु। अंगरेजी-पीपाक। लाटिन-बर्बेरिस।

इसकी तासीर गरम होती है। यह कटु, तिक्त, स्वेद पैदा करने वाली, विषघ्न तथा कफ पित्त नाशक है। प्रमेह, खुजली, त्वचाके दोष, घाव या

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

सूजन, कर्णविकार, मुखरोग, तथा नेत्र रोगको नाश करती है। इसकी लकड़ी दवा के काम में लाई जाती है। मात्रा दो माशेकी होती है।

(१) हल्दी, चूना तथा शहद, इनको मिलाकर लेप करनेसे चोट चपेटसे उत्पन्न सूजन जाती रहती है।

(२) हल्दी को गरमा कर यानी भून कर दाँतके तले दाबनेसे दाँतका दर्द छूमन्तर हो जाता है।

(३) हल्दीको घिस कर आँख पर लगाने से आँखकी ज्योति बढ़ती है।

(४) हल्दीको पानी के साथ खूब महीन पीस कर उसमें थोड़ा पानी मिला। आग पर चुरा कर चोट पर लेप करनेसे चोटकी सूजन और दर्द घट जाती है।

(५) हल्दीको पीस कर उसमें घी नमक मिला कर आग पर चुरा लेवे। फिर बासी मुँह गरम-गरम चाटे तो खाँसी जाती रहे।

(६) भूनी हुई हल्दी में सोंठ और खाँड़ मिलाकर फाँकनेसे जोड़ोंका दर्द अच्छा होता है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

(७) हल्दीका लड्डू खानेसे गठियाकी बीमारी अच्छी होती है।

हर्रे

हर्रेके संस्कृतमें १५ नाम हैं। हरड, हड, हर्र।

हरड शाखी अथवा वनस्पति जातिका एक वृक्ष है। इसकी उत्पत्ति प्रायः ठण्डे और पर्वती देशोंमें होते हैं। इसके दो दो पत्ते आमने-सामने और मोटे तथा अमरूदके पत्तोंके समान और कोमल तथा लाल रंगके होते हैं। इसका फूल बारीक और मौरके समान होता है। फल १ या १॥ इंच का लम्बा होता है। इसको सुखानेसे इसके ऊपर का छाल सूख कर खड़ी पाँच रेखा हो जाती है। बड़ी हरड़ तोलमें २ से ५ तोले तककी होती है। हर्र जितनी ही नवीन होगी उतनी ही लाभदायक होती है। प्रयोगमें हर्रका छाल ली जाती है। विजया, रोहिणी, पूतना, अमृता, अभया, जीवन्ती और चेतकी ये हरड़की सात तियाँ हैं। समस्त रोगोंमें विजया हरड़ ही उत्तम म देती है। हर्र अग्निवर्द्धक, त्रिदोष-नाशक,

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

बल बुद्धि वर्द्धक, मल-शोधक, कड़वी, कषैली और रक्तपित्त नाशक है।

(१) हर्र आँवला और बहेराको रात भर भीगने दे। फिर प्रातःकाल उसी जलसे नेत्र धोनेसे नेत्रके सब प्रकारके रोग नष्ट हो जाते हैं। इसका अर्क पीनेसे कफ और खाँसी भी दूर होती है।

बालकके ज्वरकी दवा

एक-एक माशा हर्रकी छाल, नागरमोथा और मुलहठीका क्वाथ बराबर ७ दिन तक पिलानेसे बालकका ज्वर नष्ट होता है।

मूत्रकृच्छ्रकी दवा

गूदा, गोखरू, पाषाणभेद छः माशा और अडूसेके ५ टंक चूर्णका क्वाथ मधुके साथ नित्य पीनेसे दाहवाला मूत्र कृच्छ्र नष्ट होता है।

ज्वर सन्निपातकी दवा

बड़ी हर्रकी छाल, सोंठ और नागरमोथा इनका दो टंक चूर्ण प्रति दिन ५ दिनतक खिलाने से सन्निपात ज्वर और अतिसार नष्ट होता है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

हंसराज

संस्कृत—मराठी हिन्दीमें हंसपक्षी। बंगला-गोयालेलता। फारसी—परस्योशाशां मेडिननहेयर। अरबी-शारुलजिवाल। लाटिन—एडोऐन्टम लून्यूलेटम कहते हैं।

इसके पत्तोंका आकार हंसके पैरके आकार का सा होता है। इसका पौधा छोटा और डंठल स्त्रीके बालोंके समान काले रंगके होते हैं।

नासूरकी दवा

जिसकी आँखमें नासूर हो उसे चाहिये कि इसके पत्तोंको गारकर उससे निकले हुए रसको आँखोंकी कोवोंमें डाल देवे। क्रमशः दो चार दिन ऐसा करनेसे आँखोंका नासूर जाता रहता है।

(१) इसको उबालकर अंडकोषपर बाँधने से अंडकोषकी सूजन जाती रहती है।

(२) इसकी पत्तोंको पीस लेवे फिर घी में मिलाकर लेप करे तो शिरका गंज जाता रहे। यदि किसीके सिर पर बाल न जमता तो चाहिये कि सोसनका तेल शराब और हंसराजको पीसकर इन तीनोंको एकमें मिला लेवे और फिर उस

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

स्थानपर लगावे और कुछ दिन इसी तरह लगाता रहे तो बाल उग जावें।

कुत्ता काटनेपर

ताजी थानी हरी हंसपदीको पीसकर लेप करे तो बावले कुत्तेका काटा घाव, पुराना घाव तथा सिरकी गंज ये सब अच्छे हो जाते हैं।

कवची यंत्र

कुप्पीके आकारको एक काँचकी शीशी लेकर कपड़े पर चिकनी मिट्टीका लेपकर या कपड़ेको मिट्टीमें सानकर तह लगा डालें। इसी क्रममें कई तह लगाते जावें। जब उसका नम्बर ३ वा सातको गिनतीमें पहुँच जाय तो तह लगाना बन्द कर देवें। शीशीके ऊपर इस तहके लगानेसे यह लाभ होता है कि आँचपर चढ़ाने से शीशीके टूटने फूटने का भय नहीं रहता।

जब इस प्रकार शीशी तैयार हो जावे तो उसमें औषधि भरकर बालुका यंत्र वा किसी अन्य यंत्रमें बैठा देवें। बस इसी मिट्टी सने कपड़ेकी तह चढ़ी शीशीको कवची यंत्र बोलते हैं। इसका

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

रस बड़े कामका होता है। इसका जारण मारण आदि सभी कामोंमें प्रयोग करते हैं।

लवणयंत्र

एक शीशी जिसको आतिशी कहते हैं बाजार से खरीद कर उसपर करीब एक अंगुल मोटा कपड़मिट्टी करे और फिर उसे धूपमें भली भाँति सुखाकर इस शीशीको एक बड़े बर्तनके मध्यमें रख उसके चारों तरफ नमक भर देवे, फिर बालुका यंत्रकी तरह आँच देना शुरू करे, क्रमशः रस तैयार हो जायगा। इसी यंत्रको लवण यंत्रके नामसे पुकारते हैं। इससे रस बनानेका काम लिया जाता है जो बहुतसे रोगोंपर गुणकारी होता है।

दौला यंत्र

देखकर एक मिट्टीका घड़ा बड़ी गर्दनका खरीद लावे वा न मिले तो आर्डर देकर किसी कुम्हारसे बनवा लेवे और उस घड़ेको स्वच्छ जलसे आधा भर दे। फिर औषधिको पारेमें मिलाकर उसके ऊपर भोजपत्रका तीन तह कसकर लपेट देवे और उस पोटलीके ऊपर कच्चा डोरा लपेट

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

कर बाँध दे ताकि भोजपत्रको तह खुल न सके। तब ऊपरसे तीन तहवाला कपड़ा लपेटकर पोटली बना डाले। इस पोटलीको एक सिरेसे बाँधकर उसके दूसरे सिरेमें एक इतनी बड़ी मजबूत लकड़ी बांध देवे कि वह घड़ेके मुँहपर दोनों तरफ कुछ बढ़ी रहे यानी लकड़ी घड़े के भीतर न जा सके। फिर पोटली को इस रीतिसे लटका देवे कि वह पानीमें अच्छी तरह डूबी रहे, परन्तु घड़ेकी पेंदी न छू सके। बस मिट्टीके घड़ेको एक बड़े चूल्हे पर चढ़ाकर नीचेसे आँच देना प्रारम्भ करे। चूँकि पोटली उपरोक्त यंत्रमें झूलती रहती है इसी कारण इसका नाम दोला यंत्र पड़ा है। इसका एक और नाम है जिसको स्वेदन यंत्र कहते हैं।

बालुका यंत्र

एक मिट्टीके मोटे नाँदमें बालू भरकर उसमें दवा भरी शीशीका मुँख बंदकर इस प्रकार गाड़ दे ताकि उसकी गर्दन रेतके बाहर निकली रहे तब उस नाँदको चूल्हेपर चढ़ाकर नीचेसे आँच देकर रस तैयार करे। बसइसीको बालुका यंत्र कहते हैं।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

विद्याधर यंत्र

एक हाँड़ीमें ग्वारपाठाके रसमें घोंटे हुए पारेको छोड़ देवे। फिर उस हाँडी के ऊपर एक दूसरी हाँड़ी लेकर इस सफाई से रक्खे कि कहींसे छिद्र न रहे, बल्कि सन्धिके स्थानपर कपड़ा मिट्टी करके दो तीन तह चढ़ा देवे। जब यंत्र तैयार हो जावे तो पारेवाली हाँड़ी को आग जलाकर चूल्हे पर चढ़ा देवे। ध्यान रहे कि ऊपरवाली हाँड़ी में बराबर पानी भरा रहे। समय समय पर देखता जावे कि ऊपरकी हाँड़ी का पानी ज्यादा गरम हो गया हो तो उसे कल्छुल आदि किसी बर्तनसे निकालकर बाहर फेंक देवे और हाँड़ीमें फिर दूसरा ठंढा पानी भर दे। अभिप्राय यह कि ऊपर वाली हाँड़ी गरमाने न पावे। इस क्रमसे पाँच पहरतक आँच देकर फिर आँच देना बन्द कर दे। जब आग बुझकर शीतल हो जाय तो चूल्हेसे उतार लेवे। ऊपरकी हाँडीकी पेंदीमें पारा मिलेगा। उस पारेको होशियारीसे काम लेना चाहिये। यही यन्त्र विद्याधर यन्त्रके नामसे विख्यात है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

गर्भ यन्त्र

यह गर्भ यन्त्रका दूसरा प्रकार है। इस यंत्र का एक प्रकार और होता है। परन्तु इसको सरल और साध्य समझकर इसे ही वर्णन करता हूँ। इस यन्त्रसे पारेकी पिष्टि भस्म की जाती है। खड़िया मिट्टी का एक चार अंगुलका लम्बा चौड़ा मजबूत गोल मुख का मूष बनाकर उस मूष के ऊपर एक भाग गूगल और २० भाग नमक पीसकर लेप करे। फिर मूषके अन्दर पारा रखकर मूषका मुख बन्द कर देवे। तब जमीनके अन्दर एक गड्ढा खोदकर कंडेकी आगमें मूषको रख देवे। इस तरह पारा आसानीसे भस्म हो जावेगा।

गौरी यन्त्र

एक अच्छी सुडौल इंट लगभग आठ अंगुल लम्बी हो तथा उसीके अनुपातसे चौड़ाई और ऊँचाईकी तैयारी करा लेवे। फिर इंटको लेकर उसके मध्यमें एक गड्ढा बनावे और उस गड्ढेको कांच से खुरचकर एकदम यानी अच्छी तरह साफ कर लेवे। फिर चूना पोत दे। तत्पश्चात्-सोने चाँदी वा

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

अभ्रकके रसमें घोटा हुआ पारा उस ईंटके बनाये हुए गड्ढेमें भरकर उसके नीचे गन्धक बिछा देवे। तब गढ़ेके ऊपर कपड़ा रखकर उसका मुख कपड़ा मिट्टीसे बन्दकर उसमें आने उपलोंकी अग्नि देवे। पहलवाले घड़ेके छेदपर जिसमें बाँसकी नली लगाई है, अगल बगलसे मिट्टी लेप दे ताकि कोई सन्धि न रहने पावे। बस अर्क खींचनेका खासा यन्त्र तैयार हो गया। जिस चीजका अर्क खींचना हो उस चीजको घड़ेमें भरकर ऊपरसे घड़ेमें पानी भर देवे। फिर उस घड़ेका मुख भलीभाँति बन्द करके घडे में नीचे आग लगाना शुरू करे। अग्नि की गर्मीसे पहले घडे का जल बांसकी लगी नलीसे दूसरे घड़े में भाप द्वारा जायगा यही जल उस चीजका अर्क होगा। इस अर्कके ऊपर तेलकी तरह कुछ चीज तैरती रहती है, इसको सावधानी से ऊपरसे काढ़कर किसी दूसरे पात्रमें रख छोड़े। यही अतरस है। इस प्रकार अर्क दो तीन बार खींचा जाता है। परन्तु पहली बारके अर्कके समान दूसरी वा तीसरा बारका अर्क नहीं होता। क्रमशः

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

अव्वल, दोयम तेयम दर्जेका हो जाता है। इस यन्त्रको कुछ लोग भपका भी कहते हैं।

संखियाका फूलउड़ाना

एक ईंट जो कि बहुत बड़ा और मोटा हो लेकर उसके बीचमें एकगोलगड्ढा बना लेवै। फिर संखियाको ग्वारपाठेके रसमें घोटकर उसकी लुगदी बना ले। इस लुगदीका ईंटके गढ़में रखकर उसके ऊपरसे ताँबेकी एक कटोरी औंधी रखकर चिकनी मिट्टी और कपड़ेके योगसे उसकी सन्धि बन्द करदे ताकि धुआँ बाहर निकलने न पावे। इसके धुएँसे आँखको हर समय सावधानीसे बचाता रहे। ऊपर बतलाई ईंटको चूल्हेपर रखकर नीचेसे आग जला दे। औंधी हुई कटोरीके ऊपर भाँगरे वा मूलीके पत्तोंके रसमें कपड़ा भिगोकर फेरता रहे ताकि कटोरी गरमाने न पावे। इस तरह कुछ देर के बाद संखियाका फूल उड़कर कटोरीमें आ लगेगा। इस फूलको कटोरीसे निकालकर दवा के काममें लावे। यह फूल तिजारी वाले रोगोकेलिये बड़ा गुणकारी होता है। तिजारी आनेसे पहले

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

आधी रत्ती पानमें धरकर सेवन करनेसे बुखार नहीं आता।

मृगांक का प्याला बनाना

सिंगरफ मैनसिल, हरताल, आमलासार गन्धक, नौसादर और पारा इनमें हरएक चीजोंको बराबर-बराबर लेकर पहले गन्धक और पाराको खरलमें रखकर धीरे-धीरे भलीप्रकार रगड़ लेवे। जब उसमें कजली बन जाय तो उस कजली से उपरोक्त वस्तुओंको एक एक करके डालता और घोटता जावे, जब सब घुटकर एक दिल हो जाय, तो एक आतिशी शीशीपर तीन-चार तह कपड़-मिट्टी चढ़ाकर सुखा लेवे। पश्चात् इन्हें बालुका यंत्रमें रख अग्निपर चढ़ाकर दो प्रहर तक खूब आँच देता जाय। जब धुवाँका निकलना एकदम बन्द हो जाय तो शीशीको आँचसे उतारकर अलग रख दे और एकदम ठंढी हो जानेपर दवा को शीशीसे बाहर निकाल लेवे। अब आपको जितना बड़ा प्याला बनानेकी मंशा हो उतनी चाँदी लेकर उसमें चाँदीका चतुर्थांश दवा मिला

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

लीजिये और इन सबको आग पर चढ़ाकर पिघलावे। जब अच्छी तरह पिघल जाय तो सांचेमें ढोलकर प्याला बना लें। बस प्याला तैयार हो गया। इस प्यालेमें प्रतिदिन दूधमें मिश्री मिलाकर खानेसे पुरुषत्व और बलकी वृद्धि होती है। यहाँ तक देखनेमें आया है कि वृद्ध आदमी भी जवान का सा आचरण करने लगता है।

प्रदरकी दवा

मनसिल और शीशा इन दोनों चीजोंको आग पर चढ़ा देवे और उसमें अडूसे का रस रह२ कर छोड़ता जावे और अडूसेकी लकड़ीसे घोंटता भी रहे। पश्चात् गजपुटमें रखकर फूकना चाहिये। इस प्रकार तैयार हुए भस्मके सेवन से प्रदर प्रमेहका रोग नष्ट होता है।

बिरोजे का तेल निकालना

जिस औसतमें बिरोजे का तेल निकालनेका बिचार हो उतना ही बिरोजा लेकर आग पर कड़ाही चढ़ाकर उसमें छोड़ देवे। जब बिरोजा कड़ाहीमें आँचसे अच्छी तरह पिघल जाय तो

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

उसमें ईंटके नन्हें २ टुकडोंको छोड़ देवे। ये टुकड़े बिरोजेको सोख लेंगे। फिर इन्हीं ईंटके टुकड़ों को हाँडीमें भरकर ऊपरसे दूसरी हाँडी औंधाकर भली भाँति कपड़मिट्टी कर दे ताकि सन्धि न रहने पावे। तब इस हाँड़ीको चूल्हे पर चढ़ा दे। परन्तु ध्यान रहे कि हाँडी तिरछी रहे ताकि ऊपरवाली हाँड़ी टेढ़ी रहे। फिर ऊपर वाली टेढ़ी हाँड़ीमें एक छेद करके उसमें बाँसकी एक नली लगा दे और नलीके नीचे चीनी का प्याला रख दे। इस प्रकार सब चीज तैयार कर चूल्हेमें आग लगा देवे। आगकी गरमी से नीचे वाली हाँड़ीसे तेल उड़ २ कर ऊपर वाली हाँड़ीमें जायगा और नली द्वारा टपक २ कर प्यालेमें गिरेगा। ऊपरवाली हाँड़ी पर पानीका पोचारा देता जाय। यह तेल सुजाकके रोगियोंके लिये बड़ा उपयुक्त होता है। इसको दो तीन बूँद बताशे वा पानीमें मिलाकर सेवन करना चाहिए।

खूनी बवासीर की दवा

शामको ईसबगोलको पानीमें भिगो दे और

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

सबेरे उठकर हाथ से मलकर छान ले। फिर उसमें अन्दाजसे थोड़ी सी खाँड़ मिलाकर खूनी बवासीर वाले रोगी को पिलावे। इस दवाके सेवन करनेसे चाहे कैसा ही खून जाता हो रुक जायगा और दाह तथा ज्वर भी घट जायगा। वा पिसी हुई नागकेशरमें मिश्री और लौनी घी मिलाकर सेवन करे तो रुधिर आना बन्द होवे।

भस्मक रोगकी दवा

औंगाके बीजका छिलका उतार दूधमें डालकर खीर पका ले और फिर खीरको खावे तो भस्मक रोग दूर हो।

ज्वरनाशक दवा

तिजारी चौथिया और इकतरा आनेवाले रोगीको पारीवाले दिन ज्वर आनेसे पहले ही अगस्तके पत्तोंका रस सुँघा दे, ज्वर निश्चय पूर्वक छोड़ भागेगा।

तिमिरादी रोगकी दवा

सेंधा नमक, हीरा कसीस, मैनसिल, शंख सोंठ, पीपल, कालीमिरच और रसौत इन दवाओं को खूब बारीक पीसकर शहदके साथ गोली बना

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

खे। फिर जरूरत पड़ने पर आँखमें गोली को आँजे तो फूली काँच और तिमिर रोग नष्ट हो।

चन्द्रोदयका सेवन

चन्द्रोदय और लौंग समान भाग लेकर खलमें कूट डाले। जब खूब घुट जाय तो एक २ रत्ती की पुड़िया बना ले। जब किसी रोगीको देनेको आवश्यकता हो तो इसको एक पुड़िया देवे। इसके सेवन करनेसे तृषा, वमन कब्जियत, अजीर्ण, हिचकी मूर्च्छा और मूत्रस्रावका रोग दूर होता है। क्षुधा और कर्म शक्तिकी वृद्धि होती है।

चन्द्रोदय, भीमसेनी कपूर, जायफल, काली मिरच और लौंग इन सबको एक २ रत्ती और कस्तूरी तीन चावल भर, इन सबको एकमें पीस कर एक शीशीमें रख लेवे और नित्य दो रत्ती पानीमें लगाकर बराबर महीने भर सेवन करे तो बालकी सफेदी, अजीर्ण और बुढ़ापे में सब देहमें उत्पन्न हुआ सलबट तथा दूषित पानीसे उत्पन्न हुए रोग नष्ट होते हैं और भूख बढ़ती है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

रसकपूर

शोधा हुआ पारा, सफेद खड़िया, पुराने ईंटका चूरा, सफेद, बिना भूनी फिटकीरी, गेरू, बिलकी मिट्टी, कुम्हारकेबर्तन रँगनेकी मिट्टी और खारी नमक इन सब दवाओं को अलग २ दो दो पैसे भर खरीद लाकर हर एक को अलग २ पीस और कपड़छान करके रख छोड़े। पश्चात हर दवाओं के साथ अलग २ से पारेको दो-दो पहर तक घोंटे। जब इस प्रकार दवा तैयार हो जाय तो सबको डमरू यन्त्रमें भरकर चार पाँच पर्त कपड़मिट्टीको चढ़ाकर घाममें तीन दिन सुखावे। सूख जाने पर यन्त्रको चूल्हे पर चढ़ा कर ३२ पहर पर्यन्त आँच देता रहे। जब आग अपने आप बुझ जाय तो यन्त्र को चूल्हे से उतार ले। ऊपर की हाँडीमें सफेद रंगका पारा जमा रहेगा। यही रसकपूर है।

रसकपूर सेवन का नियम

कस्तूरी २ रत्ती, लौंग २ माशे, सफेद चंदन २ माशे, केसर ४ रत्ती और आधी रत्ती रसकपूर

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

इसको खरलमें घोटकर पानके रसमें एक चने बराबर गोली बना ले, बस इन्हीं गोलियोंमें से एक-एक गोली नित्य सेवन करे तो अग्नि बढ़े-शरीर पुष्ट हो, पुरुषत्वकी वृद्धि होवे और बिगड़ा हुआ उपदंश जाता रहे।

रससिन्दूर को

शुद्ध किये हुए पारेमें उससे दुगनी शोधी हुई गन्धक मिलाकर इनको खरलमें छोड़कर कजली करे। पश्चात् आतिशी शीशीमें रखकर सात पर्त कपड़मिट्टी करके घाममें सुखा दे। जब सूख जाय तो शीशा को बालुका यंत्र में रखकर यंत्रके मुखको ईंटसे ढाक दे। फिर आँच देना प्रारम्भ करे। बराबर २८ पहर तक आँच देता जाय। पारा ऊपर आ जायगा। आग बुझने पर उतारकर शीशी फोड़ डाले और उसके भीतर की लाल चकतीको निकाल ले बस यही रससिंदूर है।

रससिंदूर सेवन—विधि

दो रत्ती रससिन्दूरको दूध और मिश्रीके साथ नित्य सेवन करे तो स्वाँस, नपुंसकता, खाँसी

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

प्रमेह और वीर्यक्षीणता ऐसे कठिन रोगोंका नाश होकर शरीर पुष्ट हो जावे। इसका दूसरा नाम हरगौरी रस है। इसके सेवन करने वालेके समस्त रोग दूर हो जाते हैं।

परिशिष्ट-चिकित्सा

धातुक्षीणतापर जलका व्यवहार

(१) जलके व्यवहारसे भी असाध्य रोग आराम होते देखे गये हैं। यदि आप कठिन तथा प्राचीन कब्ज और धातु क्षीणतासे पीड़ित हों तो नित्य प्रातःकाल नदी या पोखरेमें जाकर एक या दो गोता लगा लीजिये। उसके बाद खद्दरके गमछे से खूब रगड़ कर शरीरको पोंछ दीजिये। पश्चात् नाभी बराबर पानीमें खड़े होकर गमछेको पानी में भिगोकर दोनों हाथोंसे नाभीके दोनों तरफ पेडू पर उतनी देर मालिश कीजिये जितनी देरतक के मर्दनसे आपको पूर्ण ठण्ढक मालूम होने लगे। ऐसा करनेसे रोमकूपों द्वारा सचित मल विषोंका निस्सारण होने लगता है तथा आँतमें ठण्डक पहुँचकर गर्मीको शान्त करती है और इसके

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

आवर्त कार्य में सहायता पहुँचकर कब्ज और धातु-क्षीणताको जड़ मूलसे नाशकर देता है इस विधिको धैर्यपूर्वक कुछ दिन के लगातार करते रहनेसे अपूर्व लाभ देखनेमें आता है। इस लिये तुरन्त घबड़ाकर इसे छोड़ नहीं देना चाहिये। यह अत्यन्त लाभप्रद विधि है तथा इसके व्यवहारसे कुने साहबके बताये हुए उदर-स्नानके समान लाभ होता है।

दूसरी विधि

(२) लिंग के मुण्डकी ऊपरवाली त्वचाको खींच लीजिये और एक दो मिनटतक उसे वाम हस्तकी अंगुलियों तथा किसी मोटे कपड़े द्वारा रगड़ते रहिये और दाहिने हाथसे ठण्ढा जल उसी पर गिराते जाइये। इस स्नान को मेहनस्नान कहते हैं। कुछ दिनोंके प्रयोगसे मस्तिष्क प्रवाह, सिरमें चक्कर आना तथा धातुका अस्वाभाविक रूपसे निकलना बन्द हो जाता है। क्योंकि जिस त्वचाको आप रगड़ते हैं उस त्वचामें प्रायः शरीर की सभी मुख्य-मुख्य रगोंका सम्मेलन है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

(३) सोनेके समय रात्रिमें भोजन करनेके बाद ठंडे जलसे हस्त, पाद तथा मुख-मण्डलको धोकर और सूखे गमछे से पोंछकर सोनेसे गाढ़ी निद्रा आती है और बुरे-बुरे स्वप्नोंको भी मनुष्य नहीं देखता है।

(४) भोजनके पूर्व या पीछे तुरन्त जल नहीं पीना चाहिये। ऐसा करनेसे अग्नि मन्द हो जाती है, परन्तु खानेके आधा घण्टा बाद जल पीने से पित्त उत्तेजित होता है और पाचन क्रिया में विशेष सहायता मिलती है।

(५) कब्ज होनेपर डेढ़ पाव सुसुम जल पीनेसे थोड़ी देर बाद साफ पैखाना होता है।

(६) शरीरमें अधिक मल संचय हो जानेपर दूसरी कोई वस्तु न खाकर थोड़ी थोड़ी देरपर थोड़ा २ ठंढा जल पीनेसे शरीके सारे मल निकल जाते हैं और शरीर एकदम शुद्ध हो जाता है।

(७) जलका व्यवहार हमलोग प्रायः प्रति-दिन सारे शरीरपर स्नानके रूपमें करते हैं। इस-लिये जो दैनिक स्नान हमलोग नित्य करते हैं उसे

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

खूब सोच समझ कर करना चाहिये। किसी तरह से धातुपात होनेपर सारे शरीरका स्नान बड़ा ही लाभदायक है। गंगा, यमुना, सरयू या किसी बहती हुई नदीमें स्नान करना चाहिये। पानी में प्रवेश करनेके पहले मस्तकको धो लेने से शरीरके निचले भागसे गर्मी ऊपरकी तरफ याने मस्तिष्कपर नहीं चढ़ती है।

संसारमें बहुत गंगा है जिनका बहती हुई नदियोंके जलमें स्नान करनेसे कितने प्रकारके महा भयंकर रोग भी सहज ही चले जाते हैं क्योंकि उनके जलमें नाना प्रकारकी औषधि मिली रहती है। बहुतसे लोग बहुधा कुयें पर भी नित्य स्नान करते हैं। उन लोगों को चाहिये कि स्नान करते समय अपने हाथकी हथेलियों से सारे शरीर को जोरसे रगड़ते जाँय और साथ ही साथ यह भी धारणा मनमें बनाये रखें कि हम अपनी हथेलियोंसे सारे शरीरमें जीवनी शक्तिका संचार कर रहे हैं। ऐसा करनेसे रक्तसंचालन खूब तेजीके साथ होने लगता है और

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

बद में विशेष स्फूर्ति आ जाती है। इसलियेसे रगड़ लेनेके बाद गमछेसे खूब रगड़ कर सारे बदनको पोंछ डालना चाहिये। इससे जो पसीना शरीरके रोम-कूपों द्वारा निकलता है और चमड़े है पर सूख कर मैल बैठ जाता है सो साफ हो जाता और पुनः स्वच्छ वायु रोम कूपों द्वारा शरीरमें प्रवेश करने लगती है।

वायु-चिकित्सा

प्रातः तथा सायंकाल बस्तीसे बाहर जाकर शुद्ध वायुका सेवन करना चाहिये। वायु सेवन करनेका जहाँ पर अच्छा स्थान न हो वहाँ पर सबसे पहले कोई बाग, बगीचा या तालाबकी तलाश करनी चाहिये और वहीं जाकर कुछ देर तक सुबह शाम टहलना चाहिये। इससे स्वास्थ्यमें विशेष लाभ होता है, क्योंकि वृक्षोंमें हम लोगोंके श्वास द्वारा त्यागी हुई जहरीली वस्तुको ले लेना तथा हम लोगोंके फायदेके लिये शुद्ध आक्सीजन देने की शक्ति है। खुले मैदानमें सीधे खड़े होकर जोर से श्वास खींचना चाहिये और धीरे धीरे छोड़ना

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

चाहिये। ऐसा करनेसे रक्तकी सफाईमें सहायता मिलती है, सीना चौड़ा होता है और फेफड़ेकी बिमारी खासकर दमेमें जब किसी भी दवासे फायदा न पहुँचा हो तो इससे जरूर लाभ होता है। परन्तु स्मरण रहे कि पहले पहल श्वास-प्रश्वासकी क्रिया अधिक नहीं करनी चाहिये। क्योंकि ज्यादा करनेसे छातीमें दर्द और जुकाम हो जाता है।

विशेष अन्नाहार कर लेनेसे यदि कोई कष्ट मालूम हो तो चौकीपर चित्त लेट कर श्वास प्रश्वास की गति बढ़ा देने से तुरन्त आराम मिलता है।

धातु क्षीणतावाले रोगमें वायु सेवनसे सारे शरीरमें स्फूर्ति आ जाती है और जो हतोत्साह मालूम होता है डट कर जीवन में काम करने के लिये जोश पैदा हो जाता है। वायु प्राणके लिये अत्यन्त लाभ-प्रद चीज है। इसके बिना किसीका थोड़ी देरके लिये भी जीना कठिन है। अन्न के बिना कुछ दिनों तक, जलके बिना कुछ घण्टे तक जीवित रह सकते हैं, परन्तु वायुके

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

बिना कुछ मिनट तक भी प्राण बचाना मुश्किल है। इससे आप खूब समझ सकते हैं कि स्वास्थ्य के लिये वायु कितनी आवश्यक वस्तु है।

श्वास-प्रश्वास क्रियासे दमा, ऑक्सिजन फेफड़े में भर कर निमोनिया तथा जलवायु परिवर्त्तन कर पहाड़ी देशों जैसे धर्मपूर इत्यादि जगहोंमें रह कर थाइसिस (राजयक्ष्मा) सरीखे महा भयंकर रोगों का नाश प्रतिदिन देखकर कौन नहीं कह सकता है कि जो काम बड़े-बड़े उपायों तथा अमूल्य औषधियों के खानेसे साध्य नहीं है वह केवल शुद्ध तथा साफ वायुके सेवनसे बिना प्रयास ही सिद्ध हो जाते हैं।

धूप-चिकित्सा

प्रातःकाल स्नान कर धूपमें सूर्य्यकी तरफ मुँह कर कुछ देर तक बैठनेसे बड़ा कल्याण होता है। खुले बदन पर सूर्य्यकी किरणे छाती पर पड़ती हैं जो यक्ष्माके कीड़ोंको मार डालती है। बदन पर भी कुछ देरके बाद व्यवहारसे पसीना चलने लगता है जिससे सब रोम-कूप खुल जाते हैं और

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

उसीके सहारे शरीरस्थ मल निकल कर शरीर शुद्ध हो जाता है। धूप जीवनके लिये बहुत आवश्यक चीज है। परीक्षार्थं एक आदमीने दो सुग्गे पाले थे दोनोंको ठीक समय पर उचित परिमाणमें भोजन दिया करता था परन्तु एक का पिंजरा कुछ न कुछ देर तक धूपमें रख दिया करता था जिससे वह सुग्गा स्वस्थ रहा करता था और दूसरेका पिंजरा सर्वदा छायामें ही रक्खा रहता था। कुछ दिनों के बाद वह बिल्कुल पतला दुबला और कराल काल के मुखमें जाने लायक हो गया। इसलिये नित्य दो घण्टे धूपमें रहना मनुष्यके स्वास्थके लिये अत्यन्त लाभदायक है क्योंकि पसीनेके द्वारा रक्तसे विष याने शरीरका आन्तरिक मल निकल जाता है और उससे जो धातु बनती है वह शुद्ध और साफ बनती है।

धूप मनुष्यके लिये ही नहीं बल्कि सारे प्राणी मात्रका पोषक है। बिना इसके कोई प्राणी जी नहीं सकता। प्रायः आपने देखा होगा कि जिस पेड़में धूप अच्छी तरहसे लगती है वह खूब फूलता-

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

फलता है और जिनमें इनका अभाव रहता है वे ठिठुर तथा सिकुड़ कर ही रह जाते हैं। इसी तरहसे जिस मनुष्यके शरीरमें धूप नहीं लगती उनका मुख मण्डल पीला तथा स्नायु कमजोर हो जाती है। आजकल सभ्य संसार इससे बडा बडा काम ले रहा है और प्राणियोंके कल्याणके निमित्त शरीर पर वैज्ञानिक रीतिसे उपयोग कर बड़े-बड़े भयंकर रोगोंको दूर करता है। यहाँ पर मैं इनके व्यवहार सम्बन्धी लेख समाप्त करता हूँ परन्तु इनकी विशद व्याख्या "सूर्य-किरण-चिकित्सा" तथा रश्मि-चिकित्सा' में करूँगा।

पथ्यापथ्य विचार

(१) भोजन करनेके थोड़ी देर बाद कुछ फल खाना चाहिये। धातु-क्षीणतावाले रोगीको अनार, केला, अंगूर, सेव, मोनक्का और अंजीर बहुत ही लाभदायक सिद्ध हुई है। पित्तप्रमेहमें तो प्रातःकाल मोनक्का तथा भोजन करनेके थोड़े देरके बाद केला अनारसे सारा उपद्रव शांत हो जाता है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

(२) मांस, मछली, उडद, सेम-कोंहड़ा अधिक मीठा, तेल, खट्टा और चटपटा पदार्थ एकदम निषेध है।

(३) परवल तथा सलजम विशेष लाभदायक है। गमतरोई और कद्दू भी खा सकते हैं।

(४) बहुतसे डाक्टरोंकी राय है कि दूध सेवन करनेसे प्रमेह और थाईसिस अगर छूट भी गये हों तो पुनः उभर आते हैं। परन्तु बहुतसे डाक्टर असाध्यसे असाध्य अवस्था प्राप्त हो जाने पर भी केवल दूधके सहारे रोगियोंको रोगसे मुक्त करनेकी विधि बतलाते हैं। आयुर्वेद के ग्रन्थों में पालतू पशुओं और पक्षियोंका मांस तथा दूध ही प्रमेहका बड़ा कारण बताया है। मेरे विचारके अनुकूल अगर कोई गायका दूध सेवन करना चाहे तो उसे चाहिये कि प्रातःकाल गायके दूध दुह कर तुरन्त गरमा गरम ही (सेवन करना) पी लेना चाहिये। इससे बड़ा ही उपकार होता है। अगर ऐसा इन्तजाम नहीं हो सके तो पीने के पहले थोडा गरम कीजिये क्योंकि अधिक ठण्ढे हो जाने

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

पर असाध्य तथा भयंकर रोगोंके कीडोंके प्रवेश करने की सम्भावना हो जाती है और गरम कर लेनेसे उसके जीवाणु नष्ट हो जाते हैं। परन्तु दूध को अधिक देर तक औटनेसे जलीय पदार्थ का नाश हो जाता है और गाढ़ा हो जाता है। ऐसे दूधके सेवनसे पाचन क्रियामें गडबडी हो जाती है और फायदे के बदले नुकसान होने लगता है। धातु बलवान् बनने की अपेक्षा कब्ज तथा उदरा मय हो जाते हैं, क्योंकि यह देखा गया है कि रबडी और खोआ बहुत देरमें पचता है।

भोजन करने के बाद तुरन्त सोना, सोने के समय अधिक जल का पीना तथा मीठी वस्तुका अधिक सेवन ये तीनों बातें धातु क्षीणतावाले रोगीको कदापि नहीं करनी चाहिये तथा इसको विष समझकर सर्वदा सावधान रहना चाहिये।

धातु क्षीणता रोगपर कुछ आयुर्वेदिक चुटकिले नुसखे

१—बडका दूध १० बूंद नित्य प्रातःकाल बताशेके साथ सेवन करनेसे बडा लाभ होता है।

२—नित्य भोजनके संग आँवला पकाकर

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

खानेसे प्रमेह रोग दूर होता है।

३-त्रिफलेका चूर्ण ताजे जलके साथ नित्य प्रातःकाल सेवन करनेसे रोग छूट जाता है। अगर मिजाज गरम हो तो त्रिफलेको मधुके संग सेवन करना चाहिये।

४-नित्य प्रातःकाल मक्खनमें मोती भस्म तथा मिश्री मिलाकर खानेसे रोग दूर होता है। पित्त-प्रमेहवाले रोगीके लिये यह अत्यन्त लाभप्रद है। इसे एक बार अवश्य सेवन कर परीक्षा करनी चाहिये।

५-कच्चा परवल कूँचकर निकाला हुआ रस छः आना भर और मधु चार आना भर मिलाकर पीनेसे प्रमेह रोग आराम होता है।

६-गुर्चको कूचकर निकाला हुआ रस आठ आना भर और मधु चार आना भर मिलाकर पीनेसे धातुक्षीणता नष्ट होती है।

७-नित्य प्रातःकाल मक्खनमें बंशलोचन, मिश्री और लायची मिलाकर खानेसे बहुत फायदा होता है।

८-तुलसीके सात आठ पत्ते नित्य प्रातःकाल सेवन करनेसे बड़ा लाभ होता है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

९-गायके ताजे औटे हुये दूधमें जेठी मधुकी बुकनी मिलाकर पीनेसे प्रमेह रोग शांत होता है।

१०-उषाकालमें नित्य खुलकर चलनेवाला बकरीका दूध पीनेसे सभी रोग छूटता है।

११—गाजरका हलुआ घीमें बनाकर खाने से बहुत फायदा होता है।

१२—जिन्हें प्रमेहका रोग हो और दिमाग में गर्मी मालूम होती हो, उनको चाहिये कि शीशम के पत्ते एक भर और मिर्च एक आना भर आधा पाव जलके साथ पीनेसे कुछ फायदा होता है।

१३-सिंघाडे का हलुआ दालचीनी और बंश-लोचन मिलाकर खानेसे धातुका गिरना बंद होता है।

१४-गर्मीके दिनोंमें ईसबगोल पानीमें फुला-कर मिश्री मिलाकर पीनेसे गर्मी शान्त होती है। और धातुमें भी बहुत फायदा होता है।

१५—बीजदानाको फुलाकर मिश्री मिलाकर खानेसे धातु गिरना बन्द होता है।

१६—गायके औटे हुये दूधमें सोंठ मिलाकर

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

पीनेसे कफ तथा वायुके प्रमेहमें बड़ा लाभ होता है।

सज्जनों! अभी तक आपको जितने उपचार, दवाइयाँ या नुसखे बताये गये हैं वे सब देखनेमें बहुत ही सरल हैं। इन तरीकोंको आप बहुत आसानीसे काममें ला सकते हैं। जितनी होमियोपैथिक दवाओंकी नामावली दी गई है वे सब हरेक होमियोपैथिक दवाखाने तथा आयुर्वेदिक दवाइयाँ पंसारी या किसी अच्छे औषधालयसे सुलभ तरीकेसे मिल सकती हैं। दवाका मूल्य बहुत ही कम है और गरीब, अमीर सब कोई इसे आसानीसे खरीद सकते हैं। यह दवाइयोंके नुसखे देखनेमें जितने आसान हैं वैसेही फायदा पहुँचाने में रोगरूपी शत्रु पर अमोघ अस्त्र है। बहुत लोग आजकल ऐसे हैं जो किसी महान उपकारक औषधके भी नाम जान लेने पर या मूल्य कम होनेके कारण व्यवहारमें लानेसे हिचकते हैं। परन्तु ऐसा नहीं करना चाहिये। जिस औषधिको आप बहुत हल्का समझते हैं उसकी शक्ल बदलकर और शीशियोंपर लम्बे लम्बे लेबुल साटकर विदेशोंसे

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

दिन-रात आते हैं और डाक्टर लोग उसका प्रयोग करते हैं रोगी भी शीशियों की खूबसूरती और डाक्टरोंके भ्रम वसे प्रभावान्वित होकर खूब चैनसे सेवन करते समय अपनेको भाग्यशाली समझते हैं। इसलिये हमने प्रत्येक दवाइयों के विस्तृत गुण इस पुस्तकमें वर्णन कर दिये हैं जिससे उसके गुणोंके बारेमें आपको पूर्ण बोध हो और शान्ति पूर्वक तथा विधिवत् उसका सेवन कर सकें। इन औषधियों का प्रयोग अनेकों रोगियों पर किया गया है और आशातीत सफलता प्राप्त हुई है। होमियोपैथिक औषधिको ऐसे जगहपर रखना चाहिये जहाँ गंध, धूप, धूआँ तथा विशेष गन्दगी न हो। आयुर्वेदिक औषधिको बनाते समय पूर्ण सावधानीसे काम लेना चाहिये और झिल्ली, कृमि जो कुछ भी गंदापन देखाजाय उसे साफ कर लेना चाहिये। होमियोपैथिक दवाइयोंको सेवन करते समय पान, सिगरेट, बीड़ी, शराब, चाय, कहवा या किसी प्रकारका मादक द्रव्य एकदम निषिद्ध है। भोजन करनेकी सामग्रियोंमें लहसुन,

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

प्याज, मरिच या विशेष मशालेकी बनी हुई चीजों से परहेज रखना चाहिये। जहाँ तक हो सके खूब लवणों को मिलाकर दवा सेवन करनी चाहिये क्योंकि होमियोपैथिक विज्ञान द्वारा चिकित्सा करनेमें लक्षण ही प्रधान है। जनेन्द्रिय सम्बन्धी पीड़ाओं में ऊँची शक्तिवाली दवाइयोंका प्रयोग लाभकारी है। रोग नया होनेसे नोची शक्तिवाली दवा भी प्रयोग कर सकते हैं। परन्तु बहुमत ऊँची शक्ति ही के लिए है।

मक्खनका गुण

नवनीत (मक्खन) शीतल, बलकारक, मधुर खट्टा, वीर्यवर्द्धक श्लेष्माकारक पित्तवात नाशक है तथा शोथरोगी, क्षयरोगी, क्षीण, अत्यन्त कृश वृद्ध और बालकोंका हितकर है।

000102

॥ समाप्त ॥

हर प्रकार की पुस्तक मिलने का पता---

ठाकुर प्रसाद एण्ड सन्स बुकसेलर,

राजादरवाजा, बाग—कचौड़ीगली, वाराणसी।

मुद्रक—आदर्श प्रेस, वाराणसी।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

हमारे यहाँ से नीचे लिखी पुस्तकें—
एक बार मँगाकर लाभ उठावें

विश्राम सागर ८)
राजा ढोलन का गीत २)
गीता श्रीधरी टीका २)
घाघभड्डरी की कहावतें स. २)
सती उर्मिला ॥)
रामायण भाषा टीका १०)
दृष्टान्त दर्पण अर्थात्
दृष्टान्त सागर २॥)
कुँवर विजयमल बड़ा २०
भाग २)
सिंहासन बत्तीसी १)
तोतामैना ८ भाग सादा ।)
कुँवर विजयमल ३२ भाग
गढ़पर्वतकी लड़ाई सहित २॥)
पाण्डव द्रौपदी वनवास ।॥)
नेउरा भइया की कहानी ॥)

रामायण भा.टी. आठोकांड
सम्पूर्ण सबसे बड़ा रफ २५)
शिवपुराण हिन्दी भाषा १०)
राधेश्याम रामायण बड़ा ८)
असली ब्रह्मानन्द भजन
गुटका संपूर्ण १॥)
महाभारत भा.टी.सबलसिंह
चौहान कृत अट्ठारहोपर्व २)
प्रेमसागर ६० अध्याय
सम्पूर्ण ३)
भृगुसंहिता फलित सर्वाङ्ग
दर्शन, हिन्दी में भाषा
हजारों कुण्डलियों सहित
डाक खर्चसहित १०)
चालीसा पाठ संग्रह १४
चालीसा के सहित)४० पैसा

हर प्रकार की पुस्तक मिलने का पता—

ठाकुर प्रसाद एण्ड सन्स बुकसेलर,

राजादरवाजा, ब्राञ्च—कचौड़ीगली, वाराणसी ।

बम्बई प्रेस, वाराणसी ।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection